कश्मीर

इतिहास, संस्कृति तथा लोकगीत

डा. विमला कुमारी मुंशी

पुस्तक परिचय

कश्मीर तथा 'कश्मीरियत' के विषय में संसार में ही नहीं भारत में भी अनेक भ्रान्तियाँ प्रचलित हैं, जैसे वहाँ के लोग 'काँगड़ी' गले में लटकाते हैं, अथवा कश्मीर भारत की अपेक्षा मध्य-पूर्व की सभ्यता-संस्कृति के अधिक निकट है। प्रस्तुत पुस्तक कश्मीर के इतिहास तथा उसकी संस्कृति को सही एवं प्रामाणिक रूप में उपस्थित करती है। प्रागैतिहासिक काल से आज तक की कश्मीरी संस्कृति एवं सभ्यता की जड़ें भारत की मिट्टी में जन्मी, पनपी और फली-फूली हैं, यह तथ्य इस ग्रन्थ ने प्रथम बार इस रूप में प्रस्तुत किया है। विकट आतंकवादी परिस्थितियों में सम्पन्न सघन क्षेत्र-कार्य की परिणति है यह ग्रन्थ। **कश्मीर के विषय में इस प्रकार की पुस्तक आज तक प्रकाशित नहीं हुई है।** प्रस्तुत पुस्तक परम पठनीय एवं संग्रहणीय है।

कश्
में भी अनेक
लटकाते हैं,
संस्कृति के
उसकी संस्कृ
प्रागैतिहासिक
जड़ें भारत
इस ग्रन्थ ने
परिस्थितियों
के विषय में
प्रस्तुत पुस्तक

कश्मीर

(इतिहास, संस्कृति तथा लोकगीत)

कश्मीर

(इतिहास, संस्कृति तथा लोकगीत)

डा० विमलाकुमारी मुंशी
शोध वैज्ञानिक 'ख' (रीडर)
कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ,
आगरा विश्वविद्यालय, आगरा-282004

आर्य बुक डिपो
करोल बाग, नई दिल्ली - 110 005

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की निम्नलिखित परियोजना की
आंशिक-सम्पूर्ति में प्रकाशित ग्रन्थ :
कश्मीरी का लोक-साहित्य : भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में विवेचन

प्रकाशक : **आर्य बुक डिपो**
30, नाईवाला, करोलबाग, नई दिल्ली-110005

दूरभाष : 5721221

प्रथम संस्करण : 1993

मूल्य : 275.00

लेजरसेटिंग : कम्प्यूटर शाप
शकरपुर, दिल्ली-110092

मुद्रक : Processed and Printed by :
PARSHVA OFFSET PRESS
B-9, Sardar Nagar,
Delhi-110009,
Phone : 7138545, 7118996

: समर्पित :

परमपूज्य पिताश्री
स्वर्गीय पण्डित पृथ्वीनाथजी मुंशी को
जिनकी प्रेरणा के फलस्वरूप
यह ग्रन्थ सम्भव हुआ है।

विषय-क्रम

(खण्ड—ग) लोक-गीत संग्रह (टीका सहित)

परिशिष्ट

भूमिका

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने जब मुझे रीडर के वेतन-क्रम में शोध-वैज्ञानिक (ख) के रूप में पांच वर्षों तक कार्य करने के लिए अप्रैल 1986 से नियुक्त किया, तब मुझे अनुमान ही नहीं था कि इस नियुक्ति के फलस्वरूप मुझे किन विकट एवं संकटपूर्ण परिस्थितियों और स्थितियों में से होकर गुजरना पड़ेगा। न मुझे इस बात का अनुमान था कि उन संकटों को पार करके इस परियोजना की सम्पूर्ति की दिशा में इस ग्रन्थ के प्रणयन के रूप में, उन परिस्थितियों की परिणति होगी और इससे मुझे अभूतपूर्व आनन्द की प्राप्ति होगी। अपनी मातृभूमि एवं उसकी संस्कृति के ऋण से यत्किंचित् मात्रा में उऋण होने के सन्तोष की उपलब्धि ने उन सब संकटों एवं कष्टों को भूलने की शक्ति मुझे दी है।

मैंने सर्वप्रथम कश्मीर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के माध्यम से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को आवेदन पत्र भेजा था क्योंकि मुझे आशा थी कि मैं 1991 तक कश्मीर में रहूंगी और वहीं रहकर इस परियोजना सम्बन्धी क्षेत्र-कार्य को पूरा करूंगी, परन्तु 1986 में ही मुझे कश्मीर छोड़ना पड़ा, क्योंकि मेरे पति डा० रमेशकुमार शर्मा, तभी कश्मीर छोड़कर अपने घर आगरा आ गये। कश्मीर विश्वविद्यालय के कुल-सचिव भाई श्री गुलामनबी सिद्दीकी की स्नेहपूर्ण सहायता से तथा आचार्य विद्यानिवास मिश्र की कृपा से मैंने अपना स्थानान्तरण आगरा विश्वविद्यालय के कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ में करा लिया। मेरी परियोजना थी : **'कश्मीरी लोक-साहित्य : भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में विवेचन'**।

सम्पूर्ण घाटी तथा भद्रवाह-किश्तवाड़ के क्षेत्रों में भ्रमण करके मुझे सामग्री-संकलन करना था, अतएव प्रतिवर्ष दो या तीन बार मुझे आगरा से कश्मीर की यात्रा करनी पड़ती थी। 1989 के मध्य तक मुझे प्रकृति के क्रुद्ध रूप का सामना कई बार करना पड़ा। वर्षा, हिमपात तथा भूस्खलन के कारण दूरस्थ एवं दुर्गम स्थानों में फंस जाना सामान्य बात थी। उन स्थानों पर अकेले जाना भी सम्भव नहीं होता था। दो बार अनवरत वर्षा-हिमपात में कैमरे, फिल्म, टेपरिकार्डर, कैसेट—सब भीग गये तथा संकलित सामग्री नष्ट हो गई और ये उपकरण क्षति-ग्रस्त हो गये। समय तथा धन की अपरिमित हानि हुई, जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मांगा भी नहीं जा सकता था। 1989 के मध्य से आतंकवाद का सामना करना पड़ा और क्षेत्र-कार्य दुष्कर ही नहीं प्राणलेवा प्रतीत होने लगा।

1990 में अक्टूबर की सात तारीख को श्रीनगर के रंगटेंग, अलीकदल स्थित मुंशी मुहल्ले के मेरे पुश्तैनी मकान को पूणर्तः भस्म कर दिया गया। मकान चार दिनों तक जलता रहा और आतंकवादियों ने अग्निशमन दल पर गोलियां बरसा-बरसाकर उसे आग बुझाने नहीं आने दिया। दो सौ वर्ष पुराने इस मकान में मेरे पिता (पांच भाइयों के बेटों के 15 परिवारों के साथ) रहते थे। कितनी प्राचीन पुस्तकें तथा पुरानी धरोहरें थीं उनका मूल्य कैसे आंका जाय। परियोजना सम्बन्धी बहुत-सी सामग्री (नोट्स, कैसेट, फिल्म, पुस्तकें, साक्षात्कारों की रिकार्डिंग, छोटे टेप रिकार्डर आदि) भस्म हो गई। इस क्षति को पूरा करने के लिए मुझे पुनः ये उपकरण खरीदने पड़े तथा जयपुर, दिल्ली, जम्मू, ऊधमपुर तथा नगरौटा के विस्थापित कैम्पों में जाकर पुनः सामग्री-संकलन करना पड़ा; कश्मीर घाटी में प्रवेश करना तो यमराज का द्वार खटखटाकर, मौत को दावत देना था। सौभाग्य से, मेरे कार्य से सन्तुष्ट होकर तथा परियोजना के बृहत् आकार एवं आयाम को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विशेषज्ञों तथा निदेशक (अनुसंधान) डा० बी० पी० सिंह ने मेरी परियोजना **लोकगीतों** तक सीमित कर दी तथा मुझे निर्देश दिये कि लगभग 200 लोक-गीत संकलित करूं, उनकी हिन्दी में टीका करूं तथा लगभग सौ पृष्ठों में उन लोक-गीतों का सांस्कृतिक विवेचन उपस्थित करूं। इस प्रारूप के अनुसार मैंने इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है।

प्राचीन कश्मीर की सही तस्वीर उपस्थित करने के लिए इस तथ्य का निरूपण आवश्यक हो जाता है कि प्राचीन आर्यों का कश्मीर में आगमन कब और कैसे हुआ? एक मत तो यह है कि वास्तव में कश्मीर ही आर्यों का मूल उद्गम-स्थान है और मेरा रुझान इसी ओर है। दूसरा मत यह है कि कश्मीर में आर्यों ने उत्तर-पश्चिम की दिशा से प्रवेश किया था क्योंकि वे मध्य एशिया से आये थे। हुंजा तथा लद्दाख के एक गांव में जो मुसलमान रहते हैं वे शुद्ध आर्य मूल के हैं, यह तथ्य इस तर्क के समर्थन में उपस्थित किया जाता है परन्तु यह प्रत्येक प्रकार से अमान्य है। तीसरा मत यह है कि कश्मीर में आर्य बाहर से आये और घाटी में उनका प्रवेश दक्षिण से हुआ था। आज यही मत सर्वमान्य है और 'नीलमत पुराण' भी इसका समर्थन करता है।

'नीलमत पुराण' मेरे इस अध्ययन का आधार-ग्रन्थ है क्योंकि जैसे 'राजतरंगिणी' कश्मीर का राजनैतिक इतिहास है, उसी प्रकार 'नीलमत पुराण' कश्मीर का सांस्कृतिक इतिहास है। 'राजतरंगिणी' में कल्हण ने स्वीकार किया

है[1] कि 'नीलमत पुराण' भी उसकी सूचनाओं का एक स्रोत है[2] तथा आज विद्वान् इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि कल्हण ने 'नीलमत पुराण' के माध्यम से अपनी ऐतिहासिक दृष्टि स्पष्ट की थी।[3] कश्मीर भारत की संस्कृति का प्राचीनतम पालना है और इसने भारत की मिश्रित संस्कृति में बहुमूल्य योग दिया है।[4] अतः भारत की प्राचीन संस्कृति के प्राचीनतम सांस्कृतिक इतिहास 'नीलमत पुराण' को मैंने अपने इन लोक-गीतों के सांस्कृतिक विवेचन का आधार बनाया है। डा० वेदकुमारी ने 'नीलमत पुराण' का रचनाकाल छठी शती ईसवी से पहले नहीं माना है।[5] यह तो स्पष्ट ही है कि इसका प्रणयन बौद्धमत के कश्मीर में प्रवेश के बाद हुआ होगा क्योंकि इसमें बुद्ध-पूजा का वर्णन है। यूहेमेरिज़्म[6] की पद्धति के अनुसार मिथक वास्तविक इतिहास में से ही उत्पन्न होते हैं तथा इसके देवता वास्तव में (इतिहास के) पुरुषों का ही विराटीकृत रूप हैं। इस पद्धति के अनुसार मिथकीय-सांस्कृतिक तत्वों के बीज इतिहास में होते हैं। संस्कृति के तत्व आवश्यक रूप से लोक-गीतों में (सुषुप्तावस्था में ही सही) पाये जाते हैं, अतएव लोक-गीत इतिहास के मूल्यवान आधार हैं। इसी धारणा के सहारे मैंने यह विवेचन प्रस्तुत किया है। मैं जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की आचार्य एवं अध्यक्ष डा० वेदकुमारी घई की अत्यन्त आभारी हूँ। उनकी पुस्तकों (नीलमत पुराण, भाग 1 तथा 2) से मुझे इस विवेचन हेतु अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने में सहायता मिली है।

इसी प्रकार डा० त्रिलोकीनाथ गंजू (रीडर, हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय) के कश्मीरी-भाषा विषयक शोध-कार्य से मुझे बहुत सहायता मिली है। उन्होंने अपना, कश्मीरी भाषा विषयक शोध-कार्य मेरे पति डा० रमेशकुमार शर्मा के निर्देशन में किया था। श्री मोहनकृष्ण धर की कश्मीरी लोक-साहित्य विषयक रचनाओं तथा डा० जवाहरलाल हाण्डू का पी-एच० डी० का शोध-प्रबन्ध (हिन्दी तथा कश्मीरी के लोकगीतों पर) भी मेरे लिए सहायक सिद्ध हुआ है। श्रीधर तथा डा० हाण्डू की पुस्तकों से तुलना करके, मैंने अपने द्वारा संकलित गीतों के अर्थों का

---

1. नीलमत पुराण, भाग 1, डा० वेदकुमारी, पृष्ठ 8 (भूमिका)।
2. राजतरंगिणी, कल्हण, 1, 14, 15।
3. हिस्ट्री एण्ड कल्चर अव इण्डियन पीपल, 'द वैदिक एज' प्रथम संस्करण, पृष्ठ 50।
4. नीलमत पुराण, भाग 1, डा० कर्णसिंह का 'फोरवर्ड'।
5. वही, पृष्ठ 15।
6. चौथी शती ईसवी के सिसली वासी, यूहेमेरस नामक विद्वान द्वारा प्रतिपादित चैम्बर्स डिक्शनरी, 1962, पृष्ठ 366।

निर्धारण करने में, कहीं-कहीं सहायता पायी है। एक अन्य कश्मीरी विद्वान हैं पं० संसारचन्द कौल (रैनावारी, श्रीनगर निवासी थे) जिनकी पशु-पक्षियों एवं वनस्पति-विषयक पुस्तकों से मैंने सहायता ली है।

कश्मीरी में पाये जाने वाले अरबी, फारसी तथा उर्दू शब्दों की व्युत्पत्ति के विषय में अरबी विभागाध्यक्ष प्रो० शेरवानी, फारसी विभाग में रीडर डा० आसिफ नईम तथा प्रो० आले अहमद सुरूर (निदेशक, इकबाल संस्थान) से मैंने सहायता ली थी। डा० मरगूब बनिहाली (रीडर फारसी विभाग तथा बाद को अध्यक्ष, कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय) ने कई बार मेरे प्रश्नों का उत्तर देकर मेरी सहायता की थी। इसी प्रकार डा० शफी शौक (अध्यक्ष कश्मीरी विभाग) तथा प्रो० क़ाज़ी गुलाम मुहम्मद (आचार्य तथा अध्यक्ष गणित विभाग तथा कश्मीरी एवं उर्दू काव्य के धुरन्धर विद्वान्) ने भी कश्मीरी लोक-गीतों के विषय में मुझे दिशा-निर्देश दिये। कश्मीर के इतिहास के विषय में मैंने प्रो० लक्ष्मीनारायण दर (पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, श्रीप्रताप कालिज, श्रीनगर) तथा प्रो० जिन्दलाल ज़ाला (इतिहास विभाग, कश्मीर वि० वि०) से सहायता ली है। ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक (नृतत्व विषयक) सूचनाओं के लिए भारत सरकार के पुरातात्विक सर्वेक्षण के वरिष्ठ अधिकारी पण्डित टी० एन० खजांची से कई बार साक्षात्कार किये गये। डा० चमनलाल रैणा तथा उनके परम विद्वान् पिताश्री से घण्टों कश्मीरी पण्डितों की संस्कृति, संस्कार तथा कर्मकाण्डों पर बातचीत हुई, इन सबके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ। कश्मीर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आचार्य भाई डा० रोशनलाल ऐमा ने इस कार्य में महत्वपूर्ण योग दिया है।

अकादमी पुरस्कार विजेता कविवर स्व० दीनानाथ कौल 'नादिम', कविवर श्री रहमान राही तथा श्री अमीन कामिल के प्रति भी मैं धन्यवाद-ज्ञापन करती हूँ, क्योंकि मैं इन सबसे समय-समय पर निर्देश लेती रही हूँ। कश्मीर विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष, भाई प्रो० जमाल अब्दुल वाजिद ने सर्वदा तथा सर्वथा मेरी सहायता की है, मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

ठेठ कश्मीरी भाषा के शब्दों की व्युत्पत्ति खोजने में ब्रजभाषा शब्द-भण्डार का सहारा लेना पड़ा और इस दिशा में कोश-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र की विदुषी डा० सरोजिनी शर्मा (रीडर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा) ने मेरी अत्यधिक सहायता की है। वे मेरी सरोज जीजी हैं, उन्हें धन्यवाद क्या दूं, हाँ, उनके पति प्रो० सरोजकुमार अवस्थी (अधिष्ठाता, विधि संकाय, आगरा विश्वविद्यालय) को

अवश्य धन्यवाद देती हूँ क्योंकि वे अपनी कार में (बिना दुर्घटना किये) मुझे क्षेत्र-कार्य के लिए दिल्ली, जयपुर आदि स्थानों पर ले गये और सुरक्षित लौटा लाये।

मैंने अपने पिताश्री पं० पृथ्वीनाथ मुंशी तथा पूजनीया माताजी श्रीमती रूपावती मुंशी को लोक-गीतों के संग्रह के लिए अनेक बार अपने साथ गांव-गांव भटकाया था, मेरी मां के मायके का गांव जहां की महिलाओं से मैंने अनेकानेक गीत प्राप्त किये थे, आतंकी गतिविधियों के कारण भस्म होकर उजड़ चुका है। रात में अचानक उठकर अपने माता-पिता से मैं गीतों के अर्थ, प्राचीन कर्मकाण्डों की विधियां पूछ-पूछकर उन्हें परेशान किया करती थी। उस ग्रन्थ के मुद्रण के समय अपने पारिवारिक घर के भस्म होने के आघात से मेरे पिताश्री का देहावसान हो गया।

जटिल शास्त्रीय समस्याओं को मैंने अपने पति डा० रमेशकुमार शर्मा (पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी तथा संस्कृत विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर) की सहायता से समझा और सुलझाया है। इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि को पढ़कर उसे अन्तिम रूप देने की दिशा में उन्हीं के निर्देशों का पालन किया गया है; वे कश्मीरी-भाषा-भाषी नहीं हैं परन्तु पिछले 25 वर्षों से विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों, सभ्यताओं तथा साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन कर रहे हैं, अतः इन सन्दर्भों की गुत्थियों को सुलझाने में मैंने उनसे ही सहायता ली है। मेरे घर में पिछले पांच वर्षों से सर्वदा कश्मीरी लोक-गीतों तथा कश्मीरी संस्कृति पर 'बहस-मुबाहसा' चलता रहा है और उसमें मेरी बेटी कुमारी मंजरी हमेशा अधिकृत न सही अनधिकृत रूप में भाग लेती रही है। कश्मीर में जन्मी है, कश्मीरी भाषा खूब जानती है, इसलिए उसने कभी-कभी आश्चर्यजनक रूप से सही सुझाव भी दिये हैं तथा गृहकार्य में हाथ बटा कर इस कार्य में मेरी सहायता की है। उसे मैं आशीष देती हूँ।

क० मुं० हि० भा० विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री कालभोर ने भी मेरी सहायता की है, उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ। इस परियोजना को टंकित करने में श्री सन्तोषकुमार अग्रवाल (शिव टंकण केन्द्र, मदिया कटरा, आगरा) ने जो खतरे (दंगों के) और कष्ट (कर्फ्यू के) उठाये हैं, उसके लिए उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरा कर्त्तव्य है।

आर्य बुक डिपो के स्वामी श्री सुखपाल गुप्त के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन का उत्तरदायित्व लेकर मेरी परियोजना के समापन के अनुष्ठान में पूर्णाहुति प्रदान की है।

अन्त में पितृ-तुल्य गुरुवर स्वर्गीय पं० जगन्नाथ तिवारी को प्रणाम करते हुए उनके आशीर्वादों का इन शब्दों में स्मरण करती हूँ :

"हम तो तरि गये साहिब कृपा तें, सबद डोरि लगि उतरे पार।"

—विमलाकुमारी मुन्शी
एम०ए०, पी-एच० डी०
द्वारा डा० रमेशकुमार शर्मा,
28/289 ब्राह्मणगली,
गोकुलपुरा, आगरा-282002

खण्ड-क

इतिहास तथा संस्कृति : संक्षिप्त परिचय

कश्मीर का संक्षिप्त इतिहास

परिचय

'कश्मीर', शब्द के प्राचीनतम उल्लेख भारतीय साहित्य में पाणिनी की 'अष्टाध्यायी'[1], 'महाभारत'[2], पुराणों[3] तथा 'बृहत् संहिता'[4] में पाये जाते हैं। कश्मीर शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में अनेक मत प्रतिपादित किये गये, जिनमें सर्वमान्य 'नीलमत पुराण' का उल्लेख है, जिसमें कहा गया है कि जल को 'क' कहते हैं और बलराम (अनन्तावतार) ने यहां से जल निकाला, इस कारण इसका नाम कश्मीर पड़ा; यथा : क (जल) अश्म (पत्थर) ईर् (निकालना)। यह भी कहा है कि प्रजापति को 'क' कहते हैं तथा कश्यप ऋषि भी प्रजापति हैं , अतएव उनके द्वारा बनाया गया देश 'कश्मीर' कहलायेगा (देखें श्लोक 226-7, नीलमत पुराण, डा० वेदकुमारी)।

श्रीनगर के निकट बुर्ज़होम में लगभग 3000 वर्ष ईसा पूर्व के अवशेष मिले हैं, वहां जो कंकाल मिले हैं, वे आर्यों के हैं या नहीं इसका निर्णय अभी पुरातत्व विभाग ने नहीं किया है, परन्तु इतना निश्चित है कि किसी बड़ी झील के किनारे ईसा पूर्व पांच हजार वर्षों से तीन हजार वर्षों तक के काल में लोग रहा करते थे। वैज्ञानिक दृष्टि से यह सर्वमान्य है कि यह पर्वतों से घिरी प्यालेनुमा घाटी आरम्भ में जल से भरी थी, फिर मानव प्रयत्नों से बारामूला (वाराहमूल) के पास खादनयार (जहां खोदा गया हो) से जल बाहर निकाला गया और आज की डल तथा वुलर आदि झीलें तथा वितस्ता (झेलम) नदी प्रकट हुई। पौराणिक कथा के अनुसार जलोद्भव राक्षस का पराभव करके कश्यप ऋषि ने इस देश का निर्माण किया—रहने योग्य बनाया। संभव है जलोद्भव (जल से उत्पन्न) हिम का मोटा आवरण हो, जिसे प्रागैतिहासिक काल में तोड़कर जल निसृत करके कश्मीर बनाया गया हो। आरम्भ के उस विशाल सरोवर को सतीसर के नाम से पुकारा जाता था, जो कि यूरोप की जिनेवा झील से तीन गुना बड़ा था।

आज के जम्मू-कश्मीर प्रदेश का क्षेत्रफल दो लाख बाईस हजार दो सौ छत्तीस

---

1. गणपाठ 4, 2, 133; 4, 3, 93।
2. 2, 27, 17 ; 2, 48, 13; 3, 130, 10; 7, 10, 6।
3. वायु 45, 120; पद्म 1, 6, 48, 62; मत्स्य 13, 47; विष्णु 4, 48, विष्णुधर्मोत्तर 1, 10, 10; 207, 63; 261, 16, तथा 38।
4. 5, 70, 77, 78; 9, 18; 10, 12; 11, 57, 15, 29।

वर्ग किलोमीटर है और इसका लगभग दो तिहाई हिस्सा पाकिस्तान के अवैध अधिकार में है। भौगोलिक रूप से 32°-78′ से 36°- 58′ उत्तर तथा 73°-27′ से 80° -72′ पूर्व की सीमा में यह प्रदेश स्थित है। इसके तीन भाग हैं — लद्दाख (बौद्ध बहुल), कश्मीर (आज इसमें 98 प्रतिशत मुसलमान हैं) एवं जम्मू (हिन्दू बहुल) तथा पूरे प्रदेश की आबादी साठ लाख के लगभग है, जिसमें पैंतीस लाख के लगभग कश्मीर घाटी की आबादी है। आज के ज़म्मू-कश्मीर प्रदेश को यह रूप डोगरा वंश के संस्थापक महाराज गुलाबसिंह ने उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में दिया था।

ऐतिहासिक संकेत

'नीलमत पुराण', 'राजतरंगिणी' तथा 'महाभारत' के संकेतों के आधार पर मगध नरेश जरासन्ध कश्मीर के राजा का सम्बन्धी था और कश्मीर नरेश गोनन्द प्रथम श्रीकृष्ण के साथ युद्ध में मारा गया था। उसकी गर्भवती विधवा को कृष्ण ने कश्मीर की (संभवतः विश्व की प्रथम नारी शासिका) रानी बनाया था। भारत युद्ध के समय कश्मीर का वास्तविक शासक बालक था, इस कारण उसने युद्ध में भाग नहीं लिया था।[1] भारत के बौद्ध सम्राट् अशोक के अधिकार में जब कश्मीर आया तब उसने श्रीनगर बसाया और कनिष्क (बौद्ध) के समय में कश्मीर में तीसरी बौद्ध महासभा हुई थी। कनिष्क के बाद कुछ दुर्बल हिन्दू राजाओं ने कश्मीर पर राज्य किया। उसके बाद मिहिरगुल नामक हूण आततायी का आक्रमण कश्मीर पर हुआ। तदुपरान्त कर्कोटक वंश का राज्य आठवीं शती ई० में आया और महान् राजा ललितादित्य मुक्तापीड़ ने 724 से 761 ई० तक राज्य किया और अपने काल में सिन्ध में अरब आक्रमणकारियों की शक्ति तोड़ी तथा पंजाब, कन्नौज, तिब्बत, लद्दाख, ईरान, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात, मालवा आदि जीते। इसके बाद 855-56 ई० में उत्पल वंश आया, जिसमें प्रसिद्ध राजा अवन्तिवर्मन हुआ, जब सूय्या अभियन्ता ने सोपुर बसाया। राजा क्षेमगुप्त की पत्नी दिद्दा, शाही (पुंछ) परिवार (काबुल) की थीं जो कि अनैतिक परन्तु तेजस्वी नारी थी, उसने महमूद गज़नवी को लुहारा से खदेड़ दिया था। 1089 से 1101 ई० तक राजा हर्ष ने राज्य किया। 1128 से 1155 ई० तक हिन्दू राजा जयसिंह ने राज्य किया जब कि मंगोल तथा तुर्कों ने हमले शुरू कर दिये। चौदहवीं शती के आरम्भ में जोज़ीला दर्रे से आकर

1. नीलमत पुराण, श्लोक, 9-10, जनमेजय—वैशम्पायन सम्वाद।

मंगोलों (दुलचा आदि) ने आक्रमण किये तथा लगभग साठ हज़ार हिन्दुओं का नृशंस वध किया । उस समय से हिन्दू राज्य समाप्ति पर आ गया । राजा सहदेव के इस काल में स्वात से शाहमीर, लद्दाख से रिंचन एवं दर्दिस्तान (अफगानिस्तान) से लंकर चक ने आक्रमण किये, तीनों को दुर्बल राजा ने जागीरें देकर घाटी में बसा दिया । रिंचन से राज्य हथियाकर तीन वर्षों तक राज्य किया (और आगे चलकर शाहमीर ने शाहमीरी तथा लंकर चक ने चक वंश की स्थापना की) । अन्तिम हिन्दू राजा उदयनदेव के समय में जब उसकी पत्नी कोटारानी राज चलाती थी तुर्कों ने आक्रमण किया और रिंचन (जिसे पंडितों ने हिन्दू नहीं बनाया—और जो मुसलमान हो गया था) ने भीतर से विद्रोह करके सिंहासन हथिया लिया था एवं अनेक हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाया । 1339 ई० में कोटारानी ने आत्महत्या कर ली क्योंकि उस समय शाहमीरी शक्तिशाली हो गया था और कोटा से बलात् विवाह करना चाहता था ।

मुस्लिमकाल

शाहमीर ने सुल्तान शम्सुद्दीन नाम से कश्मीर पर राज्य किया और उसका वंश 222 वर्षों (सन् 1561 ई०) तक चला । इसी वंश का भयंकर एवं निर्दयी बादशाह सिकन्दर 1389 ई० में गद्दी पर बैठा और असंख्य मन्दिरों-मूर्तियों को नष्ट करने के कारण सिकन्दर 'बुतशिकन' के नाम से ज्ञात हुआ । उसने बिजबिहारा का विशाल पुस्तकालय भस्म किया और घाटी के सारे (मार्तण्ड सूर्य-मन्दिर आदि) देवस्थान तोड़ दिये तथा अनेक के स्थानों पर मस्जिदें बना दीं । उसने हज़ारों लोगों को (जिन्होंने मुसलमान बनना स्वीकार नहीं किया) मौत के घाट उतार दिया, उस समय घाटी में केवल ग्यारह परिवार रह गये जिन्होंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था । उसकी नीति थी, मुसलमान बनो या मरो । कुछ हिन्दू इस समय घाटी से भाग भी गये थे ।

1420–1470 ई० तक कसाई सिकन्दर के बेटे जैनुल-आबिदीन ने राज्य किया जो दया तथा न्याय का अवतार था और 'बड़शाह' नाम से प्रसिद्ध हुआ । उसने हिन्दुओं के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार किया । 1561 से 1587 ई० तक चक वंश ने कश्मीर में राज्य किया और उस वंश के सम्राट यूसुफ शाह (जो कि शिया था) के समय में अकबर (सुन्नी) ने कश्मीर पर अधिकार कर लिया । शाहजहां तथा जहांगीर कश्मीर आये, उन्होंने पुराने स्थानों पर मुगलबाग लगवाये । ई० 1665 में एक बार औरंगज़ेब भी कश्मीर आया था । उसके गवर्नरों ने पुनः हिन्दुओं पर अत्याचार आरम्भ किये और बलात् धर्म परिवर्तन से बचने के लिए कश्मीर के हिन्दुओं ने नवम्

सिख गुरु तेगबहादुर जी की शरण ली, जिसके परिणामस्वरूप गुरु महाराज की औरंगजेब ने दिल्ली में हत्या करवा दी, फलस्वरूप दशमेश गुरु गोविन्द सिंह ने गद्दी संभाली थी।

अफगानकाल

मुगल शासकों के विरुद्ध कश्मीरी मुसलमानों ने अहमदशाह अब्दाली को निमंत्रण दिया जिसने मुगल छत्रप (गवर्नर) को हराकर कश्मीर पर कब्जा कर लिया। यह पठान शासनकाल (1752 से 1819 ई०) कश्मीरी हिन्दुओं के लिए सिकन्दर बुतशिकन के अत्याचारी शासन की पुनरावृत्ति का समय था और कश्मीर के इतिहास का सर्वाधिक भयानक काल माना जाता है, जिसका मूल आतंक एवं प्रपीड़न था। इस काल में अट्ठाईस दुर्रानी सरदारों ने राज्य किया।

सिखकाल

1819 ई० में पण्डित बीरबल धर महाराज रंजीतसिंह के पास सहायता मांगने गये और महाराज की सेना ने आकर पठानों को हराया, फिर सिखों ने 1819 से 1846 ई० तक कश्मीर में न्यायपूर्ण राज्य किया।

डोगराकाल

1846 ई० में सिखों से हथियाई गई इस जम्मू-कश्मीर रियासत को अंग्रेजों ने महाराज गुलाबसिंह को 75 लाख रुपयों में बेच दिया और फिर 1846 से 1947 ई० तक डोगरा शासन चला, जिसमें इन राजाओं ने राज्य किया : महाराज गुलाबसिंह (1846-57), महाराज रणवीरसिंह (1857-85), महाराज प्रतापसिंह (1885-1925) तथा महाराज प्रतापसिंह के भतीजे महाराज हरीसिंह (1925-47)।

स्वतंत्र भारत में विलय

1947 में भारत के स्वतंत्र हो जाने पर जम्मू-कश्मीर प्रदेश का विलय भारत गणतंत्र में हो गया, परन्तु नये बने मुस्लिम बहुल देश पाकिस्तान ने इसे हथियाने के लिए 1947, 1965 तथा 1971 ई० में युद्ध किया और इस प्रदेश के दो तिहाई क्षेत्रफल को अन्तर्राष्ट्रीय अभिसंधि की सहायता से तथा भारत की सरकारों की दुर्बलता के कारण, हथिया लिया। वर्तमान में पाकिस्तान धर्म के आधार पर मुस्लिम बहुल कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियां चला रहा है, जिसके फलस्वरूप सारे हिन्दू घाटी से भाग गये हैं और प्रतिदिन की अग्नि-काण्ड एवं हत्याओं की घटनाओं ने इस सुन्दर ऋषिभूमि को रक्त में स्नान करा रखा है।

भारत की संस्कृति में कश्मीर का स्थान

'रामायण' तथा 'महाभारत' काल से कश्मीर भारतीय संस्कृति का केन्द्र रहा है और इसके उल्लेख-संकेत प्राचीन ग्रन्थों में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। देवताओं तथा असुरों के और गरुड़ तथा नागों के पूर्वज ऋषि कश्यप की यह तपस्या-भूमि है। वर्तमान सृष्टि के आदिपुरुष मनु को प्रलयकाल में संरक्षण यहीं मिला था। हिमशिलाओं से पटे सरोवर से आपूर्ण यह घाटी तब आवास योग्य नहीं थी, इसे आदि आर्यों के रहने योग्य महर्षि कश्यप ने बनाया था। अनेकानेक वर्षों तक 'जलोद्भवी' हिम-संकट से वे कैसे लड़े इसका उल्लेख आगे किया जायेगा।

'नीलमत पुराण' आदि प्राचीन ग्रन्थों से कश्मीर-निवासी आर्यों तथा नागों के सम्बन्धों के क्रमिक विकास पर प्रकाश पड़ता है। प्रथमतः आर्य लोग शीतकाल में घाटी से नीचे उतर आते थे, बाद को एक आर्य वैद्य ने जब एक नाग-नायक[1] का उपचार किया तो उस नाग ने वैद्य को केसर की गांठ (बल्ब) भेंट की थी। इस घटना से नागों और आर्यों के मित्रतापूर्ण सम्पर्क का आरम्भ होता है। कालान्तर में आर्यों (कश्मीर के) तथा नागों के सम्बन्ध मधुर हो गये। उत्तर-पश्चिमी प्राचीन भारत में नागों का वर्चस्व था। महाभारत के युद्ध में श्याम वर्ण के कथित अनार्य ग्वाले कृष्ण से, अपने को शुद्ध आर्य कहनेवाले क्षत्रियों का विरोध था, जिनमें कंस, रुक्मि, शिशुपाल, जरासन्ध आदि कौरव-पक्ष के समर्थक शामिल थे। कश्मीर, सिन्धु देश, गान्धार (आज का अफगानिस्तान) आदि प्रदेशों के, अपने को आर्य कहने वाले वीर भी कौरवों के समर्थक थे। इसी कारण सारे नाग जाति के लोग कृष्ण तथा पाण्डवों के विरुद्ध थे। कृष्ण ने 'कालिया नाग' का दमन किया, परीक्षित को नागों ने छल से मारा और फिर जनमेजय ने नागों का सर्वनाश करना आरम्भ किया। एक कश्मीरी ब्राह्मण (आर्य) ने तक्षक आदि नागों की रक्षा की, यह कथा 'महाभारत' में वर्णित है। अन्त में छल से नागों ने कृष्ण की हत्या की, यादवों को आपस में लड़ाया और अर्जुन को हराकर गोपियों (यदुवंशी) का अपहरण किया।

इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में कश्मीर का भारतीय संस्कृति में क्या योगदान है, यह विषय विचारणीय है। कश्मीर, भारत की प्राचीन संस्कृति एवं हिन्दुओं के मूल धर्म से, अक्षुण्ण रूप से प्रभावित है। हिन्दुओं की प्राचीन संस्कृति में ऐसे प्रतीक और

---

1. नाग एक मानव ज़ाति के लोग थे जिन्हें आगे चलकर फनधारी सर्पों के रूप में चित्रित किया जाने लगा।

चिह्न हैं जो कि अति प्राचीनकाल से आज तक चले आ रहे हैं। **मछली** के केवल विष्णु रूपी 'मत्स्यावतार' की बात ही नहीं कर रही हूँ, जन-जीवन और ललित कलाओं में भी मछली का 'मोटिफ' कलात्मक आकार के विभिन्न आयामों में पाया जाता है। **कमल** का महत्व इससे भी अधिक है। ब्रह्मा तथा लक्ष्मी के साथ ही उसका संसर्ग नहीं है अपितु अनेकानेक गाथाओं, अनुष्ठानों तथा कलात्मक रूपों में वह हमारी संस्कृति में अनुस्यूत है। **भोज-पत्र** (भूर्ज्व) पर प्राचीन ग्रन्थ लिखे जाते थे और **देवदारु** पवित्र लकड़ी है। ये सब कश्मीर में पाये जाते हैं। **हिम** यद्यपि पहाड़ों पर है और वह भी केवल हिमालय श्रेणी पर, फिर भी हिम का हमारी संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है और वह कैलास, गंगोत्री तथा भगवान शिव के हिम-कुन्देन्दु-कर्पूर-गौर रूप में प्रतिदिन स्मरण की जाती है। इसी प्रकार हिम, धतूरा, कमल तथा मछली का **जीवन**-आधार **'जल'** भी एक विशेष स्थान हमारी संस्कृति में रखता है। स्वयं भगवान विष्णु सागर में निवास करते हैं क्योंकि वह उनकी ससुराल (लक्ष्मी सागरपुत्री हैं) है, वैसे शिव भी (पार्वती के पति) हिमालय के घर में ही रहते हैं और ब्रह्मा तो स्वयं अपने श्वसुर हैं। **नाग** (मनुष्य तथा सर्प दोनों रूपों में) हमारी संस्कृति तथा इतिहास में एक विशेष स्थान रखते हैं, यह सर्वविदित है। **'सोम'** का वैदिक महत्व भी स्पष्ट ही है। इन सबके बाद पूजादि में **केसर** तथा **कस्तूरी** के महत्व की याद दिलाती हूँ। कश्मीर ही भारत का एकमात्र वह प्रदेश है जहां उपर्युक्त सारी वस्तुएं पाई जाती हैं और वहां के जीवन का अभिन्न, आवश्यक एवं महत्वपूर्ण अंग हैं। भारत में केसर तो केवल कश्मीर में ही पाया जाता है, यद्यपि अन्य स्थानों पर उसे उगाने के आज प्रयत्न किए जा रहे हैं।

नाग-जाति का मूल स्थान कश्मीर है। तक्षक यहां का निवासी था, यहां 'तक्षक-तीर्थ' भी है। नाग जल में रहनेवाले माने जाते हैं। हमारे यहां 'नाग' शब्द का एक अर्थ जल का स्रोत या धारा है। आज जो शोध-कार्य चल रहा है, उससे संकेत मिलते हैं सोम या तो भांग का एक रूप था (सोम तथा भांग की विशेषताएं समान हैं)[1] या कोई 'मशरूम' (कठफूला) था। ये दोनों ही बहुत बड़ी मात्रा में कश्मीर में पाये जाते हैं।

मनु महाराज की नौका हिमालय में जहां टिकी वह स्थान 'मनोरवसर्पण' भी कश्मीर में ही है, यद्यपि वह और शारदातीर्थ आज पाकिस्तान के आक्रमण और

---

1. भांग ही ऐसा मादक पेय है जो पीसा जाता है, दूध में, मट्ठे में, गरम या ठण्डा पिया जा सकता है और स्थायी हानि नहीं करता है।

अधिकार के कारण शेष कश्मीर से अलग-थलग हो गए हैं।

मैं यह कहने का प्रयत्न कर रही हूँ कि लगता है कि कश्मीर ही आर्यों का मूल उद्गम स्थान है। सिन्धु घाटी सभ्यता को विदेशी विद्वान, आर्येतर बताते हैं और यह मानते हैं कि आर्य पश्चिम से पूर्व की ओर आये थे तथा उन्होंने सिन्धु घाटी सभ्यता को नष्ट किया था। सिन्धु घाटी सभ्यता का समय वे 1500 ई० पू० से पीछे नहीं ले जाना चाहते क्योंकि, सिन्धु घाटी सभ्यता को आर्य सभ्यता मान लेने पर या उसे 1500 ई० पू० से पहले की मान लेने पर भाषा-वैज्ञानिक-भूगोल के आधार पर यह मानना होगा कि आर्यों की यात्रा पूर्व से पश्चिम हुई थी, यही मान्यता भारतीय विद्यापीठ के ग्रन्थ 'द वैदिक एज' में स्थापित की गई है। सिन्धु नदी में प्राचीन काल में प्रति 500 वर्ष भयंकर जलप्लावन आता रहा है उसी से यह सभ्यता प्रति लगभग 500 वर्ष नष्ट होती रही है। इसका काल 1500 ई० पू० से पहले नहीं है, यह मान्यता भी उचित नहीं है। 600 ई० पू० बुद्धकाल है, फिर उसके पूर्व लगभग 800 वर्षों में महाभारत काल तथा रामायण काल दोनों कैसे ठूंसे जा सकते हैं।[1] यही नहीं, वैदिक भाषा का संस्कृत बनना और पाली के बुद्धकालीन परिपक्व रूप में भ्रष्ट होना भी इतने छोटे से काल में सम्भव नहीं है। डा० एस० आर० राव ने द्वारका नगरी के प्राचीन समुद्र-गत अवशेषों को खोजकर कृष्ण (महाभारत) काल को कम से कम 3000 वर्ष ई० पू० का सिद्ध कर ही दिया। वैज्ञानिक परीक्षणों के सम्पन्न हो जाने पर यह काल और भी अधिक पीछे जा सकता है फिर सिन्धु घाटी सभ्यता केवल 1500 ई० पू० की कैसे हो सकती है? जो अन्तिम तर्क मैं उपस्थित कर रही हूं वह यह है कि विदेशी विद्वानों के प्रयत्नों के बावजूद आज यह सिद्ध हो गया है कि सिन्धु घाटी सभ्यता वैदिक सभ्यता थी। डा० राव ने सिन्धु घाटी की मुहरों (मुद्राओं) की भाषा की पहेली को लगभग हल करके यह सिद्ध कर दिया है कि वे वैदिक संस्कृति की हैं तथा सिन्धु घाटी के अवशेष मीलों तक पूर्व दिशा में पाये जाते हैं। 'मखनासन' शिव का रूप सिन्धु घाटी मुहरों पर अंकित है, यह भी उन्होंने सिद्ध कर दिया है। अतएव यह निर्भ्रान्त रूप से सिद्ध हो गया है कि आर्य पूर्व से पश्चिम में फैले थे, यही कारण है कि वेदों में कहीं भी यह संकेत नहीं है कि आर्य कहीं बाहर से आये थे। ई० पू० चार हज़ार वर्ष के काल में यहूदी लोग 'उर' नगर से पश्चिम की दिशा में गए थे और

1. 19-2-81 के 'हिन्दोस्तान टाइम्स' में प्रकाशित समाचार के अनुसार वेचर (विहार) में रामायणकाल का वाणफल मिला है जिसे वैज्ञानिकों ने 1500 से 1800 ई० पूर्व का माना है उससे पूर्व भी सिन्धु घाटी सभ्यता कम से कम 2000 से 3000 ई० पूर्व की होनी ही चाहिए।

इज़रायल में बसे थे, यह स्मृति उनकी परम्परा में आज भी चली आ रही है। प्राचीनकाल में कण्ठस्थ गाथाएं इस प्रकार की स्मृतियों को जीवित रखती थीं। अग्निपूजक पारसी ही वैदिक आर्यों के एक अंश नहीं थे अपितु हो सकता है कि आगे का शोध यह सिद्ध कर दे कि यहूदी भी पूर्व से पश्चिम (और आगे) यात्रा करने वाले आर्यों का ही एक अंश थे, फिर वे आगे यूरोपादि में फैल गए।

वेदों में स्पष्ट संकेत है कि आर्य लोग गौरवर्ण के, लम्बे, ऊंची नाक वाले, कपिंजल-केश तथा प्रायः नीली आंखों वाले थे। अच्छे पुरोहित की खोज के लिए ये ही संकेत वेदों में हैं। कश्मीर, पंजाब, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान (पाकिस्तान के पठान-क्षेत्र सहित) तथा आज के ईरान में आर्य रक्त के उपर्युक्त मुखमुद्रा के लोग पाये जाते हैं। ध्यान देने की बात यह है कि आर्य रक्त के लगभग 80 प्रतिशत लोग आज इस्लाम धर्म का अनुसरण कर रहे हैं। कश्मीर तथा पंजाब से चलकर आर्य रक्त के लोग भारत में फैले और उससे आर्यावर्त्त बना। आज आर्य-धर्म का पालन करने वाले भारतवासियों में बहुत ही क्षीण संख्या में आर्य रक्त के लोग पाये जाते हैं। परशुराम तथा अगस्त्य ने पश्चिमी समुद्र तट से होकर तथा विन्ध्याचल के पार जाकर धुर दक्षिण में आर्य-संस्कृति फैलायी। यद्यपि बात विचित्र लगेगी लोगों को, परन्तु मैं संकेत करना चाहती हूँ कि आर्य-अनार्य का झगड़ा व्यर्थ है। आज के हिन्दुओं में आर्य रक्त के लोग दो-तीन प्रतिशत ही होंगे तथा आर्य रक्त के अस्सी प्रतिशत से अधिक लोग आज इस्लाम के अनुयायी हैं। ईरान के पहलवी राजा अपने को 'आर्य मेहर' इसीलिए कहते थे।

इससे सिद्ध होता है कि आर्यों का उद्गम स्थान कश्मीर ही है। कम से कम मनु से आरम्भ होने वाली हमारी वर्तमान सभ्यता तथा संस्कृति कश्मीर से (मनोरवसर्पण के कारण) ही आरम्भ होती है। भूर्ज्यहोम (बुर्जाहोम, श्रीनगर) में जो खुदाई कुछ वर्ष पूर्व हुई थी उससे भी यही सिद्ध होता है, वैसे उसके वैज्ञानिक परीक्षण अभी चल रहे हैं।

कश्मीरी भाषा भी इसी दिशा में संकेत करती है। भारत में ऐसी अन्य कोई आधुनिक आर्य-भाषा नहीं है जो वैदिक संस्कृत की अपभ्रंश हो।[1]

ग्रियर्सन ने भ्रान्तिवश कहा था कि कश्मीरी भाषा दरद गोत्र की है। यह आज सिद्ध हो चुका है कि उसका व्याकरण ही वैदिक संस्कृत का नहीं है, अपितु उसमें

---

1. देखिए, वितस्ता (कश्मीरी भाषा विशेषांक)— सम्पादक डा० रमेशकुमार शर्मा, प्रकाशक हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर।

आज भी (सामान्य बोलचाल में) अनेक ऐसे शब्द पाये जाते हैं जो वैदिक संस्कृत के हैं और आगे चलकर संस्कृत में भी लुप्त हो गए थे। अत्यधिक शीत के कारण उच्चारण में परिवर्तन हो जाने से ही हमें कश्मीरी भाषा विचित्र-सी लगती है। कश्मीर में इस्लाम के आगमन के बाद कश्मीरी भाषा में अरबी-फारसी के शब्द भी आ गए।[1] इस्लाम-पूर्व की कश्मीरी भाषा के अध्ययन से मेरा मन्तव्य स्पष्ट हो जायेगा। कश्मीरी उच्चारण का एक उदाहरण देती हूँ, आधुनिक 'घड़ी' शब्द कश्मीरी में 'गर' हो जाता है क्योंकि महाप्राण 'घ' का 'ग' हो जाता है (महाप्राण 'घ' ध्वनि कश्मीरी में नहीं है) अन्त की मात्रा लुप्त हो जाती है और 'ड़' तथा 'ढ़', 'र' में परिवर्तित हो जाते हैं। इसीलिए 'घड़ी' का 'गर' हो गया। संस्कृत में भी 'ड़' तथा 'ढ़' नहीं है, और कश्मीरी में भी नहीं है, उनको कश्मीरी भाषा-भाषी या तो 'ड' कहेगा या 'ढ' कहेगा या फिर 'र' में बदल देगा। यह भी एक प्रमाण कश्मीरी के संस्कृत गोत्रजा होने का है।[2]

यहां मैं 'कश्मीर' शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में कुछ कहना चाहती हूँ, जिसका सम्बन्ध कश्मीर घाटी की भौगोलिक स्थिति से है। अति प्राचीनकाल में कश्मीर की आज की लगभग 30 मील चौड़ी तथा 80 मील लम्बी घाटी एक प्याले के समान थी और जल से भरी थी, चारों ओर के पर्वतों से बन्द। कालान्तर में बारामूला की ओर से (खादनयार के पास) जल निकल गया और उस सरोवर (जिसे सतीसर कहते थे) का जल स्तर उतर गया और घाटी में उस सरोवर के चारों ओर लोग रहने लगे। इससे पूर्व, भरी झील के ऊंचे किनारों (जिन्हें आज भी 'करेवा' कहते हैं) पर लोग रहते थे।[3] भूकम्प की हलचल के कारण (कश्मीर संसार की भूकम्प-पट्टी पर है और भूकम्प से ही यह प्रदेश बना है) और यत्किंचित् मनुष्य-प्रयत्न से खादनयार (जिसका अर्थ है 'जहां खोदा गया हो') से जल बह निकला था। कथा यह है कि भगवती ने शारिका रूप धारण करके जल के राक्षस 'जलोद्भव' का वध किया था और कश्यप ऋषि की भूमि कश्मीर को रहने योग्य बनाया था। देवी ने जिन पहाड़ियों पर अपने शारिका रूप में पंजे रखे थे वे आज भी श्रीनगर में हैं, वे हैं 'हारी पर्वत' तथा शंकराचार्य की पहाड़ी। कश्मीरी में आरम्भ के 'श' का 'ह' हो जाता है। हारीपर्वत 'शारिका-पर्वत' है। पौराणिक साक्ष्य यह है कि जल में डूबी पृथ्वी को

---

1. देखिए, वितस्ता (कश्मीरी भाषा विशेषांक)— सम्पादक डा० रमेशकुमार शर्मा, प्रकाशक हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर।
2. वही।
3. श्रीनगर हवाई अड्डा ऐसे ही एक 'करेवे' पर आज स्थित है।

विष्णु भगवान् ने वाराह रूप धारण करके उबारा था, वह 'मूल वाराह' का स्थान ही 'वाराहमूल' आज 'बारामूला' है, जिसके पास खादनयार है । रहे-सहे जल को मानव-प्रयत्न से खादनयार के पास से खोदकर पहाड़ों से निकाला गया था । आरम्भ के दो, वाराह अवतार तथा मत्स्यावतार (मनोरवसर्पण) का सम्बन्ध कश्मीर से ही है। कश्मीर हमारी संस्कृति का आदि प्रदेश है । कश्मीर शब्द की व्युत्पत्ति 'कश्यपमीर' से नहीं है अपितु क + अश्म + ईर है । अर्थात् 'क' (जल) को 'अश्म' (पत्थरों) से निकालने (ईर) से जो क्षेत्र निवास योग्य बना वह कश्मीर है । ये ही प्रमाण 'नीलमत' पुराणादि प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं । कश्मीरी भाषा का कोशुर 'कश्मीर' का ही बिगड़ा हुआ रूप है। कश्मीर का सम्बन्ध रामकाल में ही भारत से था, इसके प्रमाण कश्मीर की उन प्राचीन परम्पराओं में पाये जाते हैं जिनके अनुसार राम सीता की खोज में कश्मीर तक आये थे ।[1] हमारे प्राचीन ग्रन्थों में कश्मीर तथा यहां के नरेशों के अनेक संदर्भ पाये जाते हैं। महाभारत के युद्ध के सम्बन्ध में कश्मीर नरेश का जिक्र है यद्यपि यह माना जाता है कि कश्मीर नरेश की सहानुभूति कौरवों के साथ थी । श्रीकृष्ण से युद्ध करते हुए कश्मीर के एक नरेश की मृत्यु हुई थी । फिर बाद को उसकी गर्भवती विधवा यशोमती को उसका राज्य कृष्ण ने दे दिया था ।[2] इसके संदर्भ सब विद्वानों को विदित हैं। कृष्ण की द्वारिका उजड़ जाने के बाद उनके साथ ब्रज से आए हुए अहीर-यादव तितर-बितर हो गए । गुर्जर प्रदेश (गुजरात) से भागे हुए कुछ लोग ब्रज को लौट गए और गूजर कहलाए । शेष गाय-बकरी चराते हुए भटकने लगे। पंजाब, अफ़ग़ानिस्तान और कश्मीर की घाटियों में आज भी वे गूजर खानाबदोश घूमते हैं । इस क्षेत्र के गूजर आज मुसलमान हैं, परन्तु उनके संस्कार-गीतों तथा अन्य परम्पराओं में आज भी कृष्ण की स्तुतियां एवं लीलाएं गायी जाती हैं।

महाभारत काल के बाद बौद्धकाल आता है । कश्मीर में बुद्धमत गौतमबुद्ध के 50 वर्ष बाद ही आ गया था । बुद्धमत की चौथी सभा कश्मीर में ही हुई थी । कनिष्क के समय में विशेष रूप से, कश्मीर बौद्धमत का केन्द्र था । कश्मीर से ही लद्दाख तथा तिब्बत (खोतान होते हुए) चीन, रूस, मंगोलिया और जापान को बुद्धमत गया था ।[3] कश्मीर में लगभग 800 वर्षों तक बौद्धमत का प्रभाव रहा, यद्यपि प्राचीन वैदिक धर्म

---

1. देखिए, वितस्ता (कश्मीरी भाषा विशेषांक)— सम्पादक डा० रमेशकुमार शर्मा, प्रकाशक हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर ।
2. वह सम्भवतः संसार की प्रथम स्त्री शासक थी ।
3. देखिए, बौद्धमत के 2500 वर्ष, प्रकाशन अनुभाग, भारत सरकार ।

साथ-साथ संघर्षरत रहते हुए अपना अस्तित्व बनाए था। यहां ध्यान देने की बात है कि आज भी कश्मीरी पंडितों के संस्कारों का रूप ठेठ वैदिक है । यह सही है कि कश्मीरी पंडितों का संस्कृत का उच्चारण आज भयावह स्थिति तक दूषित हो गया है परन्तु परम्पराएं अति प्राचीन एवं वैदिक कालीन ही हैं । आज इन वैदिक रीति-रिवाजों और संस्कारों की परम्परा या तो कश्मीरी पंडितों में पाई जाती है या केरल, कर्नाटक के ब्राह्मणों में ।

शंकराचार्य ने जब हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान किया और अस्वाभाविक, अप्राकृतिक तथा अवैदिक बौद्ध धर्म का मूलोच्छेद भारत से किया, तब वे कश्मीर तक आए थे । उनकी स्मृति में प्राचीन 'रुद्राद्रि' नाम की पहाड़ी आज शंकराचार्य पहाड़ी के नाम से जानी जाती है, जिस पर एक प्राचीन एवं भव्य, शिव का मंदिर स्थित है ।

एक समय था जब तक्षशिला तथा नालन्दा के प्राचीन विश्वविद्यालय अध्ययन-अध्यापन के केन्द्र थे । उत्तर-पश्चिमी भारत संस्कृत अध्ययन का केन्द्र अति प्राचीन काल से रहा है । पाणिनि (आज के अफगानिस्तान के) शालातुर के निवासी थे । दशरथ तथा धृतराष्ट्र की पत्नियां उसी प्रदेश की थीं जो अफगानिस्तान था । असुर-पुरोहित शुक्राचार्य[1] यहीं रहते थे, जिनकी पुत्री से यदुवंश आरम्भ होता है । कृष्ण उसी में आते हैं । और पीछे जाइये तो सारस्वत प्रदेश (पंजाब, हरियाणा आदि) में ही वेद रचे गए थे और इसी कारण कश्मीर-पंजाब, सीमाप्रान्त तथा अफगानिस्तान के सारे ब्राह्मण सारस्वत ब्राह्मण हैं ।

आगे चलकर कश्मीर संस्कृत के अध्ययन का केन्द्र बना । आज अनन्तनाग के पास 'बिजबिहारा' एक गांव है, जहां उन दिनों प्रसिद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय था, जिसमें एक लाख के लगभग पाण्डुलिपियां थीं और जिसे नृशंस राजा बुतशिकन ने भस्म कर दिया था, जब वह हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बना रहा था । आज कश्मीर की भाषा-संस्कृति के केवल वे ग्रन्थ उपलब्ध हैं जो तब तक कश्मीर के बाहर चले गये थे । यह तथ्य दर्शनीय है कि संस्कृत के महाकवि तथा नाटककार कालिदास ही कश्मीरी नहीं थे अपितु अन्य अनेक कवि तथा काव्यशास्त्री भी कश्मीर के थे । क्षीरस्वामिन, कल्हण, बिल्हण, मम्मट, आनन्दवर्द्धन, वामन, क्षेमेन्द्र, अभिनवगुप्त राजानक, क्षितिकण्ठ आदि बड़े-बड़े उद्‌भट संस्कृत विद्वान् कश्मीर ने भारत को दिये हैं । आज साहित्य-क्षेत्र में जो रस-सिद्धान्त सर्वमान्य है, वह तथा अन्य तीन

---

1. अफगानिस्तान का प्राचीन नाम अश्वस्थान था तथा वहां के राजा अश्वपति कहलाते थे ।

काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त कश्मीर में ही जन्मे और यहीं से शेष भारत को मिले थे। कश्मीरी शैवमत भी एक विशिष्ट देन है, जो कश्मीर ने भारत को प्रदान की है। वास्तव में शैव-सम्प्रदाय कश्मीर की ही उपज है और यहीं से दक्षिण की ओर गया है।

सिकन्दर बुतशिकन के पुत्र, उदारमना बड़शाह ज़ैनुलाबिदीन ने प्रवासी कश्मीरी पंडितों को फिर से कश्मीर लौटने की सुविधा दी और कुछ परिवार लौट भी आये, परन्तु औरंगजेब के काल में फिर से कश्मीर के हिन्दुओं पर अत्याचार हुए और उनसे घबड़ा कर मार्तण्ड के पण्डित मुकुन्दराम, गुरु तेगबहादुर की सेवा में आ गए और उनसे रक्षा की प्रार्थना की। यह इतिहास विदित तथ्य है कि गुरु तेगबहादुर ने कश्मीरी पंडितों के अनुरोध तथा बालक गोविन्दसिंह के कहने पर हिन्दुओं के धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया था। यह घटना न हुई होती तो, न तो 'मीरी-पीरी' उभरी होती और न गुरु गोविन्दसिंह का वह दशमेश रूप होता जो आगे चलकर उभरा और जिसके न होने पर उत्तर-पश्चिम भारत से हिन्दुओं का मूलोच्छेद हो गया होता, क्योंकि तब न बन्दा बहादुर होते और न हरिसिंह नलवा होते और 'पंज पियारों' की परम्परा के योद्धा-धर्मी सिक्ख भी न होते — सिख मत फकीरों का सम्प्रदाय मात्र होता।

कश्मीर में हिन्दू, बौद्ध, मुसलमान, सिक्ख, डोगरा तथा अंग्रेज शासक रहे हैं। चीन, तिब्बत, रूस, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि के राजनैतिक, व्यापारिक तथा सांस्कृतिक प्रभावों से कश्मीर प्रभावित रहा है, परन्तु सर्वदा एवं सर्वथा वह भारत का अभिन्न, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अंग रहा है, आज है और भविष्य में भी रहेगा। उपर्युक्त सभी धर्मों के समावेश से आज की कश्मीरी संस्कृति यत्किंचित् प्रभावित है। सिकन्दर बुतशिकन के जमाने में कश्मीर से भागे अनेक कश्मीरी पंडित देश के विभिन्न भागों में फैल गए थे और आज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं। 1942 ई० के स्वतन्त्रता संग्राम में भी कश्मीरियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। स्वतन्त्र भारत में तीन वर्षों को छोड़ कर आज तक प्रधानमंत्री कश्मीरी ही रहे हैं, उनका भारत के इतिहास में कैसा और क्या महत्व है, यह विवाद का विषय हो सकता है, परन्तु राज्य उन्होंने किया है, इसे नकारा नहीं जा सकता है।

हिन्दू धर्म, बौद्धमत, शैवमत, शक्तिपूजा ('कुल' का अर्थ शक्ति है तथा शक्ति के उपासक 'कौल' कहलाते हैं) विभिन्न (कुमारी-पूजा आदि) वामाचार, इस्लाम, सूफीमत (कश्मीरी सूफी मत अपने में विशिष्ट है और भारत में सर्वप्रथम सूफीमत

कश्मीर में ही आया था। कश्मीर का सूफीमत शेष भारत के सूफीमत से किंचित भिन्न भी है), आर्यसमाज (महाराजा रणवीर सिंह तथा महाराजा हरीसिंह ने इसके लिए विशेष कार्य किया था। महाराजा हरीसिंह आर्यसमाज को करोड़ों रुपयों की धनराशि दे गए थे) आदि सभी धर्मों-मतों के लोग आज कश्मीर में रहते हैं।

कश्मीर का मामला एक ऐसी समस्या है जिसके कारण भारत तथा पाकिस्तान में तीन बार युद्ध हो चुका है। कश्मीर भारत की राजनीति को आज विशेष रूप से प्रभावित कर रहा है और लगता यह है कि आगे भी करता रहेगा। देश का शीर्षस्थ यह प्रदेश महत्व की दृष्टि से भारत के इतिहास में सर्वदा शीर्षस्थ ही रहा है और आज भी है।

कश्मीरी के लोक-साहित्य में प्राचीन भारतीय संस्कृति के तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। यहां की लोक-कथाओं में दो सर्वाधिक प्राचीन हैं : 'हीमाल और नागराय' तथा 'अकिनन्दुन'। हीमाल (श्रीमाल) आर्यकन्या थी और नागराय (नाग जाति का एक सुन्दर युवक था) इन दोनों की प्रेम-कथा कश्मीर में अति प्रसिद्ध है। ऐसा संकेत इस कथा से मिलता है कि नागों तथा आर्यों का सहज जातिगत विरोध इस प्रेमी-युगल के क्रिया-कलापों से कम हो गया था और नाग तथा आर्य इसके बाद सौहार्द्र्यपूर्वक घाटी में रहने लगे थे। 'अकिनन्दुन' की कथा में वैदिक एवं पौराणिक तत्व खोजे जा सकते हैं। इस 'गाथा' के अनेक गद्य तथा पद्य-बद्ध रूप कश्मीरी में पाये जाते हैं। कश्मीरी की असंख्य लोक-कथाएं उन्नीसवीं शती तक की संस्कृति पर प्रचुर प्रकाश डालती हैं।

इसी प्रकार कश्मीरी लोक-नाटक (बांड जशन) के मूल तत्व भरत के नाट्य-शास्त्र में वर्णित 'भाण्ड' के तत्वों से ठीक-ठीक मेल खाते हैं और आज भी उसी रूप में मंचित होते हैं।

कश्मीरी के लोकगीतों, उसकी कहावतों तथा उसके मुहावरों से कश्मीरी का प्राचीन, मध्ययुगीन तथा अर्वाचीन भारत से अटूट सम्बन्ध सिद्ध होता है। भारत-विभाजन के बाद, पाकिस्तान के विषाक्त प्रचार के कारण कश्मीर के हिन्दुओं के प्रति वहां के मुसलमानों के मन में कटुता उत्पन्न की जा रही है (जो पहले थी ही नहीं) तथा मुसलमानों को भारत-विरोधी बनाने का सतत् प्रयास हो रहा है। उसका एक सांस्कृतिक दुष्परिणाम यह निकला है कि कश्मीरी मुसलमान (जो कि लगभग सारे पहले हिन्दू थे) कश्मीर की प्राचीन भारतीय संस्कृति के विरोधी ही नहीं बन गये हैं, अपितु कश्मीर के मुस्लिम-पूर्व इतिहास-संस्कृति को तोड़-मरोड़ कर देखने लगे

हैं। वास्तविकता यह है कि आज भी कश्मीर के गांवों में, वहां की भाषा में, वहां के लोक-साहित्य में, प्राचीन भारतीय संस्कृति के तत्व, कश्मीर के नगरों से अधिक पाये जाते हैं। कश्मीर घाटी में 99 प्रतिशत के लगभग मुसलमान हैं, हिन्दू अधिकतर नगरों में हैं और गांवों में तो एक-आध ही हिन्दू रहता है। नगर की भाषा में फारसी-अरबी (उर्दू) के कृत्रिम शब्द अधिक पाये जाते हैं और निरन्तर घुसेड़े जा रहे हैं। पुरानी सहज कश्मीरी भाषा आज भी गांवों के मुसलमानों में ही अधिक बोली जाती है। कश्मीरी के मूल रूप में संस्कृत शब्द अधिक हैं, वे शब्द फारसी से आये हैं या संस्कृत से यह झगड़ा आज भी चल रहा है। जैसे 'ओबुर' शब्द कश्मीरी में फारसी के 'अब्र' से आया है या संस्कृत के 'अभ्र' से यह विवाद का विषय है। प्राचीन फारसी तथा वैदिक संस्कृत लगभग एक ही थीं, इस कारण यह मामला और भी उलझा हुआ लगता है। वैसे इसका सहज हल यह है कि जो इस प्रकार के शब्द कश्मीरी में इस्लाम के आगमन से पूर्व की कश्मीरी में पाये जाते हैं, यह मान लेना होगा कि वे संस्कृत से आये हैं। जो इस्लाम के आगमन के बाद आये हैं उनका निर्णय उच्चारण, प्रयोग आदि वैज्ञानिक कसौटियों पर कस कर किया जा सकता है।

संसार के विद्वानों के एक वर्ग की मान्यता यह है कि लिखित इतिहास से भी अधिक प्रामाण्य लोक-साहित्य तथा लोक-प्रचलित परम्परायें हैं। जिस काल का प्रामाणिक या लिखित इतिहास नहीं मिलता उसका वृत्तान्त तो वैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण अध्ययन द्वारा लोक-साहित्य से ही दुहा जा सकता है। हां, 'फोक लिटरेचर' तथा 'फेक लिटरेचर' की विवेकपूर्ण पहचान करनी होगी क्योंकि अनेकानेक आधुनिक रचनाओं का रूप ऐसा 'छद्म' है कि उन्हें प्राचीन लोक-साहित्य के बाने में प्रस्तुत किया जा सकता है।

मेरा विचार है कि कश्मीरी में जितने मुहावरे और जितनी कहावतें हैं, सम्भवतः अन्य किसी भाषा में नहीं हैं। 'चिढ़ाने' के लिए रखे गये नामों (अंग्रेजी में 'निकनेम्स') की तो कश्मीरी में भरमार है और उनका विलग सांस्कृतिक महत्व है।

कश्मीरी भाषा में कश्मीरी साहित्य की पाण्डुलिपियां आज बहुत कम मिलती हैं। इस कारण कश्मीर के सांस्कृतिक परिवेश तथा इतिहास को उसके लोक-साहित्य के गहन अध्ययन के द्वारा ही खोजा जा सकता है और इससे कश्मीर भारत की एक अमूल्य धरोहर है, यह तथ्य सिद्ध किया जा सकता है।

कश्मीर की संस्कृति

वैसे तो कश्मीर की संस्कृति तथा सामान्य भारतीय संस्कृति में कोई आधारभूत भेद नहीं है क्योंकि वास्तव में प्राचीन कश्मीरी संस्कृति ही मूल भारतीय संस्कृति का प्राचीन आधार है, फिर भी भौगोलिक दूरी तथा दुरूह मार्गों के कारण कश्मीर का भू-भाग चूंकि शेष देश से वर्ष के अधिक समय तक कटा-सा रहता था इसलिए भारत में कश्मीर के प्रति, आधुनिक काल में, अनजानेपन का अहसास-सा पनप गया था। चौदहवीं शती से इस्लाम कश्मीर में पनपने लगा और क्रमशः सामान्य शेष-भारतीय हिन्दू के मन में कश्मीरियों के प्रति अजनबीपन और भी बल पा गया। शेष-भारतीय मुसलमान भी अपने को कश्मीरी मुसलमानों से किंचित भिन्न ही मानते थे।

पं० जवाहरलाल नेहरू तथा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तो यह मानते थे कि विश्व-संस्कृति ही वास्तव में संस्कृति है और उसे उत्तर भारतीय अथवा दक्षिण भारतीय, कश्मीरी अथवा पंजाबी, बंगाली अथवा मराठी, अंग्रेजी अथवा रूसी आदि भेदों में नहीं बांटा जा सकता, परन्तु यह विचार उतना ही भ्रामक है जितना सत्य पं० नेहरू तथा पं० मदनमोहन मालवीय के सांस्कृतिक धरातल (तथा उसकी संवेदना) का मूलभूत भेद है। कहने का तात्पर्य यह है कि कश्मीरी संस्कृति जैसी कोई विलग वस्तु है जो कि दक्षिण भारतीय या लद्दाखी संस्कृति से किंचित् भिन्न है और उसकी विशेषताओं का संक्षिप्त संकेत यहां आवश्यक है :

(1) कश्मीरी संस्कृति में प्राचीन नाग, पिशाच (या कहिये गान्धारी-राक्षसी) तथा आदिम आर्य संस्कृति के साथ-साथ दरदी (इसे भी कुछ लोग गान्धार की ही मानते हैं) संस्कृति के तत्व मिश्रित पाये जाते हैं, जैसा कि डा० वेदकुमारी ने अपनी पुस्तक नीलमत पुराण भाग-1 में संकेत किया है।[1] जहां तक धार्मिक प्रभावों का सम्बन्ध है कश्मीरी संस्कृति में वैदिक, वैष्णव, शैव, शाक्त, बौद्ध, मुसलमानी,[2] सिख तथा ईसाई मान्यताओं के सूक्ष्म तत्व भी पाये जाते हैं। कुछ बातों में कश्मीरी (हिन्दू मुसलमान दोनों) घोर परम्परावादी हैं और कुछ में अति आधुनिकतावादी।

(2) अतिशीत के कारण कश्मीर की भाषा और रहन-सहन पर भी प्रभाव

---

1. पृ० 158 से 188 (प्रकाशक, ज० क० अकादमी)।
2. 40-50 वर्ष पूर्व तक कश्मीरी हिन्दू कन्या के दहेज़ में 'बुर्का' भेजा जाता था।

पड़ा है। कांगड़ी (काष्टांगारिका) का आविष्कार प्राचीन है, तो नौका आवास (हाउस बोट) का तुलनात्मक रूप में नया है । कांगड़ी का अभिन्न साथी असली कश्मीरी परिधान फिरन नाम का चोगा भी कश्मीर की अपनी विशेषता है । ग्रीष्म-प्रदेशों में प्रथम वर्षा पर जैसे उत्सव मनाया जाता है वैसे ही कश्मीर में प्रथम हिमपात पर उत्सव मनाया जाता है तथा एक-दूसरे को, विशेषकर बड़ों को बधाई दी जाती है। कश्मीर में गन्ना (तथा शक्कर-खांड़) नहीं होता, अतएव यहां के निवासी मीठा नहीं खाते थे, नमक का अधिक प्रयोग करते हैं। यहां तक कि प्राचीन परम्परानुसार कन्या के दहेज और विदा में नमक भेजा जाता था। एक समय था, नमक सिक्कों के रूप में प्रयुक्त होता था । मकानों की बनावट हिम एवं शीत के कारण एक विशेष प्रकार की हो गई है।

(3) जल के आधिक्य के कारण आवागमन अधिकतर नौकाओं से होता था और उसका प्रभाव भाषा पर भी पड़ा है।

(4) भोजन में चावल तथा मांस का अधिक प्रयोग है। मांस भेड़ का ही खाया जाता है। कश्मीरी पण्डितों के धार्मिक अनुष्ठानों (श्राद्ध, विवाह, पूजादि) में भी मांस पकाया जाता है, कुछ में वर्जित भी है।

(5) 'नीलमत पुराण' में वर्णन है कि कश्मीर में स्त्रियों को अत्यधिक आदर-सम्मान दिया जाता था । यशोमती सम्भवतः संसार की प्रथम नारी-शासिका थी[1] (क्लियोपेट्रा से भी पूर्व काल की) और आज भी कश्मीरी समाज में स्त्रियों की ही बात मान्य होती है। 'नीलमत पुराण' में कुमारी कन्याओं की जलक्रीड़ा[2] के निर्देश ही नहीं हैं अपितु उपवनों में स्त्रियों के साथ भोजन के साथ उत्सव मनाने के आदेश हैं।[3] मदनोत्सव (देश में अन्य किसी प्रदेश में यह नहीं मनाया जाता) पर पति को आदेश था कि वह पत्नी को स्वयं स्नान कराये और उसकी पूजा करे ।[4] पुष्पों से श्रृंगार[5], बन्धु-बान्धवों के साथ दावतें खाना[6], सामाजिक कार्यों में पुरुष-समान भाग लेना[7] भी 'नीलमत पुराण' में वर्णित है। ये सारे तत्व आज भी कश्मीरी समाज में पाये जाते हैं। कश्मीरी संस्कृति में 'नीलमत पुराण' में वर्णित पुष्प-प्रेम[8] आज भी पाया जाता है। अति प्राचीन काल में जन्मी ये मान्यताएं कश्मीरी समाज की संस्कृति में आज भी परिलक्षित होती हैं।

---

1. श्लोक 8-9 ।
2. श्लोक 741 ।
3. श्लोक 723
4. श्लोक 679-82 ।
5. श्लोक 681 ।
6. श्लोक 691-2 ।
7. श्लोक 385-86, 547, 670 ।
8. श्लोक 511-14, 698 ।

(6) जिन्हें शेष भारत अछूत कहता है उन निम्न वर्ग के (प्राचीनकाल में शूद्र कहे जाने वाले) लोगों के प्रति छुआछूत की भावना कश्मीरियों में नहीं है। आज भी उनके हाथ से खान-पान चलता है। यह इस्लाम का प्रभाव नहीं है अपितु प्राचीन मान्यता है। 'नीलमत पुराण' में वर्णन है कि शूद्र भी राजा के राज्याभिषेक में भाग लेते थे और उनका मुखिया राजा को स्नान[1] कराता था, उसके लेप लगाता था।[2] यही नहीं सिख शासन के बाद से आज से पचास-साठ वर्ष पूर्व तक (शेख मुहम्मद अब्दुल्ला काल से पूर्व) कश्मीरी समाज में हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य भी अधिक नहीं था। सूफियों-शैवों-वैष्णवों में आपसी सद्भाव था, जिसका प्रमाण नुन्द ऋषि तथा लल्लेश्वरी हैं। यहां के लोगों में साधुओं, पीरों, फकीरों तथा सिद्धों-योगियों के प्रति विशेष श्रद्धाभाव पाया जाता है और इसी कारण कश्मीरी अपनी ऋषि-परम्परा के प्रति अति सजग माने जाते हैं। हिन्दुओं के 'सरनेम' क़ाज़ी, सुल्तान तथा मुल्ला आदि हैं और मुसलमानों के पण्डित, भट्ट, कौल, राठौर तथा रैना आदि मिलते हैं।

(7) **ललित कलाएं :** कश्मीर में आवास एवं मन्दिरों में पत्थरों का प्रयोग प्राचीन काल से होता आया था, मुस्लिम काल में लकड़ी के प्रयोग का बाहुल्य हो गया। ई० पू० चौथी-पांचवीं शती के मन्दिरों तथा महलों के अवशेष यहां पाये जाते हैं। भारत के मुख्य तीन सूर्य मन्दिरों में[3] से एक, मार्तण्ड मन्दिर यहां की वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण था जिसे सिकन्दर बुतशिकन ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। कुछ विद्वानों का मत है कि इस पर ग्रीक (स्तम्भ-शैली) स्थापत्य का प्रभाव है, यद्यपि वर्तमान खण्डहरों के नीचे अन्य तीन स्तरों पर अन्य मन्दिरों के अवशेष होने के संकेत खुदाई में मिले हैं। कश्मीर मूर्तिकला एवं चित्रकला के लिए अति प्राचीनकाल से प्रसिद्ध रहा है। इस्लाम के आगमन के बाद ये दोनों कलाएं नष्ट हो गईं। मुसलमान शासकों द्वारा तोड़ी गई असंख्य मूर्तियां (संग्रहालयों में) इसका प्रमाण हैं। चित्रकला में कश्मीर की अपनी विलग शैली (कलम) थी, जिसके अवशेष अब केवल लद्दाख में पाये जाते हैं।[4] संगीत-नृत्य के प्रेम के लिए कश्मीरी सदा प्रसिद्ध रहे हैं, परन्तु मुस्लिम काल (विशेषकर पठान शासन) में संगीत-नृत्य का ह्रास हो गया, बाद को मुसलमानों में सूफियाना संगीत की एक विशिष्ट विधा पल्लवित हुई और छकरी,

---

1. श्लोक 847-48 2. श्लोक 856-58
3. अन्य दो हैं, कोणार्क तथा मोड़ेरा का सूर्य मन्दिर।
4. लद्दाख के भिति-चित्र तथा कश्मीर— डा० अजयकुमारसिंह; वितस्ता के वातायन—सं० डा० रमेशकुमार शर्मा, पृष्ठ 102-9।

रुफ आदि का प्रचलन हुआ। हिन्दुओं में केवल संस्कार-गीत रह गये हैं। कश्मीर में अपनी विशेष नृत्य-संगीत की विधाएं आज अति दुर्बल तथा शोचनीय अवस्था में हैं। आज कश्मीर में तीन वाद्य यंत्र विशेष रूप से प्रचलित हैं — रबाब (जो कि सम्भवतः विदेशी है), तुम्बकनारी (चमड़े से मढ़ी होती है) और सन्तूर जिसका विकास जम्मू वालों ने किया है। साहित्य के क्षेत्र में कश्मीर का योगदान अद्वितीय है। कश्मीरी महिलाएं प्रचीन काल में संस्कृत बोला करती थीं। कालिदास कश्मीरी थे, अभिनवगुप्त आदि काव्य-शास्त्र (तथा दर्शन) के पांच में से चार साम्प्रदायों के आचार्य कश्मीर के थे। बाण, कल्हण, बिल्हण आदि अनेकानेक अन्य नाम हैं। वास्तव में अकेले कश्मीर ने संस्कृत साहित्य में जो योग दिया है, भारत के अन्य प्रदेशों ने उतना नहीं दिया है। कश्मीरी भाषा का अपना अपरिमित साहित्य था। सिकन्दर बुतशिकन ने बिजबिहारा के विशाल पुस्तकालय को जब भस्म किया तब उसमें कई लाख पाण्डुलिपियां थीं। आज भी कश्मीरी भारत के संविधान द्वारा मान्य भाषा है। कश्मीर कविता, केसर, कस्तूरी, कमल तथा कामिनियों के लिए ही प्रसिद्ध नहीं था, अपि[illegible]ु अति प्राचीन काल से यहां नाटक तथा रंगमंच की परम समृद्ध परम्परा थी। [illegible]लमत पुराण' में 'रंगजीवी'[1] शब्द का प्रयोग करके उन्हें दान (प्रेक्षादान)[2] देने के कर्तव्य की ओर संकेत है। कश्मीर में जो लोक-नाट्य 'बांड जशन' (या बांड पथर) आज प्रचलित है, वह भरतमुनि के भाण्ड (कश्मीरी में भाण्ड का बांड हो जाता है) के नियमों का पालन करता है। कश्मीरी में कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि की रचना आज भी होती है।

कश्मीरी हिन्दुओं की धार्मिक परम्पराएं तथा उनके रीति-रिवाज आज भी शुद्ध वैदिक परिपाटी पर होते हैं, मुसलमानों ने इस्लाम की रिवायतें स्वीकार की हैं परन्तु उनके लोक-गीतों में आज भी प्राचीन हिन्दू-तत्व पाये जाते हैं।

कश्मीरी भाषा

कश्मीर की संस्कृति को समझने के लिए कश्मीरी भाषा का सांकेतिक परिचय आवश्यक है। कश्मीरी भाषा की मूल-लिपि शारदा लिपि थी, जो आ[illegible] केवल कश्मीरी पण्डितों के पुरोहितों तक सीमित रह गई है। आज इस्लाम के प्रभाव से परिवर्द्धित फ़ारसी लिपि में कश्मीरी लिखी जाती है, परन्तु कश्मीरी की सारी ध्वनियों

1. श्लोक 769।
2. श्लोक 795।

हिन्दी स्वर :— अ आ इ ई उ ऊ

शारदा (कश्मीरी) लिपि.

ए ऐ ओ औ अं अः

हिन्दी व्यंजन :— क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ

1 2 3 4 5

6 7 8 9 0

को उसमें लिखा ही नहीं जा सकता और उस लिपि में लिखी कश्मीरी को कश्मीरी भाषा-भाषी ही पढ़ सकता है, यही स्थिति शारदा लिपि की भी थी। अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि-चिह्नों के साथ देवनागरी में कश्मीरी लिखी जा सकती है।

सर्वप्रथम ग्रियर्सन ने कश्मीरी भाषा पर अपने विचार व्यक्त किये। ग्रियर्सन ने कुछ कश्मीरी पण्डितों से टिप्पणियां लिखवाकर उन पर अपनी ('लिंग्विस्टिक सर्वे') पुस्तकों में राय दे दी। जैसी भारतीयों की प्रवृत्ति है, गोरे साहब की बात को ब्रह्म-वाक्य मानकर उन्होंने स्वीकार कर लिया। कश्मीर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में दस वर्ष के शोध एवं सर्वेक्षण कार्य के बाद यह सिद्ध हो गया है कि कश्मीरी भाषा वैदिक भाषा की अपभ्रंश है[1] और उसकी व्याकरण पूर्णरूपेण संस्कृत-व्याकरण के अनरूप है।[2] कश्मीरी भाषा में संस्कृत के शब्दों की धातुएं ही सुरक्षित नहीं है अपितु कुछ ऐसे शब्दों का आज भी प्रयोग होता है जो केवल वैदिक भाषा में थे और आगे चलकर संस्कृत में लुप्त हो गए।[3] इस्लाम के आगमन के बाद अरबी-फ़ारसी के (पहचान में आ जाने वाले) शब्दों का भी प्रयोग होने लगा, वह भी अरबी-फ़ारसी-उर्दू पढ़े-लिखे लोगों द्वारा। गांव की सहज, पुरानी, मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त कश्मीरी में आज भी संस्कृत मूल के शब्द अधिक पाये जाते हैं। आज कश्मीरी भाषा शेष देश के लोगों को विचित्र इस कारण लगती है कि उसके उच्चारण नियम बदल गये हैं। कश्मीरी में संस्कृत के ही समान ड़ और ढ़ नहीं है, ड तथा ढ ही है। नीचे मैं कश्मीरी भाषा के कुछ उच्चारण-नियमों का संकेत कर रही हूँ :

(1) शब्द के आरम्भ का उ 'व' में परिवर्तित हो जाता है, जैसे—उमावती, ओंकार, वमावती वोंमकार बन जाते हैं।

(2) आरम्भ का श, ष 'ह' में बदल जाता है, जैसे—श्वान का 'हून'। श का 'ह' और मध्य का व 'उ' में बदल गया। 'शुन' से 'हून' की व्युत्पत्ति और भी सरल है।

(3) ण का उच्चारण 'न' होता है। हिन्दी के ड़ तथा ढ़ 'र' बन जाते हैं।

(4) शब्द के अन्त की सारी मात्राएं लुप्त हो जाती हैं, जैसे—छकरी का छकर,

---

1. वितस्ता (कश्मीरी भाषा विशेषांक, खण्ड 10, अंक 1) सम्पादक डा० रमेशकुमार शर्मा, प्रकाशक : कश्मीर विश्वविद्यालय, पृष्ठ 2।
2. वही, पृष्ठ 32-39 तथा 109-110।
3. वही, पृष्ठ 18-30।

उड़ी का वुर, जम्मू का ज़म्म । ज के नीचे बहुधा बिन्दी लग जाती है, जैसे —पूज़ा । ज भी बोला जाता है । **ज़ल** तथा **जल** में अर्थ का भेद है, जल पानी है परन्तु ज़ल पेशाब है ।

(5) आरम्भ की ओ की मात्रा ऊ में बदल जाती है, जैसे—डोगरा का डूगरा । आरम्भ की ए की मात्रा बहुधा ई में बदल जाती है, जैसे —केशव, रेशम, सेवा बदल कर कीशव, रीशम तथा सीवा हो जाते हैं ।

(6) कश्मीरी लोग मिश्रित वर्ण नहीं बोल पाते तथा फ़ को फ ही कहते हैं, जैसे—फ़िजिक्स को 'फिजिकस', साइन्स को 'साइनस' । ब्रज भाषा भाषी स्कूल को इस्कूल कहेगा तो कश्मीरी 'सकूल' कहेगा ।

(7) क्ष यदि अन्त में है तो बहुधा छ बन जायेगा , जैसे—अक्ष, लक्ष का अछ तथा लछ , परन्तु यदि क्ष आरम्भ में है तो ख बन जायगा ।

(8) महाप्राण का उच्चारण कश्मीरी बहुधा नहीं करते, जैसे—ध, घ , भ को द, ग, ब, ही कहेंगे इसीलिए भट्ट का 'बट' हो जाता है, **क्योंकि द्वित्तों को भी वे नहीं बोलते ।**

(9) कुछ विशेष ध्वनियां भी कश्मीरी में हैं, जैसे—च़ तूं, (तूर का अर्थ बढ़ई का बसूला है, तूंर का अर्थ ठण्ड है) अनेक अर्ध मात्राओं का प्रयोग भी कश्मीरी में होता है, ओ, ऐ तथा आ की मात्राओं के अर्ध रूप हैं । घड़ी को कश्मीरी में गर कहते हैं । घ का ग (अर्थ अ के साथ) ड़ का र और अन्त की मात्रा लुप्त ।

(10) संस्कृत के समान र तथा ल में अभेद भी इसमें पाया जाता है ।

(11) आरम्भ की मात्रा भी लुप्त हो सकती है अतः कश्मीरी शिवजी को **शवजी** कहते हैं ।

(12) आरम्भ की इ 'य' में बदलती है, जैसे इन्द्रावती का यन्द्रावती तथा इन्द्र का यन्द्र ।

(13) रघुनाथ का रोगनाथ हो जाता है क्योंकि घ का बना ग तथा घु की उ मात्रा ओ बनकर र पर जा लगी । उ तथा ओ की मात्राओं का पारस्परिक परिवर्तन इसका कारण है ।

(14) हिन्दी में जैसा बहुधा होता है, वैसे ही कश्मीरी में भी ऋ र में बदलती है, यथा पृ का प्र ।

(15) अनुस्वार के स्थान पर अथवा कभी-कभी अनायास अधिक र जुड़ जाता है,

जैसे — पुंछ का प्रूछ ।

(16) त कभी-कभी थ में बदल जाता है—वितस्ता का व्यथ ।

(17) संस्कृत त बदलकर च तथा ल बदलकर ज भी बनता है, जैसे—त्व का च़ और तूलिका का तुज[1] ।

इन सब उच्चारण-परिवर्तनों तथा ध्वनि-विकारों का मूल कारण घोर शीत-जन्य मुख-सुख है । संस्कृतमूलक शब्दों को इन नियमों के अनुसार पहचानने में कोई बाधा नहीं होती । उदाहरणत: पर्वत चोटी का नाम था श्वान श्रृंग, आज कश्मीरी कहते हैं **हून हैंग** । इससे नियम निकला ए की मात्रा का आरोप, कश्मीरी भाषा-भाषी 'हंसता है' को 'हेंसता है' कहेगा । आरम्भ के ब को कश्मीरी व बोलेगा । कश्मीरी में तू (च़) और आप (तोहि) के लिए शब्द है परन्तु तुम के लिए शब्द नहीं है, कभी-कभी कश्मीरी हिन्दी-उर्दू बोलते समय **'मेरा पिता कहता है'** या **'सर, तू क्या क्या बोलता है'**, जैसे प्रयोग कर जाते हैं ।

(18) अन्त के म तथा य बदलकर व हो जाते हैं, जैसे- नाम का नांव (आनुनासिक बना) तथा गाय का गाव ।

कश्मीरी भाषा पर कार्य करने वाले विद्वानों के लिए आवश्यक है कि वे संस्कृत तथा फारसी से भी परिचित हों एवं उन्हें भाषा-शास्त्र का भी ज्ञान हो, अन्यथा वे कश्मीरी भाषा की आत्मा तक नहीं पहुंच सकते और इस प्रकार की बातें कहने लगते हैं कि कश्मीर में आदरसूचक 'जू' इस बात का संकेत करता है कि कश्मीरी यहूदियों के वंशज हैं और कश्मीरी हेब्रू से निकली है ।[2] उन (केवल फारसी जानने वाले) छद्म विद्वानों को यह पता ही नहीं है कि जू का प्रयोग **ब्रज** (ललाजू) बुन्देली (मुसाहिबजू) तथा राजस्थानी (ठाकुरजू) आदि भारतीय बोलियों में भी होता है और उनका कश्मीरी के समान हेब्रू से दूर का सम्बन्ध भी नहीं है ।

---

1. कश्मीरियों का संस्कृत का उच्चारण बहुत उल्टा-सीधा होता है, परन्तु कश्मीरी पण्डितों का कहना है कि देवी-भगवती का उन्हें वरदान है जिसके फलस्वरूप अशुद्ध उच्चारण की उपेक्षा करके देवी-देवता उनके अर्थ-तात्पर्य को समझ लेते हैं ।
2. हाजनी साहब के भाषणों का संग्रह ।

कश्मीरी लोक-साहित्य के मूल-स्रोतों का संक्षिप्त परिचय

कश्मीर का भारतीय संस्कृति में अति महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक काल में ही कश्मीर घाटी में आर्यों, नागों, चौपानों, यक्षों, पिशाचों, डोमों, गन्धर्वों, निषाधों तथा दमरों (आदिम जातियां तथा जनजातियां) आदि की उपस्थिति के संकेत मिलते हैं। अधुनातम उत्खननों से तो यह संकेत भी मिलते हैं कि वैदिक काल से पूर्व भी वहां गुफाओं तथा गर्तों-गड्ढों (अंग्रेजी में 'पिट') में आदिम मनुष्य निवास करते थे। इन आर्यों, नागों, यक्षों-गन्धर्वों के संकेत कश्मीर घाटी की जल-हिम-प्रधान-संस्कृति तथा उसके लोक-साहित्य में पाये जाते हैं। कालान्तर में बौद्ध, इस्लामी, ईसाई (अंग्रेज), सिख तथा डोगरी शासन के कारण इनका समावेश भी यहां के लोक-साहित्य में हो गया। अंग्रेज 'साहब' का चित्रण आज भी यहां के लोक-नाटकों (भांड़-जश्न) में बड़े मज़ेदार ढंग से किया जाता है। इस्लाम के आगमन के बाद से फारसी गाथाओं का समावेश भी यहां के लोक-साहित्य में हुआ। मुसलमानों के अनेक वर्ग कश्मीर में पाये जाते हैं, जैसे – शिया, सुन्नी, अहमदिया (कादियानी) आदि। कुछ 'बहाई' सम्प्रदाय के अनुयायी भी घाटी में हैं।[1] लोक-साहित्य में इन सबका संकेत तो नहीं है, परन्तु शियाओं के विशिष्ट पेशों सम्बन्धी तथा मुहर्रम सम्बन्धी विशेष साहित्य के संकेत मिलते हैं। कश्मीर में सूफियों के अनेकानेक 'तकिये' थे और आज भी सूफी-संगीत (सूफियाना मौसीकी) एक विलग संगीत-विधा के रूप में कश्मीर घाटी में प्रचलित है तथा पल्लवित हो रही है। ये सब कश्मीरी के लोकसाहित्य के आधार एवं स्रोत हैं।

प्राचीनकाल में कश्मीर घाटी को यहां के निवासियों ने तीन भागों में विभाजित कर रखा था। इस विभाजन का आधार पूर्णरूपेण सामाजिक तथा सांस्कृतिक था। बारामूला-सोपुर एक भाग था तथा दूसरा अनन्तनाग था। इन्हें 'कामराज' तथा 'मराज़' नाम दिये गये थे। श्रीनगर के आस-पास के भाग को 'यमराज' कहते थे। मान्यता यह थी कि कामराज़ तथा मराज़ (ग्रामीण खेतिहर क्षेत्र) जो कुछ उत्पन्न करते थे उसे नगर के (शासक वर्ग आदि) लोग खा जाते थे। आज भी इन तीनों क्षेत्रों के निवासियों की प्रवृत्ति भिन्न-सी है। सोपुर वालों के लिए प्रसिद्ध है कि आतिथ्य करने में वे भयंकर कृपण हैं। इन बातों के संकेत कश्मीरी के मुहावरों तथा कहावतों में पाये

---

1. कश्मीर घाटी में गूजरी, बल्ती, गुरेज़ी-शिन्या, पहाड़ी आदि अनेक बोलियां बोली जाती हैं, परन्तु हमारा अध्ययन कश्मीरी भाषा तक ही सीमित है।

जाते हैं। प्राचीनकाल में कश्मीर का द्वार रावलपिण्डी की ओर से बारामूला होता हुआ था तथा उस क्षेत्र के लोगों की वृत्ति-प्रवृत्ति इस निरन्तर आवागमन के कारण एक विशेष प्रकार की बन गई थी। इसी प्रकार वुलर झील के क्षेत्र की कश्मीरी भाषा तथा संस्कृति किंचित् विचित्र है और वहां की संस्कृति वहां के नौका-निवासियों के लोक-गीतों में चित्रित होती पाई जाती है।

कहावतों तथा मुहावरों के अतिरिक्त कश्मीरी का शब्द-भण्डार अपने में एक विलग लोक-संस्कृति का स्रोत है—खासकर यहां के नामों के अन्त की 'चिढ़े' या 'निकनेम्स'। बंसीलाल फ्रांस गये तो उनका नाम—'बन फ्रेंच' हो गया—बंसीलाल का छोटा रूप 'बन' है। डा० माधव कौल ने पैथोलोजी की रसायनशाला खोली तो सारा नगर उनसे 'माधव मुथुर' कहने लगा। 'मुथुर' का अर्थ है 'मूत्र'। एक सज्जन ने श्रीनगर में पहली बार 'अचकन' बनवाई तो उनका 'सर नेम' अचकन हो गया है, उनकी दुकान के बोर्ड तक पर 'अचकन' लिखा है। इसी प्रकार 'टेढ़ी गर्दन' वाले व्यक्ति का पीढ़ी-दर-पीढ़ी नाम 'कारहलू' (टेढ़ी गर्दन वाला) चला आ रहा है— इस प्रकार के असंख्यों नाम हैं- चरबच्चा (चिड़िया का बच्चा), ख़र (गदहा), थालचूर (थालीचोर) आदि। यहां तक कि अनेक अश्लील तथा गन्दे अर्थों वाले नाम हैं और लोग उन्हें लिखते हैं, उनका प्रयोग करते हैं। 'कौल' शब्द का अर्थ है शाक्त, 'कुल' का अर्थ है शक्ति। प्राचीन काल में शैव, शाक्त तथा वैष्णव आदि मतों के अनुयाइयों में परस्पर विरोध था। शाक्त चालाकी के लिए मशहूर थे, कहा जाता था कि, "भीतर से शाक्त हैं, बाहर से समाज में अपने को शैव कहते हैं क्योंकि जनता अधिकतर शैव है, परन्तु चूंकि राजा वैष्णव है इसीलिए राज-सभा में वैष्णव बनते हैं, ये 'कौल' नाना रूप धारण करके घूमते हैं।" लोक-संस्कृति तथा साहित्य के स्रोतों की दृष्टि से कश्मीरी भाषा के ये नाम तथा अनेक शब्द महत्वपूर्ण हैं। 'नाग' शब्द जल के स्रोत या झरने के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे गढ़वाल में किसी भी झरने को 'गंगा' कहते हैं, वैसे ही कश्मीरी में 'नाग' से पानी लाना कहा जाता है। इसी प्रकार यहां, वहां, इधर-उधर के लिए 'यपरि, तपरि,' 'हुपरि' आदि शब्द हैं जिनका अर्थ है—इस पार, उस पार आदि। ये इस बात के द्योतक हैं कि प्राचीन तथा मध्यकाल में जल-बहुला संस्कृति वाले कश्मीर में (वेनिस नगर की भांति) नौका ही सबसे बड़ा यातायात का साधन था। कश्मीरी भाषा का शब्द-भण्डार उसके नाम, कहावतें-मुहावरे आदि लोक-साहित्य एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

मन्दिरों, मस्जिदों तथा स्थानों के नाम (अनन्तनाग,वेरीनाग, नागबल आदि)

भी उस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। हिन्दू तथा मुसलमान धर्म-स्थानों (पवित्र स्थानों के) को 'अस्थापन' या 'अस्थान' कहते हैं। इनके नाम भी लोक-साहित्य एवं प्राचीन संस्कृति के अमूल्य स्रोत हैं। इनमें से अनेक ऐसे हैं, जो प्रथमतः हिन्दुओं या बौद्धों के थे और आज मुसलमानों के अधिकार में हैं। इसी कारण हिन्दुओं और मुसलमानों के अनेकानेक धर्मस्थान पास-पास हैं, जैसे – हरी पर्वत पर 'मखदूम साहिब' और 'शारिका मन्दिर', ख़ानकाह मुहल्ले में काली मन्दिर तथा मस्जिद।

कश्मीर के हिन्दुओं और मुसलमानों में सन्तों, ऋषियों, फकीरों, पीरों, औलियाओं, यहां तक कि लाल बुझक्कड़—पागलों तक का अलौकिक शक्ति-सम्पन्न समझे जाने के कारण बड़ा ही आदर-सम्मान होता है और उन्हें नुन्द ऋषि या लल्लेश्वरी की परम्परा में समझा जाता है, इस प्रकार के सन्त या फकीर भी लोक-साहित्य के स्रोत माने जा सकते हैं।

महिलाओं, विशेषकर वृद्धाओं को लोक-साहित्य का मूलाधार कहा जा सकता है। यह बात हिन्दुओं तथा मुसलमानों—दोनों के सम्बन्ध में सत्य है। केवल सूफ़ियाना मौसीकी ही एक ऐसा गायन है जिसमें स्त्रियों को औपचारिक रूप से भाग नहीं लेने दिया जाता। मुसलमानों के 'रुफ' तथा छकरी गायक लोक-गीतों के मूल स्रोतों में गिने जा सकते हैं। इसके साथ-साथ ईद तथा ख़तने के समय गाये जाने वाले मुसलमानों के संस्कार-गीत भी अति महत्वपूर्ण हैं। कश्मीर में लोक-गीत गायकों का एक विलग वर्ग है जो कि एक महत्वपूर्ण स्रोत है लोक-साहित्य का। हिन्दुओं के संस्कार-गीतों की एक अति समृद्ध लोक-साहित्य परम्परा है जिसमें जन्म से मृत्यु तक के (शोक-गीत) लोक-गीत आते हैं। इनके अतिरिक्त पुरोहितों तथा वृद्धाओं में प्रचलित भक्ति-गीत (लीलाएं) भी एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। छकरी, भांडपथर, रोफ और वनवुन कश्मीरी जनता के प्रिय संगीत के रूप हैं। 'छकरी' में स्त्रियों का मनोराग आभासित होता है। कश्मीरी वाद्ययन्त्रों में 'तुम्बकनारी', 'मटका', 'शहनाई', 'ढोल', 'नगाड़ा', 'सारंगी', 'सन्तूर' तथा 'रबाब' का प्रयोग होता है। सन्तूर का प्रयोग सूफ़ियाना संगीत में विशेष रूप से होता है। ध्यान देने की बात यह है कि सूफ़ियाना संगीत अधिकतर फारसी भाषा में होता है और 'रबाब' वाद्ययन्त्र भी ईरान से कश्मीर में आया है। कश्मीर में आरम्भिक-इस्लाम की कट्टरवादिता के कारण संगीत (औरंगज़ेब के शासनकाल में विशेष रूप से) तथा नृत्य आदि का स्वाभाविक विकास न हो सका, फलतः यहां का लोक-नृत्य एकदम अविकसित तथा जड़वत् सा बन गया है।'भांड़पथर' संस्कृत के शब्दों 'भाण्ड' तथा

'पात्र' से बना है। संस्कृत नाट्य-शास्त्र में 'भाण्ड' का जो शास्त्रीय मंचन निर्देशित है, ठीक वैसा ही आज भी 'भांडपथर' में पाया जाता है। अफ़गान तथा मुग़लकाल में 'भांडपथर' तथा अन्य लोक-संगीत-नृत्य विधाओं का सर्वनाश हो गया था। पठानों के काल में किशोर बालकों का प्रयोग मनोरंजन के लिए किया जाने लगा था।

नाविक, मांझी, मछुआरे (मछ्ली तथा सिंघाड़े वाले) कृषक आदि लोकगीतों, लोक-कथाओं के आदिम स्रोत हैं। धान रोपने से लेकर निराने, काटने आदि के गीत कृषकों में मिलते हैं। केसर की खेती करने वाले एक विलग प्रकार के लोक-साहित्य के स्रोत हैं।

जम्मू-कश्मीर की कलचरल अकादमी के पास लोक-साहित्य का बड़ा भण्डार है, जिसमें विभिन्न संग्रह तथा पाण्डुलिपियां सम्मिलित हैं। हिन्दी, उर्दू तथा कश्मीरी में प्रकाशित 'शीराज़ा' नामक पत्रिका इस अकादमी से प्रकाशित की जाती है और इसमें भी बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध है।

मजदूर, नाई, बुनकर (कालीनबाफ़)पच्चीकार, कुम्हार आदि विभिन्न पेशों के लोगों से भी लोक-साहित्य उपलब्ध किया जा सकता है। लोक-साहित्य के असली रूप को पाने के लिए कश्मीर के ग्रामों तथा पहाड़ियों में भटकना आवश्यक है, मन्दिरों तथा मस्जिदों में घूमना भी हितकर है।

इनके अतिरिक्त विभिन्न पुस्तकालयों तथा विद्वानों (विशेषकर पुरोहितों तथा पीरों) से भी सहायता मिल सकती है। कश्मीरी के लोक-साहित्य के सही आकलन के लिए शारदा तथा फारसी लिपि का ज्ञान भी आवश्यक है। कश्मीर के मुसलमानों में अनेक लोक-कथाएं तथा गाथाएं ऐसी प्रचलित हैं, जिन पर ईरान आदि मध्यपूर्व के देशों के लोक-साहित्य का पर्याप्त प्रभाव है। इस प्रकार के स्रोतों से पूर्ण लाभ उठाने के लिए यह आवश्यक है कि उन देशों की संस्कृति का न्यूनाधिक ज्ञान शोध-कर्ता को हो।

प्राचीन पाण्डुलिपियों के साथ-साथ कब्रों, मन्दिरों तथा शिलालेखों पर अंकित सूचनाएं भी महत्व की सिद्ध हो सकती हैं। पुरानी जन्म-पत्रियां, हकीमों तथा वैद्यों के पुराने नुस्खे भी इस दिशा में सहायक स्रोत बन सकते हैं। क़श्मीर के अधिकांश मुसलमान पहले हिन्दू थे और उनके अनेक नाम अब भी इसका संकेत करते हैं, जैसे– अब्दुल रशीद **कौल,** गुलामरसूल **पण्डित,** गुलाम जीलानी **भट्ट** तथा बशीरअहमद **राठौर** आदि। आश्चर्य की बात यह है कि इनमें अनेक ऐसे परिवार हैं जिनमें आज भी पुरानी जन्म-पत्रियां सुरक्षित हैं। अनेक मुसलमान ज्योतिष में

विश्वास करते हैं और वर्ष-फल बनवाते हैं तथा भविष्य जानने को हाथ दिखाते हैं। पुरानी जंत्रियां तथा पंचांग भी इस कारण लोक-साहित्य के अमूल्य स्रोत हैं। इसी कारण कुछ सरनेम (उपाधियां) ऐसे हैं जोकि हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों में प्रयुक्त होते हैं, जैसे—रैणा, कार, डार, शाह, काज़ी, मुल्ला, पीर, मीर, मुंशी, कौल, भट्ट आदि। सिख-शासनकाल में सिख धर्म स्वीकार करने वाले सिखों के सरनेम भी रैणा आदि हैं।

किसी भी भाषा के लोक-साहित्य के सभी स्रोतों की पूरी-पूरी सूची बनाना असंभव है। यहां मैंने कश्मीरी के लोक-साहित्य के कुछ मुख्य-मुख्य स्रोतों का संकेत मात्र किया है।

कश्मीरी के लोक-गीतों का वर्गीकरण

कश्मीरी के लोक-गीतों का वर्गीकरण करने की दिशा में जिन विद्वानों ने कार्य किया है उनमें प्रमुख हैं :

श्री मोहनकृष्ण दर, श्री देवेन्द्र सत्यार्थी, डा० रमेशकुमार शर्मा, डा० जवाहरलाल हण्डू, श्री बंसीलाल पण्डित 'परदेसी', श्री मोतीलाल 'साकी' तथा सुश्री निर्मला जाला। मैंने जो लोक-गीतों का संग्रह किया है उसके सन्दर्भ में, मैं अपना वर्गीकरण प्रस्तुत कर रही हूँ। मैं कोई मूलभूत नई बात कह रही हूँ या मेरा उपर्युक्त विद्वानों से कोई मतभेद है, ऐसी बात नहीं है। मुझे इन विद्वानों के वर्गीकरण से पर्याप्त सहायता भी मिली है।

प्रागैतिहासिक काल से भी पूर्व से कश्मीर घाटी सांस्कृतिक-धार्मिक रूप में भारत का अभिन्न अंग रही है। रामायण-महाभारत काल से तो इसके ऐतिहासिक संकेत भी मिलते हैं। कश्मीरी भाषा की व्याकरण पूर्णरूपेण संस्कृत की व्याकरण के समान है तथा कश्मीरी भाषा वैदिक भाषा की अपभ्रंश है, यह तथ्य कश्मीर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने निर्विवाद रूप से सिद्ध कर दिया है। कश्मीर घाटी में लोक-गीतों की अत्यन्त समृद्ध परम्परा है, जिसकी जड़ें अति प्राचीन इतिहास में खोजी जा सकती हैं। सिसली में चौथी शती ई० में जन्मे विद्वान यूहेमेरस की मान्यता के आधार पर संसार के विद्वानों ने उनके सिद्धान्त को 'यूहेमेरिज़्म' का नाम दिया है। इस सिद्धान्त की मुख्य मान्यता है : **"मिथक वास्तविक इतिहास से जन्मते हैं, और मिथकीय देवता वास्तव में इतिहास-पुरुषों के ही विराटीकृत तथा अलौकीकृत रूप हैं।"** लोक-गीतों का मुख्य उपजीव्य है मिथक तथा परम्परायें। यही कारण है कि अनेकानेक विदेशी विद्वान यह मानते हैं कि वास्तविक इतिहास के बीज लोक-साहित्य में ही मिलते हैं अतएव लिखित साहित्य से भी अधिक प्रमाणिक हैं—लोक-गीतों में पाये जाने वाले ऐतिहासिक संकेत। लिखित साहित्य बहुधा, इतिहासकारों के पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर भ्रामक रूप धारण कर लेता है। इसका एक प्रमुख उदाहरण है—अंग्रेजों द्वारा लिखा गया भारत का इतिहास, जिसकी तुलना में दूसरी ओर पं० सुन्दरलाल की 'भारत में अंग्रेजी राज्य' नामक इतिहास-पुस्तक को रखा जा सकता है। इतिहास-पुरुषों को विराट एवं अलौकिक रूप प्रदान करने के उदाहरण हैं – भगवान राम एवं भगवान कृष्ण।

सामान्यतः कश्मीर के लोक-गीतों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है।

हिन्दुओं के लोक-गीत तथा मुसलमानों के लोक-गीत। मैंने इस मोटे विभाजन को इस वर्गीकरण का आधार नहीं बनाया है, क्योंकि दोनों में अनेकानेक बीज-तत्व समान हैं। हां, कुछ लोक-गीत हिन्दुओं तथा मुसलमानों के अपने विशेष हैं, जैसे मुसलमानों के ख़तना सम्बन्धी गीत तथा हिन्दुओं के यज्ञोपवीत के गीत। इस प्रकार के विशिष्ट गीतों के साथ मैंने 'हिन्दू' तथा 'मुसलमान' शब्द जोड़ दिया है।

देश के अन्य भागों के समान ही कश्मीर में भी विभिन्न त्योहारों, अवसरों, उत्सवों, अनुष्ठानों तथा संस्कारों के समय लोक-गीत गाये जाते हैं। संस्कार आदि के गीतों को विशेषकर महिलायें ही गाती हैं।

श्रीमोहनकृष्ण दर का मत है :

"हालांकि हिन्दुओं के संस्कारों की संख्या सोलह बताई गई है परन्तु पुत्र जन्म (सौन्दर), काहनेथर, जरहकासय (मुण्डन), यज्ञोपवीत, विवाह और मृत्यु ही इनमें प्रधान गिने जाते हैं। आश्चर्य की बात है कि यज्ञोपवीत और काहनेथर को छोड़ कश्मीरी मुसलमान भी ये संस्कार करते हैं। रीति में कुछ भिन्नता अवश्य है। अन्य प्रथाओं में भी इन दो जातियों के बीच एकरूपता पाई जाती है। हिन्दुओं के उत्सव पर मुसलमान स्त्रियां अवश्य गाने जातीं हैं। इसी प्रकार मुसलमानों के उत्सव पर हिन्दू स्त्रियां उनका शकुन करने जाती हैं।"[1]

जीवन के आधुनिकीकरण का प्रभाव कश्मीर पर भी पड़ा है। जैसे ब्रज आदि क्षेत्रों में ट्रेक्टरों तथा नल-कूपों ने हल तथा चरस (पुर) आदि का स्थान लेकर, तत्सम्बन्धी लोक-तत्वों (कहावतों-मुहावरों तथा गीतों) को समाप्त-सा कर दिया है, उसी प्रकार कश्मीर में भी हुआ है और आज से पचास-साठ वर्ष पूर्व गाये जाने वाले गीतों का उपलब्ध होना लगभग असम्भव-सा हो गया है —वे लुप्तप्रायः से हो गये हैं, क्योंकि उनका आधार ही लुप्त हो गया है। कुछ मान्यताएं तथा कहावतें अपना अर्थ खो बैठी हैं या उनका अर्थ घिस कर क्षीण हो गया है। गर्भवती वधू के 'दूध' आदि संस्कार इसी कोटि में आते हैं। आज या तो वे मनाये नहीं जाते या चुपचाप उनकी औपचारिकता पूरी कर ली जाती है। पुत्री के जन्म पर छाती-पीट कर रोना अब नहीं होता और इसीलिये न अब इस मुहावरे का अधिक प्रयोग होता है : 'ज़ायम कूर कलस पेयस तूर', अर्थात् 'लड़की पैदा हुई, सिर पर कुल्हाड़ी (बसूला) पड़ी'। मुसलमानी शासन में यह मुहावरा ज़ोरों पर था। आज लड़की भी नौकरी करती है,

---

1. कश्मीरी का लोक-साहित्य, पृष्ठ 137।

घरवालों को पालती-पोसती है, फिर भी लड़की के पैदा होने पर गीत आज भी नहीं गाये जाते। श्री मोहनकृष्ण दर के अनुसार आजकल कश्मीरी हिन्दुओं में विवाह तथा यज्ञोपवीत को छोड़कर अन्य अवसरों पर (खुले आम) गीत नहीं गाये जाते, जबकि मुसलमानों का कोई भी उत्सव बिना गान के पूरा नहीं होता।[1] जैसे-जैसे साम्प्रदायिक कटुता बढ़ती गई, यह स्थिति विकट से विकटतर होती चली गई। श्री मोहनकृष्ण दर ने कश्मीरी के लोक-गीतों का वर्गीकरण निम्नलिखित रूप में किया है :

(अ) संस्कार सम्बन्धी गीत : इनमें उन्होंने इन गीतों को रखा है : नामकरण, मुण्डन, यज्ञोपवीत, विवाह और मृत्यु गीत।

श्री दर ने विवाह गीतों के अन्तर्गत हिन्दुओं तथा मुसलमानों, दोनों के गीतों को सम्मिलित किया है। मृत्यु गीतों के विषय में कुछ विद्वानों का मत है कि उन्हें शोकगीत नहीं कहा जा सकता क्योंकि वे किसी वयोवृद्ध व्यक्ति की मृत्यु पर ही गाये जाते हैं तथा उत्सव के रूप में ही होते हैं। मेरा इस मान्यता से थोड़ा मतभेद है। मृत्युगीतों में भी शोक के तत्व पाये जाते हैं, अतएव उन्हें शोक (मृत्यु) गीत अथवा मृत्यु (शोक) गीत ही कहा जाना चाहिए।

(ब) ऋतु तथा त्यौहार सम्बन्धी गीत : इस वर्ग में श्री दर ने इन गीतों को लिया है : सौंत, रोव, लीलायि, वहरात, तूरी बअत (गीत)। रोव को 'रोफ' भी कहा जाता है—दोनों ही उच्चारण प्रचलित हैं।

(स) जाति सम्बन्धी गीत : इस वर्ग में श्री दर ने ये गीत लिये हैं : नाविकों के गीत, ग्वालों के गीत, बांड़ों के गीत।

(द) क्रिया गीत : इस वर्ग में श्री दर ने ये गीत गिनाये हैं : चर्खे के गीत, हिण्डोले के गीत, निलाई के गीत, फसल काटने के गीत।

(न) विविध गीत : इस वर्ग में उन्होंने इस प्रकार के फुटकर गीतों को रखा है:

— नवविवाहिता की अपनी मां से अपने पति की शिकायत करने के गीत।

— सौत के प्रति, पति द्वारा पक्षपात किये जाने सम्बन्धी गीत।

— सास-बहू के झगड़े तथा सास के अत्याचार सम्बन्धी गीत।

— बूढ़े पति के प्रति तिरस्कार के स्वरों से युक्त गीत।

— नौकरानियों तथा नौकरों की कामचोरी प्रवृत्ति से सम्बन्ध रखने

---

1. कश्मीरी का लोक-साहित्य, पृष्ठ 138।

वाले गीत।

— सरकारी कर्मचारियों के किसानों पर किये जाने वाले अत्याचारों से सम्बन्धित गीत।

— मनियारों, चूड़ी बेचने वालों के गीत।

श्री मोहन कृष्ण दर का कथन है कि इन गीतों को उनके द्वारा वर्गीकृत गीतों में नहीं रखा जा सकता, इस कारण वे इन्हें 'विविध' के अन्तर्गत रख रहे हैं।[1] इस विषय में मेरा मत है कि किसानों पर सरकारी कर्मचारियों के अत्याचार सम्बन्धी गीतों को 'विविध' की टोकरी में नहीं डालना चाहिए।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी ने कश्मीरी के लोक-गीतों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया है :

— बांड़-जशन (भांड़-नृत्य)।

— बच्चअ नगमअ (नृत्य)।

— सौंत-ग्यवुन (वसन्त गीत)।

— कथ-ग्यवुन (कथागीत)।

— हांजिनहुन्द ग्यवुन (हांजियों के गीत)।

— लोल-ग्यवुन (प्रणय-गीत)।

— वनवुन (संस्कार गीत)।

— ललनावुन (पालने के गीत)।

— गिन्दन ग्यवुन (रास-लीला)।

— योन्युक ग्यवुन (यज्ञोपवीत के गीत)।

— रोफ़ (नृत्य)।

— लोननुक ग्यवुन (कटाई के गीत)।

— चरवाहों के गीत (पोहल - बअत)।

— ग्रामीण सन्तों के गीत।

— वान (मृत्यु-गीत)।[2]

उपर्युक्त विभाजन से डा० जवाहरलाल हण्डू पूर्णरूपेण असहमत हैं। उनका कथन है :

''यह वर्गीकरण अत्यन्त दोषपूर्ण, अवैज्ञानिक एवं अक्रमबद्धता से पूर्ण है; यहां

---

1. कश्मीरी का लोक-साहित्य, पृ० 196।
2. बेला फूली आधीरात —1946 (राजहंस प्रकाशन, दिल्ली)।

तक कि गीतों का विभिन्न प्रवृत्तियों के आधार पर नामकरण भी कृत्रिम एवं भ्रामक लगता है । लेखक ने लोक-नृत्यों एवं कथाओं को भी लोक-गीतों के वर्गों में सम्मिलित किया है । इसी प्रकार विभिन्न संस्कारों एवं क्रिया-सम्बन्धी गीतों को एक-एक वर्ग में न रखकर अनेक वर्गों मे बांटा गया है, जो प्रायः वैज्ञानिक वर्गीकरण के नियमों के विरुद्ध है । समग्र रूप से देखने पर, वस्तुतः, यह स्पष्ट हो जाता है कि कश्मीरी लोक-गीतों का उक्त विभाजन अत्यन्त अस्वाभाविक है तथा यथार्थ से अधिक कृत्रिमता एवं कल्पना पर अवलम्बित है।"[1]

डा० जवाहरलाल हण्डू ने इसी प्रकार डा० कृष्णदेव उपाध्याय की वर्गीकरण पद्धति का अनुसरण करके किये जाने वाले वर्गीकरणों को भी अपूर्ण कहकर अस्वीकार किया है ।[2] डा०.कृष्णदेव उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'लोक-साहित्य की भूमिका' में अपनी वर्गीकरण पद्धति को प्रतिपादित किया है ।

मैं डा० जवाहरलाल हण्डू के उपर्युक्त मत से पूर्णरूपेण सहमत हूँ । जिन विद्वानों से उन्होंने अपनी असहमति व्यक्त की है, उनकी मजबूरी यह थी कि वे अकश्मीरी थे और कश्मीर की भाषा एवं संस्कृति की बारीकियों से परिचित नहीं थे ।

डा० हण्डू ने लोक-गीतों के 'सरल एवं वैज्ञानिक' वर्गीकरण को इस प्रकार माना है :

— संस्कार सम्बन्धी गीत ।

— ऋतु एवं त्यौहारों के गीत ।

— विभिन्न जातियों के गीत ।

— श्रम गीत ।

— ऐतिहासिक एवं राजनैतिक गीत ।

— अन्य विविध गीत ।

उन्होंने इस वर्गीकरण में दो शर्तें जोड़ी हैं । 'उपलब्ध लोक-गीत साहित्य के आधार' की तथा 'तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि की शर्तें'।[3] इन दोनों शर्तों में से 'उपलब्ध सामग्री' वाली बात मैं मानती हूँ परन्तु मैं यह नहीं मानती कि किसी भाषा के लोक-गीतों के वर्गीकरण को 'तुलनात्मक दृष्टि' के सन्दर्भ में किन्हीं नियमों से बाधित किया जाय, बांधा जाय ।

---

1. कश्मीरी और हिन्दी के लोकगीत : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 35 ।
2. वही, पृष्ठ 34 ।
3. वही, पृष्ठ 36 ।

संस्कार सम्बन्धी गीतों के विषय में डा० हण्डू का मत है कि :

"निम्नलिखित सोलह संस्कार ही सर्वाधिक लोकप्रिय हैं, जिन्हें आधुनिक पद्धतियों में भी स्वीकृत किया गया है : गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जन्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुण्डन, कर्णवेध विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, केशान्त, स्नान, विवाह तथा अन्त्येष्ठि ।

इनमें प्रथम तीन प्राग्-जन्म संस्कार हैं तथा शेष जन्मोपरान्त संस्कार । भारतीय लोक जीवन में अधिकांश जन्मोपरान्त संस्कारों को ही स्थान मिला है और इनमें भी केवल प्रमुख संस्कार ही जीवित रह सके हैं, शेष या तो समय के परिवर्तन के साथ-साथ अनावश्यक समझे गये अथवा युग-मूल्य बदलने से उनका ह्रास हुआ।"[1]

चूंकि डा० हण्डू भारतीय लोक-जीवन की बात कर रहे हैं, मैं उनसे सहमत नहीं हो सकती । दक्षिण भारत में आज भी प्राग्-जन्म संस्कारों का प्रचलन है । यही नहीं कश्मीर घाटी में भी (आजकल ग्रामों में विशेष रूप से) पुंसवन, दूध-संस्कार मनाया जाता है । हां, 'निष्क्रमण' तथा 'वेदारम्भ' कश्मीर में नहीं रहे, परन्तु दक्षिण में कहीं-कहीं (केरल-कर्नाटक में) आज भी इन्हें मनाया जाता है ।

संस्कार सम्बन्धी गीतों में डा० हाण्डू ने कश्मीरी के इन लोक-गीतों को गिना है :

— पुत्र-जन्म ।

— श्रानस्वन्दर, त्रुय तथा डून्य - तेल ।

— काहनेथर तथा मासनेथर, अन्न-प्रअविश ।

— मुण्डन (जरकासय अथवा चूड़ाकार ।)

— यज्ञोपवीत ।

यज्ञोपवीत संस्कार के गीतों का, विभिन्न कृत्यों के अनुरूप निम्नलिखित विभाजन, डा० जवाहरलाल हण्डू ने किया है :[2]

— घर नावय (लिपाई के गीत) ।

— दपुन (न्योता या न्योतना) ।

— मअज्यरात (रतजगा के गीत) ।

---

1. कश्मीरी और हिन्दी के लोक-गीत : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 61 ।
2. वही, पृष्ठ 71 ।

— क्रूल (बेल) ।

— मेंहदी के गीत ।

— दिवगोन (देवपूजन के गीत) ।

— श्रान (स्नान) ।

— मेखला (यज्ञोपवीत के गीत) ।

— अग्नअ कोण्ड (मण्डप) ।

— वारिदान (नेग) ।

— हुम (यज्ञ) ।

— ट्रयोग नअरवन (तिलकादि) ।

— अवीद (भिक्षा) ।

— कलश (समापन), इसी के साथ अरुनिरोथ ।

यज्ञोपवीत के बाद डा० हण्डू ने विवाह सम्बन्धी गीतों को लिया है तथा विवाह संस्कार सम्बन्धी कश्मीरी लोक-गीतों को निम्नलिखित कृत्यों के अनुरूप वर्गीकृत किया है[1] :

— मसमुच़रावुन (केश संवारने के गीत) ।

— मअज्यरात (रतजगा के गीत) ।

— दिवगोन (देवपूजन आदि के गीत) ।

— लग्अन (लग्न-मण्डप के गीत) ।

इनके अतिरिक्त उन्होंने निम्नलिखित, विभिन्न प्रकार के विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले, (कन्यापक्ष तथा वरपक्ष के) गीतों की सूची भी दी है[2] :

वाक्दान; घरनावय; दपुन; क्रूल; मेंहदी; श्रान, साज़, देवतापूजन ।

वरपक्ष के : लग्नअ-चीरि, खलथ, व्यूग , यन्यवोल ।

कन्यापक्ष के : स्वागत, दारपूज़, सब, कन्यादान, सथपद्य, पोश-पूज़ा तथा विदा ।

उपर्युक्त विभाजन के विषय में मुझे केवल यह कहना है कि डा० हण्डू के द्वारा दिये गये कुछ नाम विवादास्पद हैं, जैसे 'खलथ'। इनका विवेचन मैं सांस्कृतिक सन्दर्भ में आगे करूंगी ।

विवाह सम्बन्धी गीतों के उपरान्त डा० हण्डू ने मृत्यु-गीतों का उल्लेख किया

---

1. कश्मीरी और हिन्दी के लोक-गीत : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 88 ।
2. वही, पृष्ठ 89 ।

है तथा इसकी परम्परा के सूत्रों के वेदों में प्राप्त होने का संकेत किया है[1] ।

डा० हण्डू ने मुसलमानों के लोक-गीतों के अन्तर्गत निम्नलिखित वर्गों का उल्लेख किया है:

— पुत्र जन्म ।

— खतना ।

— विवाह ।

— यन्यवोल (बारात) ।

— निकाह (ब्याह) ।

ऋतु एवं त्यौहारों के गीतों के अन्तर्गत उन्होंने निम्नलिखित वर्गों का उल्लेख किया है :

— सोंत (वसन्त) ।

— रयूतक्रोल तथा 'वहरात' (ग्रीष्म एवं वर्षा) ।

— हरुद (शरद) ।

— वनदअ (शिशिर) ।[2]

लोलग्यवुन (प्रणय गीत) के अन्तर्गत, संयोग तथा वियोग का भी उल्लेख डा० हण्डू ने किया है । त्योहारों के गीतों में निम्नलिखित वर्गों को उन्होंने गिनाया है :

— हेरथ (शिवरात्रि) ।

— नवरेह (वर्षारम्भ उत्सव) ।

-- बअसअखी (वैसाखी) ।

— गनअ चौदह (गणेश चतुर्दशी) ।

(इनके साथ प्रबन्ध गीतों की गणना भी उन्होंने की है, जो मेरे इस अध्ययन क्षेत्र के बाहर है तथा स्वयं डा० हण्डू के कथन के अनुसार इस श्रेणी में नहीं आने चाहिए ।)

— ज्येठआठम (ज्येष्ठाष्टमी) ।

— हारआठम (आषाढ़ाष्टमी) ।

— हार चौदाह (आषाढ़ चतुर्दशी) ।

— श्रावनपुनिम (श्रावण पूर्णिमा) ।

उत्सवों तथा त्यौहारों के गीत-नामक वर्गीकरण में उन्होंने निम्नलिखित का

---

1. कश्मीरी और हिन्दी के लोक-गीत : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 110 ।
2. वही, पृष्ठ 156 ।

उल्लेख किया है :

— ज़नम सतम (जन्माष्टमी)।

(इसका हिन्दी अनुवाद जन्मसप्तमी होना चाहिए था)[1]

— दुर्गाअठम (दुर्गाअष्टमी)।

— दशह्हार (विजयादशमी)।

— महाकाली-वरुस (महाकाली जन्म)।

— काव पुनिम (काग-पूर्णिमा)।

— ईद के गीत।

विभिन्न जातियों के गीतों में, बांड (भांड), हांजियों, धोबियों, चूड़ीवालों के गीतों का निर्देश डा० हण्डू ने किया है।[2]

श्रम-गीतों के अन्तर्गत उन्होंने इनको गिनाया है :

— नेन्दअ बअत : कृषि सम्बन्धी गीत, जिनमें रोपाई, रखवाली, कटाई, सिंचाई आदि के गीत हैं।

— पहल्य बअत : चरवाहों, गोपालों, लकड़हारों के गीत ।

— यन्द्रअ बअत : चर्खे-चक्की आदि के गीत।

— सुलनावन : पालने के गीत।

विविध गीतों के अन्तर्गत डा० हण्डू ने निम्नलिखित का उल्लेख किया है :

— हास-परिहास सम्बन्धी गीत।

— व्यंग्य गीत।

— पारिवारिक सम्बन्धों के गीत।

— आदर्श सतीत्व के गीत।

— सामाजिक कुरीतियों के व्यंजक गीत।

— नीति सम्बन्धी गीत।

— च्यतः (चित्त-गीत)।

— बाल-गीत।

— साधारण गीत।

— खेल गीत।

---

1. भानमासी कश्मीरी पण्डित सप्तमी को मनाते हैं तथा मलमासी (जब दोनों दिन हो) अष्टमी को मनाते हैं।
2. कश्मीरी और हिन्दी के लोक-गीत : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 261 ।

डा० हण्डू ने जिस वैज्ञानिकता की बात से अपना वर्गीकरण आरम्भ किया था, उसी का अभाव उनके वर्गीकरण में मुझे खलता है। त्यौहारों, उत्सवों, ऋतुओं के गीतों के वर्गीकरण में बड़ा घालमेल हो गया है तथा एक वर्ग के गीतों को आसानी से दूसरे वर्ग में रखा जा सकता है। अतः च्यतः गीतों का तथा ग्रामीण सन्तों के गीतों का विलग वर्गीकरण किस आधार पर है, इस पर उन्होंने प्रकाश नहीं डाला है। प्रबन्ध गीतों को गाथाओं के अन्तर्गत रखा जाना चाहिए। यही नहीं कुछ प्रबन्ध-गीतों को हम लोक-साहित्य (अर्थात् लोक-गीतों) के अन्तर्गत रख ही नहीं सकते। हास-परिहास तथा व्यंग्य-गीतों को एक वर्ग में रखा जा सकता था। ऋतुओं तथा त्यौहारों के गीतों में उलट-पुलट हो गई है तथा पारस्परिक मिश्रण हो गया है। जातियों, पेशों, श्रम-परिहरण, चर्खा-चक्की आदि वर्गों के विभाजनों में अतिव्याप्ति तथा अनाव्याप्ति दोष परिलक्षित होता है।

एक अन्य बात यह है कि जितने वर्ग डा० हण्डू ने बनाये हैं, वे अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं। उपलब्धता का ध्यान भी डा० जवाहरलाल हण्डू ने नहीं रखा है।

उपलब्ध सामग्री के आधार पर, सांस्कृतिक विवेचन करने हेतु मैंने **कश्मीरी के लोक-गीतों का वर्गीकरण** इस प्रकार किया है :

1. जन्म से मुण्डन संस्कार तक के गीत।
2. यज्ञोपवीत के गीत।
3. हिन्दुओं के विवाह सम्बन्धी गीत।
4. मुसलमानों के संस्कार-गीत।
5. शोक (मृत्यु) गीत।
6. खेल गीत।
7. ऋतुओं के गीत।
8. मुसलमानों तथा हिन्दुओं के त्यौहारों के गीत।
9. विभिन्न जातियों (पेशों) के तथा श्रम-परिहरण के गीत।
10. प्रेम-गीत।
11. विविध गीत।

मैंने उपर्युक्त वर्गीकरण डा० रमेशकुमार शर्मा[1] तथा श्री बंसीलाल पण्डित

---

1. गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में भाषण, 1983।

'परदेसी'[1] की मान्यताओं के अनुरूप किया है। कश्मीरी हिन्दुओं के कुछ गीत (लिपाई, क्रूल आदि) ऐसे हैं जो अनेक अवसरों (विवाह तथा यज्ञोपवीत) पर गाये जाते हैं और उनमें कोई विशेष पाठ-भेद भी नहीं होता; केवल कन्या या वर पक्ष (जिसका विवाह हो और जिसके घर वे गाये जा रहे हैं) का संकेत बदल जाता है। हिन्दुओं का यज्ञोपवीत संस्कार लगभग उसी विस्तार एवं धूमधाम से मनाया जाता है, जैसे, विवाह का उत्सव मनाया जाता है। प्रथम वर्ग (जन्म से मुण्डन संस्कार तक के गीत) में हिन्दुओं तथा मुसलमानों, दोनों के गीत आते हैं। वर्ग 2 तथा 3 में केवल हिन्दुओं के गीत हैं। वर्ग 4 में केवल मुसलमानों के गीत हैं, क्योंकि उनके इन संस्कारों का हिन्दुओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। वर्ग 5 के गीत सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं तथा केवल हिन्दुओं के हैं। इन गीतों में पाये जाने वाले दार्शनिक-पौराणिक तत्व अपना विलग महत्व रखते हैं।

वर्ग 6 के खेलगीतों में हिन्दुओं तथा मुसलमानों, दोनों के गीत आते हैं। ऋतुओं के गीतों (वर्ग 7) में भी दोनों के गीत हैं—उनमें समानता भी है और प्राचीन सांस्कृतिक संकेत भी हैं। वर्ग 8 में हिन्दुओं तथा मुसलमानों, दोनों के गीतों का विलग-विलग विवेचन किया गया है। वर्ग 9 में अधिकांश गीत मुसलमानों के आते हैं क्योंकि कश्मीरी हिन्दू नौकरी के अतिरिक्त अन्य कार्य (पेशा) नहीं अपनाते। हां, कुछ लोग (गोर) पौरोहित्य करते हैं और थोड़े से (बुहुर) दुकान आदि करते हैं, परन्तु इनके पेशेगत गीत नहीं पाये जाते। वर्ग 10 के गीतों में भी अधिकांश गीत मुसलमानों के ही हैं। विविध गीतों के अन्तर्गत मैंने निम्नलिखित (हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों के) गीतों को लिया है :

— ऐतिहासिक तथा सामाजिक सन्दर्भ के गीत।
— चिन्तन-मनन सम्बन्धी गीत।
— ग्रामीण सन्तों के गीत।
— ननद तथा सास के बहू के प्रति अन्याय के गीत।
— वैधव्य के गीत।
— गरीबी सम्बन्धी गीत।
— आलस तथा कामचोरी के गीत।
— आधुनिकीकरण (नई हवा) से सम्बन्धित गीत।

---

1. हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, में सुरक्षित उनके शोध-प्रबंध की पाण्डुलिपि।

— पति के प्रति असन्तोष के गीत।

इन गीतों में हिन्दुओं तथा मुसलमानों, दोनों के गीत आते हैं तथा वे अन्य दस वर्गों में से किसी में नहीं रखे जा सकते।

यहां मैं यह स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि इस वर्ग विभाजन में यद्यपि मैंने डा० जवाहरलाल हण्डू से कुछ बातों में असहमति प्रकट की है, परन्तु उनके वर्गीकरण के विस्तृत एवं गहन विवेचन के बाद मुझे अपने वर्गीकरण का मार्ग प्रशस्त होता हुआ दिखाई दिया। डा० हण्डू ने सर्वाधिक परिश्रम किया है, कश्मीरी लोक-गीतों के वैज्ञानिक वर्गीकरण की दिशा में—इसमें कोई सन्देह नहीं है। यह भी कहना उचित होगा कि मैंने जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, उसे करते समय मेरी दृष्टि भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में कश्मीरी के लोक-गीतों के विवेचन पर ही रही है, क्योंकि यही मेरी परियोजना है।

खण्ड - ख

लोकगीतों का सांस्कृतिक विवेचन

संस्कार गीत

संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति है, सम् + कृ + तृच् तथा अर्थ हैं, पूर्ण करना, संस्कृत करना, तैयार करना, श्रृंगार, सजावट आदि ।[1] मनु ने इसके अर्थ शुद्धि-संस्कार, पुनीत कृत्य आदि दिये हैं [2] और इनकी संख्या बारह मानी है ।[3] जन्म के पहले से मृत्यु तक आश्वलायन गृह्यसूत्र में ग्यारह[4] ; पारस्कर में तेरह तथा वैखानस गृहसूत्रों में अठारह संस्कारों[5] का उल्लेख है परन्तु अधिकांश विद्वानों एवं ग्रन्थों ने षोडश संस्कारों को ही स्वीकारा है और आज[6] भी हिन्दू जनमानस में ये सोलह संस्कार ही स्वीकृत हैं :

जन्म से पूर्व के : गर्भाधान, पुंसवन तथा सीमन्तोन्नयन ।

जन्म से : जन्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म (मुण्डन) कान छेदना, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, स्नान, विवाह तथा अन्त्येष्ठि।

कालान्तर में केवल रेखांकित संस्कार ही सामान्यतः हिन्दू समाज में प्रचलित रह गये हैं । दक्षिण भारत में, जहां प्राचीन वैदिक परम्परायें कहीं-कहीं अभी भी प्रचलित हैं, वहां शेष जन्म-पूर्व तथा जन्मोपरान्त संस्कारों में से कुछ का प्रचलन अभी भी है । कश्मीर में अभी भी पुंसवन (दूध) संस्कार गांवों में प्रचलित हैं इसका गीत नहीं मिला। नगरों में तो लज्जावश इस संस्कार को अब धीरे-धीरे लोग छोड़ते जा रहे हैं और 'सौन्दर' के साथ ही इसे भी कर देते हैं। शास्त्रोक्त विधान की पूर्त्ति के साथ-साथ सभी प्रचलित संस्कारों को सम्पन्न करते समय लोकगीत गाये जाते हैं और उनमें प्राचीन संस्कृति एवं परम्पराओं के बीजों तथा स्रोतों को देखा जा सकता है। सिकन्दर बुतशिकन द्वारा हिन्दुओं को हिंसा के बल पर मुसलमान तो बना लिया गया था परन्तु पीढ़ियों तक उन नवमुसलमानों ने लुक-छिप कर हिन्दुत्व का अनुसरण किया था । उनके संस्कार गीतों (कभी-कभी संस्कारों तक) में प्राचीन हिन्दुत्व के प्रभाव एवं बीज सदियों तक अक्षुण्ण रहे । कालान्तर में स्वयं उन मुसलमानों ने

---

1. संस्कृत-हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे 1966, पृष्ठ 105 ।
2. मनुस्मृति 2/66।
3. वही 2/27 ।
4. हिन्दू संस्कार, राजबली पाण्डेय, 1960, पृष्ठ 26 ।
5. वही ।
6. वही ।

हिन्दू शब्दों अथवा तत्वों के स्थान पर मुस्लिम शब्द-तत्व रख दिये परन्तु शेष गीत वैसे के वैसे ही बने रहे। अनेकानेक हिन्दू संस्कृति के शब्द आज भी उन गीतों में पाये जाते हैं, सम्भवतः इसलिए क्योंकि मुसलमान उन शब्दों का असली, मूल रूप पहिचान नहीं पाते।[1] कभी-कभी उन प्राचीन शब्दों की व्युत्पत्ति को इस्लामी बताकर भी सन्तोष कर लिया जाता है। डा० जवाहरलाल हण्डू का मत है :

"गीतों में सामान्य तथ्यों, भावों, विषय, शैली, संगीत अथवा लय की अवहेलना किये बिना, कवि अत्यन्त सजगता से कुछ ऐसे शब्दों का प्रक्षेपण करता है जिनसे मुस्लिम संस्कृति, धर्म एवं आरोपित परम्पराओं की व्यंजना हो सके। वस्तुतः ऐसे स्थलों पर हिन्दू धर्म, संस्कृति एवं अनुष्ठानों आदि के व्यंजक शब्दों को मुस्लिम धर्म एवं संस्कृति के परिचायक शब्दों के सुगम प्रक्षेपण द्वारा एक अद्भुत मिश्रित गीत की संरचना होती है जिसका विवेचन करना अत्यन्त कठिन हो जाता है। फिर भी, इन गीतों में प्रक्षिप्त एवं परिवर्द्धित अंश स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। इस प्रकार के एक प्रक्षिप्त गीत को यहां उद्धृत किया जाता है :

व्यनायक ज़ोरम तअ आथवार दरमय, करुमय बरखोरदार नाव।
आठनर्यतन क्रूठ क्या बरुमय, नविमिर्यतअ ज़ाव ललिबोन।
थनअ यलि प्योहम, रन-प्यव करुमय, ज़ितिषन तअ पंडितन रनुमय साल।
चाने ज़ेनय आथवार दरमय, करुमय दिल - जान - जिगरो नाव।
आठनर्यतन क्रूठ क्या तुलमय, नविमेर्यतअ ज़ाव गुलज़ार।
थनअ यलि प्योहोम हमुदाह परुमय, कनन करुमय दीन इस्लाम।
दीन-इसलामुक लोल क्या बरुमय। करुमय . . . . ॥

. . . . मूल गीत में . . . . मुस्लिम संस्कृति के शब्दों का प्रक्षेपण सहजता एवं सुगमता से किया गया है।[2]

जन्म से मुण्डन तक के गीत (सं० 1 से 11 तक)

गीत सं० 1 — में चन्द्रायन व्रत का संकेत है। अति प्रचीनकाल से इच्छापूर्ति के लिये, विशेषकर स्त्रियां, यह सर्वाधिक कठिन व्रत करती आई हैं। इस व्रत में चन्द्र के घटने तथा बढ़ने के अनुरूप 15 से शून्य, फिर 1 से 15 ग्रास (चौबीस घन्टों में

---

1. जैसे दूल्हे को मुसलमान आज भी 'महाराज़' कहते हैं, हिन्दुओं के अनुसार।
2. कश्मीरी और हिन्दी के लोकगीत : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 136-38

केवल एक बार भोजन करते समय) खाकर रहा जाता है। पूर्णिमा से पूर्णिमा तक का यह व्रत परम कष्टसाध्य होता है क्योंकि जितने ग्रास भोजन किया जाता है, उतने ही घूंट पानी भी उसी समय पिया जाता है। इस गीत में कहा गया है कि माता ने परम कठिन चन्द्रायन व्रत करके पुत्र को प्राप्त किया है। पिता ने भी गौ आदि जीव दान किया था, इन्हीं पुण्यों के प्रताप से पुत्र-प्राप्ति हुई है। कश्मीर में घास की शय्या (हुर) पर प्रसूतिका को लिटाया जाता है, क्योंकि सूतक लग जाता है जिसकी शुद्धि स्नानोपरान्त होती है। 'हुर' के निकट मिट्टी की हंड़िया रखी जाती है, जिसे छठी के दिन नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। ज्योतिषियों एवं पण्डितों को बुलाकर जन्म-पत्री बनवाना भी प्राचीन हिन्दू परम्परा के अनुसार है।

गीत सं० 2 — के आरम्भ में जो जनेऊ का वर्णन है उसका कारण यह है कि अनेक संस्कारों में अनेक गीत समान हैं। यह गीत यज्ञोपवीत में भी गाया जाता है। पुत्र-जन्म पर अधिक बल होने के कारण इसे यहां रखा गया है। नवजात शिशु को बहुधा कृष्ण कहा जाता है। ध्यातव्य है कि पुत्री के जन्म के गीत नहीं गाये जाते हैं। वसुदेव, देवकी (कंस की बहिन), देवताओं के गुरु बृहस्पति का ज़िक्र प्राचीन भारतीय परम्परानुसार है। नवजात शिशु को राम तथा गणेश के रूप में भी वर्णित किया गया है और शिशु की वास्तविक जन्म-तिथि के बदले कृष्ण, राम तथा गणेश की जन्मतिथियों का वर्णन है। इस प्रकार इन तीनों की जन्म तिथियों को इन गीतों में सुरक्षित रखा गया है।

गीत सं० 3 — में शेष भारत के हिन्दुओं के समान छठी का वर्णन है। कश्मीरी मुसलमानों में भी इसके गीत गाये जाते हैं :

'सितमें दोहय सौन्दर कअरमय, वाज़स ध्रुतुम पानह फरमाश।'

अर्थात् सातवें दिन तेरा स्नान (सौन्दर) किया है और रसोइये से अच्छे-अच्छे पकवान बनाने को स्वयं कह आई हूँ।[1] इस गीत में भूर्ज्ज-पत्र से आरती उतारने का संकेत है। भोज-पत्र प्राचीन भारतीय संस्कृति में अपना विशेष स्थान रखता है और कश्मीर में अनेकानेक सांस्कृतिक अनुष्ठानों में ही प्रयोग नहीं होता, अपितु मकान की छत बनाने तक में इसका प्रयोग होता था।

गीत सं० 4 — में इन्द्र तथा विनायक चतुर्दशी का वर्णन है, साथ ही साथ बेटे के लिए 'बरखुरदार' फारसी शब्द का प्रयोग है। जो कि इस बात का संकेत

---

1. कश्मीरी का लोक साहित्य, मोहनकृष्ण दर, पृष्ठ 139।

करता है कि इस गीत की रचना कश्मीर में इस्लाम के आगमन के बाद हुई है। भेड़ें कटवाने से कश्मीरियों के मांस खाने के संकेत हैं। जुत्शी तथा मुंशी परिवार कश्मीरी हिन्दुओं में परम समृद्ध एवं आदरणीय माने जाते हैं, इस कारण इनको न्यौता देना समाज में प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है। जैसा कि शेष देश में होता है व्यूग (चौक) पर बैठाकर सारे पवित्र कार्य करने का संकेत भी इस गीत में है।

गीत सं० 5 — एक मास के बालक के मूसल से विवाह का अनुष्ठान होता है, जिसमें यह संकेत है कि बालक की आयु अल्प भी रहे तो भी वह विवाहित हो जाय। महाभारत के अन्त में यादवों के परस्पर लड़ मरने के उपाख्यान में मूसल को गर्भवती स्त्री के रूप में उपस्थित किया गया था, जिससे शाप मिला था। 'सोयाबीन' से आधुनिक संकेत मिलते हैं।

गीत सं० 6 — हिन्दुओं में प्रचलित अन्नप्राशन के संस्कार का वर्णन है।

गीत सं० 7 — ठेठ कश्मीरी संस्कार का वर्णन है जो कि अतिशीत के कारण केवल वहीं किया जाता है।

गीत सं० 8 — वार्षिक जन्मदिन के उत्सव का वर्णन है।

गीत सं० 9 — विद्यारम्भ का वर्णन है। शेष भारत में इसके अनेक नाम हैं। ब्रज प्रदेश में इसे 'पट्टी-पूजना' कहते हैं और 'ओ३म् नमः सिद्धम्' (अशिक्षित जिसे 'ओनामासी धम्म' कहते हैं) से आरम्भ करते हैं। कश्मीरी हिन्दू ओ३म् के बाद 'मैं वही हूँ' (सोयमसो) से आरम्भ करते हैं। कश्मीरी संस्कृति में बलराम का विशेष महत्व है। नीलमत पुराण के अनुसार बलराम ने ही देवताओं के कहने पर हल के द्वारा घाटी के पत्थरों से पानी निकालकर कश्मीर प्रदेश की रचना की थी। बलराम शेषनाग (अनन्त) के अवतार हैं और नाग-संस्कृति का प्रभाव होने के कारण कश्मीरी संस्कृति में और भी मान्य हैं। ये सारे तत्व प्राचीन भारतीय संस्कृति के ही हैं।[1] डा० वेदकुमारी के अनुसार, "बलराम की पूजा कश्मीर में कृषि के आरम्भ (कृष्यारम्भ उत्सव) में की जाती थी, अतः वे कृषि के (हल के) देवता भी हैं और अनन्त भी हैं।[2] बलराम महाभारत में कौरवों के साथ सहानुभूति रखते थे और उस काल के कश्मीरी राजा भी कृष्ण एवं पाण्डवों के विरुद्ध थे अतः बलराम के प्रति कश्मीरी हिन्दुओं की परम्परा में अत्यन्त आदर की भावना है।" आरम्भ में बलराम नाम का एक अति लोकप्रिय नाग था, परन्तु भागवतों ने जब उस नाग-देवता को

1. नीलमत पुराण, श्लोक 171-175, 227।
2. वही, भाग 1, पृष्ठ 172।

मान्यता प्रदान की तो उन्होंने उसे कृष्ण का भ्रातृत्व भी प्रदान कर दिया।[1]

इस गीत में ब्रज क्षेत्र के समान पट्टी तथा बुद्दिका (जिसमें खड़िया अथवा स्याही घोलकर रखी जाती थी) का वर्णन भी है।

गीत सं० 10 तथा 11 — मुण्डन सम्बन्धी है। सं० 11 में आशीष नामक पुत्र का मुण्डन देवी आंगन (हारी पर्वत) तथा भवानी-बल[2] जैसे पवित्र स्थानों में करवाने का संकेत है, जैसा ब्रज आदि क्षेत्रों में होता है। इस गीत में चुटिया (शिखा) का भी संकेत है जो सम्पूर्ण हिन्दू समाज का चिह्न (कभी) माना जाता था। अलीकदल मुहल्ले के बुलबुल लंकर नामक स्थान पर गरुड़ारूढ़ विष्णु की मूर्ति वाले मन्दिर को 'नारायणजू का मन्दिर' कहते हैं।[3] विवाह के समय दूल्हे को तथा मुण्डन-यज्ञोपवीत के समय बालक को 'महाराज़' कहते हैं। महाभारत के युद्ध में कौरवों के साथ सहानुभूति रखने के कारण कश्मीर की परम्पराओं में कंस, रुक्मि आदि के प्रति आदर-भावना के संकेत पाये जाते हैं। इन गीतों में तथा आगे के अनेकानेक गीतों में शेष देश के ब्रज आदि क्षेत्रों के समान बहिन, बुआ, सेवकों आदि के विलग-विलग 'नेगों' के संकेत हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार के गीत (सं० 1 से 13 तक)

उपनयन, यज्ञोपवीत, जनेऊ को सामान्यतः कश्मीरी में 'मेखला देना' भी कहा जाता है। सवर्ण जातियां, विशेषकर ब्राह्मण इस संस्कार द्वारा द्विजत्व प्राप्ति करते हैं।
गीत सं० 1 — में कश्मीर के केसर का ही वर्णन नहीं है अपितु प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार 'चन्दन' का भी वर्णन है जो कश्मीर में नहीं होता। श्रेष्ठ नक्षत्र में शुभ शकुन तथा ब्रह्माजी से वर मांगना भी प्राचीन परम्परायें हैं।

गीत सं० 2 — में प्राचीन हिन्दू परम्परा के अनुसार अग्नि का देवता रूप में

---

1. Balram was originally a popular Naga deity but when the Bhagavatas accepted this Naga deity they imposed upon him brotherhood of Krishna.— नीलमत पुराण, डा० वेदकुमारी, भाग 1, पृष्ठ 184।
2. कश्मीरी में 'बल' का अर्थ है जल के निकट के या स्रोत के स्थान, घाट आदि; जैसे- गान्दरबल, मानसबल, हज़रतबल, देवीबल, नागबल, अछबल आदि। जल की धारा या स्रोत के लिए 'नाग' का भी प्रयोग होता है, जैसे- अनन्तनाग, वेरीनाग, शेषनाग, कोकरनाग, नीलनाग, विचारनाग आदि।
3. मुसलमान आतंकवादियों ने अब इस मन्दिर को जलाकर मूर्ति गायब कर दी है।

मानवीकरण (मूर्त्त रूप) किया गया है।

गीत सं० 3 — में ब्रह्मगांठ, मृगचर्म, कोपीन तथा 'कलाया' प्राचीन परम्परानुसार ही हैं, जैसा शेष भारत के ब्रज आदि क्षेत्रों में भी होता है। प्राचीन परम्परानुसार भिन्न-भिन्न देवताओं के आवाहन एवं आगमन का वर्णन भी है। ब्रज आदि प्रदेशों में तो ज़ायफल का प्रयोग कम हो गया है, परन्तु कश्मीर में इसका आज भी अत्यधिक महत्व है।

गीत सं० 4 — में कश्मीर के एक पवित्र पर्वत-शिखर (जिसका नीलमत पुराण में भी वर्णन है)[1] हरमुख (हरमुकुट) का ही वर्णन नहीं है, अपितु (ब्रज से) जमुना तथा गंगा की मिट्टी लाने का भी वर्णन है। भूतेश्वर तथा महाराज्ञन्या (भगवती) का वर्णन तो कश्मीर में सर्वदा होता ही रहता है। इसीलिए कहा गया है कि 'आदि में भी तुम हो अन्त में भी तुम हो।' जलोद्भव का नाश भगवती ने शारिका (मैना) का रूप धारण करके किया था, यह मानने के कारण शारिका-भवानी, शारिका-भगवती शब्दों का प्रयोग किया जाता है। कश्मीरी में शारिका (मैना) को 'हअर' कहते हैं इसीलिए जिस पहाड़ी पर श्रीनगर में उसका मन्दिर है, उसे हारी पर्वत कहते हैं। आज वहां अकबर द्वारा बनाया गया किला भी है। वल्लभा, गणपति, सीता एवं राम का भी उल्लेख है।

गीत सं० 5 — में दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ को लोकगीतकार ने 'अश्वमेघ' यज्ञ कह दिया है और राम तथा भाइयों के अग्निकुण्ड से प्राप्त खीर से जन्म का उल्लेख है।

गीत सं० 6 — में कपास उगाने का वर्णन है। आज कश्मीर में कपास की खेती नहीं होती परन्तु प्राचीन ग्रन्थों (नीलमत पुराणादि) में कपास (सम्भवतः देवकपास नामक परमोत्तम कपास) के कश्मीर में उगने का वर्णन है। रुई के तुनने-कातने आदि का भी वर्णन है। सम्पूर्ण प्रक्रिया अति प्राचीन परम्परा की ओर संकेत करती है। जनेऊ के धागों (लड़ियों) का भी शास्त्रीय वर्णन है।

गीत सं० 7 — अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसे अनेक अवसरों पर गाया जाता है। इस गीत के द्वारा राम-कथा को लोकमानस में सुरक्षित रखने का प्रयत्न है। इसमें सम्पूर्ण राम-कथा का संक्षिप्त वर्णन है तथा भावावेश में आकर गायिका स्वयं सीता बन जाती है तथा अपनी व्यथा कहती है। नाग, शैव, शाक्त तथा तंत्रों के देश

---

1. नीलमत पुराण, भाग 1, डा० वेदकुमारी, पृष्ठ 25।
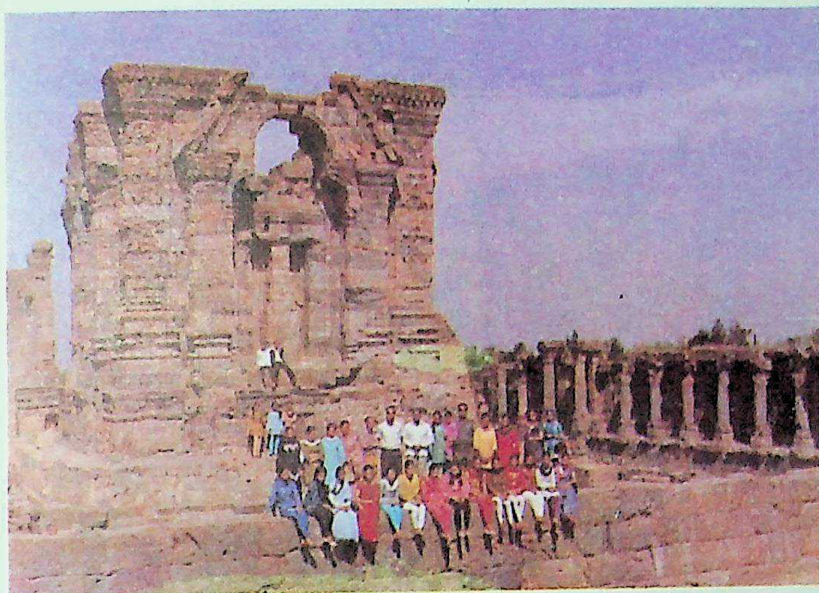
'मार्तण्ड'; मुख्यद्वार तथा यज्ञशाला

'मार्तण्ड' में खण्डित मूर्ति। तुलना करें वज्रपाणि की मूर्ति से।
(फोटो : डा० विमलाकुमारी मुन्शी
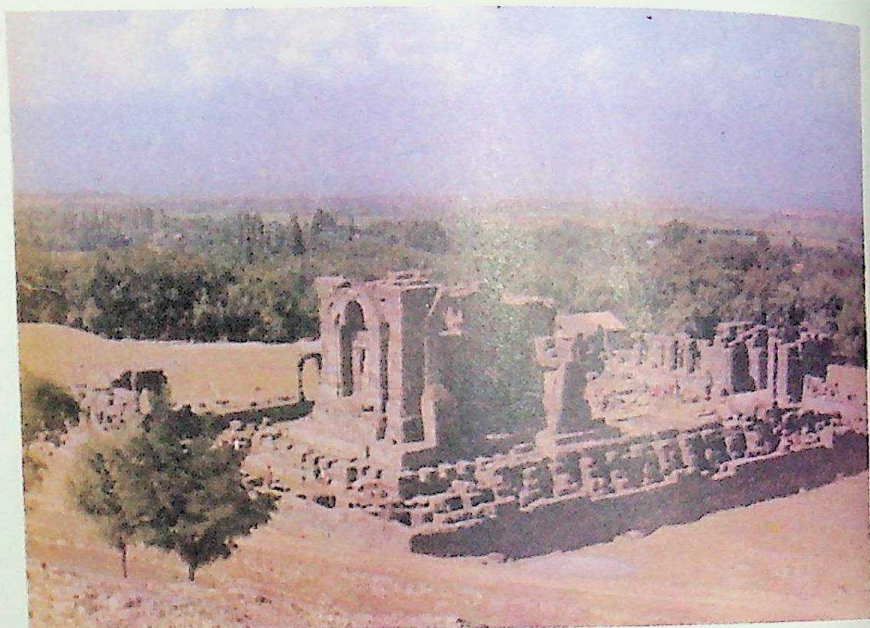
'मार्तण्ड' सूर्य मन्दिर-विहंगम दृश्य : (फोटो : डा० विमलाकुमारी मुन्शी
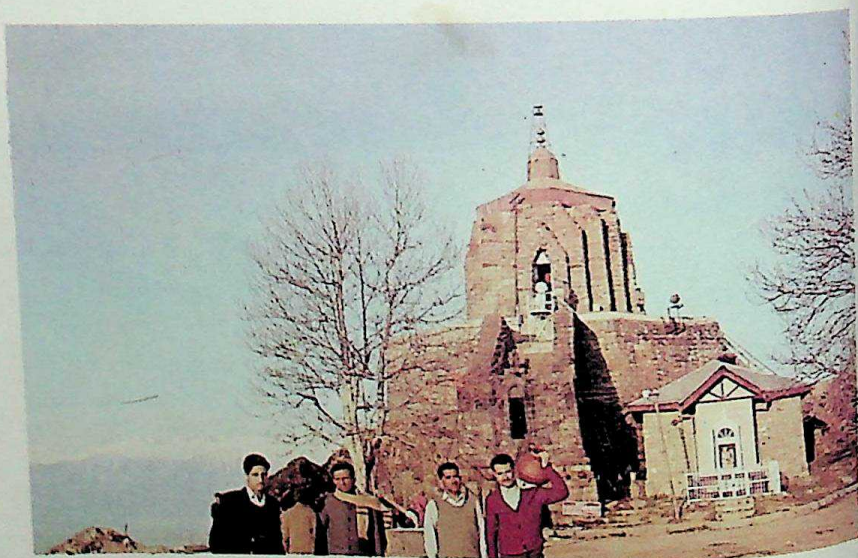
शंकराचार्य मन्दिर
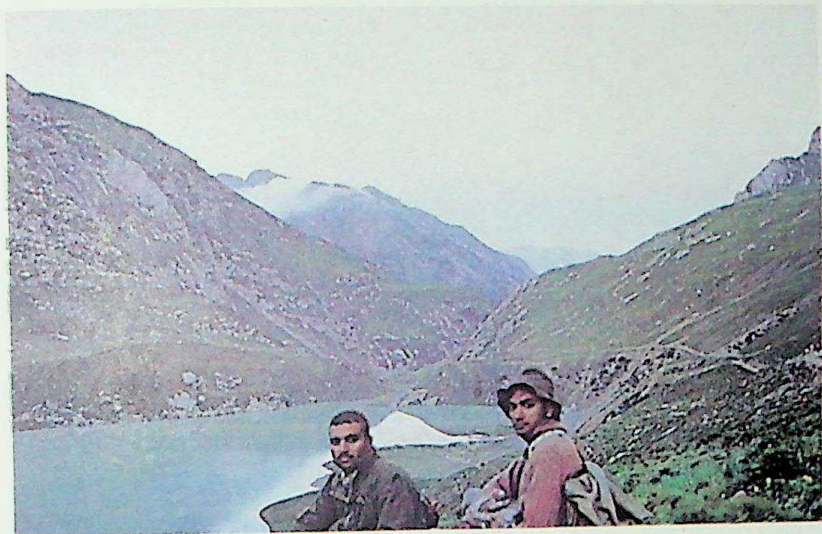
शेषनाग अमरनाथ के मार्ग में

श्री अमरनाथ गुफा द्वार

हिम शंकराचार्य मन्दिर श्रीनगर
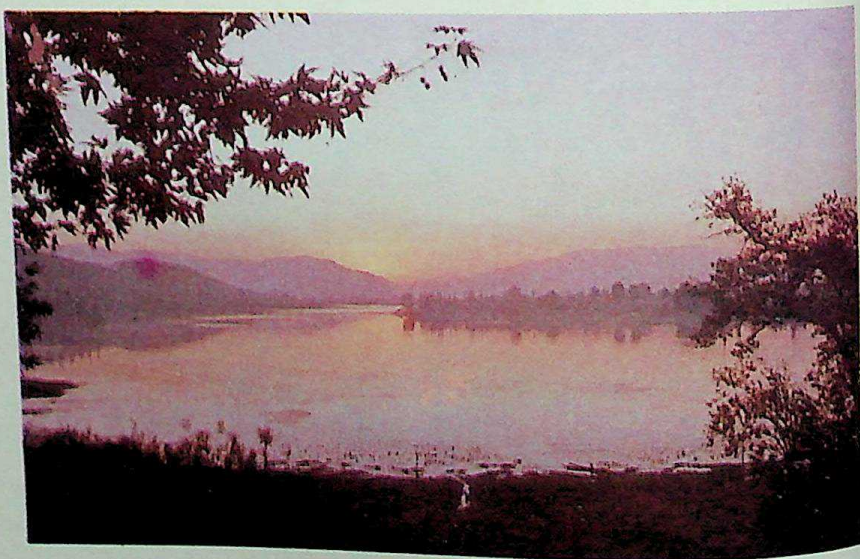
सूर्यास्त मानसबल

बादाम पुराण बसन्तागम
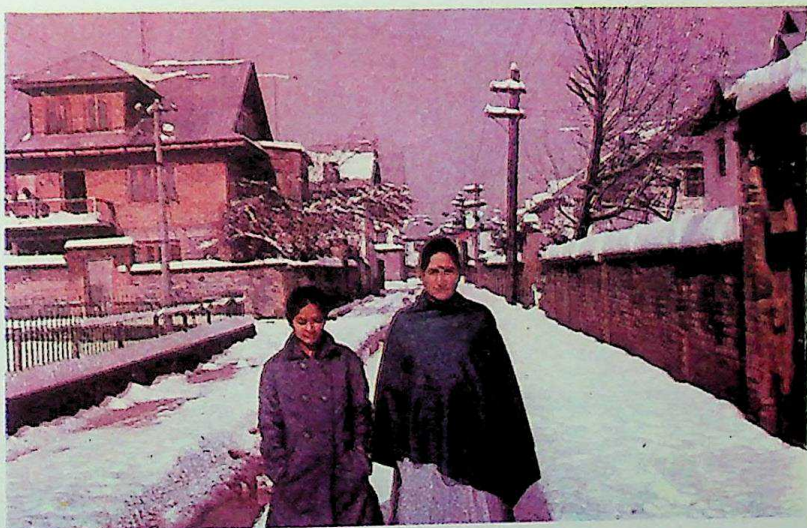
हिमपात
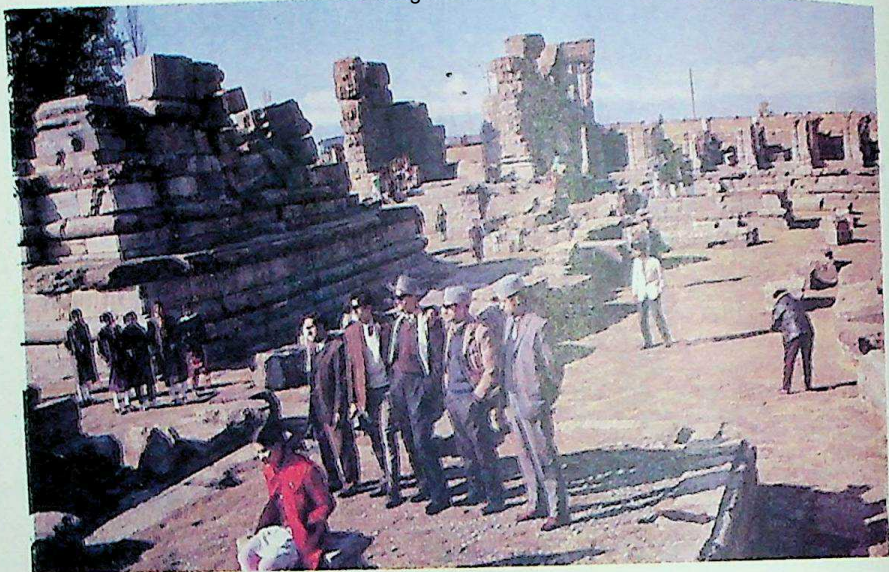
अवन्तीपुर
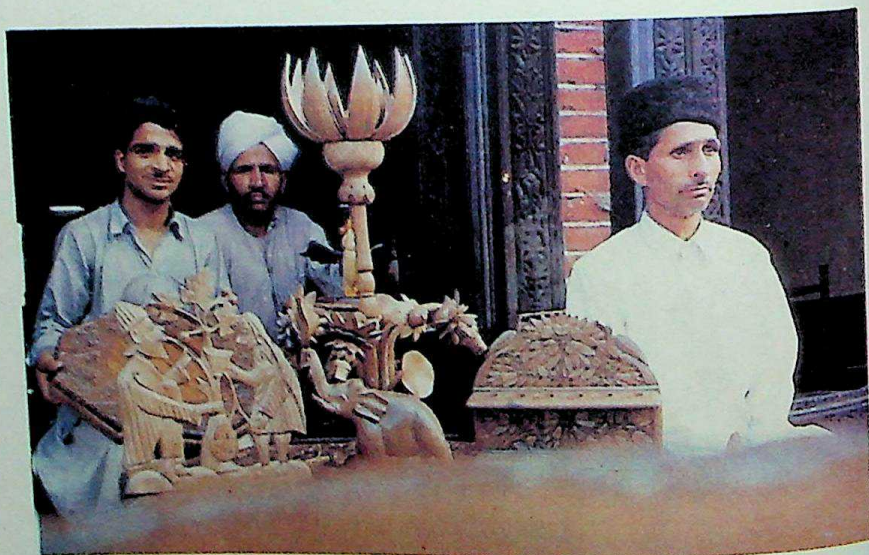
कश्मीरी काष्ठ कला
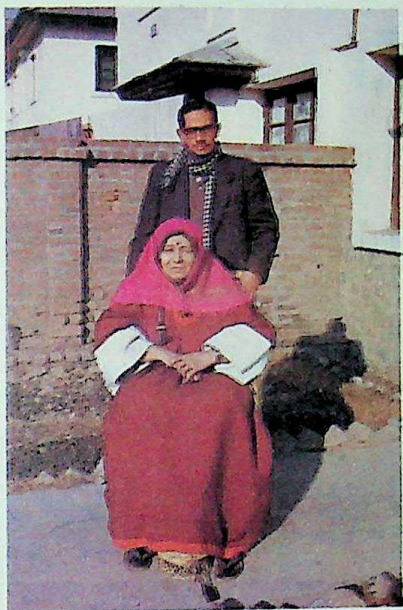
कांगड़ी के साथ पण्डितानी
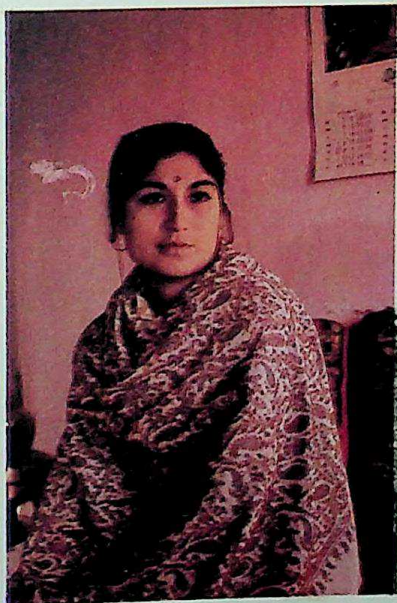
शाल-जामवार

फिरन तथा कांगड़ी

कश्मीरी हिन्दू महिला के सुहाग की निशानी, उसका कर्णाभरण 'डेजिहोर'।
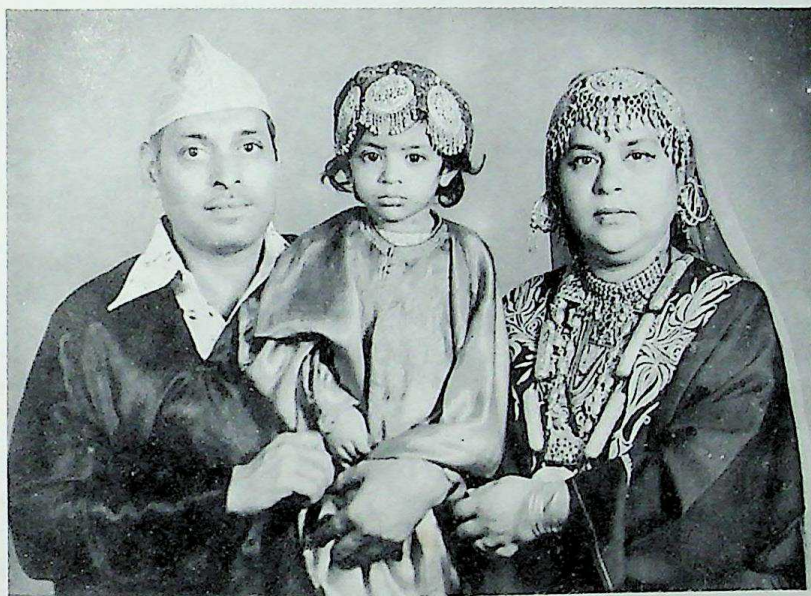
कश्मीरी मुसलमानों की वेशभूषा

पारम्परिक वेश में कश्मीरी हिन्दू महिला।

पीठ की ओर से दिखने वाला 'पूच' तथा 'तरंग'।

कश्मीरी कलम का आलची (लद्दाख) से प्राप्त भित्ति-चित्र ग्यारहवीं शती
(फोटो : डा० अजयकुमार सिंह)

कश्मीरी मूर्तिकला (वज्रपाणि); रंगरिक त्सुमा-चारंग किन्नोर से प्राप्त
(फोटो : डा० अजयकुमार सिंह

कश्मीर में वैष्णव (राम तथा कृष्ण) प्रभाव के प्रमाण हैं, ये गीत।

गीत सं० 8 — में वर्ष के चौबीस पक्षों तथा प्रशमन, निराकरण आदि बहत्तर शान्तियों के द्वारा ब्रह्मतेज की प्राप्ति का उल्लेख है। इस प्रकार के दार्शनिक संकेत अन्यत्र लोक-गीतों में नहीं पाये जाते, यह इसकी अति प्राचीनता का प्रमाण है।

गीत सं० 9 — में कश्मीर की अपनी विशेष परम्परा का संकेत है। भगवती का शारदा रूप कश्मीर में अति प्रसिद्ध है, कश्मीर को ज्ञान एवं शिक्षा की समृद्धि के कारण शारदा-पीठ कहा जाता है। दण्डकवन का जिक्र कश्मीर को भारत से जोड़ने का प्रतीक है एवं पुरानी आस्थाओं का संकेत करता है। शहतूत कश्मीरियों के लिए अति पवित्र ही नहीं है[1] अपितु रेशम के कीड़ों का भोज्य होने के कारण उपयोगी भी है। रुक्मि के पिता भीष्मक को भी कश्मीर में आदर से देखा जाता है। मंगला शब्द का प्रयोग सधवा स्त्री तथा पार्वती दोनों के लिए होता है। विधवा से पवित्र कार्य न कराने की परम्परा ब्रज में यहां तक प्रबल थी कि, शुभ कार्यों के समय विधवा को कमरे में बन्द कर दिया जाता था, जिससे उसका मुख भी कोई उस समय न देख पाये।

गीत सं० 11 — में गुरुमंत्र के कान में फूंके जाने का वर्णन है जैसा कि सारे भारत के हिन्दुओं में होता है। 'अबीद भिक्षा' से तात्पर्य है अभेद भिक्षा, जिसे वटुक गुरु के लिए प्राप्त करके गुरु से (तदन्ततर ब्रह्म से) अभेद (ऐक्य) प्राप्त करता है। यज्ञोपवीत के बाद गुरु का अन्तेवासी बनकर उसे यही करना होता है। ब्रज आदि क्षेत्रों में यह शब्द लुप्त-सा हो गया है, परन्तु कश्मीर में आज भी प्रचलित है। उपनिषदों के प्रयोग 'ब्रह्म की गुफा में प्रवेश' भी इसी दृष्टि से ध्यान देने योग्य है। कामदेव (मदन) का कश्मीर में विशेष महत्व है, प्राचीनकाल में यहां मदनोत्सव भी मनाया जाता था जिसे 'मदनत्रयोदशी'[2] कहा जाता था और चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को इसे मनाते थे। इसमें कपड़े पर अंकित कामदेव के चित्र की पूजा की जाती थी, पुरुष सजते-धजते थे और पत्नी को उस पात्र के जल से स्वयं स्नान कराते थे जो द्वादशी को कामदेव के चित्र के समक्ष रखा जाता था।[3] कश्मीरी हिन्दू समाज की स्वतंत्रता एवं स्वाभाविकता की जड़ें वैदिक परम्पराओं में है।

गीत सं० 12 — में महारौद्र का उल्लेख ध्यातव्य है। इन्द्र, त्रिदेव, कैलास

---

1. तुलमुला में देवी शहतूत के पेड़ की जड़ में ही प्रकट हुई थी।
2. नीलमत पुराण, भाग 1, डा० वेदकुमारी, पृष्ठ 92।
3. नीलमत पुराण, भाग 1, डा० वेदकुमारी, पृष्ठ 200।

पर्वत का पारम्परिक वर्णन है तथा काशी के पण्डितों का भी वर्णन है। अति प्राचीनकाल से काशी के पण्डित कश्मीर आया करते थे, विद्याध्ययन करते थे तथा अनुष्ठानों में भाग लेते थे। कश्मीर के पण्डित भी शेष देश में काशी-कर्नाटक आदि स्थानों पर जाते थे। यज्ञोपवीत के समय उत्तर की दिशा (कश्मीर) में तीन पग इसीलिये रखवाये जाते थे।[1]

गीत सं० 13 — में उस कर्मकाण्ड का वर्णन है जो कश्मीर की अपनी अति महत्वपूर्ण विशेषता है, यहां पूजादि में अखरोट का प्रयोग आवश्यक होता है। शिवरात्रि पर भी कलश में अखरोट डालकर रखते हैं तथा उन गीले अखरोटों का प्रसाद बांटा जाता है। दूब की घास का प्रयोग शेष भारत के ब्रज आदि क्षेत्रों के समान ही पवित्र कार्यों में किया जाता है। कश्मीर में अर्जुन, भीष्म, भीम की मान्यता भी बहुत है, इसी कारण यहां अर्जुन का उल्लेख है।

---

1. कश्मीरी और हिन्दी के लोकगीत : एक तुलनात्मक अध्ययन, डा० जवाहरलाल हण्डू, पृष्ठ 70।

कश्मीरी हिन्दुओं के विवाह-सम्बन्धी लोकगीत

(सं० 1 से 40 तक)

दार पूज़ करअथ मालि दारे त हंगस ।
अ'लि त रोंगस गव वन्य मिलचार ॥

अर्थ : हे प्यारे, तुमने द्वार की तथा ड्योढ़ी की पूजा की । इलायची तथा लौंग का मेल हो गया ।

संस्कृत एला (इलायची) का कश्मीरी में अ'ल हो गया है तथा लवंग (लौंग) का रौंग (रलयोरभेद) हो गया है । इलायची नारी (वधू) की प्रतीक है, क्योंकि उसके (गोल आकार) गर्भ में बीज एवं सुगन्धि है । चरपराहट से युक्त लम्बे आकार की लौंग पुरुष (वर) की प्रतीक है । ये प्रतीक मुसलमानों तक में आज भी उनके लोकगीतों में स्वीकृत हैं ।

गीत सं० 1 — में जो प्राचीन संस्कृति के संकेत हैं वे इस प्रकार हैं :

(अ) 'शुक्ल' से तात्पर्य है 'शुक्ल' नामक योग जिसमें शुभ कार्य करने का विधान है ।[1] कश्मीरी हिन्दुओं के गीतों में शुभ मुहूर्त निश्चित करने के लिए आता है। कुछ लेखकों ने इसका एकदम उल्टा-सीधा अर्थ करके इसे विष्णुपुराण के एक श्लोक से जोड़ने का भ्रामक प्रयत्न किया है ।[2]

(ब) 'वनवुन' का औपनिषदिक अर्थ पीछे भी दिया जा चुका है ।[3]

(स) 'गंगासागर-तीर्थ के वर्णन के साथ-साथ गंगा के 'हरि नख स्रवनी', 'शिवमौलि-स्रुता' एवं 'भागीरथी' रूप का वर्णन है । सिन्धु नदी का भी उल्लेख है ।

(द) वस्तर वन, नन्दिकेश्वर, गंगबल तथा भवन (मट्टन या मातण्ड सूर्य मन्दिर) कश्मीर के पवित्र स्थल एवं तीर्थ हैं ।

---

1. ज्ञान शब्दकोश, सं० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव , ज्ञानमण्डल, बनारस वि० 2030, पृष्ठ 780 ।
2. कश्मीरी और हिन्दी के लोकगीत ; एक तुलनात्मक अध्ययन, डा० जवाहर लाल हण्डू, पृष्ठ 72 । 'शुक्लाम्बर धरम् विष्णु - - -' श्लोक से जोड़-तोड़ किया है ।
3. ब्रह्म 'वन' है— वन अर्थात् भक्ति के योग्य है । उसकी 'वन' नाम से या 'वन' में (एकान्त जंगल में) उपासना करनी चाहिये । देखें : एकादशोपनिषद्, प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तलंकार, 1954, प्रकाशक-विजयकृष्ण लखनपाल, देहरादून, पृ० 19; कश्मीरी में वुन (वोन) का अर्थ है, कहा-कहना, अतः वनवुन का अर्थ है ब्रह्म-विषयक (बात) कहना ।

(न) नेचुपत्र अर्थात् नक्षत्र-पत्र से पंचांग का तात्पर्य है।

(प) स्वाति नक्षत्र की पवित्रता के कारण उसका उल्लेख है।

(फ) केसर-कस्तूरी कश्मीर में पाये जाते हैं तथा सम्पूर्ण देश में हिन्दुओं के पवित्र कार्यों में इनके प्रयोग का विधान है।

(द) ब्रह्मा, राम, सीता, हरिश्चन्द्र, भगीरथ, लक्ष्मी, गरुड़ आदि देवी-देवताओं का उल्लेख है।

(न) मोक्तरज़ संस्कृत के मुक्तारज्जु (मोतियों की माला) से बना है।

यह गीत अति प्राचीन तथा अत्यधिक लोकप्रिय है।

गीत सं० 2 — अद्भुत है। इस प्रकार के विचार एवं भाव-प्रधान गीत अन्यत्र मिलना कठिन है। राम-लक्ष्मण जो सज्जन थे, वे वनवासी हो गये। यह संसार की विचित्र माया है कि एक ही अवां में पकाये (एक माता-पिता से उत्पन्न) बर्तनों में से कुछ टूटे-फूटे निकलते हैं और कुछ सोने के खोस (प्याले) के समान होते हैं। इस विभिन्नता के लिए सप्त ऋषियों, पांच पाण्डवों, त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का उल्लेख है। त्रिदेव के लिए 'त्रिकारण' शब्द का मार्मिक प्रयोग है। इसके उपरान्त आधुनिक सुधारवादी संकेत हैं। सिंघाड़े की मलिनता के प्रति कटाक्ष हैं। वैष्णव प्रभाव के कारण मांस भक्षण का विरोध है, जोकि कश्मीरी पण्डितों में चलाये गये (बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में) आन्दोलन के कारण है। प्राचीन परिपाटी में सात वर्ष की कन्या का दान पुण्यों का फल माना जाता था, आज उसका विरोध किया गया है, परन्तु परम्परा प्रिय कश्मीरियों ने सात वर्ष की कन्या के दान का विरोध नहीं किया है, अपितु सात वर्ष की कन्या से विवाह करने (उसका हाथ मांगने) वाले को पापी ठहराया है।

गीत सं० 3 — में सत्यनारायण का उल्लेख है तथा **गीत सं० 4** — में जो द्वार पर चित्रकारी (क्रूल) करने का वर्णन है वह ब्रज आदि क्षेत्रों के अनुरूप ही है, जिसमें बेलें काढ़ी जाती हैं और थांपे लगाये जाते हैं। पुराने समय में देवदारु तथा चीड़ के पूरे-पूरे पेड़ मकान बनाने में प्रयुक्त किये जाते थे और छतों को छाने में भोजपत्र का प्रयोग होता था, इसका संकेत भी इस गीत में है।

गीत सं० 5 — में पीली चिट्ठी का जो वर्णन है वह उत्तर भारत के ब्रज आदि क्षेत्रों में भी प्रचलित है और हिन्दुओं की प्राचीन परिपाटी है।

गीत सं० 6 — में मेंहदी रात का वर्णन है। कश्मीर में मेंहदी का प्रयोग स्त्रियां प्रत्येक उत्सव तथा शुभ कार्य में किया करती थीं, जैसा कि शेष देश में भी होता है, हिन्दू और मुसलमान दोनों मेंहदी का प्रयोग करते हैं और कश्मीरी

मुसलमानों में भी मेंहदी-रात का संस्कार किया जाता है। 'बचनग़मा' में नाच-गाना होता है जोकि पठानों का (मुस्लिम) प्रभाव है, जिन्होंने कन्याओं के स्थान पर बालकों को नचाना आरम्भ किया था। अछिपोश अक्षपुष्प नामक फूल के लिए है। त्रिवेणी का उल्लेख है। कश्मीर में प्रत्येक नदी का मानवीकरण (शेष भारत के अनुरूप) किया गया है, विशेषकर वितस्ता का। गंगबल के आसपास मेंहदी उगने का वर्णन काल्पनिक है, क्योंकि कश्मीर में मेंहदी नहीं होती। जैसे ब्रज क्षेत्र में उत्तम वस्तु के लिए कहा जाता था कि 'दिसावर' (श्रेष्ठ, दूर की, दिशा) से लायी गई है, उसी प्रकार कश्मीर में लाहौर आदि का वर्णन होता था। देश विभाजन के बाद हिन्दुओं ने लाहौर के स्थान पर दिल्ली कर दिया, परन्तु मुसलमानों ने यह परिवर्तन नहीं किया है।

गीत सं० 8 — में भात देने की परम्परा का वर्णन है जो कि ठीक उसी प्रकार है, जैसे ब्रज प्रदेश में है। भारत के दूरस्थ स्थानों से हिन्दू स्त्रियां भातई रूप में आई हैं। ब्रज में भात देने के कारण लड़के-लड़की के मामा को, उनके पिता का भातई (साला) कहा जाता है, जो कि स्नेहपूर्ण गाली भी है। सोने की मछली देना सुख-समृद्धि का द्योतक है, शुभकारी है।

गीत सं० 9 — में उबटन तथा स्नान का पारम्परिक वर्णन है जो कि सारे देश में प्रचलित है।

गीत सं० 10 — बड़ा ही महत्वपूर्ण है, इसमें ऋतुओं तथा पुष्पों का वर्णन है। सदाशिव का नाम जपने का आग्रह इस गीत की प्राचीनता का संकेत करता है। सूर्य भगवान के 'पूषन' रूप का दार्शनिक वर्णन है, जोकि सूर्य के बारह नामों में से एक है। सीता का स्वर्णकेशी रूप में वर्णन है। दण्डक वन का प्रयोग कश्मीरी गीतों में (उसकी पवित्रता के कारण) बहुत किया जाता है। इराकुसुम (यीरक्योम) कश्मीर में अति प्राचीन काल से शुभ कार्यों में प्रयुक्त किया जाता रहा है और आज भी होता है। नीलमत पुराण में इसका अनेकानेक बार उल्लेख है :

इरापुष्पैस्ततः पूज्याद्विजस्त्रीमित्रबान्धवा : /
रक्तसूत्रनिबद्धानि इरापुष्पाणि कारयेत् //[1]

परम्परा यह है कि इन्द्र के शाप के कारण इरा नामक अप्सरा पुष्प रूप में बदल गई थी।[2] इरा पुष्प की मान्यता नाग-परम्परा है और प्राचीन काल में इरापूजन का विशेष उत्सव मनाया जाता था।[3] नील नामक नागराज का कहना है कि इरा नागों

---

1. भाग- 1, पृष्ठ 110।
2. वही, पृष्ठ 171।
3. वही, पृष्ठ 201।

की प्रिय है, जो इरा से मेरी पूजा करता है, उससे मैं विशेष रूप से प्रसन्न होता हूँ –

इरा नागेषु दयिता, दयिता मे विशेषतः ।
इरावाटे तु यः पूजां करोति मम काश्यप ।
इरापुष्पैर्भृशं तेन तुष्टि मेहि प्रजायते ॥[1]

इरा पूजा में विधान है कि इरा-वाटिका में जाकर इरा – मंजरी की इरा – पुष्पों से पूजा की जाय, दावतें की जायें तथा देवी-देवताओं को इरा की मालायें अर्पित की जायं ।[2]

इस गीत में चैत्र मास में (सर्वप्रथम) खिलने वाले पुष्पों में इरा का वर्णन है । लोकगीतों की परिपाटी के अनुसार प्रत्येक पुष्प से कहा है तुम सर्वप्रथम खिले । 'चे़र' शब्द का श्लेषात्मक प्रयोग काव्य की दृष्टि से प्रशंसनीय है । कौसम से तात्पर्य है 'कुसुम्भ' पुष्प का जो अति प्राचीन काल से पूजा तथा कपड़े रंगने के कामों में लिया जाता था।[3] भगवान, के लिए ठाकुरजी का प्रयोग ठीक वैसा ही है जैसा ब्रज आदि उत्तर भारत के क्षेत्रों में होता है । कश्मीरी घरों में पूजा के कमरे को 'ठोकुर कुठ' (ठाकुर की कुठरिया) कहते हैं । धतूरा कश्मीर में बहुतायत से होता है, शिवजी की पूजा में प्रयुक्त होता है, जैसा कि शेष देश में होता है । केसर पाम्पुर (पद्मपुर) में होता है और उसे ब्राह्मण पुष्प कहा जाता है, क्योंकि मान्यता यह है कि वह पूजा में विशेष स्थान रखता है, क्योंकि उसकी गांठ (बल्ब) प्रथम बार एक नाग ने एक ब्राह्मण को दी थी, जिससे कश्मीर में उसकी खेती होने लगी । इस गीत में पूरे वर्ष में फलने-फूलने वाले फलों-पुष्पों के खिलने का समय वर्णित है, इस प्रकार के गीत सांस्कृतिक ही नहीं वैज्ञानिक (वनस्पति) दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं तथा अन्यत्र दुर्लभ हैं । इस गीत में 'मलमास'का उल्लेख है । ज्योतिष के अनुसार भानमास तथा मलमास का विभाजन है, भानमास सौर्य है तथा मलमास चान्द्र है । कश्मीरी हिन्दुओं में मान्यता है कि जो कश्मीरी सिकन्दर बुतशिकन के अत्याचारों से पीड़ित होकर बाहर भाग गये थे और बाद को बड़शाह के समय (या बाद में) लौट आये वे भानमासी हैं और जो (ग्यारह परिवार) कश्मीर में डटे रहे और प्राचीन परिपाटी का अनुगमन करते हैं वे मलमासी हैं । ज्योतिष के अनुसार मलमास की परिभाषा है: जिस चान्द्र मास में स्पष्ट संक्रान्ति न हो वह 'अधिक मास' तथा जिस चान्द्र मास में दो सूर्य संक्रान्तियां हों वह

---

1. नीलमत पुराण भाग I, पृष्ठ 187 ।
2. वही, पृष्ठ 202 ।
3. वही, पृष्ठ 122 तथा भाग -2, श्लोक 494, 720 ।

'क्षयमास' कहलाता है। इन मासों को मलमास की संज्ञा दी गई है।

गीत सं० 11 — में कश्मीरी परिधान 'फिरन' का उल्लेख है जिसे हिन्दू और मुसलमान दोनों वर्गों के स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध सब पहिनते हैं। हिन्दू तथा मुसलमान फिरन में लम्बाई तथा जेब का थोड़ा-सा भेद है, जिसे कश्मीरी लोग दूर से ही पहिचान लेते हैं, परन्तु बाहर वालों को इसकी पहिचान आसानी से नहीं हो पाती। ढीली-ढाली फिरन के भीतर अग्नियुक्त कांगड़ी लेकर कश्मीरी लोग अपना शीतोपचार करते हैं। फिरन शब्द संस्कृत के 'प्रावरण' से बना है, यह डा० वेदकुमारी का मत है।[1] महाभारत में प्रावर[2] तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 'प्रावरकः' का उल्लेख है : सम्युटिता चतुरश्रिका लम्बरा कटवानकं प्रावरकः सत्तलिकेति मृगरोम।[3]

इस गीत में केशों को दो भागों में विभक्त करके कन्या की मांग को सिन्दूर भरने के लिए तैयार करने के उपक्रम का संकेत है। दक्ष प्रजापति की कन्या तथा रुक्मिणि के विवाह की पौराणिक गाथाओं का संकेत भी है। 'मैना' (शारिका) नाम कश्मीरियों में स्नेह एवं आदर का प्रतीक है क्योंकि भगवती का नाम भी है। 'राम ऋषि' सूत का नामान्तर है, जो व्यास के शिष्य थे जिन्होंने शोनक मुनि को कई पुराण सुनाये थे।[4] वे दीर्घायु माने जाते हैं तथा कश्मीर में आशीर्वाद दिया जाता है कि तुम्हारी राम ऋषि जितनी आयु हो। तलवार तथा थाली सुरक्षा (कल्याण) तथा भोजन के प्रतीक हैं, इनके संयोग से योग-क्षेम की प्राप्ति का संकेत है।

गीत सं० 12 — में कन्या के केश खोलने (जो मेंहदीरात के बाद होता है) के संस्कार का वर्णन है। मसमुचरावन (मुचरावन मुक्त करने से बना है) के समय रतजगा किया जाता है। (इस गीत को दोनों अवसरों पर गाया जाता है अत : मैंने यहां दे दिया है) फुलेल (फलिल) फूल तथा तेल से बना है और इत्र का अर्थ रखता है। लन्दन का ज़िक्र 'इम्पोर्टेड' के फैशन के कारण आधुनिक काल में आ गया है। बादाम-खुबानी की मिगी की माला शुभ मानी जाती है।

गीत सं० 16 — मैना के जोड़े के रूप में तोते का प्रयोग होता है। हीमाल शब्द संस्कृत के श्रीमाल से बना है। इस नाम की आर्य कन्या के नागराज (नाग जाति

---

1. नीलमतपुराण, भाग 1, पृष्ठ 116।
2. महाभारत, 3-3-51।
3. अर्थशास्त्र, सं० शामा शास्त्री, मैसूर 1919, 1924 - पृष्ठ 80।
4. संस्कृत-हिन्दी कोश, वा० शि०आप्टे, 1966, पृष्ठ 863।

के) से प्रेम की कथा कश्मीर की प्राचीनतम गाथा है, जिसमें इस बात के संकेत हैं कि आर्यों तथा नागों के सम्बन्धों में माधुर्य इस प्रेम-प्रसंग के कारण आया था और इसके बाद दोनों वर्ग प्रेमपूर्वक कश्मीर में रहने लगे थे, यद्यपि कृष्ण के समय से जनमेजय के समय तक (जब नाग जाति का विनाश हो गया) शेष देश में इन जातियों के सम्बन्ध शत्रुतापूर्ण थे। दूल्हे के पीछे एक और बालक घोड़े पर बिठाया जाता है, उसे 'पोत महाराज़' कहते हैं। पोत का अर्थ है पीछे (बैठने वाला)। शेष देश में यह परम्परा केवल मुसलमानों में है। सम्भव है कि कश्मीर में भी यह इस्लाम के प्रभाव से आई हो। पान का प्रयोग अति प्राचीन काल से भारत में होता आया है, खाने में तथा पूजा में भी। शेष देश में भी आज इसका इसी रूप में प्रयोग होता है। भट्ट शब्द विद्वान ब्राह्मणों के नाम के साथ प्रयुक्त होने वाली उपाधि है[1] तथा वह कश्मीर में हिन्दुओं के लिए (सभी ब्राह्मण हैं) सामान्य प्रयोग है। कश्मीरी में भट्ट का 'बट' हो जाता है। हिन्दू से मुसलमान बने असंख्य मुसलमानों की उपाधि आज भी कश्मीर में, भट्ट (बट) है। अकबर ने कश्मीर को मुग़ल साम्राज्य में मिलाया था, उसके बाद बीरबल का नाम भी सम्मान से लिया जाने लगा।

गीत सं० 17 — में शहज़ादा, नूरमाल, वज़ीर तथा परिन्दा शब्दों का प्रयोग मुस्लिम प्रभाव का द्योतक है। शक्तिपात जैसे साधनात्मक एवं दार्शनिक शब्द का प्रयोग उल्लेखनीय है, लोकगीतों में सामान्यतः इस प्रकार के प्रयोग नहीं पाये जाते, स्पर्श मात्र से आन्तरिक प्रकाश होने का वर्णन है। जटा तथा मुकुट राजर्षि होने का संकेत करते हैं। सर्वमंगली तथा ओंकाररूप भी प्राचीन संस्कृति के द्योतक हैं। मन रूपी अंगूठी पर भगवान् के नाम को उत्कीर्ण करना, काव्यात्मक (रूपक) कौशल का संकेत करता है। कश्मीर में खड़ाऊं पहिनने का रिवाज़ अति प्राचीनकाल से है और आज भी ऊंची-ऊंची खड़ाऊं हिन्दू पहिनते हैं (विशेषकर गांवों में) परन्तु धीरे-धीरे यह रिवाज़ कम होता जा रहा है। विश्वामित्र का प्रयोग ऊपर आये जटा तथा मुकुट के सन्दर्भ में, उनके राज-ऋषि होने का उल्लेख करता है। कश्मीरी हिन्दुओं में कन्या तथा वर पक्ष के लोग (विशेषकर समधी) मिलने पर ज़ायफल का आदान-प्रदान करते हैं। ज़ायफल (जातिफल) का पूजादि अनुष्ठानों में प्रयोग कश्मीर में अति प्राचीनकाल से होता आया है और इसका नीलमत पुराण में अनेक स्थानों पर उल्लेख है।[2] अपनी सुगन्धि तथा औषधिक गुणों के लिए यह आज भी प्रसिद्ध है।

---

1. संस्कृत-हिन्दी कोश, आप्टे, 1966, पृष्ठ 729।
2. नीलमत पुराण, डा० वेदकुमारी, भाग 1, पृष्ठ 115, 123 तथा भाग 2, श्लोक 427, 814 आदि।

गीत सं० 19 — कश्मीर में जिसे व्यूग कहते है, ब्रज प्रदेश में उसे चौक, बंगाल में अल्पना, मध्य प्रदेश में सतिया तथा मालव में रंगोली कहते हैं। वैदिक काल की कला में इसका विशेष स्थान था और वात्स्यायन के कामसूत्र में इसे चौसठ कलाओं में गिनाया गया है। कश्मीर में समतल स्थल पर इसे बनाया जाता है और उसमें सात रंगों से सोलह घर बनाए जाते हैं तथा कमल, पशु, पक्षियों आदि की आकृतियां मेंहदी के चूर्ण से बनाई जाती हैं। जैसा सारे देश में होता है, प्रत्येक शुभ कार्य में इसकी रचना की जाती है। विवाह के समय वर को सजाकर इस पर खड़ा करके आरती उतारी जाती है, उसके बाद बारात चलती है। कन्या पक्ष के घर में भी यही किया जाता है, तदन्तर वर-वधू जब वर के घर पहुंचते हैं तब भी यही होता है। व्यूग की परम्परा नीलमत पुराण की 'भूमि शोभा' कला[1] से निसृत होकर कश्मीर में आज भी चल रही है। रत्नदीप से तात्पर्य पंचदीप से है, जिससे आरती उतारी जाती है।

गीत सं० 20 — में यम्बरज़ल से तात्पर्य पीले फूल नरगिस से है। पूथ्य का अर्थ पोथी है तथा सिर्य का अर्थ सूर्य है। लोकगीतकार ने सूर्य के रथ के सात घोड़ों को हाथियों में बदल दिया है, लगता है अज्ञानवश ऐसा हुआ है। 'शालिग्राम' की पूजा कश्मीर में उसी प्रकार होती है जैसे शेष देश में— ब्रजभाषा में सालिगराम कहा जाता है। 'लाहौर का तोता' मानो कश्मीर की मैना से विवाह करने आया है, यह संकेत **गीत सं० 21** — में है। नब का अर्थ नभ है। कूरी तीर्थ नीलमत पुराण के अनुसार आजकल के अछबल के निकट था।[2] यह अति प्राचीन सन्दर्भ है।

गीत सं० 22 — में वेल का अर्थ 'वेला' है, विघ्न निवारण अर्थात् 'मंगलवेला' आ गई। 'दअन्तवय' का अर्थ है हाथीदांत का। बबरे तथा सुम्बल फूल कश्मीर के प्रिय पुष्प हैं।

गीत सं० 26 — में कश्मीर के देवी-देवताओं तथा तीर्थों का उल्लेख है। चक्रीश्वर, हारी पर्वत पर भगवती का मन्दिर है।

गीत सं० 28 — में हांजी-स्त्रियों का वर्णन है। हांजी हाउस बोटों में रहने वालों को कहते हैं। इसी गीत में बीसवीं शती के आरम्भ में कश्मीरी पण्डित समाज में एक विशेष सुधारवादी आन्दोलन के चलने का उल्लेख है। चम्बानाथ वैष्णव थे, उन्होंने विवाहादि शुभ कार्यों में मांस-भक्षण का विरोध किया था और हरगोपाल

---

1. वही, भाग 1, पृष्ठ 115।
2. वही, श्लोक 897, 1007, 1029, 1125, 1126, 1146, 1147, तथा 1302।

कौल, आनन्द मुंशी तथा सूरज काक ने उनका साथ दिया था। इसके फलस्वरूप अनेक परिवारों ने विवाह, यज्ञोपवीत तथा श्राद्ध आदि में मांस पकाना-खिलाना बन्द कर दिया था। इसी प्रकार के अन्य आन्दोलन के फलस्वरूप कश्मीरी पण्डित स्त्रियों ने फिरन छोड़कर साड़ी पहिनना आरम्भ कर दिया था।

गीत सं० 29 — में ब्रज प्रदेश तथा उत्तर पूर्वी भारत के कुछ भागों में गाये जाने वाले 'गाली-गीतों 'की सी झलक है।

गीत सं० 31 — में पुलहोर का संकेत है। यह मूंज से बुनकर बनाया गया जूता होता है जो विशेषकर बरफ में पहिना जाता है क्योंकि फिसलता नहीं है। गांवों में आज भी पहिना जाता है।

गीत सं० 32 — में मनन माला का सन्दर्भ विशेष रूप से दार्शनिक आयामों के लिए दर्शनीय है।

गीत सं० 33 — में पुष्प-पूजा का वर्णन है। वर तथा वधू को शिव-शक्ति, राधा-कृष्ण, राम-सीता के समान मानकर वधू के माता-पिता, भाई-बहिन, बुआ-फूफा, जीजा-बहिन तथा अन्य निकट सम्बन्धी उन पर फूल बरसाकर पुष्प-पूजा करते हैं तथा आशीर्वाद देते हैं। इस गीत में हर्षेश्वर, अमरनाथ आदि तीर्थों का भी उल्लेख है।

गीत सं० 34 — में जो 'गुलि-गंडिथ' प्रयोग है उसका अर्थ है 'हाथ जोड़कर ' तथा 'सानिदान' सन्निधान से बना है और अर्थ है समीपता, आधार, अपने पास रखना।[1] इस प्रकार के दार्शनिक शब्दों का प्रयोग अन्य भाषाओं के लोकगीतों में नहीं मिलता। ईशान शिवजी का एक नाम है। वासुकि, शेषनाग, ब्रह्मा, चित्रगुप्त, लोकपाल, चन्द्रमा, सप्तऋषि, गंगासागर, महाविद्या, कुबेर, वरुण आदि की कल्पना की गई है। प्राचीन नदी चन्द्रभागा का भी उल्लेख है। 'व्यून' का उल्लेख महत्वपूर्ण है। ब्रजभाषा में भी इसी प्रकार 'बैमाता' की कल्पना की जाती है, जो लोक-गीतों में कश्मीरी व्यून के समान भाग्य लिखती है। बैमाता शब्द विधिमाता से बना है और विधाता की मातृशक्ति का, सृष्टिकर्त्री शक्ति का प्रतीक है।[2] लोक-मान्यता है कि व्यक्ति के कपाल में उसका भाग्य (कपाल के जोड़ों की तीन लाइनें) बैमाता लिखती है जो उसे अविदित रहता है तथा मृत्यु उपरान्त ही प्रकट हो सकता है। कश्मीर तथा ब्रज प्रदेश की मान्यता की यह विचित्र समानता है। इस गीत

---

1. ज्ञान शब्द कोश, ज्ञानमण्डल, वि० 2030, पृष्ठ 812।
2. ब्रजलोक साहित्य, डा० मधुर उप्रेति, पृष्ठ 20।

में बड़े गम्भीर दार्शनिक संकेत हैं, जैसे 'आत्मरूप' मन के स्थान पर उतरने वाला है तथा 'अपने मन को अर्घ्य बनाकर प्राणों की पूजा कर' एवं 'पापों को जलाकर अज्ञान को समाप्त कर ।' इस प्रकार के गम्भीर विचार सामान्यतः महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले लोक-गीतों में नहीं मिलते । कश्मीरी लोकगीतों में प्राचीन भारतीय संस्कृति के कितने प्रकार के तथा कितने महत्वपूर्ण तत्व पाये जाते हैं, यह गीत इस तथ्य का प्रमाण है ।

गीत सं० 36 — में भांवरों, फेरों (सप्तपदी) के समय अथवास का उल्लेख है। ब्रज आदि प्रदेशों में वर तथा वधू के वस्त्रों में गांठ बांधी जाती है । कश्मीरी में अथ का अर्थ है हाथ तथा वास से तात्पर्य है हाथ में – हाथ का वास, सदा के लिये । यही वास्तविक पाणिग्रहण संस्कार है । कश्मीर में यह शुद्ध वैदिक परिपाटी चली आ रही है । इसी का एक अन्य विशेष रूप सप्तपदी के बाद की 'अथवास' की क्रिया में पाया जाता है । वर वधू को तुलसी तथा सालिग्राम (विष्णु का शिलित रूप) भी इस गीत में कहा गया है, जो कि प्राचीन पौराणिक आख्यान के अनुसार है । तुलसी शंखचूड़ की पत्नी थी, विष्णु ने उसका शील-भंग किया था और वे तुलसी के शाप-वश ही शिला हो गये थे ।[1] अन्य मत के अनुसार तुलसी वृन्दा के शरीर के पसीने से उत्पन्न हुई थी ।[2] समुद्र मंथन के बाद ब्रह्मा ने तुलसी (अमृत-जन्मा) को विष्णु को दे दिया था,[3] यह भी एकमत है। तुलसी का नाम उसके अतुलनीय सौन्दर्य के कारण तुलसी पड़ा था ।[4] तुलसी को धर्मध्वज-माधवी की पुत्री भी माना जाता है ।[5]

गीत सं० 37 — में अथवास का वर्णन है । इसमें सप्तपदी के बाद वर तथा वधू पूर्व दिशा की ओर मुख करके एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर बैठते हैं तथा अंगूठियां बदलते हैं । दांये से दांया तथा बायें से बायां हाथ पकड़ने के कारण वे व्यत्यस्त भुजा (क्रौस्ड हैण्ड्स) हो जाते हैं ।[6] वास्तव में सप्तपदी के समय जो पाणिग्रहण होता है, उसी को सम्पुष्ट करने के लिए यह विलग से अनुष्टान बना दिया गया है । इसमें वर-वधू के हाथों को कपड़े से ढक देते हैं ।

गीत सं० 38 से 40 तक — सुनर्यवान का अर्थ सुनार की दुकान है ।

---

1. ब्रह्मवैवर्त पुराण -2, 13-29 ।
2. पद्मपुराण, उ० -15 ।
3. स्कन्दपुराण, 2-4-8 ।
4. हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमण्डल, वाराणसी, भाग-2, पृष्ठ 217 ।
5. संक्षिप्त आक्सफोर्ड हिन्दी-साहित्य परिचायक, 1963, पृष्ठ 120 ।
6. क० और हि० के लोकगीत-एक तुलनात्मक अध्ययन, ज० ला० हाण्डू, पृष्ठ 105 ।

वणिक से वानी तथा वान शब्द बने हैं। पोम्बु, पीताम्बर के लिए हैं। गंगज छोटे गंगासागर (तांबे का टोंटीदार पात्र) के लिए है। जो ब्रज में बच्चों के दूध पीने की 'कलबली' से थोड़ा बड़ा होता है। गंगझ का अर्थ है गंगाजल[1] उसी से कश्मीरी 'गंगज' शब्द बना है क्योंकि कश्मीरी में झ का ज हो जाता है। 'कोंग-मोंड' से वधू का तात्पर्य है। जैसे 'केसर की गांठ' से फूल निकलकर रंग-सुगन्ध वितरित करता है उसी प्रकार वधू करेगी। कश्मीर में शंकु के आकार का खांड का कन्द पूजा आदि में प्रयुक्त होता है, उसी को कन्द कहते हैं, यह शैव-शाक्त प्रभाव है।

इस विवेचन के बाद मैं कन्या तथा दर-पक्ष के विवाह सम्बन्धी गीतों की क्रमिक सूची दे रही हूँ :

कन्यापक्ष

लिवुन (लिपाई), शुभकार्य आरम्भ करने के गीत (बर्तन-कपड़े आदि खरीदने के), दपुन (न्योता देना), मसमुच़रावुन (केश खोलना), क्रूल-खारुन (बेल आदि चित्रकारी), मअज़रात (मेंहदीरात), दुरिबत (भात), कन्यश्रान (कन्या का स्नान), दिवयोग (देव पूजा), वांक पारन्य (केश संवारना), तरंग गण्डुन (तरंग बांधना), बरात के स्वागत-गीत, व्यूग (चौक के गीत), द्वार पूजा, बतस (बरातियों की ज्योनार), लग्न के गीत जिनमें (मननमाल बांधने, सप्तपदी, अथवास, पोश-पूजा तथा दय-बत के गीत आते हैं) विदा के गीत।

वर-पक्ष

लिवुन (लिपाई), शुभ कार्यारम्भ के गीत, दपुन, लग्न चीरि (पीली चिट्ठी), क्रूल-खारुन, मअज़रात, दुरिबत, दिवगोन (श्रान तथा देवपूजा), व्यूग, यन्यवोल (बरात), अरनिरोथ (नृत्य) के गीत। इन गीतों की व्याख्या और उनके सांस्कृतिक विवेचन में जो व्यतिक्रम हुआ है, उसके कारण हैं : (अ) कन्या तथा वरपक्ष के गीतों को एक साथ लेना, जो आवश्यक था, तथा (ब) सांस्कृतिक दृष्टि से अनुष्ठानों की प्राथमिकता।

---

1. ज्ञान शब्द कोश, ज्ञानमण्डल, वि० 2030, पृष्ठ 197।

कश्मीरी मुसलमानों के संस्कार गीत

मुसलमानों के सम्बन्ध में डा० जवाहरलाल हण्डू का मत दर्शनीय है :

(अ) संस्कार शब्द का प्रयोग, रसम, प्रचलन, सुन्नत अथवा अंग्रेजी 'राइट' के पर्याय के रूप में है।

(ब) इस्लाम के आगमन के बाद कश्मीर में हिन्दू-मुसलमानों में सामाजिक तथा सांस्कृतिक धरातल पर पारस्परिक आदान-प्रदान होता आया है तथा दोनों के दैनिक जीवन तथा रहन-सहन में समानता परिलक्षित होती है।

(स) मुसलमानों में हिन्दुओं जैसा विधि-विधान पुत्र-जन्म की रस्मों का नहीं है। पुत्र-जन्म के बाद 'त्रुय' तथा 'श्रान स्वन्दर' मुसलमान उसी प्रकार मनाते हैं जैसे हिन्दू मनाते हैं।

(द) जिस प्रकार पुत्र-जन्म सम्बन्धी कृत्यों का नामकरण, हिन्दुओं में प्रचलित लोकाचारों एवं कृत्यों के अनुरूप मुसलमानों ने अनुकृत किया है, उसी प्रकार अन्य अवसरों पर गाये जाने वाले लोक-गीत भी हिन्दुओं के लोक-गीतों के अनुकरणात्मक, किंचित प्रक्षिप्त अनुकृति मात्र हैं।[1]

(कश्मीरी मुसलमानों के शोक-गीत नहीं होते हैं, क्योंकि सारे संसार के मुसलमान शव-यात्रा तक में मौन रखते हैं, अतएव हिन्दुओं के शोक (मृत्यु) गीतों को मुसलमानों के संस्कार गीतों के बाद ही लिया गया है)।

पुत्र जन्म के अवसर को मुसलमान 'शअदियान' कहते हैं। फारसी के शब्द शादी का अर्थ है हर्ष, आनन्द, खुशी[2]; विवाह भी इसका अर्थ है। शअदियान का शाब्दिक अर्थ हुआ, हर्ष का अवसर।

गीत सं० 1 — में रविवार का व्रत रखने का उल्लेख है। इच्छापूर्ति के लिए व्रत रखना प्राचीन हिन्दू परम्परा है। कश्मीरी में लोल का अर्थ प्यार (लाढ़) है जोकि लालन, लला आदि से बना है, इस शब्द का प्रयोग हिन्दू मुसलमान दोनों बहुत करते हैं।

गीत सं० 2 — में कमरे को इलायचियों की मालाओं से सजाने का जो संकेत है वह भारतीय हिन्दू परम्परा है। हिन्दुओं में जैसे यज्ञोपवीत तक, जन्म से प्रत्येक बालक शूद्र होता है (जन्मना जायते शूद्रः) उसी प्रकार मुसलमान कहते हैं कि कश्मीरी

---

1. क० और हिन्दी के लोकगीत एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 135-7।
2. उर्दू-हिन्दी शब्दकोश, मुहम्मद मुस्तफा 'मद्दाह', उ०प्र० हिन्दी संस्थान, 1977, पृष्ठ 637।

मुसलमान बालक मानो जन्म के समय हिन्दू था— 'काफिर' था और ख़तना के बाद ही वह मुसलमान बना है। शेष भारत के अथवा अन्य देशों के मुसलमान यह नहीं कहते। इससे प्राचीन काल में ख़तना करके हिन्दुओं को कश्मीर में मुसलमान बनाने के ऐतिहासिक तथ्य का संकेत मिलता है।

गीत सं० 3 — में शादियान की तुक पर बादियान (सौंफ) का प्रयोग है। वैसे कश्मीर में सौंठ तथा सौंफ का प्रयोग हिन्दू और मुसलमान दोनों ही बहुत करते हैं। मसाला पीसने के गीत हिन्दू और मुसलमानों में एक से मिलते हैं, इसका एक कारण यह भी है कि हांजी (मुसलमान) स्त्रियां इस प्रकार के कार्य हिन्दुओं के घरों में किया करती थीं।

गीत सं० 4 — में दूल्हे के लिए 'महाराज़ ' शब्द का प्रयोग है, जैसा कि हिन्दुओं में भी होता है। सामान्यतः आदरसूचक सम्बोधनों को देखा जाए तो हिन्दू महाराज़ (बोलने में 'म्हरा' हो जाता है) कहते हैं और मुसलमान हज़रत (बोलने में 'हज़' हो जाता है) कहते हैं, परन्तु दूल्हे के लिए नोशा न कहकर मुसलमान भी 'महाराज़' शब्द का ही प्रयोग करते हैं।

गीत सं० 5 — में सरकार से तात्पर्य मुहम्मद साहब से है। अन्यत्र मुसलमान दूल्हे को पैगम्बर कहकर पुकारना कुफ्र मानेंगे, परन्तु कश्मीर में चूंकि हिन्दू दूल्हे को देवताओं का रूप दे देते हैं, उसी के अनुरूप दूल्हे को हज़रत मुहम्मद कह दिया है। उनके साथ उनके चार यार भी वर्णित हैं। ये प्रसिद्ध चार यार थे, अबूबक्र (सत्यवादी थे), उमर (न्यायप्रिय थे), उसमान (विद्वान थे) तथा अली (वीर योद्धा थे), जो अपनी-अपनी विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध थे। मुसलमान भी 'शोभा' शब्द का प्रयोग करते हैं। इस्लाम में माना जाता है कि मुहम्मद साहब अल्लाह के नूर (प्रकाश) से युक्त थे, अतः कहा गया है कि हमें दूल्हे के रूप में नबी के आने पर अंधेरे में प्रकाश मिल गया। गअट (अनिग़ट) संस्कृतमूलक है, अर्थ है अन्धकार।

गीत सं० 8 — में हीमाल नाम का प्रयोग है जोकि प्राचीनतम कश्मीरी गाथाओं की नायिका (श्रीमाल) का है तथा नागों एवं आर्यों के प्रेम-प्रसंग से सम्बंधित है। 'कुलफ' शब्द अरबी भाषा के कुफ्ल से बना है,[1] मुख-सुख के लिए फ के स्थान पर ल आ जाता है। मुचरान शब्द संस्कृत के मुक्त से बना है। भौंह कि लिए 'बुम्ह ' का प्रयोग है जो संस्कृत भ्रू से बना है। जिगरी शब्द प्यारी के लिए हिन्दू मुसलमान दोनों में प्रयुक्त होता है। हिन्दू बच्चे अपनी मां को भी 'जिगरी' नाम से सम्बोधित

---

1. उर्दू -हिन्दी कोश, उ० प्र० हिन्दी संस्थान, पृष्ठ 130।

करते हैं।

गीत सं० 9 — में चन्दन, मुक्ता, कोकिल आदि संस्कृत के शब्द हैं जो हिन्दुओं के गीतों में विशेष रूप से प्रयुक्त होते हैं। मेंहदी का प्रयोग हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों में होता है, इस गीत से साफ़ हो जाता है कि मुसलमानों में भी मेंहदीरात मनाई जाती है। वैसे मेंहदी (अंग्रेजी मर्टिल) का प्रयोग एडम-ईव की कथा से लेकर आज तक (क्रिसमस पर) ईसाइयों में भी होता है। चन्दन के पेड़ के नीचे से आने वाली मेंहदी का संकेत उस मेंहदी के विशेष रूप से सुगन्धित होने की ओर है। ध्यातव्य है कि यह प्रयोग हिन्दू लोकगीतों में बहुत पहले से, प्रचुरता से होता आया है।

गीत सं० 10 — में शाह हमदान का उल्लेख है। मध्य युग में एक सूफी हमदान से कश्मीर आया था और उसने इस्लाम के प्रचार का कार्य करके हिन्दुओं को मुसलमान बनाने में योग दिया था। उस सूफी सन्त की मज़ार, जिसे मुसलमान ज़ियारत (तीर्थ) कहते हैं श्रीनगर में हिन्दुओं के हारी पर्वत के नीचे है और मुसलमानों में अति पवित्र मानी जाती है। 'मुग़लों के बच्चे' से तात्पर्य विजयी दिल्ली सल्तनत के अनुयाइयों से है। 'वनवुन' तथा 'बबरे' (पुष्प-पत्ते) दोनों अति प्राचीन हिन्दू संस्कृति के अंग हैं और इनका परिचय पीछे दिया जा चुका है। 'हिन्दोस्तान का पठान' का प्रयोग इस बात को सिद्ध करता है कि यह गीत भारत के विभाजन से पूर्व का है अन्यथा आज 'पाकिस्तान का पठान' कहना उन्हें अधिक अच्छा लगता। वैसे भी कश्मीर में पठानों ने राज्य किया था, इसलिए कश्मीरी मुसलमानों के मन में उनके प्रति स्नेह-सहानुभूति की भावना आज पाई जाती है। इसीलिए पाकिस्तान ने आगे चलकर जब पठान ड्रैस (सलवार, लम्बा कुर्त्ता तथा जैकिट) को अपनी राष्ट्रीय औपचारिक (फोर्मल) वेश-भूषा के रूप में स्वीकार कर लिया तो कश्मीरी मुसलमानों ने अपनी फिरन छोड़ कर उस पहिनावे को स्वीकार कर लिया।

गीत सं० 11 — में 'नार' तथा 'वुज़मल' का प्रयोग है। वैश्वानर (अग्नि) से नार[1] बना है तथा 'विद्युल्लता' के लिए वुज़मल है, जैसे कश्मीरी में तड़ित से बने 'त्रठ' शब्द का प्रयोग होता है। संस्कृत-हिन्दी कविता में नायिका की शरीर-द्युति का उपमान विद्युत (विशेष द्युति) है। उर्दू-फारसी में इसका प्रयोग कम ही होता है।

---

1. "भूत, वर्त्तमान और भविष्य के समस्त नर-नारी के समूह को संस्कृत में 'नार' कहते हैं "— उपनिषदों का बोध; काका कालेलकर, स . सा . मण्डल, पृ . 37; शीत-प्रदेश में इनकी स्थिति अग्नि ही बनाये रखती है, यह भी एक व्याख्या है।

गीत सं० 12 — में दक्षिण दिशा की खिड़की का प्रयोग ठेठ भारतीय परम्परा के अनुसार है। पींछे अनेकानेक हिन्दू गीतों में इसका प्रयोग है। वधू के लिये मैना (शारिका) शब्द का प्रयोग भी ठेठ कश्मीरी-हिन्दू परम्परा के अनुरूप है। वैसे जुमेरात (बृहस्पतिवार) का मुसलमानों में (जुमे से पूर्व आने के कारण) कुछ महत्व है, परन्तु हिन्दुओं के लिए बृहस्पतिवार का विशेष महत्व है। ध्यान देने योग्य बात तो यह है कि इस गीत में 'जुमेरात' शब्द का प्रयोग न करके 'ब्रसवार' का प्रयोग किया गया है। कश्मीरी में बृहस्पतिवार को ब्रसवार ही कहते हैं। लगता यही है कि यह भारतीय परम्परा के अनुकरण पर ही है।

कश्मीरी के शोक (मृत्यु) गीत (1 से 77 तक)

प्रागैतिहासिक काल से भी पूर्व से कश्मीर घाटी भारत से जुड़ी रही है। रामायणकाल से तो आर्य-संस्कृति से सम्बद्ध होने के प्रक्टप्रमाण हैं। महाभारत-युद्ध से पूर्व तथा उसमें कश्मीर के योगदान के ऐतिहासिक प्रमाण हैं। कश्मीरी भाषा वैदिक-भाषा की अपभ्रंश है, यह कश्मीर विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग ने सिद्ध कर दिया है। इसकी व्याकरण संस्कृत की ही है। कश्मीर घाटी में लोक-साहित्य की परम समृद्ध एवं प्राचीन परम्परा है। कश्मीर के लोक-गीतों को मोटे रूप में दो भागों में बांटा जाता है : हिन्दुओं के लोक-गीत तथा मुसलमानों के लोक-गीत। कश्मीर घाटी के लगभग सभी मुसलमान पहले हिन्दू थे, इस कारण हिन्दू तथा मुसलमानों में सांस्कृतिक समानता एवं आदान-प्रदान यहां की विशेषता थी। सन् 1947 के बाद पाकिस्तान के दुष्प्रचार से मुसलमानों में अलगाव की भावना अंकुरित हुई जिसने वैमनस्य एवं घृणा का रूप धारण कर लिया और जो आज आंतकवाद के रूप में परिणत हो गई है। हिन्दू कश्मीर से खदेड़ दिये हैं।

कश्मीरी के लोक-गीतों का वर्ग-विभाजन मेरे अतिरिक्त अनेक विद्वानों ने किया है, उनमें प्रमुख हैं : श्री मोहनकृष्ण धर, श्री देवेन्द्र सत्यार्थी, डा० जवाहरलाल हण्डू, कु० निर्मला जाला, श्री बंसीलाल पण्डित 'परदेसी' तथा डा० रमेशकुमार शर्मा। इन सबने कश्मीरी के शोक (मृत्यु) गीतों का एक विलग वर्ग माना है। भारत में वेदों से लेकर बाद के साहित्य में कुछ शोक एवं विलाप के वर्णन पाये जाते हैं।

ऋग्वेद में व्यक्ति की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के सूत्र पाये जाते हैं। परन्तु इनमें मृत्योपरान्त आत्मा का क्या होता है, वह कहां जाती है, इसका वर्णन है, इन्हें वास्तविक शोक (मृत्यु) गीत कह सकना कठिन है।[1] शोक सन्तप्त परिवार को कथाओं एवं गीतों से ढ़ाढ़स बंधाने के[2] पारस्कर गृह्य सूत्रों के उल्लेख को भी शोक (मृत्यु) गीत नहीं कहा जा सकता, हां, यह माना जा सकता है कि इनसे शोक-गीतों की परम्परा चल पड़ी होगी। 'कुमार सम्भव' में रति के विलाप को भी इस कोटि में नहीं रखा जा सकता। रघुवंश से यह परम्परा पूर्णरूपेण प्रकट होती है क्योंकि उसमें मृतक के गुण-वर्णन के साथ शोक का प्राकट्य है। बाण ने राजश्री के द्वारा पति की मृत्यु पर 'रुदितक' गीत गाने का उल्लेख किया है और हम कह सकते हैं कि यहां से

---

1. ऋग्वेद, 17-14-7 तथा 10-14-9।
2. हिन्दू संस्कार, राजबली पाण्डेय, पृष्ठ 323।

यह परम्परा पूर्णरूपेण मुखर होती है । कश्मीरी के शोक-गीतों में भी मृतक की आत्मा की परलोक यात्रा का वैसा ही वर्णन मिलता है, जैसा ऋग्वेद में मिलता है, अतः हम कह सकते हैं कि इस परम्परा के बीज ऋग्वेद में हैं, फिर संस्कृत साहित्य में पूर्णरूपेण पल्लवित होकर यह आधुनिक भारतीय भाषाओं, विशेषकर कश्मीरी में, फलीभूत हुई है । धीरे-धीरे अन्य उत्तर भारतीय भाषाओं में यह समाप्त-सी हो गई ।

ब्रज आदि हिन्दी प्रदेश के लोक-गीतों में भी शोक (मृत्यु) गीत बहुत कम पाये जाते हैं । अन्य भारतीय भाषाओं में कश्मीरी जैसे दार्शिनिकता से पूर्ण शोक-गीत नहीं पाये जाते । एक अन्य बात यह है कि यहां शोक-गीत केवल हिन्दुओं के हैं । सिकन्दर बुतशिकन ने कश्मीर के हिन्दुओं को बलपूर्वक, नृशंस अत्याचार करके, मुसलमान बनने के लिए बाध्य किया था और जो न माने उनका वध कर दिया था— यह एक ऐतिहासिक तथ्य है । शेष बचे थे केवल ग्यारह ब्राह्मणों के परिवार और आज कश्मीरी हिन्दू का अर्थ है केवल कश्मीरी ब्राह्मण या 'कश्मीरी पण्डित ', यही कारण है कि उनके लोक-गीतों में दर्शन एवं शास्त्र-ज्ञान का ऐसा बाहुल्य है कि वे सामान्य लोक-साहित्य से बहुत ऊंचे उठ जाते हैं । शोक (मृत्यु) गीत संस्कार-गीतों के अन्तर्गत आते हैं ।

कश्मीरी हिन्दुओं में यह मान्यता है कि शोक-मृत्यु गीतों को केवल किसी की मृत्यु के अवसर पर ही गाना चाहिए । यदि इन्हें अनायास या अकारण गाया जाता है तो गाने वाली (या गाने वाले) के परिवार में तुरन्त कोई मृत्यु हो जाती है ।

मृत्यु-गीतों को गाने की एक विशेष परिपाटी है । इन गीतों को गाने वाली पेशेवर गायिकाओं को 'वानरेन्य' अथवा 'वानुवाजेन्य' कहा जाता है । एक वानरेन्य गीत की एक पंक्ति गाती है तथा अन्य परिवारी-परिजन महिलायें 'टेक' को दुहराती हैं, जिसका अर्थ होता है : हां री सच कह रही हो । शोक-गीत केवल महिलायें ही गाती हैं । ध्यातव्य है कि ये गीत केवल किसी नाती-पोतों वाले वयोवृद्ध परिवारीजन की मृत्यु पर ही गाये जाते हैं, जिसका पुष्प-सज्जित विमान धूम-धाम से निकाला जाता है ।

काकस सोरिन्य होतिनय प्रान,
बन्द त बान्दव छिस सोम्बरान ।
अन्त-दान करन सअत्य वस्यस निरवान,
दान त दरम छिस करान ।
ज़ुरय त पितुरय छिस सोम्बरान,

ब्रह्म विद्या छिस बोजनावान ।

गीता पाठ छिस बोज़नावान,

अह्मन बी पोज़ छख वनान तय । टेक ॥

अर्थ : काकाजी के प्राण पखेरू उड़ने वाले हैं, इसलिए उनके बन्धु-बान्धवों को इकट्ठा किया जा रहा है । उनके हाथ से अन्त-दान कराया जाएगा जिससे उनको निर्वाण प्राप्त होगा । उनके हाथ से दान-धर्म कराया जा रहा है । उनके बच्चों, दामाद, नाती-पोतों, सभी को एकत्रित किया जा रहा है । काक को ब्रह्म-विद्या सुनाई जा रही है, इसके अतिरिक्त गीता-पाठ भी सुनाया जा रहा है । हां री सच ही कहती हो ।

गीत सं० 1 — कश्मीरी में किसी बड़े एवं आदरणीय व्यक्ति के लिए 'काक' सम्बोधन का प्रयोग किया जाता है, जैसे 'कोक काक' आदि । मृत्यु आसन्न होने पर व्यक्ति से जो दान कराया जाता है, उसे 'अन्त-दान' कहते हैं और यह प्राचीन भारतीय परम्परा है । निर्वाण का सामान्यतः मोक्ष के अर्थ में प्रयोग किया जाता है । कश्मीरी हिन्दुओं में इसके प्रयोग के दो कारण हैं । एक तो कश्मीरी-शैवमतानुसार, दूसरे इस शब्द की स्वीकृति का कारण है बौद्धमत का दीर्घकाल तक कश्मीर में वर्चस्व रहना, बौद्धमतानुसार निर्वाण का अर्थ है 'बुझ जाना'—जैसे दीपक बुझ जाता है । इस गीत में निर्वाण का अर्थ है शैमतानुसार मोक्ष-प्राप्ति । मरणासन्न व्यक्ति से अनेक प्रकार के दानादि धार्मिक कर्म कराये जाते हैं, उनका संकेत भी उपर्युक्त गीत में है । गीता-पाठ सुनाया जाना सामान्य भारतीय हिन्दू-मान्यता है । ब्रह्म-विद्या से तात्पर्य है शैवमतानुसार त्रिक-दर्शन आदि का सुनाया जाना ।

गीत सं० 2 —

दम दिथ खोरथम वोम कुय शब्द ,

ब्रम दिथ चलिमत काकव . . . .

काक ने (इतने) ज़ोर से (दम लगाकर) ओम् शब्द का उच्चार किया (कि हम समझे कि वे ठीक हो रहे हैं) परन्तु वे हमें भ्रम में डाल कर चले गये । कश्मीरी में शब्दारम्भ का 'उ' तथा 'ओ' व में परिवर्तित हो जाता है, अत : ओम का वोम, ओंकार का वोंकार तथा उमावती का वमावती हो जाता है । मृत्यु के समय ओम् का उच्चार मोक्षदायक है ।

गीत सं० 6 — जिस प्रकार शेष भारत में मृत्यु के उपरान्त 'गरुड़-पुराण' का पाठ किया जाता है, उसी प्रकार कश्मीर में 'महिमनापार' का पाठ किया जाता है,

जिसमें भगवान शिव की भक्ति के संस्कृत श्लोकों का पाठ किया जाता है। कश्मीरी में शब्दारम्भ का ओ ऊ में तथा ए ई में परिवर्तित हो जाता है, अतः वेद का 'वीद' हो जाता है। एक अन्य गीत में एक साथ इन देवताओं का वर्णन है : कृष्ण, विष्णु, नारायण, इन्द्र, धर्मराज, गरुड़, अग्नि, वरुण, सूर्य, चन्द्र, कुबेर तथा ब्रह्मा। कहा गया है कि काक इतने पवित्रात्मा थे कि उनके देहवसान की सूचना पाकर इन देवताओं ने अपने-अपने दूत भेजे। कश्मीरी में इन्द्र को 'यन्द्र' कहते हैं क्योंकि शब्दारम्भ का इ अक्षर य में परिवर्तित हो जाता है।

गीत सं० 7 — जैसा कि पीछे संकेत किया जा चुका है, ऋग्वेद में भी इस प्रकार के वर्णन मिलते हैं कि मृत्यु के बाद जीव को यम आदि विभिन्न देवता कहां-कहां ले जाते हैं। इस गीत में अनेक वैदिक तथा पौराणिक देवताओं का वर्णन है। अतः यह गीत प्राचीनतम भारतीय परम्परा के अन्तर्गत आता है।

गीत सं० 8 — में मरणासन्न वृद्ध के सिरहाने बैठकर उनका पुत्र उन्हें गीता सुनाता है, इसका उल्लेख है तथा गीत सं० 10 में गीत सं० 7 के समान देवताओं का उल्लेख है।

गीत सं० 13 —

सन्तज़न वथ कम्यू होविय ?

नारायनन पानअ वथ होविय।

सन्तों के मार्ग पर चलना किसने सिखाया ? स्वयं नारायण ने (तुम्हें) मार्ग दिखाया। इसके मूल में महाभारत का 'महाजनो येन गतः स पन्थाः, वाला सूत्र है, जिसे मृतक को स्वयं नारायण (कृष्ण) ने सिखाया। इस गीत में आगे चलकर कृष्ण का नाम से उल्लेख है।

गीत सं० 15 — कश्मीर घाटी प्राचीन काल में जलापूरित थी और सती (देवी भगवती) ने शारिका (मैना पक्षी) का रूप धारण करके जलोद्भव राक्षस का वध करके घाटी को आवास योग्य बनाया था। जिस झील को डल (शतदल से बना शब्द) के नाम से जाना जाता है उसका प्राचीन नाम सतीसर है और हिन्दुओं के लिए वह परम पूज्य है। कश्मीरी में महाप्राणों का बहुत कम प्रयोग होता है, अतः साधुन का 'सादन' हो गया है, भोजन का 'बोज़न' हो जाता है। गोदान प्राचीन भारतीय परम्परानुसार वैतरणी पार करता है।

गीत सं० 18 — मृतक के उत्तराधिकारी की ओर से अतिशयोक्ति-युक्त

कथन है । दिवंगत पवित्रात्मा के लिए उत्तमोत्तम क्रिया-कर्म की कल्पना है क्योंकि उन्हें निर्वाण-पद प्राप्त 'होना चाहिए' । प्राचीन वैदिक शब्द है 'कृव्याध' जो कश्मीरी में 'कावुज़ ' हो गया है । आज भी हिन्दुओं के श्मशान में कावुज़ होता है जो कि चिता सजाता-जलाता है और शव पर के शाल-दुशाले स्वर्णाभूषण आदि प्राप्त करता है । वैदिक-काल से चले आने वाले इस पेशे को करने वाले सब लोग आज मुसलमान हो गये हैं परन्तु आज भी यह कार्य करने का अधिकार उन्हीं का है । ध्यातव्य है कि शेष भारत में हिन्दू-शव को विधर्मी (कहीं-कहीं तो विजातीय) लोग छू नहीं सकते । कश्मीर में पुरोहित, पुत्र से, चिता में आग लगवा देता है, फिर चिता में शव को (कभी-कभी उलट-पलट कर) कावुज़ ही जलाता रहता है । कावुज़, दाह-संस्कार की सारी हिन्दू-प्रक्रिया (कपाल-क्रिया आदि) से परिचित होता है । कावुज़ को दक्षिणा भी दी जाती है, चाहे उसे आज 'बख्शीश' ही क्यों न कहा जाता हो ।

गीत सं० 22 —

मअसम बतस त्रिच़ोरदान ,

कन्यक त बालक ख्यवान जान । . . .

'तिमुंहे चूल्हे पर पवित्रता पूर्वक पकाये गये 'मअसम बत' को बालकों एवं बालिकाओं को खूब अच्छी तरह खिलाया जा रहा है ।' (फारसी के मासूम से 'मअसम' बना है, अर्थ है —शिशु-बच्चे; सं० रन्धन = क० रुनुन; ब्रज में रांधना) ।

'भात' शब्द संस्कृत के 'भुक्त' (पके, गले) से बना है जो कश्मीरी में 'बत' (भ का ब) हो जाता है । उपनिषदों में नचिकेता की कथा में 'त्रिनाचिकेत अग्नि' का वर्णन है । प्रत्येक आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) की सन्धि में एक अग्नि है जिनकी कुल संख्या हुई तीन और जो व्यक्ति चारों आश्रमों को साध लेता है अर्थात् इन 'त्रिनाचिकेत' अग्नियों को साध लेता है वह **मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है** । नचिकेता (जिज्ञासु) को यम का यही उपदेश था । कालान्तर में मृत्यु-विजय करके मोक्ष-प्राप्ति के इच्छुक (चारों आश्रमों का सुचारु से रूप निर्वाह करने वाले) वयोवृद्ध व्यक्ति के अन्तिम- संस्कार में तीन अग्नियों पर 'भुक्त' अन्न को शिशु-भोज में परसा जाने लगा । यही शिशु (मअसम) भात (बत) 'मअसम बत' है । परम दार्शनिक तत्व कर्मकाण्ड में किस प्रकार परिवर्तित हो जाता है, इसका यह उत्तम उदाहरण है। कश्मीरी में चूल्हे को दान कहते हैं तथा चूल्हे के गोल-छेद को 'च़ोर'

कहते हैं[1] अतः तिमुंहे चूल्हे का नाम हुआ 'त्रिचोर दान' । 'त्रिक दर्शन' एवं 'त्रिपुर-सुन्दरी' की भावना भी है।

गीत सं० 25 — में मृतक 'काक' का अतिशयोक्तिपूर्ण यशगान है।

कश्मीरी के शोक (मृत्यु) गीतों में **गीत सं० 27** का विशेष महत्व है, इसमें दार्शनिकता के साथ-साथ परम्परा-पालन की कश्मीरी हिन्दुओं की रुचि के भी संकेत मिलते हैं। अन्य भाषाओं के सामान्य लोकगीतों में इस प्रकार के गहन एवं सूक्ष्म दार्शनिक संकेत दुर्लभ हैं।

शब्दार्थ :— कपसे कस्तूर : कस्तूर एक पक्षी है जो बहुत बोलता है। जो व्यक्ति कुसमय पर बोलता है उसे 'कुवक्त-कस्तूर' कहते हैं। जन्माष्टमी से पूर्व चन्दन-षष्ठी होती है उस समय नया गेहूँ होता है जिसे चन्दन षष्ठी पर खाना आवश्यक माना जाता है। गेहूँ के साथ ही कपास भी होता था। कपास के ऊपर कस्तूर का बोलना कुसमय का नहीं है। संकेत यह है कि दिवंगत व्यक्ति परिपक्व अवस्था के अर्थात् वयोवृद्ध, नाती-पोतों वाले थे और समय पूरा हो जाने पर मृत्यु का आना स्वाभाविक है, यही दस्तूर (परम्परा) है। 'नोशि' शब्द स्नुषा (पुत्रवधू) से बना है। 'बब' भी काक की भांति पिता या बाबा जैसे किसी भी वयोवृद्ध के लिए प्रयुक्त होता है। **'चन्दनुच़ पटा'** से उस लकड़ी के पट्टे (यहां चन्दन का बताया है) से तात्पर्य है जिस पर लिटाकर शव को श्मशान ले जाते हैं, जैसे शेष देश में अर्थी (या ठठरी) होती है। **'वुशनोवहोस'** का अर्थ है 'गरम किया'। कश्मीर में भयंकर शीत होता है, इस कारण मरणासन्न व्यक्ति के मुख में डालने हेतु घर में रखे ठण्डे (कभी-कभी जमें हुए) गंगाजल को गरम किया जाता है। 'शुबदार' अर्थ है शोभादार। शो का शू तथा भ का ब बन जाता है। **अडवति प्यण्डा** का अर्थ है अर्द्धपथ पिण्ड। च़ोन- चार, कूंजन - कोने, च़खा - सुलगाना अर्थात् दाह देना, चिता के चारों कोनों में दाह देना। **छाया ज़जिहस** - छाया जलाना। श्मशान में शव-दाह के उपरान्त परिवारी-जन नदी तट पर स्नान करने जाते हैं। स्नान के बाद वहां घास का एक पुलन्दा-सा जलाकर उसकी परिक्रमा करते हैं, इसी को **'छाया जलाना'** कहते हैं। मुस्लिम-काल में हिन्दुओं को नदी-तट पर शव-दाह की अनुमति नहीं दी जाती थी, यद्यपि धर्म-परम्परानुसार नदी-तट पर ही शवदाह अच्छा माना जाता है। अन्यत्र शव-दाह करके नदी-तट पर घास की (काल्पनिक) चिता

---

1. च़ोर (चूल्हे का मुख) वैदिक शब्द 'चरू' है:- ऋ० वेद, 1,7,6; 7,104,2 तथा 9, 5, 6 दान (चूल्हा) इसी रूप में वैदिक शब्द है :- ऋ० वेद 1,55,7, तथा 1,48,4।

(छाया) बनाकर चुपचाप उसका दाह एवं उसकी परिक्रमा करके कर्मकाण्ड को पूरा करने को कश्मीरी हिन्दू, मुस्लिम काल में, बाध्य हो गये थे। यही रीति परम्परा बन कर चली आ रही है।

काया नअवहस — नअवहस का अर्थ मांजना-धोना (धौत) पवित्र करना, शुद्धि करना। काया का अर्थ संस्कृत तथा हिन्दी में प्रचलित 'काया' ही है।

'काया नअवहस' में ठीक वही भाव है जो गीता के द्वितीय अध्याय के ('वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहणाति नरोपराणि . . .) श्लोक में है। यही कारण है कि परिपक्व आयु के, उत्तरदायित्व पूर्ण कर लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु भी शोक का नहीं एक प्रकार के हर्ष का विषय है, विशेषकर उसके लिए जिसने मोक्ष-प्राप्ति (निर्वाण) को लगभग निश्चित बना लिया है। इस गीत में दिवंगतात्मा की केवल इस लोक की सफलता का चित्रण ही नहीं है, अपितु उसके परलोक के सुधरने का वर्णन भी है। यहीं नहीं, मृतक के परिवारीजनों के दुःख को हलका करना भी इसका उद्देश्य है, क्योंकि उन्हें दुनियां क़ा दस्तूर समझाया गया है।

गीत सं० 29 — में कश्मीर की एक विशेष मान्यता का संकेत है, जो यद्यपि शेष भारत में नहीं पाई जाती, परन्तु उसका मूल अति प्राचीन है। जब तक श्राद्ध आदि नहीं होते जीव प्रेत रूप में भटकता है, परन्तु कश्मीर में प्रेतरूप में भी वह दावतें खाता है, विशेषकर पुत्री के घर। ब्रज आदि क्षेत्रों में भी कश्मीर के समान यह माना जाता है कि पिता पुत्री के घर भोजन नहीं करता, करना ही पड़े तो उसका मूल्य चुकाता है। **प्रेतरूप** में काक पुत्री के घर पूड़ियां खा आते हैं, धेवतों के हाथ से पानी भी पी आते हैं। सामान्यतः कश्मीर में पूड़ियां दावत में नहीं खायी जातीं, केवल चावल ही चलता है। पूड़ियां प्रसाद रूप में अवश्य चलती हैं। कश्मीरी (हिन्दू तथा मुसलमान दोनों) परिवारों में पुत्री का महत्व बहुत अधिक है। पुत्रियां भी अपने मायके वालों, विशेषकर पिता का, बहुत ध्यान रखतीं हैं। कोई भी महत्वपूर्ण कार्य बिना बहिन तथा पुत्री से पूछे नहीं किया जा सकता। पुत्री के घर दावत खाकर 'काक' ने स्वयं ही आनन्द प्राप्त नहीं किया अपितु पुत्री को भी सन्तुष्ट किया— चाहे प्रेतरूप में ही सही।

गीत सं० 31 — अपनी तर्ज़ तथा लय के कारण अपना विशेष स्थान रखता है।

गीत सं० 33 — 'वनमाला' वास्तव में 'उत्पलमाला' को कहते हैं। कश्मीर में आठवीं शती में शैव-शास्त्र के महान आचार्य उत्पलदेवपाद हुए हैं। शैवानन्द की

गम्भीर अवस्था में उन्होंने जो आशु-रचनाएं कीं, उन्हें उनके शिष्य विश्वावसु ने व्यवस्थित किया था, इसी को 'उत्पल स्तोत्रावली' कहते हैं। इस समय भी इस रचना के एक विभाग 'संग्रह-स्तोत्र' का कश्मीरी हिन्दू जनता पर विशेष प्रभाव है और वे यह मानते हैं कि दिवंगत पिता की आत्मा की शान्ति के लिए यह पाठ आवश्यक है। कश्मीर से ही शैवमत शेष भारत में गया है, यह बात और है कि दक्षिण भारत में इसके स्वरूप का किंचित परिवर्तन हो गया है। कश्मीर में शैव, शाक्त एवं वैष्णव तीनों मतों का कभी न कभी वर्चस्व रहा है और पारस्परिक विरोध भी, परन्तु आज इन तीनों मतों का ऐसा सामंजस्य हुआ है कि कश्मीरी हिन्दू लगभग सबको समान आदर देता है, फिर भी शिव एवं भगवती के प्रति उसे विशेष प्रेम है। 'मुकुन्दमाला' इसका प्रमाण है जिसमें नारायण की स्तुतियां है।

गीत सं० 35 — में कश्मीरी हिन्दू संस्कृति में पुत्री के महत्व का पुनः संकेत है। पुत्री एक विशेष प्रकार का सुगन्धित आसन बनवाती है, जिस पर बैठकर कर्मकाण्ड किया जायगा। शिवजी (कश्मीरी भाषा में 'शवजी' हो जाते हैं) राम तथा गरुड़ भी मंत्रोच्चार करेंगे। यहां गरुड़ को महत्व दिया गया है।

गीत सं० 36 — में घर के बड़े-बूढ़े के चले जाने से परिवार के छिन्न-भिन्न हो जाने का परम सुन्दर रूपक बांधा गया है जो कि काव्यात्मक दृष्टि से दर्शनीय है। वृद्ध पूज्य थे और अचानक उनकी मृत्यु हो जाने से मानो पूज्य प्रतिमा अचानक खो गई हो, यह उक्ति भी परम मार्मिक है।

गीत सं० 37 — में दक्षिण की ओर की खिड़की के महत्व का वर्णन है। इसका महत्व मुसलमानों के लोक-गीतों में इससे पूर्व दर्शाया जा चुका है। कश्मीर में दक्षिण दिशा की ओर पवित्र तीर्थ हैं यही कारण नहीं है, इस मान्यता का, अपितु कश्मीर में लोग बहुधा उस खिड़की को खुला रखते हैं और उस पर अधिकतर बैठते भी हैं क्योंकि उधर ठण्ड कम होती है।

गीत सं० 38 — में **रत्य** शब्द का प्रयोग है जो कि वैदिक शब्द ऋत है और इसका ठीक उसी अर्थ में प्रयोग, इस गीत में किया गया है। इससे पूर्व हरद्वार एवं इसके बाद द्वारिका आदि तीर्थों में दिवंगत आत्मा के विचरण का संकेत है, उसी प्रकार जैसे वह पुत्री के घर दावत खा आता है।

गीत सं० 40 — में 'बब' की उत्तम आदतों एवं शौकों का संकेत है। वे प्रातः जल्दी उठते थे और गुरुसेवा आदि शुभ कर्मों के करने के अभ्यस्त थे.।

गीत सं० 42 — में उस परम्परा का उल्लेख है जिसके अनुसार मृत्यु के बाद

के ग्यारहवें दिन का विशेष महत्व होता है। कर्मकाण्ड शैव परम्परानुसार ही चलता है, चाहे वैष्णव मत का कितना ही प्रभाव कश्मीर में आ गया हो। नाती-धेवतों की भीड़ है, समधियाने-ससुराल के लोगों से घर भरा है।

गीत सं० 43 — में सबकी जयजयकार है। वय एवं ज्ञान-वृद्ध व्यक्ति के अन्त्येष्ठि संस्कारों में विवाह जैसा ही उत्सव मनाया जाता है क्योंकि यह भी एक प्रकार (दिवंगत आत्मा तथा परमात्मा) का विवाह ही है।

गीत सं० 44 —

.च्यथ गथ .च्यतस मंज़ लय करने,
.च्यंताकाय .च्यंतायि मंज़ गथ करने।
क्रियावान काक गव गथ करने। . . . .

"मृत्यु के उपरान्त मृतक की चेतना महाचित में लीन होने के लिए चल पड़ी है। उस महाचेता की लीला ही थी कि जीव का स्वरूप प्रकट हुआ। अन्य कोषों को पार करके वह आनन्दमय कोष की ओर अग्रसर हुआ। अन्नमय, मनोमय, प्राणमय तथा विज्ञानमय कोषों में स्थित रहने के कारण जीव भौतिकता से ग्रस्त 'चिन्ताकाय' (.च्यंताकाय) बनता है परन्तु मरने के बाद वह आनन्दमय हो जाता है।"

इस गीत में कश्मीरी शैव-दर्शन के अनुसार गम्भीर दार्शनिक संकेत है। जिस प्रकार शव-यात्रा के साथ-साथ बंगाल में 'हरिबोल' कहते चलते हैं और हिन्दी-भाषी क्षेत्र में 'राम नाम सत्य है' कहते चलते हैं, उसी प्रकार कश्मीरी हिन्दू कहते हैं : '.च्यन्ता योनि अपराधा, शिव शिव शम्भू।' अर्थात् चिन्ताकाय में रहने के अपराध से शिव मुक्त करें।

गीत सं० 45 — में भी काक को विश्वामित्र कहकर प्रशंसा की गई है क्योंकि उन्होंने तीर्थ ही नहीं किये थे अपितु ब्रह्मविद्या भी सुनी थी। लोक-गीतों में 'ब्रह्मविद्या' आदि शब्दों का उल्लेख कश्मीर की गहन दार्शनिक चेतना की ओर संकेत करता है।

गीत सं० 46 — में बड़े-बड़े अफसरों के उत्सव में आने का संकेत यह बताता है कि अधिकांश कश्मीरी पण्डित सरकारी नौकरियां करते हैं। यही कारण है कि उनमें पुरोहित वर्ग को गोर (गुरु) या बोय कहा जाता है। कारकुन तथा पुरोहितों के अतिरिक्त 'बुहुर' (बोहरे अर्थात् दुकानदार) तथा वाज़ (रसोइए) भी पण्डितों के वर्ग हैं, परन्तु इनमें कारकुन (नौकरी पेशा) अपने को सबसे ऊंचा मानते हैं। वैसे 'लिजबट' (मिट्टी के पात्रों में भोजन करने वाले) भी पहले एक वर्ग था, परन्तु यह

वर्ग अब लगभग समाप्त-सा है। ब्राह्मण होते हुए भी पेशे के आधार पर ये 'जातियां' बन गई हैं — वर्ण नहीं हैं। एक समय था जब कि इनमें परस्पर विवाह तक नहीं होते थे।

गीत सं० 49 — में फिरन के गरेबां (फा० गिरिहबान) को फाड़ने (चाक करने) का उल्लेख है। मृतक का पुत्र यह करता है। यह इस्लामी संस्कृति का प्रभाव प्रतीत होता है।

गीत सं० 50 — में आधुनिक रंगत है। पिता की मृत्यु पर आजकल पुत्र दाढ़ी-मूंछ मुड़वाने में शर्माते हैं। यह गीत उनके ऊपर व्यंग भी करता है और इस प्राचीन परम्परा का पालन करने का आग्रह भी करता है।

गीत सं० 51 —

किशमिश त बादाम लदितोस गोये . . . .

'किशमिश तथा बादाम आलों (संस्कृत के गवाक्ष से **गोये** बना है, जिसे ब्रजभाषा में तिखाल भी कहते हैं) में रख दिये गये हैं।'

मान्यता यह है कि दसवें दिन तक मृतक के घर के बाहरी आलों में सूखी मेवा रखी जाती है, क्योंकि वह मृतक तक पहुंचकर उसकी क्षुधा शान्त करती है। यही नहीं ब्राह्म-मुहुर्त्त में देहरी पर खड़े होकर पुत्री पुकारती है : 'बोछ मा लजिय-त्रेश मा लजिय', अर्थात् तुम्हें भूख तो नहीं लगी ? प्यास तो नहीं लगी ?, यह दसवें दिन के संस्कार तक होता है, जब तक पिण्डदान, तर्पण आदि से दिवंगत आत्मा तृप्त नहीं हो जाती।

गीत सं० 54 —

आच़ोर सोनसिन्दिस थालस प्रारान . . . .

"आच़ोर सोने का थाल प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहा है।" जिस प्रकार मृतक के वस्त्रादि तथा तेरहवीं पर अन्य दान प्राप्त करने को एक विशेष वर्ग का ब्राह्मण शेष देश के हिन्दुओं में आता है, जिसे 'कट्या ब्राह्मण' या घटवासी कहा जाता है, उसी प्रकार कश्मीर में उसे 'आच़ोर' अथवा 'पांयोछ' कहते हैं। उसे दान में सोने का थाल मिलेगा, इसलिए वह दसवें दिन के संस्कार की प्रतीक्षा कर रहा है। कश्मीर में 'तेरहवीं' के स्थान पर 'ग्यारहवां' होता है।

रस रस लालो वसू यारबल वेतस्तायि . . . .

"लला धीरे-धीरे वितस्ता तट पर उतरो।" नदी तट पर स्नानादि क्रियाओं हेतु मृतक के पुत्र से कहा जा रहा है। कश्मीरी में लला, लाली, का ठीक उसी प्रकार

प्रयोग होता है जैसा ब्रजभाषा में होता है। लाड़-प्यार के लिए भी कश्मीरी शब्द 'लोल' है। जिस प्रकार शेष देश में गंगा माता की मान्यता है ठीक उसी प्रकार कश्मीरी हिन्दुओं में वितस्ता (झेलम) नदी की मान्यता है,[1] जिसे ठेठ कश्मीरी में 'व्यथ' (वितस्ता से ही बना शब्द है) कहते हैं। यारबल से नदी (तट) का तात्पर्य है, विशेष कर वितस्ता का। प्राचीन कश्मीरी मान्यता के अनुसार स्वयं सती (उमा) वितस्ता है और कश्मीर है, अतः पार्वती, वितस्ता तथा कश्मीर एक समान है और पूज्य हैं। यही नहीं नीलमत पुराण के अनुसार गंगा भी वितस्ता से श्रेष्ठ नहीं है, गंगा के पास यदि वितस्ता से कुछ अधिक है तो वह है हड्डियों का ढेर :

वितस्तातो महीनाथ न गंगा व्यतिरिच्यते ॥
केवलं जाह्नवीतोये पुरूषस्यास्थिसम्भवः ।
वितस्तातोऽधिको राजन् स्नानार्थं तुल्यमेव च ॥[2]

वास्तव में कश्मीर में जितनी भी नदियां है, उन सबको देवियों का रूप दिया गया है। यही नहीं जितने भी पवित्र स्थल और तीर्थ देश में हैं लगभग उन सबका कश्मीरी रूप भी घाटी में पाया जाता है। कुरूक्षेत्र तथा तक्षक तीर्थ भी घाटी में (श्रीनगर के निकट) ज़यवन (जयवन) में है।

गीत सं० 57 — में कबीला शब्द का प्रयोग बन्धु-बान्धवों, रिश्तेदारों के लिए किया गया है, यह मुसलमानी प्रभाव से है।

गीत सं० 58 — में शव के स्नान का उल्लेख है कि उसे जड़ी-बूटियों द्वारा सुगन्धित जल से स्नान कराया गया था। यह सब बड़ों के आशीर्वाद का ही फल है। बड़े के लिए ज्येष्ठ तथा आशीर्वाद के लिए 'अहिया' का प्रयोग है। आशी तथा वाद से आशीर्वाद शब्द बनता है। कश्मीरी में श का ह हो जाता है अतएव आशी को आही (अहिया) कहा है, जैसे 'शुन' का 'हून' (कुत्ता), व का ऊ बना तथा श का ह बना।

गीत सं० 63 —

सूत-कोम्ब-नारि छ्य मोख़तव रज़,
पनुन ज़न्म रथि खोरूथ द्राहम पोख़तय । . . . .

शब्दार्थ : सूत-कोम्ब—मृतक को तर्पण ; नारि—टोंटीदार गंगा-सागर समान पात्र, संस्कृत 'नलिका' से बना है। मोख़तव—मोतियों की (मुक्ता को 'मोख्त' कहते

---

1. नीलमत पुराण, डा० वेदकुमारी, भाग 2, श्लोक 1424 तथा 1426।
2. वही, भाग 2, श्लोक 1428-9।

हैं), रज़ —रस्सी (संस्कृत रज्जु से बना है) ; रथि खोरूथ—ऋत बना दिया, सफल बना दिया। पोख़तय—पुख़्ता (फ़ारसी)। इस्लाम के आगमन के बाद से कश्मीरी में अनेक अरबी-फारसी के शब्द आ गए हैं, जैसे — दस्तूर, बाजू, आदि।

'सूत — (स्रोत) कोम्ब' से तात्पर्य है **'कोम्ब** का जल', अर्थात् जिस पात्र में तर्पण का जल होता है। स + उदक — सोदक - सूत ; कुम्भ — कोम्ब (घड़ा) या घट। एक गीत में सगोत्रियों के दाढ़ी-मूंछ मुड़वाने का वर्णन है, जैसा कि स्वीकृत हिन्दू-परम्परा के अनुसार किया जाता है।

गीत सं० 66 — में चरागां (चिराग़ जलाना) अर्थात् दीपमालिका प्रज्ज्वलित करने का संकेत है। चरागां मुसलमानी प्रयोग है। इसी प्रकार 67, 68, 69, में रूख़सत, शाह तथा दीवानख़ाना शब्दों का प्रयोग इस्लामी प्रभाव से है।

गीत सं० 75 —

अग़ूरि गोरव माला हा ज़पुय, ...

. . . . तंत्रव पूज़होक काकव, ...

"अघोरी पुरोहित माला जपेंगे, तांत्रिकों ने आकर तंत्रानुसार पूजा की।" अघोरी वह पुरोहित है जो शाक्त (वामाचार)-क्रिया करता है। 'गोर' कश्मीरी में पुरोहित (गुरु से बना है) को कहते हैं, लगभग उसी प्रकार जैसे गुजराती 'गौड़जी' कहते हैं। शाक्त मत एवं वामाचार का विशेष प्रभाव होने के कारण इस प्रकार का वर्णन है। हिन्दी में 'अघोरी' में थोड़ा भिन्न भाव है। कश्मीर तंत्र का जन्मस्थान है। इन शोक-गीतों में, शैव, शाक्त, वामाचारी, वैष्णव (राम तथा कृष्ण) आदि सभी मार्गों का उल्लेख है, क्योंकि लोक-गीत गायिकाओं को तो सभी को तुष्ठ करना होता है। यही कारण है कि अनेक देवी-देवताओं तथा तीर्थादि का भी उल्लेख है।

गीत सं० 76 —

लौगाक्षि परि़ज्यस न्यरवान करि़ज्यस,

कोलक्रम थवि़ज्यस निशअ निश। . . . .

"शोक गीत गायिका मृतक के ज्येष्ठ पुत्र को सम्बोधित करके कहती है: 'काक को निर्वाण प्राप्त हो इसलिए लौगाक्ष परम्परानुसार वेद-पाठ कराना चाहिए तथा कौल-क्रिया को भूलना नहीं चाहिए — पास-पास (निशअ निश) रखना चाहिए।"

कश्मीरी ब्राह्मणों का अधिकांश लौगाक्ष परम्परा का अनुयायी है। 'कुल' का अर्थ है शक्ति तथा शक्ति के उपासक 'कौल' कहे जाते हैं। आज भी कश्मीरी पण्डितों का प्रसिद्ध अन्तनाम (उपाधि) 'कौल' प्रचलित है। एक समय शाक्तमत को हेय दृष्टि

से देखा जाने लगा था जब कश्मीर के हिन्दू राजा वैष्णव हो गये थे। उस समय की सामान्य जनता शैव थी। इसीलिए 'कौलों' के लिए यह कहा गया था :

अन्तर्शाक्ता बहिर्शैवाः सभामध्ये च वैष्णवः

नाना वेषधरा कौला विचरन्ति महीतले।

सामान्यतः शाक्तों को वामाचार से जोड़ा जाता है और हेय दृष्टि से देखा जाता है, परन्तु कश्मीर में ये क्रियाएं (कुमारी पूजा आदि) आज भी स्वीकृत हैं और कुछ लोग गुप्त रूप से इन्हें करते भी हैं।

गीत सं० 77 —

बबस मंगिव अहिया, अहलस महलस अहिया,

यथ मजिलिसि अहिया, सारीनिय पूशिन अहिया।

अहान बी, मोज़ छख वनान तय॥

'बब (दिवंगतात्मा) से आशीर्वाद मांगों। अड़ोस-पड़ोस वालों के लिए भी आशीर्वाद। इस मज़लिस (अरबी का शब्द है) के लिए आशीर्वाद, तथा सबको आशीर्वाद पहुंचे, मिले। हां री सच ही कह रही हो'। मुहर्रम की मजलिस धार्मिक सभा होती है अतः इस्लाम का प्रभाव है। यह शोक-गीत-सभा की समाप्ति पर गाया जाता है, अन्तिम, समापन का गीत है। कुछ लोगों ने इसकी तुलना 'भरत-वाक्य' में निहित आशीर्वाद से की है। वास्तव में इसका रूप 'शान्ति-पाठ' का है। 'सर्वेभवन्तु सुखिनः तथा 'ओ३म् शान्तिः शान्तिः' के भाव से शोक-गीतों का गायन समाप्त होता है।

शोक गीत गाने की सभा का कार्यक्रम 'अहान बी' सम्बोधन से होता है तथा प्रत्येक गीत की टेक में भी 'बी' शब्द आता है, जो कि कश्मीरी भाषा पर मुस्लिम प्रभाव का द्योतक है।

इन गीतों में इस बात का भी संकेत है कि उत्तरायण सूर्य हो जाने पर जिसकी मृत्यु होती है वह मुक्त हो जाता है :— 'द्यद मोयि माग दोये दोह।' अर्थात् दादी (द्यद) की मृत्यु माघ (माग) की द्वितीया को हुई थी। कश्मीरी में घ का ग हो जाता है अतः 'माग'। दिवस से 'दोह' बना है।

कश्मीरी भाषा के लोक-गीतों में इन शोक (मृत्यु) गीतों का अपना विलग महत्व है क्योंकि—

(अ) इनके गाये जाने का एक विशेष क्रम है, जो कि प्रथम से ग्यारहवें दिन तक की संस्कार -प्रक्रिया का क्रमिक उल्लेख करता है।

(ब) इनमें गहन दार्शनिक-सांस्कृतिक तत्व पाये जाते हैं, जो कि अन्य भाषाओं

के लोक-गीतों में दुर्लभ हैं।

(स) इन शोक-गीतों में वैदिक काल से लेकर, क्रमिक रूप से विकसित होने वाली भारतीय संस्कृति के तत्वों को उनके ऐतिहासिक क्रम से खोजा जा सकता है।

(द) कश्मीर (तथा केरल) के ब्राह्मण आज भी प्राचीन वैदिक परम्पराओं का अनुगमन करते हैं, इसलिए वे शेष देश की संस्कृति से 'अटूट रूप' से जुड़े हैं और उनके लोक-गीतों में भारतीय संस्कृति के तत्व गहन-गुम्फित हैं।

(न) इसके साथ-साथ उनकी अपनी देशीय मान्यताओं (जैसे वितस्ता नदी में गंगा-समान आस्था आदि) के दर्शन भी हमें इन गीतों में होते हैं।

खेल गीत (1 से 13 तक)

खेल-गीत अधिकतर बालिकाओं द्वारा गाये जाने के लिए हैं, वैसे बालकों के खेल-गीतों की भी कश्मीरी में कमी नहीं है। आधुनिक कश्मीर की भी शेष देशों-प्रदेशों जैसी अवस्था है, क्योंकि पुराने खेल और उनके गीत लुप्तप्रायः होते जा रहे हैं, 'वीडियो' खेल, टेनिस, बैडमिन्टन ने उनका स्थान ले लिया है। पुराने खेलों तथा गीतों का ज़िक्र पिछड़ेपन-गंवारूपन का चिह्न माना जाता है। यही स्थिति 'हिकअट' आदि खेलों (गीत सं० 5) की है। इनके नाम तक बच्चे भूलते जा रहे हैं। इन गीतों में लय, तुक आदि के लिए कहीं-कहीं निरर्थक शब्दों का प्रयोग भी होता है तथा कुछ गीत शुद्ध मनोरंजन की तुकबन्दियों से युक्त हैं, जैसे ब्रज-क्षेत्र के टेसू के गीत; फिर भी अनेक गीतों में लड़कों के लिए प्रकृति, (पशु-पक्षी आदि) के माध्यम से ज्ञान-वर्द्धन के तत्व पाये जाते हैं तथा लड़कियों के स्त्री-सुलभ व्यवहार (ससुराल आदि के) के सांकेतिक उपदेश पाये जाते हैं। किसी-किसी गीत में तो इतने सुन्दर, सजीव एवं चमत्कारी बिम्ब पाये जाते हैं कि हम लोककवि की कल्पना की उड़ान की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते।

इस वर्ग के गीतों का आरम्भ मैं उस गीत से कर रही हूँ जो कश्मीरी के प्राचीनतम तथा परम महत्वपूर्ण गीतों (सं०1) में है। इस गीत को तांत्रिक एवं शैव सन्त-साधु गाया करते थे और जैसा सब स्थानों-भाषाओं में भारत में होता आया है, साधुओं-फकीरों से ये महिलाओं में तथा उनके माध्यम से समाज में प्रचारित हुए हैं। इस गीत में 'त्रिक दर्शन' के संकेत हैं। इस गीत का अर्थ और उसकी व्याख्या विभिन्न मतों-सम्प्रदायों के लोग अपनी-अपनी आस्था के अनुसार भिन्न अर्थ-छायाओं में करते हैं। 'वह कौन है ?', यह प्रश्न गुरु, सिद्ध-पुरुष, जिज्ञासु या स्वयं ब्रह्म (शिव) के द्वारा पूछे जाने पर विभिन्न अर्थ-रूप धारण करता है। 'वह' (प्रकृति, ब्रह्म, शिव) कौन है ?, के अर्थ के अनुसार 'मैं' (आत्मा, जीव, ब्रह्म, गुरु, सिद्ध-पुरुष) के विभिन्न अर्थ बनते हैं तथा तदनुसार 'तुम कौन हो' के अर्थ निकलते हैं। 'अथातों ब्रह्म जिज्ञासा', 'कस्मै देवाय हविषा विधेमृ', 'सोहमऽस्मि', 'स्वानुभूत्येकमानाय' के तत्व इस गीत के विभिन्न पाठ-भेदों में पाये जाते हैं। मैंने सर्वप्रचलित गीत का सर्वमान्य लघु-अंश ही यहां प्रस्तुत किया है।

शैव-शाक्त परम्परावादी कश्मीरी हिन्दू मांस-मछली खाते हैं (श्राद्ध आदि पर भी) परन्तु मुर्ग़ा और अण्डा नहीं खाते (बंगाल में भी यही प्रथा थी) उसके स्थान पर

जलपक्षी (जिन्हें 'पछिन' कहते हैं) खाते हैं, इसी कारण 'बतख को देग़ में डालने' का वर्णन है और कहा गया है कि जिसका जो खाद्य है वह उसे नहीं मिलता तो वह 'किचकिच' करता है। तदुपरान्त एक अति महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि – जिसे कोई पानी नहीं देता, जो त्याज्य माना जाता है, वह भी मुक्तात्मा सिद्ध पुरुष के द्वारा पोषित होकर पवित्र एवं पूज्य बन जाता है क्योंकि कण-कण में व्याप्त 'उस' से ऐक्य प्राप्त करके ('आत्मवत् सर्वभूतेषु' तथा 'सर्वं खल्विदम् ब्रह्मं') मुक्त पुरुष 'सर्वभूत हितेरतः' हो जाता है।

गीत सं० 5 — में कन्या की सूक्ष्म शिक्षा के प्राचीन संकेत हैं। सास से डर तथा उसके प्रति आदर के साथ इसका भी संकेत है कि कश्मीर में प्राचीन काल में ग्रीष्म-ऋतु से ही भण्डार-कोठे (बान-कुठि) में भयंकर शीतकाल के लिए सर्व-सामग्री का भण्डारण आरम्भ करना सुघड़ गृहणी का लक्षण माना जाता था।

गीत सं० 6 — में यह संकेत मिलता है कि पहले (स्वतंत्रता से पूर्व तक) हिन्दू शिखा (चोटी) रखा करते थे और उनकी शिखा समूल उखाड़कर बलात् धर्म-परिवर्तन सिकन्दर बुतशिकन तथा पठान-शासन में हुआ करता था। इसी कारण यह सर्वाधिक शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा का प्रतीक बन गया था। यहां तक कि लोगों ने छोग (शिखा) के स्थान पर 'ओल' (घोंसला) कहना आरम्भ कर दिया। 'मुराद का पिता' तथा कउओं की बारात में सूक्ष्म मुस्लिम प्रतारणा के संकेत हैं।

गीत सं० 7 — के प्रतीकों पर ध्यान देना चाहिए : हिन्दू महिलाओं का पठान-बादशाहों द्वारा अपहरण, भ्रष्ट किया जाना। एक वर्ग (कदल) को नष्ट करके दूसरे (मुसलमान) को पोषित किया जा रहा है। इसीलिए 'बड़ी मां' (दादी) रो रही है। मख़दूम सूफी थे। धर्म-परिवर्तन होने पर (भ्रष्ट हो जाने पर) भी मां-बाप के लिए जीने को उनका सन्देश है, परन्तु मां-बाप कहते हैं, इससे अच्छा है स्वर्ग जाओ! हम द्वार खोलते हैं। यथा : 'स्वधर्मे निधनम् श्रेय परधर्मो भयावह।'

गीत सं० 8 — में चढ़ने को घोड़ा (भूमितल पर) और 'पार उतरने के लिए' नाव प्राचीन काल के यातायात के साधनों के संकेत हैं। कश्मीरी में यहां, वहां, कहां के लिए इस पार, उस पार, किस पार (यपरि, हुपरि, कपरि) का प्रयोग आज भी होता है जो इस बात का द्योतक है कि यातायात का मुख्य साधन नौका (नदी, नालें, नहरें) ही थीं। हुक्के का प्रयोग इस बात का संकेत करता है कि यह गीत मुस्लिम-काल के बाद बना है, तमाखू के आ जाने के बाद।

गीत सं० 9 — के समान गीत भारत की अन्य भाषाओं में भी पाये जाते हैं।

'हूवे हैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे', इस कारण 'विध्य के वासी उदासी महामुनि' भी राम के आने की बात सुनकर हर्षित हो उठे थे, यह गोस्वामी तुलसीदास ने भी कहा है। 'पत्नी मिलेगी' सुनकर बूढ़ा उठ बैठता है। एक किंवदन्ती प्रसिद्ध है : "पांचों पाण्डव, कुन्ती सहित, कश्मीर घाटी में जैसे ही पहुंचे तो कुन्ती ने कहा— 'मैं तो विवाह करूंगी' पाण्डव भौंचक्के रह गये। उनके साथ जो ब्राह्मण था उसने कहा घाटी से भाग चलो; चलते समय ब्राह्मण ने एक कपड़े में कश्मीर की थोड़ी-सी मिट्टी बांधकर साथ ले ली। घाटी से बाहर होते ही युधिष्ठिर ने कहा 'मां विवाह करोगी' तो कुन्ती अत्यन्त कुपित हो गई। फिर ब्राह्मण ने कश्मीर की मिट्टी से लेपकर आसन बिछाया और उस पर कुन्ती को बिठाया। बैठते ही कुन्ती बोली 'मैं तो विवाह करूंगी'। ब्राह्मण ने कहा 'यह कश्मीर की मिट्टी का प्रभाव है'। बूढ़े भी कामोद्दीप्त हो उठते हैं। यह कथा है तो कल्पित परन्तु कश्मीर की सुन्दर घाटी और सुन्दर लोगों की ओर संकेत करती है। ध्यातव्य है कि कामशास्त्री कोका पण्डित कश्मीरी ही थे। इस गीत में हास्य-व्यंग्य के संकेत हैं, जैसे सं० 10 में हैं।

गीत सं० 11 — में कहा है 'शिला जैसा, छत पर (खुले में)जन्मा बच्चा ही 'सदानन्द' हो सकता है।' इसके साथ जच्चा के भोज्य पदार्थों का भी संकेत है। इस गीत में बुढ़ापे में, बड़ी आयु में, बच्चा पैदा करने पर व्यंग्य है।

गीत सं० 13 — में भांग का जिक्र है, जो कि कश्मीर में देश के सारे प्रदेशों से अधिक मात्रा में पायी जाती है और अब अधिकांश विद्वान् मानने लगे हैं कि यही वैदिक 'सोमरस' है, क्योंकि इसे सूखा, गीला, पीसकर, बिना पीसे, दूध-दही किसी भी खाद्य के साथ प्रयोग में लिया जा सकता है और इसका नशा 'सोम' के आनन्द के समान ही होता है।

गीत सं० 2, 3, 4,12 तथा 13 में ब्रज के टेसू-गीतों के समान, बेमेल, बेजोड़ तथा अनर्गल बातों की तुक जोड़ी गई है। इस प्रकार के गीत बच्चों में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ करते हैं तथा इनमें कभी-कभी अश्लील, वीभत्स तथा भदेस तत्व भी हुआ करते हैं और ये गीत स्वभावतः ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय हुआ करते हैं।

ऋतुओं के गीत (1 से 15 तक)

कश्मीरी में ऋतुओं के नाम इस प्रकार हैं : सोंथ (सं०- वसन्त), ग्रीशम (ग्रीष्म), वहराथ (सं०-वर्षाऋतु)[1], हरुद (सं० - शरत)[2] , शेशुर (सं०- शिशिर) तथा वन्द (सं० - उन्द अर्थात् जाड़ा)।[3]

गीत-1 — में इस बात का संकेत है कि घाटी में हिमपात के बाद (मार्च के बाद) वसन्त आता है तथा उत्सव मनाया जाता है और चैत्र मास की अमावस को सोंथ अमावस कहते हैं। वसन्त आने पर हिम की हथकड़ियों में बंधी कश्मीर घाटी के मानो बन्धन खुल जाते हैं, बरफ पिघलती है। पोशनूल (पोश अर्थात् पुष्प, नूल अर्थात् नेवला, नकुल, 'फ्लावर मोंगूज' नामक पक्षी) अर्थात् पिलक[4] नामक पक्षी बरफ पिघलने पर वसन्त में प्रकट होता है, इस कारण कश्मीरियों के लिए वही महत्व रखता है जो ब्रज आदि प्रदेशों में कोकिल का है। बसन्त से पूर्व माघ की पूर्णिमा को 'काव-पूर्णिमा' होती है इस दिन कश्मीरी हिन्दू कउओं को भोजन कराते हैं। हिमपात हो जाने पर घाटी में अनेक प्रकार के कउए बर्फ पर एकत्रित होने लगते हैं, श्वेत हिम की चादर पर काले कउओं के झुण्ड उड़कर-बैठकर, फुदक-फुदक कर एक विचित्र विस्तृत छींटदार चादर का सा दृश्य उपस्थित करते हैं। पोशनूल आ गया तो मानो कउओं की छुट्टी हो गई है, कउओं ने बड़ी मौज की थी, वसन्त में आने वाले पक्षी यही शिकवे-फरियाद कर रहे हैं। शिकवे-फरियाद शब्दों का प्रयोग इस्लामी प्रभाव है। शीतकाल में पुष्प मानो हिम के नीचे दबे ठिठुर-सिकुड़ रहे थे, दुख भोग रहे थे— अब वे हाथ-पैर फैलायेंगे तथा मुखर होंगे, अपना दुखड़ा सुनायेंगे। जैसे नाम लेकर पुकारने पर व्यक्ति जाग जाता है, वैसे ही पुकारने पर सुम्बल-पुष्प जाग जायेगा, खिलेगा। धरती के हिम-बन्धन तोड़ देने के कारण कहा गया है कि वसन्त धरती को स्वतंत्र करने आया है। नरगिस का प्यालेनुमा फूल उसके (पीने के) लिए चषक भरे खड़ा है, क्योंकि वसन्त आने पर मार्च में नरगिस खिलने लगता है। पृथ्वी से झगड़ा करके जिन्होंने उसे हिम के (हथकड़ियों के) बन्धन में बांधा

---

1. वितस्ता (कश्मीरी भाषा विशेषांक) सं० रमेशकुमार शर्मा, त्रि० ना० गंजू का लेख, पृष्ठ 29।
2. वही।
3. निरुक्त 11।10।
4. बर्ड्स अब कश्मीर, संसारचन्द कौल, पृष्ठ 35। 'यह पक्षी कन्याकुमारी से गिलगित तक पाया जाता है तथा इसकी बोली को ध्वनि एवं लय के आधार पर कश्मीरी हिन्दू लोग 'श्रीकृष्ण . . . गोपियों' की पुकार के रूप में मानते हैं' - वही, पृष्ठ 36।

था वे लोग भाग गये हैं । फ़सादी (फ़ा०) अर्थात् झगड़ा करने वाले । जाड़े में घटाटोप रहने वाला आकाश खिल कर साफ हो गया है । अब समय आ गया है, 'टेंकअ बटनी' तथा यीरिक्योम पुष्पो तुम भी खिल उठो । 'टेंकअ बटनी' पुष्प का आकार कश्मीरी पण्डितानियों की वेशभूषा-युक्त मुद्रा जैसा होता है, इसीलिए इसका यह नाम रखा गया प्रतीत होता है । 'बटनी' (भट्टनी) 'बट' (भट्ट) का स्त्रीलिंग रूप है । कश्मीरी हिन्दुओं को सामान्यतः 'बट' नाम से ही पुकारा जाता है । कश्मीरी पण्डितानियों से यह कहा भी जाता है— 'आ गई टेंकअबटनी ।' ये दोनों पुष्प वसन्त आते ही खिलते हैं, इनके लिए विलग से गीत भी हैं : 'यीरिक्योम त टेंकअबटने, सुलि आय जाय रटने ।' अर्थात् 'यीरिक्योम तथा टेंकअ बटनि पुष्प अपनी जगह पकड़ने जल्दी (पहले) आ गये ।'

विशेष सांस्कृतिक सन्दर्भों से युक्त इस गीत की एक अन्य विशेषता है इसकी काव्यात्मकता । पृथ्वी, पक्षी, पुष्पों सहित सम्पूर्ण प्रकृति का भावात्मक एवं आकारगत मानवीकरण तो इसमें है ही इसके साथ-साथ रूपकादि अलंकारों का भी परम कुशल प्रयोगात्मक संकेत है । इस प्रकार के मंजे हुए तथा समृद्ध गीतों के लिए कश्मीरी लोक-गीत प्रसिद्ध हैं । मैं इस गीत को कश्मीरी लोक-गीतकारों की प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करने वाले गीतों में मानती हूँ । विस्तार भय से मैंने केवल इसी प्रकार के कुछ गीतों को चुना है ।

गीत सं० 2 — में दाछी गांव का जिक्र है, जो कि प्राचीन काल में द्राक्षों (अंगूर) के लिए प्रसिद्ध था । अतएव द्राक्ष-ग्राम से दाछी गांव बना है । लंका का प्राचीन अर्थ है टापू या द्वीप । जल में मिट्टी आदि डालकर टापू बनाने (रीक्लेम-पुनर्ग्रहण) की प्रथा कश्मीर में बहुत है । डल (शतदल सरोवर) झील में 'स्वर्ण लंक ' तथा 'रोंप्य लंक' (अन्तिम मात्रा लुप्त होने पर लंका का लंक) नामक इसी प्रकार के टापू हैं, जिन पर चिनार वृक्ष लगाकर 'चार चिनारी' आदि पर्यटक-स्थल बनाये गये हैं । मार्च के महीने में बरफ के पिघलने के उपरान्त जैसे ही धूप निकलती है, वैसे ही बादाम के फूल खिल जाते हैं और सारी घाटी की बादामवारियों (बादाम वाटिकाओं) में लोग टिफिन और समावर लेकर छुट्टियों के दिनों में एकत्रित होकर पिकनिक मनाते हैं, तथा गीत गाते हैं ।

गीत सं० 3 — में इसी वसन्तोत्सव का संकेत है । जब तक बादाम के फूल खिलते हैं, नरगिस मुरझा कर समाप्त होने लगती है । प्रकृति में क्रमिक पुष्प विकास के माध्यम से ऋतु-परिवर्तन का चित्रण है ।

गीत सं० 4 — में इस बात का संकेत है कि वसन्त आने पर नौकाओं का श्रृंगार (छोटी नौका को शिकारा कहते हैं) तथा उनका चलना (पर्यटकों का भी आना) आरम्भ हो जाता है। गीत 3 तथा 4 प्रेम गीतों (विरह) के रूप में भी गाये जाते हैं।

गीत सं० 5 तथा 6 — वर्षा से सम्बन्धित हैं। इन दोनों गीतों का नाद-सौन्दर्य दर्शनीय है, मेघों के गरजने की ध्वनि मानों गीत में ध्वनित हो रही है। संस्कृत की प्राचीन काव्य-परम्परा से जुड़ा हुआ गीत है। सूसमार[1] कश्मीरी में उस चुप रहने वाले व्यक्ति को कहते हैं, जो बोलता नहीं है, परन्तु चुपचाप हानि कर देता है। गोह किले से चिपक जाती है, चुपचाप, आवाज़ देने पर उत्तर भी नहीं देती, दुर्ग-भंग का कारण बनती है। गरजने वाले बरसते नहीं हैं, बरसने वाले गरजते नहीं हैं, इस तथ्य की ओर संकेत है । ये दोनों गीत भी प्रेम-प्रसंग (विरह) में गाये जाते हैं।

गीत सं० 7 से 10 — तक शरद ऋतु में केसर के सौन्दर्य से सम्बन्धित हैं। केसर को लेकर कश्मीरियों के मन में एक विशेष महत्व की अनुभूति होती है। कल्हण को भी अपने केसर तथा अंगूर वाले देश पर गर्व था :

विद्यावेश्मानि तुंगानि कुकुमं सहिमं पयः।
द्राक्षेति यत्र सामान्यमस्ति त्रिदिवदुर्लभं ।

(ऊंचे पर्वत रूप विद्यापीठ, केसर, हिमशीत जल तथा अंगूर, जो स्वर्ग में भी दुर्लभ हैं — यहां सुलभ हैं)[2]

नीलमत पुराण के अनुसार तक्षक नाग ने एक आर्य ब्राह्मण को केसर की गांठ दी थी और तभी से पाम्पुर (पद्मपुर) में केसर की खेती आरम्भ हो गई थी। सदियों से मुस्लिम बहुल हो जाने के कारण धीरे-धीरे मुसलमानों ने अनेक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक तत्वों तथा तथ्यों को हिन्दू से मुस्लिम रंग देने का प्रयास किया है। रुद्राद्रि (शंकराचार्य पहाड़ी) जो श्रीनगर में है, उसे सुलेमान का तख्त, अनन्तनाग को इस्लामाबाद (बसों पर तो इस्लामाबाद लिखा ही जाता है, रेवेन्यू रिकार्ड में भी परिवर्तन करने का प्रयत्न किया जा रहा है) तथा लल्लेश्वरी (ललधद) को मुसलमानी नाम लल्ला आरिफा से पुकारा जाने लगा है। इसी प्रकार केसर की

---

1. सूसमार फारसी का शब्द है, जिसका अर्थ है गोह । उर्दू-हिन्दी शब्द कोश, उ०प्र० हिन्दी संस्थान, तृतीयसंस्करण 1977, पृ० 710। हिन्दी 'सूंस' का अर्थ एक जल-जीव विशेष है।— ज्ञान शब्द कोश, पृष्ठ 871।
2. कल्हण, राजतरंगिणी, 1-42।

खेती के साथ शेख नामक मुसलमान फकीर का नाम जोड़ा गया है, कि उसके जागने से केसर की गांठों की खेती आरम्भ हुई थी। यह एक सामान्य ऐतिहासिक प्रक्रिया है, जो यह दर्शाती है कि लोक-तत्वों का बीज तो वही रहता है, परन्तु उसके पौधे पर नयी कलम (ग्राफ्ट) लग कर कैसे नये कलमी फल-फूल पैदा हो जाते हैं। आज केसर की खेती करने वाले सारे कृषक मुसलमान हैं, उनकी उपज को सरकारी ठेकेदार ले जाते हैं और किसान को पसीना बहाने के फलस्वरूप कुछ नहीं के बराबर मिल पाता है। शोषण के प्रति बड़ा सजीव आक्रोश गीत 8 में है। केसर, पूर्णिमा की रात्रि में अपनी प्रफुल्लता एवं सुगन्धि से विशेष आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। विशेषकर कार्तिक-पूर्णिमा पर। मुश्क तथा खुदा शब्द इस्लामी प्रभाव से प्रयुक्त हैं, क्योंकि आज सारे केसर-किसान मुसलमान हैं। ग्रूस्य (किसान, कृषक) शब्द वैदिक शब्द कृष्ठय:[1] (ऋ० वे० 2 .2 .10) से बना है, (गीत - 9)।

गीत सं० 10 — में वार साहिब खुदा के लिए है, जो कुशल से रखता है। शीत ऋतु के गीतों में कश्मीर में शीत काटने के उपायों का संकेत है (गीत-11), जिनमें प्रथम है पुराने गरम कपड़ों को निकालकर पहनना। 'जन्दन फाह' का अर्थ है पुराने-फटे कपड़ों को सेओ, जैसे मुर्गी अण्डा सेती है। तात्पर्य है कि उन कपड़ों को गरम करो और उनसे चिपटे रहो। गरीबी का चित्रण भी है। कपड़े शरीर को गरम करेंगे, यह नहीं कहा है — यही चमत्कार है। शरीर गरम करने के लिए कांगड़ी निकालकर सुलगाने के संकेत के साथ-साथ कश्मीर की एक विशेष परम्परा का उल्लेख है। भयंकर जाड़े में शाक-सब्जियां नहीं मिलतीं, इस कारण कश्मीरी लोग ग्रीष्म से ही बैंगन, लौकी, टमाटर आदि सब्जियों को काटकर उनकी मालाएं बनाकर सुखाना आरम्भ कर देते हैं और जाड़ों में उन्हें (तथा सूखी मछलियों को) खाते हैं। शलगम कश्मीरियों कि प्रिय तरकारी है उसे अकेले या राजमा, मांस आदि के साथ पकाकर खाते हैं।

गीत सं० 12 — एक विशेष गीत है। जिस प्रकार ब्रज आदि ग्रीष्म प्रदेशों में प्रथम वर्षा हर्ष का कारण होती है, उसी प्रकार से कश्मीर में अति प्राचीनकाल से वर्ष का प्रथम हिमपात उत्सव का कारण होता है। कश्मीर में हेमन्त तथा शिशिर ऋतुओं को लगभग एक साथ लेते हैं और जिस दिन प्रथम हिमपात होता है, उस दिन प्राचीन काल में हिमालय तथा शिशिर एवं हेमन्त ऋतुओं की जौ, गुग्गल आदि से पूजा की

1. वितस्ता (कश्मीरी मा० विशेषांक), पृष्ठ 22।

जाती थी।[1] यही नहीं, उस दिन नागों की भी पूजा की जाती थी।[2] इस अवसर पर नवहिमपातोत्सव[3] मनाया जाता था जिसमें गीत-नृत्य आदि का विधान था तथा जो पीते हैं, वे मदिरा पीते थे[4]:

कुलमाषभोजनं देयं सघृतं ब्राह्मणेषु च।
उत्सवं त सदा कार्य गीतनृत्यसमाकुलम् ॥
विशेषवच्च भौक्तव्यं भोजनमं च यथेच्छकम्।
नवो मद्यस्तु पातव्यो मद्यपैः पतिते हिमे ॥

भारी गरम कपड़े पहिनकर, मित्रों सहित बरफ पर बैठकर, विशेष भोजन करने, घर की स्त्रियों का सम्मान करने तथा वेश्याओं के नृत्य देखने आदि का भी विधान थाः

हिमोपरिनिविष्टैश्च गुरुप्रावरणाम्बरैः,
मित्रभृत्याप्तसम्बन्धिसहितैश्च यथासुखम्।
भोज्यं विशेषवत्कार्यं श्रोतव्यं गीतवादितम्,
द्रष्टव्यं पुंश्चलीनृत्तं पूजनीयास्तथा स्त्रियः ॥

इसके साथ-साथ ब्रह्मपुराण[5] का निर्देश है कि इस दिन बड़े-बूढ़ों को नई बरफ भेंट करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया जाय। आज भी कश्मीर में यह परम्परा चली आ रही है कि बच्चे या छोटे, बड़ों पर 'नवशीन चढ़ा देते हैं', अर्थात् पुड़िया आदि में छिपा कर नई बरफ देते हैं और यदि उसे बड़े-बूढ़े ने स्वीकार कर लिया तो उसे इनाम देना पड़ता है। यह पहाड़ों-शीत-प्रदेशों का विशेष अनुष्ठान है, जो मैदान के गरम प्रदेशों के लोगों की समझ में नहीं आता। होता यह है कि जब बरफ पड़ती है तो पानी बरसना बन्द हो जाता है और चारों ओर सन्नाटा छा जाता है क्योंकि नई बरफ के रुई जैसे फोहे चुपचाप भूमि पर गिरने लगते हैं। कभी-कभी यह होता है कि रात को जब सोते हैं तो टपटप पानी बरस रहा होता है, प्रातः उठकर देखते हैं तो चारों और श्वेत-हिम-चादर फैली है। नई बरफ गिरने पर बरफ भेंट भी न की जाय तो भी कश्मीर में आज भी लोग एक दूसरे से कहते हैं — 'नव शीन मुबारक।'

गीत सं०13 — में बच्चे नवहिमपात पर मामा के आने की अभिलाषा करते हैं जिससे उन्हें इनाम — आशीर्वाद मिले। ब्रज आदि प्रदेशों में भी मामा का आना

1. नीलमत पुराण, भाग-2, डा० वेदकुमारी। श्लोक 477।
2.,3.,4. वही, श्लो० 478,480, 481, 843, 484।
5. नीलमत पुराण, डा० वेदकुमारी, भाग 1, पृष्ठ 13।

बच्चों को बड़ा प्रिय लगता है।

गीत सं० 14 तथा 15 — कांगड़ी के गीत हैं। कांगड़ी कश्मीर का विशेष उपकरण है जिससे वहां के लोग ठण्ड दूर करते हैं तथा बरफ में घूमते, चलते-फिरते हैं। कश्मीरी लोक-गीतों तथा संस्कृति में इसका विशेष महत्व है। मुहावरा है कि मैं कांगड़ी छोड़ना चाहता हूँ परन्तु कांगड़ी मुझे नहीं छोड़ती। कांगड़ी का मानवीकरण करके उसकी प्रशंसा की जाती है। परिवार के प्रत्येक सदस्य की अपनी कांगड़ी होती है तथा आने वालों के लिए अतिरिक्त कांगड़ियां भी होती हैं। कांगड़ी को फिरन के नीचे हाथ में पकड़ा जाता है, बैठने पर पैरों से दबाया जाता है, शैया में पेट या पैरों के पास रखते हैं। कश्मीर के बाहर लोगों में भ्रांति थी कि कांगड़ी को गले में लटकाते हैं। सामान्य कांगड़ी का व्यास 8 या 10 इंच होता है — उसे गले में लटकाया नहीं जा सकता। गीत-14 में स्त्री अपनी कांगड़ी के चोरी जाने पर कलप रही है। 'कोनूडल' शब्द का श्लेषात्मक प्रयोग दर्शनीय है। कश्मीर के हिन्दुओं तथा मुसलमानों, दोनों में कांगड़ी का अत्यधिक महत्व है। कांगड़ी का महिलायें बहुत अधिक प्रयोग करती हैं। फिरन तथा साड़ी के नीचे कांगड़ी रखती हैं। नंगी चमड़ी के निरन्तर कांगड़ी की आग के सम्पर्क में रहने से 'कांगड़ी कैंसर' होने का भय डाक्टरों द्वारा घोषित करने पर भी, तथा बिजली के हीटर तथा बुखारियां (लोहे के ड्रमनुमा स्टोव जिनमें लकड़ी, बुरादा या कोयला जलाया जाता है और जो अंग्रेजों के 'आयरन स्टोव' की तरह उनके द्वारा कश्मीर में लाये गये थे) आ जाने पर भी कश्मीरियों की कांगड़ी नहीं छूटी है। कांगड़ी काष्ट तथा अंगारिका शब्दों से (काष्टांगारिका) बना शब्द है तथा इसका आविष्कार प्राचीन हिन्दू-काल में हुआ था। इसका प्रमाण यह है कि हिन्दू दहेज़ आदि में ही कांगड़ी नहीं देते अपितु तेरहवीं तथा मकर संक्रान्ति पर पुरोहित आदि को भी कांगड़ी का दान करते हैं। शिवरात्रि पर कन्या की ससुराल को कांगड़ी भेजी जाती है। नव-वधू अपने साथ कांगड़ी लाती है उसे 'दाज-कांगर' (दहेज की कांगड़ी) कहते हैं। नव-वधू के तथा नवजात शिशु के प्रथम शिशिर की पूजा की जाती है, जिसे 'शिशुर' कहते हैं उसमें भी कांगड़ी का विशेष स्थान है। 'दाज-कांगर' विशेष रूप से (गोटे आदि से) सजी हुई होती है तथा उसमें चांदी का 'चा़लन' होता है एवं नव-वधू को जो नेग दिया जाता है वह उसी कांगड़ी में डाला जाता है, जिसमें इस समय आग नहीं रखी जाती। कांगड़ी के साथ एक छोटी पांच-छः इंच की कड़छी-सी होती है, जो कांगड़ी की आग को कुरेद कर चेताने के काम आती है, उसे चा़लन कहते हैं।

कश्मीर में एक कहावत है कि कश्मीरियों के एक हाथ में पंखा तथा एक में कांगड़ी रहती है। तात्पर्य यह है कि गर्मियों में जब पंखा झलते हैं तब भी अगर पानी बरस जाय और थोड़ी ठण्ड हो जाय तो कश्मीरी तुरन्त कांगड़ी जला लेते हैं। कांगड़ी का यही महत्व कांगड़ी के बारहमासे (गीत-15) में वर्णित है, जिसमें बारहों महीनों में कांगड़ी का वर्णन है, जिसका आरम्भ माघ मास से होता है, चैत्र से नहीं, क्योंकि कांगड़ी अपने पूर्ण यौवन पर शीत बढ़ने के साथ-साथ आती है। कांगड़ी के गीतों में हिन्दू तथा मुसलमानी दोनों भावनाओं-तत्वों का समावेश है, परन्तु महीनों के नाम प्राचीन हिन्दू परम्परा के अनुरूप हैं। माघ मास में शीत के बढ़ने के साथ कांगड़ी की मांग और दाम बढ़ जाते हैं। चैत्र मास में शीत कम होने पर कांगड़ी में पेशाब करने (यह मुहावरा भी है) के संकेत है। कांगड़ी सठिया गई है — से तात्पर्य है, पुरानी हो जाना, अनुपयोगी होकर कोने में पड़े रहना। सठिया जाने में मानवीकरण का अच्छा प्रयोग है। क्वार आते ही पुनः कांगड़ी को बुलाने (खरीदने) का संकेत है, क्योंकि शीत के आने की सूचनाएं आ रही हैं। क़ासिद — फ़ारसी का शब्द है और इस्लामी प्रभाव का द्योतक है। 'वअदर' का प्रयोग भगाने के लिए गाली के रूप में होता है, जैसे ब्रज में 'दू' 'धत्त' आदि का होता है। कांगड़ी को दूर भगाने का संकेत है।

त्योहारों के गीत (1 से 31 तक)

नीलमत पुराण में अनेकानेक हिन्दू त्योहारों का उल्लेख है, जैसे :

आश्वयुजी कौमुदी : यह तीन दिनों का उत्सव था। प्रथम दिन उपवास रखा जाता था[1] तथा दूसरे दिन क्रीड़ा एवं अग्निपूजा होती थी और तीसरे दिन ब्रज की होली जैसा उत्सव मनाया जाता था जिसमें अश्लील भाषा का प्रयोग तथा उच्छृंखलतापूर्ण व्यवहार होता था और लोग एक-दूसरे पर कीचड़ फेंकते थे। संध्या को स्नान करके केशव भगवान की पूजा की जाती थी और दावतें होती थीं। यह उत्सव निकुम्भ के कश्मीर घाटी में लौटने के उपलक्ष्य में प्रति वर्ष मनाया जाता था तथा इसके दो मुख्य कृत्य थे – शीत के छः मासों तक निरन्तर अग्नि जलाये रखना तथा कार्तिक मास में घर के बाहर दीपक जलाना।[2]

सुख सुप्तिका : इसमें कार्तिक अमावस्या को व्रत रखा जाता था तथा लक्ष्मी की पूजा (दीपावली समान) की जाती थी। नीलमत पुराण की कुछ पाण्डुलिपियों में इसका दीपमाला नाम भी दिया गया है।[3] श्री काणे के अनुसार दीपमाला का ही नाम 'सुखरात्रि' (सुख-सुप्तिका) था।[4] सुख-सुप्तिका यज्ञ-पूजा से भी सम्बन्धित मानी जाती है।

देवोत्थान : आषाढ़ मास में विष्णु भगवान चार मास के लिए सोने जाते हैं और फिर देवोत्थान (ब्रज का देवठान) पर कार्तिक के शुक्ल पक्ष में पांच दिनों तक उत्सव मनाया जाता था।[5] यह उत्सव लगभग सारे देश में (एक दिन के लिए ही सही) आज भी मनाया जाता है, इस दिन से शुभ कार्य पुनः आरम्भ हो जाते हैं। वास्तव में हुआ यह कि लम्बे मुसलमानी शासन काल में सामूहिक प्रदर्शन वाले (घरों पर दीपमाला जैसे) हिन्दू त्यौहार निषिद्ध से हो गये और सामान्य हिन्दू जनता (जिसकी संख्या एक प्रतिशत रह गई थी) अपने उन त्यौहारों को भूल ही गई कि वे कभी उनके द्वारा मनाये भी जाते थे।

नवसंवत्सर महोत्सव : कार्तिक पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा को मनाया जाता

---

1. नीलमत पुराण, भाग 1, पृष्ठ 189।
2. वही, पृष्ठ 190।
3. वही, पृष्ठ 191।
4. हिस्ट्री अव धर्मशास्त्र, खण्ड-5 भाग 1, पृष्ठ 200।
5. नीलमत पुराण, भाग 1, पृष्ठ 192।

था क्योंकि मान्यता यह थी कि उसी दिन ऋषि कश्यप ने कश्मीर की भूमि को जल से बाहर निकाला था।

सूर्य पूजा (सप्तम्याह) : माघ तथा आषाढ़ की शुक्ल सप्तमी को मनाते थे।[1]

माघी पूनो : (मार्गशीर्ष पूर्णमासी) चन्द्र की पूजा के बाद बहिन, मित्र-पत्नी, चाची-ताई आदि को लाल वस्त्र प्रदान किये जाते थे।

नवहिमपातोत्सव : इसका उल्लेख पीछे किया जा चुका है।

अष्टमीत्रय : पौष कृष्ण अष्टमी, माघ कृष्ण अष्टमी तथा फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को मांस, पुए आदि से श्राद्ध किया जाता था, परन्तु स्त्रियों का श्राद्ध इन अष्टमियों के अगले दिन किया जाता था।

पौष पूर्णमासी : इस दिन नारायण, इन्द्र, सोम, पुष्प तथा बृहस्पति की पूजा उबटन तथा घी एवं जल से स्नान के उपरान्त की जाती थी।

उत्तरायण : विष्णु तथा शिव की मूर्तियों को घी से स्नान कराया जाता था। यह माना जाता है कि अति प्राचीन काल में इसी से नववर्ष आरम्भ होता था।[2]

तिलद्वादशी : माघ की कृष्ण द्वादशी को तिल से स्नान, होम तथा तिल का नैवेद्य प्राप्त करना तथा ब्राह्मणों को तिल तथा तिल मिला जल दान करने का विधान था। कश्मीर में इसे 'सत्तिला' भी कहते थे।[3]

तारारात्रि : यम तथा धर्मराज की पूजा माघ कृष्ण चतुर्दशी को फल, खिचड़ी आदि से की जाती थी।

श्रावणामावस्या : इस दिन स्नान -पूजादि का अपरिमित महत्व था।

चतुर्थया : माघ अश्वायुक तथा ज्येष्ठ की शुक्ल चतुर्थी को उमा की पूजा तथा सधवा स्त्रियों एवं बहिनों की पूजा की जाती थी।

माघ पूर्णिमा : तिल से श्राद्ध एवं गायों को भोजन कराया जाता था, इसी कारण ब्रज-प्रदेश में भी इसका बड़ा महत्व है।

महिमाना : फाल्गुन मास की अष्टमी, नवमी तथा दशमी को यह उत्सव मनाया जाता था। अष्टमी को सीता (जिसे कृषि की देवी माना जाता था) की पूजा, नवमी को राम की पूजा होती थी तथा दशमी को ब्राह्मण-भोज किया जाता था। डा० वेदकुमारी का मत है कि यह अति प्राचीन उत्सव है परन्तु 'नीलमत पुराण' ने

---

1. नीलमत पुराण, भाग 1, पृ० 193।
2. वही पृष्ट 195।
3. राजतरंगिणी, स्टाइन का अनुवाद, 5-395।

भ्रमवश कृषि-देवी सीता (हल की लीक) को राम-पत्नी के साथ मिला दिया है।[1]

श्रावण-द्वादशी : विष्णु-पूजा होती थी।

शिवरात्रि : आज यह कश्मीरी हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार है। उस समय शिवलिंग पर से जमे घी का आवरण हटाकर उसकी पूजा की जाती थी, इसका और अधिक वर्णन आगे किया जाएगा।

द्वितीय महिमना : फाल्गुन शुक्ल अष्टमी, नवमी तथा दशमी को मनाया जाता था। इसमें सीता की पूजा होती थी, दावतें होती थीं तथा मदिरा-पान किया जाता था।

फाल्गुनी : फाल्गुन पूर्णिमा से आरम्भ होकर चैत्र की कृष्ण पंचमी तक यह त्यौहार चलता था। इसी दिन अदिति तथा कश्यप से अर्यमा तथा अत्रि एवं अनुसूया से चन्द्र पैदा हुए थे, इस कारण सूर्य एवं चन्द्र दोनों की, इस दिन पूजा का विधान है।

राज्ञीस्नापन [2] : कश्मीर रूपी देवी को चैत्र कृष्ण पंचमी से तीन दिनों तक रजस्वला माना जाता था, अतएव कश्मीर की मूर्ति को तीन दिन बाद प्रथम स्त्रियों द्वारा तदुपरान्त ब्राह्मणों द्वारा स्नान कराया जाता था। अन्य किसी प्रदेश या देश में अपनी जन्मभूमि का इस प्रकार का यथार्थ मानवीकरण नहीं पाया जाता। यही कारण है कि आज भी कश्मीरियों का कश्मीर के प्रति गहन लगाव है।

कृष्यारम्भ : इस दिन (चैत्र कृष्ण अष्टमी) शीत के बाद कृषि का आरम्भ होता था तथा इस दिन देवी पृथ्वी, दो बैल, गाय, घोड़ा, बलराम, महादेव, वामदेव, सूर्य, चन्द्र, पर्जन्य (मेघ), इन्द्र, राम-लक्ष्मण-सीता, शेष, कश्यप, नदी, वायु तथा गगन की पूजा होती थी।

चन्दोदेवपूजा : केवल स्त्रियां यह पूजा करती थीं। चैत्र कृष्ण एकादशी तथा द्वादशी को विभिन्न प्रकार के भोजन तथा जलचारी जीवों के मांस से यह पूजा होती थी। चन्द्रदेव को द्वार से बाहर ले जाकर रोशनदान से भीतर लाया जाता था।

पिशाचचतुर्दशी : निकुम्भ एवं शंकर की पूजा की जाती थी। नागों के आधिपत्य के समय शीतकाल में निकुम्भ कश्मीर में रहता था तथा शेष छः मासों में (आर्य) मानव रहते थे। निकुम्भ शंकर की पूजा करता था, अतः निकुम्भ भी पूज्य था।

नवसंवत्सर : चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सृष्टि का प्रथम दिन माना जाता था। इस दिन ब्रह्मा की पूजा तथा महाशान्ति का अनुष्ठान किया जाता था जिसमें त्रिदेव

---

1. नीलमत पुराण, भाग 1, पृष्ठ 196।
2. वही, पृ० 198।

सहित अनेक देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी। इसका विशेष उल्लेख आगे होगा, क्योंकि आज भी इसका विशेष महत्व है।

श्रीपंचमी, चैत्र शष्ठी, चैत्रनवमी, वास्तु पूजा : इन त्यौहारों के बाद मदनोत्सव तथा इरामंजरी पूजा का उल्लेख है, जिनका विस्तृत वर्णन पीछे किया जा चुका है। ब्रज आदि क्षेत्रों में अखतीज का त्यौहार मनाया जाता है, नीलमतपुराण में भी **अक्षय तृतीया** का उल्लेख है। **बुद्धजन्म** को त्यौहार रूप में मनाया जाना, बौद्ध-मत के प्रभाव का द्योतक है। **दक्षिणायन** का त्यौहार भी कश्मीर में मनाया जाता था।

कृष्णजन्माष्टमी : उस दिन सपत्नीक कृष्ण तथा देवकी एवं यशोदा की पूजा की जाती थी, ब्रज आदि प्रदेशों के समान।

श्राद्धपक्ष : यह परम्परा थी कि पक्ष के अन्य दिनों में श्राद्ध वैकल्पिक था परन्तु त्रयोदशी को आवश्यक था। जो शस्त्रों से मारे गये थे उनका श्राद्ध आवश्यक रूप से चतुर्दशी को किया जाता था।

महानवमी : इसका विशेष महत्व था, इस दिन दुर्गा के मन्दिर में शस्त्रपूजा की जाती थी। कुर्ग (कर्नाटक) के वर्तमान निवासी कश्मीरी उद्गम के हैं और वे लोग आज भी शस्त्रपूजा करते हैं, परन्तु दशहरे के दिन।

अगस्त्यदर्शन : उन दिनों का एक विशेष त्यौहार था, इस दिन (कन्या राशि में सूर्य के आने पर) रात्रि में अगस्त्य पूजा होती थी, उसके दर्शन किये जाते थे तथा वर्ष भर के लिए किसी एक फल का खाना छोड़ दिया जाता था।

नवान्नविधान : इस दिन जब नया अन्न तैयार हो जाता था तब कृषि के देवता (हलधर) बलराम-अनन्त, पितरों, ब्रह्मा तथा ब्राह्मणों की पूजा वैदिक मंत्रों के साथ की जाती थी।[1]

वरुण पंचमी : को सिन्धियों के समान वरुण (झूलेलाल) की पूजा की जाती थी।

वितस्तोत्सव : भाद्रपद की शुक्ल त्रयोदशी को वितस्ता (जो कि उमा तथा स्वयं कश्मीर-स्वरूपा मानी जाती थी) की पूजा की जाती थी। इस दिन वितस्ता में स्नान किया जाता था, विशेषकर सिन्धु तथा वितस्ता के संगम पर। इस पर नाटकों का मंचन होता था तथा अभिनेताओं (रंगकर्मियों) की पूजा की जाती थी। यह कश्मीर का विशेष त्यौहार था, जो और कहीं नहीं मनाया जाता। मुसलमानी शासन के बाद केवल 'भाण्ड' ही कश्मीर में शेष रह गया। यह उत्सव इस त्रयोदशी से तीन दिन पूर्व आरम्भ होकर एक सप्ताह तक चलता था तथा इस बीच की द्वादशी को **महाद्वादशी**

---

1. नीलमत पुराण, भाग 1, पृष्ठ 206।

का त्यौहार मनाया जाता था, जिसका मनाया जाना आवश्यक था और इसे बुद्ध-पूजा से जोड़ने पर इसे 'अत्यन्त-महति-द्वादशी' का नाम दिया जाता था। इस दिन सिन्धु-वितस्ता-संगम की मिट्टी से भी स्नान किया जाता था।

अश्वादीक्षा : एक विशिष्ट त्यौहार था जिस दिन उच्चैश्रवा की पूजा की जाती थी। चन्द्र के स्वाति नक्षत्र में आने पर यह पूजा होती थी; यदि यह नवमीं को होता था, तो सारे घोड़ों की सामान्य पूजा होती थी। इसी प्रकार हाथियों की पूजा **हस्तिदीक्षा** के दिन की जाती थी जब चन्द्र शक्रमंडल में पहुंचता था।[1] सामान्यतः माना जाता है कि कश्मीर में हाथी नहीं होते थे, परन्तु नीलमत पुराण में वर्णित यह पूजा इनका होना सिद्ध करती है।

भद्रकाली पूजा : इस पूजा में कंद-मूल, मांस, वस्त्र, रत्नादि, दीपक, फल तथा मदिरा आदि का प्रयोग होता था। रात्रि जागरण होता था। गिद्धों को भोजन कराया जाता था। दही खाया जाता था। आज भी हन्दवारा नामक कस्बे के पास बड़ीपुरा ग्राम से दो-तीन कि०मी० दूर भद्रकाली का मन्दिर है, जिसमें प्रतिवर्ष (आज भी) पूजा की जाती है तथा मेला लगता है।

गृहदेवी-पूजा : मार्गशीर्ष की कृष्ण प्रतिपदा को होती थी तथा **श्यामादेवी पूजा** उस दिन होती थी, जब अंगूर की बेल पर प्रथम फल आता था। द्राक्षलता को ही श्यामादेवी माना जाता था। कश्मीर में काले अंगूर प्रचुरता से हुआ करते थे। विभिन्न देवी-देवताओं के मन्दिरों की यात्रा (तीर्थ) को यात्रोत्सव कहा जाता था।[2] कश्मीर में पूजा का विधान शुद्ध वैदिक परम्परा से निकला है तथा प्राचीन काल में दान-दक्षिणा का अत्यधिक महत्व था।

एक विचित्र प्रथा यह थी कि फाल्गुन शुक्ल पक्ष के एक दिन भेंट-दक्षिणा निषिद्ध थी, केवल पका भोजन दिया जा सकता था।[3] डा० वेदकुमारी के अनुसार कोटि-होम, लक्षहोम आदि की प्रथायें तथा अन्य तीर्थों एवं देवी-देवताओं की पूजा आदि में कश्मीर तथा शेष भारत में अन्योन्याश्रित सम्पर्क-सम्बन्ध था। मांस-मछली का पूजा में प्रयोग कश्मीर की विशेषता थी तथा बर्फीले जल में खड़े होकर साधना[4] करना भी बहुत प्रचलित था। डा० वेदकुमारी ने सत्तर से अधिक त्यौहारों का उल्लेख किया है। मैंने उनमें से केवल उनका ही उल्लेख किया है जो लोकगीतों के सांस्कृतिक

---

1. नीलमतपुराण, भाग 1, पृष्ठ 207।
2. वही, पृष्ठ 208।
3. वही, पृष्ठ 209।
4. वही, पृष्ठ 211 तथा 212।

विवेचन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। दर्शनीय तथ्य यह है कि इस प्रकार सामान्यतः प्रतिमास छः या सात त्यौहारों को मनाया जाता था। कश्मीरियों की उत्सवप्रियता आज भी बरक़रार है।

गीत सं० 1 — में नववर्ष के प्राचीन उत्सव का वर्णन है। वसन्त के साथ नववर्ष आता है। सामान्यतः आज यह समझा जाता है कि कश्मीर में हाथी नहीं होते थे। यह सत्य है कि जंगली अवस्था में हाथी कश्मीर में नहीं होते थे, परन्तु देश के शेष भागों से लाये गये, राजा की सेना में (शान शौकत के लिए) चतुरंगिणी का एक अंग बनाने के लिए, असंख्य हाथी कश्मीर में होते थे। जैसे कि पीछे वर्णित किया जा चुका है, हाथियों की पूजा का एक विशेष उत्सव प्राचीनकाल में मनाया जाता था 'ढाई' दानों में ढाई केवल तुक मिलने के लिए है। नववर्ष उत्सव की विशेष बातें निम्नलिखित हैं, साथ ही गाने वाली अपने भाई के वैभव का भी संकेत कर रही है जो कि नवरेह के अवसर पर बाहर से घर लौट आया है :–

(अ) नवरेह की पूर्व-रात्रि को एक बड़ी परात में चावल (प्राचीन काल में धान ही) भरा जाता है और उसे एक डालिया में रख देते हैं। उस परात में चावलों पर जो अन्य वस्तुएं रखी जाती हैं वे हैं — नववर्ष का पंचांग या जंत्री जिसे कश्मीर में नेचू-पत्र (नक्षत्र पत्र) कहते हैं और जो परिवार का पुरोहित दे जाता है, कलम तथा दवात , एक चांदी का सिक्का, दही, थोड़ा-सा पका चावल, उस समय के खिले पुष्प यीरिक्योम (इराकुसुम) तथा टेंकअबटनी, नरगिस आदि, नमक, भगवती का चित्र, अखरोट तथा 'वाय'[1]। प्रभात में कुमारी कन्या सर्वप्रथम इसके दर्शन करती है फिर बिस्तर में ही परिवार के सब लोगों की आंख खुलने पर उनको इसके ही प्रथम दर्शन कराती है।[2]

---

1. वाय डलझील में उगने वाली एक वनस्पति है इसकी बेल को छील कर खाते हैं और इसकी गांठ औषधि के काम आती है। श्री संसारचन्द कौल ने अपनी पुस्तक 'श्रीनगर एण्ड इट्स ऐनवाइरन्स' में पृष्ठ 113 पर इसका अंग्रेजी नाम 'स्वीट फ्लेग' दिया है और लिखा है कि इसका मुरब्बा बनता है तथा इसे नववर्ष की पूजा में प्रयुक्त करते हैं।

2. नववर्ष की शुभकामना के रूप में इस क्रिया में जो प्रतीक है, वे ध्यान देने योग्य हैं। डलिया तथा धान (चावल) खेती तथा उसकी पुष्कल उपज के प्रतीक हैं। परात प्रतीक है पात्र भर-भर कर खाने की, पंचांग नक्षत्रों की अनुकूलता का द्योतक है और उसे देकर जो दक्षिणा पाता है, वह पुरोहित परिवार की सम्पन्नता का अंग है। कलम-दवात शिक्षा एवं ज्ञान की वृद्धि (सरस्वती) का संकेत करते हैं, चांदी धन (लक्ष्मी) की प्रतीक है, पका चावल एवं दही, गोरस तथा पक्वात्र की समृद्धि का संकेत करते हैं। फूल तथा भगवती का चित्र, सौन्दर्य एवं देवपूजा के साफल्य एवं भगवत्कृपा के प्रतीक हैं। अखरोट फल-मेवा के प्रतीक हैं। 'वाय' औषधि (वनस्पति) की कृपा-सफलता का संकेत करता है। नमक कश्मीर की दुर्लभ वस्तु थी, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, नमक दहेज़ तथा कन्या-विदा के समय आज भी दिया जाता है। घर की पवित्रता एवं स्नेह की प्रतीक (देवी-स्वरूपा) कुमारी कन्या इन सबका, वर्ष के प्रथम दिन दर्शन करा के आगामी वर्ष में सम्पूर्ण सुख-समृद्धि की कामना करती है — इससे अधिक मंगल, कल्याण तथा योग-क्षेम की कल्पना नहीं की जा सकती।

(ब) हारी पर्वत (सारिका भवानी) जाते हैं दर्शन हेतु।

(स) पीले चावल तथा मांस पकाते हैं और पीले चावल (ताहिरी) की पूजा करते हैं, प्रसाद खाते हैं।

(द) नये कपड़े आवश्यक रूप से पहिने जाते हैं।

(न) तदुपरान्त भोजन आदि लेकर उद्यानों आदि में 'पिकनिक' मनाने जाते हैं और पुनः हारीपर्वत जाते हैं, पूजा करते हैं। इसी दिन कश्यप ऋषि ने जल से भूमि निकालकर कश्मीर का उद्भव किया था।[1]

गीत सं० 2 — में वैशाख की संक्रान्ति का वर्णन है। यह त्यौहार विशेषकर पंजाब में मनाया जाता है। इसमें हिन्दू, सिख (विशेषकर) मुसलमान सब भाग लेते हैं। हिन्दू इस दिन मुग़ल उद्यानों के निकट हिन्दू तीर्थ इछबर (यक्ष वाटिका) में जाकर स्नान करते हैं। आजकल वैशाखी पर मुग़ल उद्यानों में मेला लगता है, भांगड़ा आदि होता है। लोग खाना ले जाते हैं, पिकनिक मनाते हैं। इस गीत से यह स्पष्ट है कि यह गीत मुसलमानों का है। कश्मीर में छोटी पतली नौका को शिकारा कहते हैं क्योंकि उसमें बैठकर जल-पक्षियों का शिकार किया जाता था। मौसम अच्छा हो जाता है, बादाम के तथा अन्य प्रकार के फूल खिलने लगते हैं, शिकार खेलने का भी समय आ जाता है — बन्दूक भरी जाती है।

गीत सं० 3 तथा 4 — में गणेश के विभिन्न नामों का उल्लेख करते हुए उनकी प्रार्थना है। कश्मीरी हिन्दुओं में गणेश (गण+ईश) का गणपति नाम अधिक प्रचलित है और इन शिव के गणों के स्वामी के नाम पर बड़े-बड़े मन्दिर भी हैं। कश्मीर में ताऊन (तावन) का नाम लेकर गाली भी प्रचलित है, ताऊन शब्द सारे बबालों, झंझटों, संकटों का प्रतीक है।

गीत सं० 5, 6 तथा 7 — भगवती खीर भवानी (क्षीर भवानी) के जन्मदिन (ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी) पर गाये जाते हैं। जैसा कि पीछे बताया जा चुका है, यह कश्मीरी हिन्दुओं का सर्वाधिक पवित्र देवी-मन्दिर है और यहां हज़ारों लोग इस अवसर पर आकर कई दिन रहते हैं। यह वैष्णव (शाकाहारी) प्रभाव से युक्त धर्मस्थल है और यहां पूजा, दूध (क्षीर) से की जाती है। मांसादि खाकर यहां कोई नहीं जाता, वहां से लौटकर मांस खा सकते हैं। देवी की मूर्ति एक कुण्ड के मध्य में स्थापित है, जिसमें दुग्ध एवं कन्द (शक्कर का शंकु) अर्पित किये जाते हैं। मान्यता यह

---

1. नीलमत पुराण, भाग 1 पृष्ठ 193।

है कि कुण्ड का जल-दुग्ध रंग बदल कर भविष्य के हित या अनिष्ट का संकेत करता है। काला रंग परम अशुभ माना जाता है। कहा जाता है कि जब भी कश्मीर पर (युद्धादि आधियां-व्याधियां) आई हैं इस कुण्ड के जल ने रंग बदलकर सर्वदा इसका पूर्व-संकेत दिया है। दुग्ध-धवल रंग शुभ माना जाता है। जो व्यक्ति खीर भवानी नहीं जा पाता, वह दर्शन करके आने वाले व्यक्ति से मिलते ही पूछता है कि 'आज देवी का कैसा रंग था ?' तुलमुला गांव के मुसलमान जो मन्दिर परिसर में दूध-फल आदि बेचते हैं, वे भी मांसादि खाकर उसमें प्रवेश नहीं करते। सन् 1947 तथा 1965 के पाक-भारत युद्ध में भी आक्रमणकारी इस मन्दिर में स्थानीय मुसलमानों के कहने पर नहीं घुसे थे। आजकल पाकिस्तानी आंतकवाद ने कश्मीर में हिंसा का ताण्डव मचा रखा है, इन पंक्तियों के लिखने तक खीर-भवानी की सीमाओं का अतिक्रमण नहीं हुआ है। मातहत, हुकुम, मेहरबानी, ज़रकारी, कोफूर आदि शब्द मुसलमानी आदान-प्रदान के प्रमाण हैं।

गीत सं० 8 — में उस लोककथा का संकेत है जिसमें कहा गया है, कि एक बार भीम ने एकादशी का व्रत किया (अपनी भूख पर विजय पाने को) कि सूर्योदय से सर्योदय तक भोजन नहीं करेंगे। रात आने पर भूख से पीड़ित भीम ने पूर्व दिशा में नम्बल के पास आग लगा दी और पौ फटने का बहाना करके भोजन कर लिया। निर्जला एकादशी का व्रतों में अत्यधिक महत्व है।

गीत सं० 9 — में ज्वाला रूपी भगवती की आराधना है। श्रीनगर के निकट ख्रिऊ (ख्रिव) नामक स्थान पर भूमि से ज्वाला निकला करती थी और जैसा अन्य स्थानों पर होता है हिन्दू लोग ज्वालादेवी (भगवती) मानकर उसकी पूजा करते थे—और आज भी वहां आषाढ़ चतुर्दशी को मेला लगता है। भगवती के विभिन्न नामों के प्रयोग के साथ एक पौराणिक (शिव के गण वीरभद्र की) कथा का रूपान्तर करके प्रयोग किया गया है।

गीत सं० 10 — में शिवभक्ति के साथ-साथ शैव सम्प्रदाय की मान्यताओं का भी संकेत है।

गीत सं० 11, 12 तथा 13 — जन्म-अष्टमी से संबंधित है। कश्मीरी हिन्दुओं में 'लीलायि' के सामान्य अर्थ का विस्तार हो गया है। केवल कृष्ण की लीलाओं तक ही वह सीमित नहीं है, अपितु सारे भक्ति-गीतों (भजनों) को 'लीलायि' कहा जाता है। एकल तथा समूह-गान दोनों रूपों में इन्हें गाते हैं। इस गीत में वृन्दावन की रासलीला के समान वर्णन तो हैं ही,

सगुण-मण्डन तथा निर्गुण (योग) के खण्डन की भ्रमर-गीत-परम्परा की झलक भी है। प्रेम से मन-आत्मा के होने वाले विकास (औदार्य) के साथ- साथ सांसारिक सुख-सज्जा के ऊपर कृष्ण के प्रेम की उत्कृष्टता भी वर्णित है। श्रीमद्‌भागवत् में वर्णित गोपी तथा कृष्ण के ऐक्य और उसके प्रकृति पर प्रभाव का भी, रास-क्रीड़ा के दार्शनिक तत्वों के अनुसार वर्णन है। इस गीत की भावुकता एवं दार्शनिकता अद्‌भुत है। कृष्ण ही सम्पूर्ण सृष्टि को प्रकाशित करने वाले 'प्रकाशलाल' हैं। रासमण्डल (वृत्त बनाकर) में कृष्ण के साथ क्रीड़ा करने का वर्णन है। तुम्बकनारी एक अति लोकप्रिय कश्मीरी वाद्‌य है जो और कहीं नहीं पाया जाता। इसकी एक ताल में भजन (लीलायि) आदि गीत गाये जाते हैं। छकरी आदि गान-विधाओं में इसका प्रयोग अवश्य होता है। ब्रज में जो स्थान ढोलक का है वही स्थान कश्मीर में तुम्बकनारी का है। इसके आकार की कल्पना इस प्रकार ही जा सकती है :–

सामान्य आकार की मिट्‌टी की गर्दनदार सुराही का पैंदा काट लिया जाए, जिससे उसमें लगभग आठ-दस इंच व्यास का वृत्त बन जाय और उसे चमड़े से मढ़ दिया जाय, बस तुम्बकनारी बन गई। यह मिट्‌टी की ही बनाई जाती है, फिर अवां में पकाई जाती है, गर्दन की ओर वाला छोटा छेद खुला रहता है और मढ़ने वाला चमड़ा चिपकाया जाता है। डोरियों का प्रयोग नहीं होता, अतएव इसे कसा नहीं जा सकता, एक-सा तनाव रहता है।

गीत सं० 14 — राम विषयक है, रामनवमी, दिवाली या दशहरा किसी पर भी गाया जाता है। तुलसीदास के अनुसार, 'रामहि केवल प्रेम-पियारा जानि लेहु जो जाननिहारा' भाव का संकेत है।

गीत सं० 15 — पौष शुक्ल अष्टमी को महाकाली का जन्म माना जाता है। इसी से सम्बंधित है इसमें देवी के साकार तथा निराकार दोनों रूपों का संकेत है।

गीत सं० 16 —में माघ पूर्णिमा का वर्णन है। यह अति प्राचीन उत्सव है, नीलमत पुराण में भी इसके विषय में लिखा है कि इस दिन कउओं को खाना दिया जाता था।[1] कश्मीरी में अनेक प्रकार के कउओं का वर्णन है, जैसे भटकाव,[2]

---

1. नीलमत पुराण भाग -1, पृष्ठ 195-6।
2. श्री संसारचन्द्र ने अपनी पुस्तक 'बर्ड्स अव कश्मीर ' में (पृ० 1 से 9)में इनके अंग्रेजी नाम क्रम से इस प्रकार दिये हैं :— रैवन, जंगल क्रो, हाउस क्रो, जैकडो, रेड-बिलूड चौ, यलो- बिलूड मैगपाइ तथा कश्मीर मैगपाइ।

दिवकाव - पंचाल काव,[1] काव,[2] काविन[3] वन काविन,[4] लोत राज़,[5] होर काव[6]। ब्रज आदि प्रदेशों में श्राद्ध आदि के अवसर पर कउओं को भोज कराने की प्रथा है, इसी प्रकार कश्मीर में भी है। भट काव का शाब्दिक अर्थ हुआ 'हिन्दू कउआ', क्योंकि हिन्दू इसे धार्मिक आयोजनों में खाना खिलाते हैं। पहाड़ों से उड़-उड़कर शीतकाल में ये नगरों में आ जाते हैं। लद्दाखी अंगूर एक विशेष प्रकार का होता था। जम्मू-कश्मीर प्रदेश का लद्दाख क्षेत्र बौद्ध-बहुल प्रदेश है, वहां के मंगोल रक्त के लोगों के लिए बुद्ध-बिल्ला शब्द का प्रयोग है। शीतकाल में लेह-लद्दाख से अनेक लद्दाखी मुनक्के (संस्कृत मृद्धिक) खुबानी आदि सूखी मेवायें लेकर श्रीनगर होते हुए जम्मू आदि क्षेत्रों में जाते हैं। मुनक्का आधा सूखा अंगूर है। कउए, अंगूर तथा बौद्धमतानुयायी लद्दाखी लोग एक साथ इस गीत में मिला दिये गये हैं क्योंकि शीतकाल में विशेष रूप से वे सब आते हैं। इसी प्रकार शिव-रात्रि से पूर्व की पूर्णिमा को काव-पूर्णिमा कहते हैं।

गीत सं० 17 — में दर्शनीय बात यह है कि घोर शीत के आरम्भ तथा उसके अन्त दोनों पर कउओं का सत्कार किया जाता है। कश्मीर में एक और मान्यता यह है कि कउए के नये मकान पर या उसकी नींव पर बैठने से नींव पक्की हो जाती है। बट काव का मानवीकरण है। जैसे ब्राह्मण भोजन से पूर्व स्नान करके तिलक लगाता है, उसी प्रकार बट (ब्राह्मण-हिन्दू) कउए से करने को कहा जा रहा है। जोड़े से भोजन कराने का विशेष महत्व है, इसलिए कउए को भी सपत्नीक आमंत्रित किया जा रहा है। 'वारे बत' (भात) का शाब्दिक अर्थ है कुल्हड़ नुमा छोटे पात्र में का भात। इस शब्द का प्रयोग हिन्दू और मुसलमान दोनों करते हैं।

गीत सं० 18 तथा 19 — शिवरात्रि तथा शिवपूजा से सम्बन्धित प्रतिनिधि गीत हैं। सारिका रूपी भगवती तथा शिव कश्मीर के सर्वाधिक मान्य एवं प्रिय देवता हैं। नीलमत पुराण के पहले के काल से आरम्भ होकर राम तथा कृष्ण (वैष्णव) की भक्ति भी कश्मीर में प्रचलित रही है और रासलीला तथा कृष्ण-जन्म के उत्सव भी मनाये जाते हैं परन्तु कश्मीरी हिन्दू के मन-सिंहासन पर शिव, भगवती (अनेक रूपों

---

1. श्री संसारचन्द्र की पुस्तक 'बईस अब कश्मीर' पृ० 1 से 9
2. वही
3. वही
4. वही
5. वही
6. वही

में) तथा गणेश ही स्थापित हैं। शिवरात्रि का उत्सव कई सप्ताह पूर्व आरम्भ हो जाता है और शिवरात्रि के बाद अनेक दिनों तक प्रसाद रूप में जल में भीगे हुए अखरोट मित्रों-सम्बन्धियों को दिये जाते हैं। खीर भवानी छोड़कर भगवती की पूजा तथा शिव की पूजा में मांस-मछली का विशेष प्रयोग होता है :

'यदन्न पुरुषो भवति तदन्नास्तय देवता :'।[1] के अनुसार 'मनुष्य जो खाता है उसके देवता भी वही खाते हैं।' कश्मीर में केवल पांच दिनों में मांस खाने का निषेध है।[2] यह भी वैष्णव प्रभाव से हुआ परन्तु विष्णु की पूजा में भी कश्मीरी लोग प्राचीन काल में पशुबलि किया करते थे।[3]

शिवरात्रि को माता (मअज़्य़) रूप में वर्णित किया गया है। उसका आगमन, घर में माता (सर्वसुखदायिनि) के प्रवेश के समान है। **गीत 18** बच्चों को संख्यायें सिखाने के साथ-साथ शिवरात्रि के अनुष्ठान की विभिन्न क्रियाओं के क्रम को भी याद कराने का कार्य करता है। कश्मीर की मिश्रित संस्कृति में हिन्दू तथा मुसलमानों में पर्याप्त आदान-प्रदान हुआ है, उसका प्रमाण है 'एक खुदा है' से गीत की गिनती का आरम्भ। बीच-बीच में जहां शिवरात्रि से किसी संख्या-विशेष को जोड़ा नहीं जा सकता वहां वैसे ही वस्तुओं को जोड़ दिया गया है, जैसे दो गट्ठर, चार बड़ी ओखलियां, पांच पाण्डव, छः ऋषि आदि। कश्मीरी हिन्दुओं के अनुष्ठानों में अखरोट का बहुत महत्व है। अखरोट वृक्ष का प्राचीन संस्कृत नाम है मधुमज्जनः[4] और प्राचीन काल से ही उसकी मिगी का आकार (मनुष्य के मस्तिष्क जैसा होने के कारण) मानव के लिये रहस्य, आश्चर्य एवं पूजा का आधार रहा है। रुद्राक्ष के समान ही अखरोट के मुखों का महत्व है, त्रिमुखी अखरोट विशेष पवित्र माना जाता है, जिसका इस गीत में उल्लेख है। सप्तमी को ज्वाला भगवती की तथा अष्टमी को सारिका (ह'र) रूपी भवानी (जिसने जलोद्भव राक्षस का वध किया था) की पूजा की जाती है। शिवरात्रि – पूर्व एकादशी को मछली पकाते हैं, अतः उसे मछली (गाड-काह) एकादशी कहते हैं; द्वादशी को एक घड़े में अखरोट भिगोये जाते हैं, जिसे 'वटुक भरना' या वागुर कहते हैं। अखरोट (डून्य या डून) के विषय में कहा जाता है कि भीगे हुए को खाने से, जो हानि सूखा अखरोट (वृक्क, गुर्दे, किडनी आदि

---

1. वाल्मीकीय रामायण, 2/102, 30
2. नीलमत पुराण, भाग 1, पृ० 119।
3. वही
4. संस्कृत-हिन्दी कोश, आप्टे, 1966, पृष्ठ 768। कुछ विद्वान 'अक्षरोट' कहते हैं।

की) अधिक खाने से कर सकता, वह हानि नहीं होती । संस्कृत में वट का अर्थ है बांटना, विभाजन करना[1] कश्मीरी में भी 'वअगरावुन' शब्द बांटने के लिए है । 'वागअरय बाह' को घड़े में जो अखरोट भिगोये जाते हैं वे पूजा के बाद अखरोट-मावस के उपरान्त बेटियों तथा सम्बंधियों में बांटे जाते हैं । द्वादशी को अखरोट भिगोये जाते हैं तथा बड़े कलश में से विभिन्न छोटे-छोटे कुल्हड़नुमा पात्रों में उन्हें (तथा अन्य पूजा सामग्री को) बांटा, विभाजित किया जाता है, अतएव उन छोटे-छोटे पात्रों को भी वागुर कहते हैं । क्राल (संस्कृत के 'कुलाल' शब्द से बना है—कुम्हार) चौदस को कुम्हार जिसने घट आदि दिये उसे नेग आदि देते थे । द्वादशी को भिगोये गये अखरोट दो-तीन दिनों में भीतर तक गीले हो जाते हैं फिर अमावस्या को उनकी पूजा होती है, उससे पूर्व उन अखरोटों को खाया नहीं जाता । सोज़ का अर्थ है भेजना, ओकदोह अर्थात् एक (का) दिन, प्रतिपदा या परिवा, जिस दिन भीगे अखरोटों का प्रसाद सब सम्बंधियों (विशेषकर बेटियों की ससुराल) को भेजा जाता है । कश्मीर में इस प्रथा का इतना प्रचलन है कि हिन्दू अपने मुसलमान मित्रों को भी गीले अख़रोट भेजते हैं, यदि भूल जाएं तो मुसलमान तकाज़ा करते हैं । इसी प्रकार ईद पर कुर्बानी का मांस मुसलमान प्रसाद रूप में हिन्दुओं के यहां भेजते हैं ।

कश्मीरी हिन्दुओं की शिवरात्रि का उत्सव शिवरात्रि से पूर्व की प्रतिपदा से आरम्भ हो जाता है तथा शिवरात्रि के बाद की अष्टमी तक 23 दिनों चलता है । उसका क्रम निम्नलिखित है :–

हु'र ओकदोह (लिपाई प्रतिपदा) से लेकर हु'र अ'ठम (अष्टमी) तक घर की सफ़ाई, लिपाई-पुताई होती है । मिट्टी में भीगे हुए जिस कपड़े से लिपाई करते हैं, उसे हु'र कहते हैं । प्रत्येक रात को भोजन में मांस-मछली पकाते हैं । हु'र आठम को हारी पर्वत (शारिका भवानी के मन्दिर में) पर लोग रातभर भजन-कीर्तन करते हैं ।

हार नवम (कौड़ियों की नवमी) को कौड़ियां (हारअ) खेलते हैं । कश्मीर में शिवरात्रि पर कौड़ियां खेलने की प्रथा है । नव-वधू पहले वर्ष की शिवरात्रि पर अपने मायके से कौड़ियां लेकर ससुराल आती है तथा ससुराल में कौड़ियां खेलती हैं । प्रतिपदा से अष्टमी तक किसी दिन विवाहित बेटी को (चाहे वह कितनी भी बूढ़ी क्यों न हो) मायके बुलाया जाता है और उसका (सुविधानुसार जितने दिन हो सके) मायके में रहना आवश्यक होता है । हार नवम के दिन वह खड़ाऊं (आजकल चप्पलें)

---

1. संस्कृत-हिन्दी कोश, आप्टे, 1966, पृष्ठ 891 ।

कांगड़ी, नमक, नानबाई की तन्दूरी रोटियां (अथवा रोटियों के बदले उनका मूल्य) और 'अतगत' के पैसे लेकर अपनी ससुराल चली जाती है। अतगत, 'अत्र गच्छति'से बना है। विवाहित बेटी जब मायके से जाती है तब उसे जो धनराशि तथा नमक दिया जाता है उसे अतगत कहते हैं।

द्यार दहम (धन-दशमी) के दिन भी लड़की मायके से अपनी ससुराल जा सकती है। इस दिन धन, चावल आदि लड़की की ससुराल भेजा जाता है। इसके अतिरिक्त धन के लेन-देन का हिसाब भी इसी दिन किया जाता है, इसीलिए इसको द्यार दहम कहते हैं।

गाड काह (मछली एकादशी) के दिन मछली पकाना अनिवार्य होता है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सामान्यतः मांसाहारी हैं परन्तु शिवरात्रि पर मांस-मछली छूते भी नहीं हैं, उन्हें गुरिट कहते हैं। (गुरिट का सामान्य अर्थ है मटमेला या मिट्टी मिला पानी) वे लोग शिवरात्रि पर किसी के यहां भी खाते-पीते नहीं हैं तथा अत्यधिक छुआ-छूत मानते हैं।

वागअर्य बाह (वागअर द्वादशी) के दिन वागअर भरे जाते हैं जिनमें उस दिन का पकाया भोजन (मांस आदि) तथा अखरोट भरे जाते हैं और रात को उनकी पूजा होती है। दो घड़े और भरे जाते हैं जो कि शिव तथा शक्ति के प्रतीक माने जाते हैं तथा जो छोटे-छोटे पात्र भरे जाते हैं, वे शिव के गणों के प्रतीक माने जाते हैं।

हेरच़ त्रुवाह (शिव त्रयोदशी) के दिन मध्य रात्रि से प्रातः काल तक शिवजी की पूजा की जाती है। घर का जो सबसे बड़ा होता है वह इस दिन व्रत रखता है तथा वही पूजा में यजमान बनकर बैठता है।

सलाम : को शिव चतुर्दशी भी कहते हैं। इस दिन जो भी काम करने वाले, फूल वाला, ग्वाला, मेहतर, धोबी, तेली, नाई आदि होते हैं, वे प्रातः आकर 'सलाम' करते हैं तथा भेंट-पूजा (नेग) ले जाते हैं। 'सलाम' शब्द मुसलमानी प्रभाव है। सलाम का अर्थ है कुशल। यह प्रथा सम्भवतः सिख तथा डोगरा शासनों के काल में आरम्भ हुई होगी। इसके अतिरिक्त कुम्हार जिसने मिट्टी के बर्तन दिये थे, वह उन पात्रों का मूल्य तथा अपना नेग ले जाता है। इस दिन मांस के विभिन्न व्यंजन पकाये जाते हैं। पीले चावल पकाये जाते हैं और उनकी पूजा होती है। चील-कउओं को भेड़ों के फेफड़े खिलाये जाते हैं। ध्यातव्य है कि भद्रकाली की पूजा में भी फेफड़े चढ़ाये जाते हैं। अपने तथा अपने सम्बंधियों के बच्चों तथा नव-वधुओं को रुपये-पैसों का नेग (जिसे खर्च कहते हैं) दिया, भेजा जाता है। ईद पर मुसलमान जो

'ईदी' देते हैं, उसी प्रकार का यह रिवाज़ है और लगता है कि मुसलमानी प्रभाव से ही आया है। चतुर्दशी को 'क्राल-चौदह' भी कहते हैं। शिवरात्रि पर सभी बर्त्तन बदलने की प्रथा है। पहले मिट्टी के बर्तनों में भोजन पकाया जाता था और शिवरात्रि पर सारे बर्तन कुम्हार से खरीदकर बदल दिये जाते थे। आजकल धातु के पात्र चल गये हैं, इसीलिए मुहूर्त के लिए एक-दो मिट्टी के बर्तन अवश्य खरीदते हैं। कश्मीरी शब्द क्राल संस्कृत के कुलाल (कुम्हार) से बना है।

डून्य मावस (अखरोट अमावस्या) को उन घड़ों की पूजा होती है जिनमें शिवरात्रि पर अखरोट भिगोये गये थे। इस दिन से ही ये अखरोट खाये जा सकते हैं।

सोज़िन ओकदोह (भेजने की प्रतिपदा) से अष्टमी तक अखरोट जिनको भेजने होते हैं, उनको भेजे जाते हैं। नवविवाहिता की ससुराल में प्रथम शिवरात्रि पर एक-दो बोरे (सामर्थ्यानुसार) अखरोट मायके वाले भेजते हैं तथा साथ में नमक, अतगत आदि भेजा जाता है। आगे की शिवरात्रियों पर धीरे-धीरे इन अखरोटों की मात्रा कम होती जाती है, अन्त में बुढ़ियों को पुड़िया में थोड़े से अखरोट तथा रोटी भेजकर कर्मकाण्ड पूरा किया जाता है।

तील आ'ठम (तेल अष्टमी) एक प्रकार से शिवरात्रि के समारोहों का समापन है। इस दिन से अखरोटों का आदान-प्रदान बन्द हो जाता है। रात को घर की टूटी-फूटी टोकरियां, कांगड़ियां आदि जलाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ दीपक जलाकर नदी में प्रवाहित किये जाते हैं।

कश्मीर में शिवरात्रि का जो महत्व (और कर्मकाण्ड) है, उसकी समानता शेष देश की दीपावली से की जा सकती है। घर की वार्षिक सफाई-पुताई, लेन-देन का हिसाब, नये वर्ष की तैयारियां, कौड़ियां खेलना, बधाई देना-लेना, कामकाजियों को नेग देना तथा दीपक आदि प्रवाहित करना, दोनों त्यौहारों में एक-सा ही प्रतीत होता है।

गीत सं० 19 — में शिवजी की मुद्रा का वर्णन है। कश्मीरी में उ का व हो जाता है अतः उदासी का 'वोदहसी' हो जाता है; इसी प्रकार डूयक (माथा) संस्कृत ककाटिका से बना है।[1] तथा होट (गला) वैदिक शब्द हिरा[2] से बना है। शाहमार (शारमार) फारसी का शब्द है।

गीत सं० 20 — में वितस्ता की स्तुति है। वितस्ता के महत्व के विषय में पीछे संकेत किया जा चुका है। नीलमत पुराण में इसका विस्तृत वर्णन है तथा

---

1. वितस्ता (क० भा० विशेषांक), पृष्ठ 28।
2. अथर्ववेद, 1, 17, 13 तथा वितस्ता (क० भा० विशेषांक), पृ० 28।

'वितस्ता महात्म्य ' विस्तार से गाया गया है । प्राचीनकाल में कश्मीर में भाद्रपद की शुक्ल त्रयोदशी को वितस्तोत्सव मनाया जाता था क्योंकि यह दिन वितस्ता का जन्मदिन माना जाता है ।[1] यह उत्सव त्रयोदशी के तीन दिन पूर्व से आरम्भ होकर त्रयोदशी के बाद तीन दिनों तक चलता था।

माघ शुक्ल अष्टमी को महाभारत युद्ध में आहत होने के बाद भीष्म पितामह ने प्राण त्यागे थे । उन्हें इच्छा-मृत्यु का वर पिता से मिला था तथा वे उत्तरायण सूर्य हो जाने पर प्राण त्यागने की इच्छा करके वाण-शयूया पर लेटे रहे थे, तभी अर्जुन ने वाणों से भूमि भेद कर उनकी प्यास बुझाई थी । कश्मीर में भीष्म अष्टमी पर व्रत रखा जाता है और पूजा की जाती है ।

गीत सं० 21 — इसी अवसर पर गाया जाता है । आजकल इस व्रत को तथा इस गीत को भी लोग भूलते जा रहे हैं । इस गीत की इतनी ही पंक्तियां उस वृद्धा को याद थीं जिससे मैंने यह गीत प्राप्त किया था । कश्मीरी में अर्थ-विस्तार बहुत होता है । पहले लिपटन ब्राण्ड की चाय प्रसिद्ध थी इसीलिये सब ब्राण्डों की चाय को लिपटन नाम दे दिया गया । त्रेश न केवल प्यास के लिए प्रयुक्त होता है अपितु प्यास बुझाने के पानी के लिए भी । चोन शब्द पीने के लिए आता है जिसकी संस्कृत धातु है चमु भक्षणे ।[2] ब्रज के कुछ गांवों में आज भी गाय बैलों को पानी पिलाते समय चेइ-चेइ या चेह-चेह कहते हैं । कश्मीरी हिन्दुओं में आज भी अनेकानेक वे त्यौहार तथा उत्सव चले आ रहे हैं, जिनका मूल वैदिक-पौराणिक परम्पराओं में है तथा जिनका उल्लेख नीलमत पुराण (जो कि कश्मीरी संस्कृति पर प्रकाश डालने वाला, प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ है) तक में है । ध्यान देने की बात यह है कि इनमें से अनेक त्यौहार तथा उत्सव हिन्दू बहुल अन्य ब्रज आदि क्षेत्रों में लुप्त हो गये हैं ।

यह कहा जाता है कि हिन्दुओं के त्यौहारों की संख्या बहुत अधिक है । बौद्धों, ईसाइयों, सिखों, जैनों तथा मुसलमानों के त्यौहारों की संख्या तुलनात्मक रूप में बहुत कम है । शेष देश के मुसलमानों में जितने त्यौहार मनाये जाते हैं, उनसे कहीं अधिक त्यौहार कश्मीरी मुसलमान मनाते हैं । अस्थापन, मज़ार, पीरों के पवित्र स्थान, दरगाह आदि से सम्बन्धित अनेक ऐसे उत्सव कश्मीरी मुसलमान मनाते हैं, जिन्हें शेष देश के मुसलमान कुफ्र की संज्ञा तक दे देते हैं । सूफियों, बौद्धों तथा हिन्दुओं के प्रभाव से अनेक इस प्रकार की बातें कश्मीरी मुसलमानों की संस्कृति-परम्परा में आ

1. नीलमत पुराण, भाग 1, पृष्ठ 206 ।
2. वितस्ता (क० भा० विशेषांक) पृ० 38 ।

गई हैं, जिनके कारण वे अकश्मीरी मुसलमानों से किंचित भिन्न से प्रतीत होते हैं। सन् 1950 के बाद से, पैनइस्लामिज़्म के प्रभाव से तथा भारत एवं पाकिस्तान की जमातेइस्लामी के प्रभाव से, कश्मीरी मुसलमान भी कट्टरता की दिशा में जाने लगे हैं और उनकी संस्कृति का स्वरूप परिवर्तित होने लगा है। मैंने यहां केवल प्रतिनिधि गीतों को ही लिया है।

गीत सं० 22 — माहे रमज़ान और रोज़ों से सम्बंधित हैं। मुसलमान के लिए नमाज़, रोज़ा और हज्ज धार्मिक कृत्यों के आवश्यक अंग हैं। 'इस्लाम' का अर्थ है — मार्ग-रास्ता अर्थात् सही रास्ता जो एक ही है और उस पर जो ईमान लाता है वह मुसलमान है। एक अल्लाह ही पवित्र सत्य है, उसके अतिरिक्त और कोई अल्लाह (भगवान देवता) नहीं है, यह विश्वास मुसलमान के लिए आवश्यक है, वही बा-ईमान (ईमान सहित, ईमानदार) है जो इसके साथ मुहम्मद साहब को अल्लाह का (कतई) रसूल (नबी, दूत) मानता है, इस गीत में रोज़ा, रमज़ान, हक्के सुभान (या सुबहान), उसकी विशेषता है कि वह रहीम (रहमत करता) है, बा-ईमान का मुसलमान होना, जन्नत तथा उसका एक ही मार्ग (इस्लाम), ईद तथा शादी (खुशी का समय) आदि शास्त्रीय धार्मिक शब्दों का प्रयोग है।

गीत सं० 23 — में संस्कृतमूलक शब्दों का प्रयोग है :— ऋत (अच्छा, शुभ), प्रारान (प्रतीक्षा); जुव (जीव-जीवन्त शक्ति, प्राण)[1] जो कि कश्मीरी में सामान्यतः प्रयुक्त होते हैं।

गीत सं० 24 — में ईद से पूर्व के दिन 'अर्फा '(उच्चतम-अरबी का शब्द है)[2] का संकेत है, देश के अन्य भागों से अधिक महत्व अर्फा को कश्मीर में दिया जाता है। इस गीत में गरीब मुसलमान महिला के दर्द का सुन्दर वर्णन है। ईद आ रही है, परन्तु न तो प्रिय है और न पैसे, फिर ईद (खुशी) कैसी ? वैसे संसार में सब कुछ है (मिश्री-मीठी) परन्तु बिना टके के वह टकटकाती रह जाती है। यार के बिना ईद कैसी और पैसों के बिना मिठाई कैसी ?

मुसलमान महिलायें ईद के दिन रुफ (रोफ) नामक नाच नाचती हैं। वैसे इसमें केवल हाथ पकड़ कर वृत्ताकार खड़े होकर, एक-एक पग आगे पीछे किया जाता है— बस। रोफ में अनेक प्रकार के प्रणय-विरह गाथाएं (यूसुफ-जुलेखा, लैला-मजनूं, शीरी-फरहाद) तथा गीत गाये जाते हैं। रुफ नृत्य नाम को है, वास्तव

---

1. वितस्ता (क० भा० विशेषांक), पृष्ठ 27।
2. उर्दू-हिन्दी शब्द कोश, उ० प्र० हिं० संस्थान, पृष्ठ 23।

में यह समूह गान ही है।

गीत सं० 25 से 29 — तक में ईद का वर्णन है। ईद रोज़ों के बाद आई इसीलिए धीरे-धीरे (रस-रस) आई, कहा गया है। ईदगाह वितस्ता की धारा के नीचे की ओर है इसीलिए श्रीनगर वाले उतरना कहते हैं — वैसे नौकाओं के प्रयोग के कारण भी 'उतरने' का प्रयोग किया जाता है। मख़दूम साहब, दस्तगीर साहब तथा हज़रतबल, श्रीनगर की प्रसिद्ध दरगाहें हैं, जिन्हें मुसलमान 'अस्थान' (स्थान) कहते हैं। वास्तव में यह पवित्र स्थानों के लिए उनके द्वारा प्रयुक्त सामान्य शब्द है। मखदूम साहब सूफी इस्लाम प्रचारक थे। दस्तगीर (हाथ पकड़कर मदद करने वाला) की दरगाह बड़ी पवित्र मानी जाती है, लोग इसकी कसम खाते हैं, यह श्रीनगर में नौहट्टा के पास है। हज़रतबल में मुहम्मद साहब का कथित बाल कांच की नलिका में रखा है, जो औरंगज़ेब के समय में लाया गया था। पवित्र अवसरों पर इसके 'दीदार ' (दर्शन) का बड़ा महत्व है। कहा जाता है कि यह नमाज़-अज़ान या पवित्र ध्वनि-कर्म पर रहस्यमय ढंग से कम्पित होने लगता है। कश्मीर में मुसलमानों का यह पवित्रतम स्थल माना जाता है। शेष देश के कट्टर मुसलमान इसका (बुत परस्ती का एक रूप कहकर) विरोध करते हैं परन्तु कश्मीरी मुसलमानों की इसमें सघन आस्था है। कुछ विद्वानों का मत है कि यह बौद्ध-प्रभाव है, क्योंकि इसमें महापुरुष के अवशेष (बाल) रखे हैं। हज़रत (मुहम्मद साहब) बल शब्द में 'बल' का अर्थ (जैसा कि कुछ लोग भ्रान्तिवश समझते हैं) 'बाल' नहीं है, अपितु घाट या पानी का स्रोत है। पूर्वकाल में यहां विष्णु का मन्दिर था जिसे सिकन्दर बुताशिकन ने तोड़ा था। शेख अब्दुल्लाह ने जब इसका नवीनीकरण कराया था तब असंख्य एवं विशाल मूर्तियां इसके नीचे से निकाली थीं। अनेक हिन्दू आज भी इस दरगाह में दान देकर 'मिन्नत' मांगते हैं।

उस स्त्री के आनन्द की सीमा नहीं रहती जिसका प्रिय ईद के दिन विदेश से आ जाता है (गीत -27)। गीत -29 में ज्यूठ शब्द का प्रयोग है जो ज्येष्ठ (बड़े) से बना है, अर्थ है बड़ा अथवा लम्बा।

गीत सं० 30 — नबी शाह जीलानी के विषय में है, बहुधा उनके उर्स (वर्षी) पर गाया जाता है। कश्मीर में इस्लाम का प्रचार करके काफिरों को इस्लाम पर ईमान दिलाने को बगदाद से जीलानी नामक प्रचारक को बुलया गया था। अल्लाह के 'नूर' सं युक्त शाह जीलानी को कलिमा (ला इलाह इल अल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह) का कश्मीर में प्रचार करने आमंत्रित किया गया था। 'नूह'(बाइबिल के नोआह, हिन्दुओं

के मनु) की नौका तूफान से कलिमा के सहारे ही बची थी । सारे शेख तथा वली यह मानते हैं । सारे बादशाह तुम्हारे मुखापेक्षी (मोहताज़ हैं) और तुम्हारी दरगाह में झाडू लगाते हैं । शाह जीलानी के कश्मीर में आगमन के स्वागत के लिए यह गीत गाया जाता है ।

गीत सं० 31 — में नमाज़ के महत्व का संकेत है । चर्खे की आवाज़ सांसारिक शोर-शराबे (बाधाओं) का प्रतीक है । वाज़ का अर्थ है— धर्मोपदेश[1] यह फारसी का शब्द है । इसमें कामना है कि चूंकि मेरे नमाज़ी लाड़ले बेटे पर सन्त दस्तगीर को भी नाज़ है, हो सकता है कि वे इसकी नमाज़ों से प्रभावित होकर इस पर कृपा करें और इसका हाथ थाम ले — इसकी सहायता , पथ-प्रदर्शन करें । मां की यह अभिलाषा इस गीत में अभिव्यक्त की गई है ।

1. उर्दू-हिन्दी शब्द कोश, उ० प्र० हिन्दी संस्थान, पृष्ठ 615 ।

विभिन्न जातियों (पेशों) के तथा श्रम-परिहरण के गीत

(1 से 30 तक)

कश्मीर में हिन्दुओं की संख्या इतनी कम है कि सरकारी नौकरी के अतिरिक्त उनका अन्य कोई पेशा (व्यवसाय) बहुत ही कम है। थोड़े से कश्मीरी पण्डित व्यापार (दुकान आदि) में आए हैं परन्तु आज भी वे नौकरी (सरकारी) ही चाहते हैं। जो थोड़े से दुकान (पंसारी की) करते हैं, उन्हें बुहुर (बोहरा) कहकर हेठी दृष्टि से देखा जाता है। ग्रामीण क्षेत्र के हिन्दू भी खेतों पर स्वयं कार्य नहीं करते अन्य मुसलमानों से ही कराते हैं। वैसे 1990 ई० के आतंकवाद ने ग्रामीण क्षेत्रों से (जो थोड़े से हिन्दू वहां थे) उन्हें विस्थापित कर दिया है तथा लगता है कि वे अब लौटकर नहीं जा पायेंगे। कश्मीर घाटी में कश्मीरी हिन्दुओं की आबादी एक प्रतिशत के लगभग थी जो 1991 ई० के आरम्भ में लगभग शून्य हो गई है। संस्कार तथा त्यौहारों के गीतों के अतिरिक्त हिन्दुओं के लोक-गीत कश्मीरी में बहुत कम पाये जाते हैं। सारे पेशे मुसलमानों के हैं अतएव लोक-गीतों में मुसलमानों द्वारा गाये जाने वाले लोकगीतों का आधिक्य स्वाभाविक ही है। मैंने लोकगीतों के विशाल भण्डार में से केवल प्रतिनिधि गीतों को ही अपने विवेचन के लिये चुना है। यह सत्य है कि 1989 ई० तथा 1990 ई० में क्षेत्र-कार्य के लिये (गीतों के संग्रह के लिए) कश्मीर के दूरस्थ क्षेत्रों में जाना मेरे लिए अत्यधिक कठिन ही नहीं अपितु खतरनाक हो गया था। इतनी अधिक साम्प्रदायिक घृणा सम्पूर्ण वातावरण में व्याप्त हो गई थी कि अकेले यात्रा करना सम्भव ही नहीं था। तीन बार तो मैं ऐसे स्थानों में फंस गई, जहां मौसम (वर्षा एवं हिमपात) ही नहीं वातावरण (आंतकवादी) भी परम भयावह था, फलतः मुझे अपना स्वयं का सामान तथा संग्रहीत सामग्री (कैसेट, टेप-रिकार्डर, कैमरा-फिल्म आदि) सब छोड़ कर (उत्कोच रूप में देकर) भागना पड़ा।

बांड-जशन या बांड पथर कश्मीर का अति लोकप्रिय लोक-नाटक है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, यह भरत मुनि के द्वारा निरूपित भाण्ड (बांड शब्द भाण्ड से ही बना है) की जीवित परम्परा में है, क्योंकि इसमें स्वगत-कथन आदि के वे सभी तत्व आज भी पाये जाते है जो 'भाण्ड' में गिनाये गये हैं। बांड-जशन गीत-प्रधान है तथा जैसा ब्रज आदि हिन्दी-भाषी प्रदेशों में होता है, यह ग्रामीण क्षेत्रों में ही अधिकतर 'खेला' जाता है।

गीत सं० 1 — में गांव के नम्बरदार पर छींटाकशी है। नम्बरदार सरकार या जमींदार का एजेण्ट माना जाता है। 'पुरज़हरेलाल' मुसलमानों की प्रिय गाली या अपशब्द है — अर्थ है — ज़हरीला। मीर का अर्थ यहां, नेता या मुखिया है। फितूर अरबी के शब्द फुतूर[1] से बना है, अर्थ है उपद्रव या शरारत। बकोब शब्द 'बखूब' से बना प्रतीत होता है। इस गीत में 'पालिसी' शब्द दर्शनीय है। यह गीत सिख-डोगरा राज के वातावरण को उपस्थित करता है, जिसमें किसान सभी मुसलमान थे (आज भी हैं) और शासन से मिले नम्बरदार के प्रति उनके मन में (शोषण के कारण) आक्रोश रहता था। बांड-जशन की यही विशेषता है कि उसमें समसामयिक विषयों पर व्यंग्य हुआ करता है। इसी प्रकार—

गीत सं० 2 —में शेख अब्दुल्लाह तथा बख्शी गुलाम मुहम्मद के राज्यकाल में नेशनल कांफ्रेंस के 'हल्का प्रेसीडेन्टों' पर व्यंग्य है। राज्य किसी का भी हो किसान का शोषण सब करते हैं। क़ानिस[2] शब्द अरबी का है , अर्थ है शिकारी, आखेटक, मारने वाला। गंज[3] फारसी का शब्द है जिसका अर्थ है खजाना या कोष। प्रेसीडेण्ट के साथ सेक्रेटरी शब्द का प्रयोग भी दर्शनीय है।

गीत सं० 3 — में जो 'ज़मीदार' शब्द का प्रयोग है उसका अर्थ ब्रज आदि हिन्दी भाषी प्रदेशों में प्रचलित ज़मींदार (जो गांवों का मालिक होता था और लगान वसूल करके अंग्रेजी सरकार को उसका उनच्चास प्रतिशत देता था, शेष स्वयं खाता था; जमींदारी प्रथा में) शब्द से भिन्न है। कश्मीर में 'जमीनदार' का अर्थ है 'किसान', जो जमीन जोतता है। इस गीत में संस्कृतमूलक शब्द, आनन्द, सन्तोष, बवि, गांगल आदि दर्शनीय है। इस गीत में जुए का विरोध है तथा 'सन्तोषम् परमम् सुखम्' का उपदेश है।

गीत सं० 3 अ — में जो कोल शब्द है वह 'कलत्र' (संस्कृत पत्नी) से बना है तथा पति के लिए जो 'रून' शब्द है वह राजस्थानी आदि में भी प्रयुक्त होता है। कबीर ने कहा है, 'द्वारे ठाड़्यों रून'; ।

गीत सं० 4 — में कदल शब्द का प्रयोग है, कश्मीरी में इसका अर्थ पुल है। वितस्ता (झेलम) के सात पुलों के दोनों ओर श्रीनगर बसा हुआ है तथा कश्मीरी कवियत्री हव्वाखातून के नाम पर दूसरा पुल है हव्वाकदल। बाइ शब्द भार्या[4] से बना

---

1. उर्दू-हिन्दी शब्द कोश, उ० प्र० हिन्दी संस्थान, पृष्ठ 405।
2. उर्दू हिन्दी शब्द-कोश, उ० प्र० हि० संस्थान पृष्ठ 115।
3. वही, पृष्ठ 176।
4. वितस्ता (क० भा० विशेषांक), पृष्ठ 19।

है तथा इसका बहुत अधिक प्रयोग कश्मीरी में होता है, जैसे :– सोनिरबाइ (सुनारिन, स्वर्णवणिक भार्या), गूरिबाइ (ग्वालिन), मास्टर बाइ (मास्टरनी) आदि। पीर पंचाल (या पंजाल) पर्वत श्रेणी के लिए पांचाल-पर्वत का प्रयोग है।

गीत सं० 5 — में महायुद्ध का उल्लेख है। कश्मीर में मनिहार केवल चूड़ियां ही नहीं बेचते, अपितु स्त्रियों के श्रृंगार की विभिन्न छोटी-मोटी वस्तुएं (बुन्दे, बिन्दी, झुमके आदि) भी बेचते हैं। उनका व्यवहार शोखी (कभी-कभी अशिष्टता युक्त भी) भरा होता है, छेड़खानी भी करते हैं।

गीत सं० 6 — में इसी प्रकार का वर्णन है। लम्बे केश (मस) वाली के प्रति कह रहा है कि 'तेरे केशों में से जो झिलमिलायेंगे ऐसे नाज़ुक लम्बे-लम्बे बुन्दे लाया हूँ।' शोभा (शूब), ज्योति (ज़ोत), जैसे संस्कृतमूलक शब्दों के साथ-साथ 'हुस्न' जैसे उर्दू फारसी के शब्द का प्रयोग है। कश्मीरी में लम्बी-निद्रा के लिए 'नाग-नेन्दर' शब्द का प्रयोग बहुत होता है। शेष देश में यह प्रयोग मैंने नहीं सुना। सांप जाड़ों में 'हाइबरनेट' करता है, लम्बी नींद सोता है क्योंकि वह शीत-रक्त (कोल्ड ब्लडेड) वाला जीव है। बबरे के सुगन्धित पेड़ शीत के बाद अचानक भरभराकर उग आते हैं।

गीत सं० 7, 8 तथा 9 — में ध्यान देने की बात यह है कि नाविक और हांजी में थोड़ा भेद है। हांजी खरीदते-बेचते भी हैं तथा बहुधा हाउस वोटों में रहते हैं।

लाव लगने से तात्पर्य है सड़ना, फफूंद लगना। वान्यन से तात्पर्य वणिक (पंसारी) से है।

गीत सं० 8 — में नमक के महत्व का तथा उसके महंगे हो जाने का संकेत है। ब्रज भाषा में नमक को नोंन कहते हैं, उसी प्रकार कश्मीरी में 'नून' (ओ का ऊ हो गया है) कहते हैं। ठूल का अर्थ अण्डे है। 'ट्रयेण्डिखाव' में कोढ़ का संकेत है-उंगलियों के पोरुओं का गल जाना।

गीत सं० 9 — में एक लोकप्रिय कहावत अथवा मान्यता का संकेत है कि, जब बुरे दिन आते हैं तब खूंटी हार निगल जाती है, सब काम उल्टे हो जाते हैं (लोकप्रिय कहानी है ब्रजक्षेत्र की) इसलिए सचेत, जागरूक रहना चाहिए। अभागे को सिंहासन भी मिल जाय तो उसे भोग नहीं पाता।

विवाह आदि आनन्दोत्सवों में लड़के-पुरुष नाच-नाच कर गाते हैं, वे बच-नग़मा (बच्चे-गीत) कहलाते हैं। इनमें अधिकतर प्रेम-गीत ही होते हैं। इनका प्रचार पठान शासन में विशेष रूप से हुआ था क्योंकि उन्होंने स्त्रियों का नाचना बन्द करा दिया था, ये बच 'गिलमों' के प्रतीक हैं।

गीत सं०11, 12 — में नुन्दबोन, कन्हैया समान सुन्दर के लिए है। इसके

साथ-साथ दिलबर तथा तमबलावन (तमा[1] अर्थात् आकर्षित करना, इच्छा चाह पैदा करना) शब्दों का प्रयोग भी है।

गीत सं०14 तथा 15 —में धान की रुपाई का वर्णन है। धान बोया जाता है, उग आने पर पौधों की गड्डियां (गट्ठे) बनाये जाते हैं, तदुपरान्त टखनों से ऊपर तक पानी भरे खेतों में लाइन लगाकर गट्ठों से ले-लेकर पौधे रोपे जाते हैं। कुछ लोग गट्ठे वितरित करने का काम करते हैं। पानी भरे होने के कारण खेतों की मेड़ों (मुड़ेरों) पर होकर ही चला जा सकता है। इसी दृश्य का वर्णन इन गीतों में है। पशमीने की चादर की लम्बाई सम्पन्नता की प्रतीक है। कश्मीरी के शब्द बवुन तथा लोनुन संस्कृत के वपन्तः तथा लुनन्तः[2] (बोना, काटना) से बने हैं। ऋषि साहब से तात्पर्य बाबा ऋषि (गुलमर्ग के पास) से है।

गीत सं० 16 — में अलमदार शब्द अरबी-फारसी दोनों में आता है।[3] मीर शब्द का अर्थ सरदार या मुखिया है। इस्समीर नाम है, इसहाक मीर का लघुरूप। गांवों में पानी को लेकर किसानों में झगड़ा होता है उसका चित्रण इस गीत में है।

गीत सं०17 — में ग्यदरी नामक पक्षी का उल्लेख है, जिसका बोलना शुभ शकुन माना जाता है। उसके कूकने से फसल फलती फूलती है। इस विश्वास का (टोटके) संकेत है। यह पक्षी शिमला, गढ़वाल, कुमाऊं, सिक्किम तथा कश्मीर में सात-नौ हज़ार फीट की ऊंचाई तक पाया जाता है, इसका अंग्रेज़ी नाम 'ट्री क्रीपर' है तथा लेटिन नाम है 'सर्थिया हिमालयाना।'[4]

गीत सं०18 — में नदी के लिए कोल शब्द का प्रयोग है जो संस्कृत 'कुल्य' से बना है।[5] च्रार शरीफ में सन्ता लल्लेश्वरी के समकालीन नुन्द ऋषि (शेख़ नूरुद्दीन वली) की मज़ार है, जिसे हिन्दू और मुसलमान दोनों आदर की दृष्टि से देखते हैं। हारवन, श्रीनगर के पास वह स्थान है, जहां प्रचीन हिन्दू सभ्यता के अवशेष उत्खनित किये गये हैं और जहां तीसरी बौद्ध-सभा कनिष्क के समय में आयोजित की गई बताई जाती है। आज वहां जल-आपूर्ति का केन्द्र है।

गीत सं०19 — में दीदार से तात्पर्य है हज़रतबल दरगाह में हज़रत मुहम्मद के पवित्र बाल के दर्शन से।

---

1. तमा अरबी का शब्द है। उर्दू-हिन्दी शब्द कोश (उ०प्र० हिन्दी संस्थान)पृष्ठ 278।
2. शतपथ ब्राह्मण, 1, 6, 13।
3. उर्दू-हिन्दी शब्द कोश (उ० प्र० हि० सं०), पृष्ठ 24।
4. बईस अव कश्मीर, संसारचन्द कौल, पृष्ठ 17।
5. संस्कृत हिन्दी कोश, आप्टे, पृष्ठ 289

गीत सं० 20 — में प्रयुक्त यावन शब्द यौवन से बना है। टोठ (टाठ) संस्कृत 'तात' से बना है[1]। मलकुल मौत अर्थात् मौत का फरिश्ता[2] के लिए मलकिन मौत कहा गया है। 'नार खोतह नार' का अर्थ है, आग से भी अधिक जलाने वाला।

गीत सं० 21 — में चरवाहे के लिए पोहल शब्द का प्रयोग है जो कि संस्कृत पशुपालक[3] से बना है। दीर्घ स्वर समेत मध्य व्यंजन और अन्त व्यंजन लोप। इसी से पशुपाल ग्राम (पहलगाम— पर्यटन स्थल) बना है। कुल (पेड़) भी संस्कृत शब्द है।

गीत सं० 22, 23 — में चरवाहों की सामान्य भावनाओं का चित्रण है।

गीत सं० 25 — में 'गोरनख' शब्द गढ़ने से बना है। कश्मीरी में ढ़ तथा ड़ 'र' में बदलते हैं। डून्य का अर्थ अखरोट है। तुर्क [4] का अर्थ है प्रेमपात्र, यह तुर्की भाषा का शब्द है तथा छान (बढ़ई) शब्द संस्कृत तक्षत् [5] से बना है। दोनों को मिलाकर तुर्क छान शब्द मिश्रित भाषा एवं संस्कृति का विचित्र प्रयोग है। इसी प्रकार—

गीत सं० 26 तथा 27 — में रौनि संस्कृत के रणू [6] से बना है और स्वर्गच-हूर पुनः संस्कृत तथा अरबी (हूर) से मिलकर बना है। संस्कृत 'कल' [7] का अर्थ होता है अनपका, कच्चा, अस्पष्ट स्वर, जिससे कश्मीरी का अडकोल (तुतला) शब्द बना है। प्यारे शिशु के लिए 'जसोदा के कान के झुमके' का प्रयोग बड़ा ही मार्मिक है।

गीत सं० 28 — में कश्मीरी हिन्दुओं के अति प्रतिष्ठित परिवारों (धर, कौल, मुंशी तथा जुत्शी) की धायों के द्वारा बच्चे के लालन-पालन कराने का वर्णन है। यह गीत हिन्दुओं और मुसलमानों के सन्दर्भ में विलग-विलग महत्व रखता है।

गीत सं० 29 — में दिल्ली तथा लाहौर दोनों का संकेत महत्वपूर्ण है।

---

1. वितस्ता (क० मा० वि०), पृष्ठ 18।
2. उर्दू-हिन्दी शब्द-कोष (उ० प्र० हिन्दी सं०), पृष्ठ 479।
3. ऋ० वे० 1, 114, 9 तथा 1,144, 6 तथा 4,6,4 तथा 10, 142, 2 और वितस्ता (क० मा० विशेषांक) पृष्ठ 22।
4. उर्दू-हिन्दी शब्द-कोष (उ० प्र० हिन्दी सं०), पृष्ठ 300।
5. वितस्ता (क० मा० वि०), पृष्ठ 22 तथा ऋ० वे० - 9, 112,1।
6. आम्टे का संस्कृत-हिन्दी कोश, पृष्ठ 845।
7. आप्टे का संस्कृत-हिन्दी कोश, पृष्ठ 255।

लोलग्यवन : प्रेमगीत (1 से 22 तक)

कश्मीरी प्रेमगीतों में हिन्दुओं तथा मुसलमानों के प्रेमगीतों का अनुपात आज की जनसंख्या के अनुपात में ही है, अर्थात् हिन्दुओं के बहुत कम संख्या में हैं तथा 95 प्रतिशत से अधिक मुसलमानों के हैं। दर्शनीय बात यह है कि पात्रों, घटनाओं तथा धार्मिक प्रतीकों तथा बिम्बों को छोड़कर मुसलमानों द्वारा गाये जाने वाले गीतों में आज भी प्राचीन भाषा-गत प्रयोग पाये जाते हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि चूंकि इस प्रकार के (पारम्परिक) गीत ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रचलित हैं, उनमें प्राचीन (संस्कृत-हिन्दू) तत्व शहरी क्षेत्रों के गीतों की तुलना में अधिक पाये जाते हैं। इसका कारण यह है कि ग्रामीण जनता में शिक्षा का प्रसार कम है, दूसरी ओर शहर के लोग अधिक पढ़े लिखे हैं। पढ़ाई-लिखाई में अरबी-फारसी पर बल होने के कारण शहरी मुसलमानों (तथा हिन्दुओं) की भाषा में अरबी-फारसी के प्रयोग अधिक आ गये हैं। पाकिस्तानी प्रचार-माध्यमों के प्रभाव से तथा रेडियो कश्मीर की कृत्रिम, फारसी-अरबी बहुल भाषा के प्रभाव से, यह इस्लामीकरण और भी प्रखर हो उठा है, जो कि जनसंख्या के अनुपात को देखते हुए स्वाभाविक है, विशेषकर आज के कट्टरतावादी साम्प्रदायिक वातावरण के सन्दर्भ में। इस तथ्य की ओर मैं संकेत कर रही हूँ कि कश्मीर घाटी की कश्मीरी अपने प्राचीन स्वरूप को धीरे-धीरे खो रही है, बदल रही है क्योंकि वहां के मुसलमान कश्मीरी से अधिक उर्दू-फारसी-अरबी के प्रति लगाव रखते हैं और इसीलिए उन्होंने कश्मीरी की मूल-लिपि (शारदा) को त्यागकर कश्मीरी को फारसी लिपि में लिखना आरम्भ कर दिया। दूसरी ओर पूर्वी पाकिस्तान के मुसलमानों ने (जिनका जनसंख्या अनुपात लगभग कश्मीर जैसा ही है) अपनी भाषा को संस्कृत-शब्द-बहुल ही नहीं बनाये रखा अपितु सरकार के दमन तथा अत्याचारों को सहकर भी पाकिस्तान सरकार के इस आदेश को नहीं माना कि बंगला को उर्दू के समान फारसी लिपि में लिखा जाय। परिणाम में तीस लाख मुसलमानों ने अपनी भाषा तथा लिपि के लिए प्राण दिए और बंगला-देश का जन्म हुआ। मेरा तात्पर्य है, उन राजनैतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक दवाबों की ओर संकेत करना, जिनके कारण ये परिवर्तन घटित हो रहे हैं।

प्राचीन परम्परा का अनुगमन करने वाले इन प्रेम-गीतों का विवेचन भी मैं प्राचीन काव्य-परम्परा के सन्दर्भ में करूंगी। प्रेम (श्रृंगार) की दोनों दशाओं, मिलन तथा विरह, के गीत कश्मीरी में पाये जाते हैं। रूप-वर्णन तथा संभोग-श्रृंगार के गीत

पर्याप्त संख्या में उपलब्ध होते हैं । विरह के तीन भेदों में से पूर्व-राग के गीत नहीं मिलते, हां, गाथाओं (लम्बे गीतों) में इसके संकेत मिलते हैं, परन्तु गाथायें मेरे इस विवेचन के क्षेत्र के बाहर हैं और उनका विवेचन इस परियोजना के दूसरे चरण में किया जायगा । विरह के अन्य दो भेदों मान तथा प्रवास के असंख्य गीत कश्मीरी में मिलते हैं । जहां तक विरह की काम-दशाओं का सम्बन्ध है, उनमें से अधिकांश को हम इन गीतों में खोज सकते हैं । सामान्यतः दस काम-दशायें मानी जाती हैं — अभिलाष, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता तथा मरण । कुछ विद्वान् मूर्च्छा को मिलाकर ग्यारह दशाओं को स्वीकार करते हैं । अन्य विद्वान् मरण को स्वीकार नहीं करते क्योंकि इसके आते ही श्रृंगार करुण में बदल जाता है, इस कारण वे केवल नौ काम दशाओं को मान्यता देते हैं जबकि कुछेक विद्वान् मरण के स्थान पर मूर्च्छा को लेकर दस की संख्या ही मानते हैं।[1] कुछ गीतों में एक से अधिक दशाओं के तत्व पाये जाते हैं, क्योंकि लोक-गीतकार परम्परा का, तालमेल करता हुआ, अनुसरण करता है, वह शास्त्रीय-ज्ञान या विवेचन से जुड़ा हुआ नहीं होता और न इस प्रकार का ज्ञान-प्रदर्शन उसका उद्देश्य ही होता है; वह तो सहज अनुभूतियों के त्वरित-प्रेषण का प्रयत्न करता है । मैंने केवल प्रतिनिधि गीतों को ही लिया है ।

गीत सं० 1 — अत्यधिक महत्वपूर्ण गीत है । इसमें साहित्यिक परम्परा के क्षीण दर्शन मिलते हैं । नायिका का रूप-वर्णन वर्षा के रूपक के माध्यम से किया गया है । इसमें एक शब्द का प्रयोग किया गया है — 'ओबुर' । संस्कृत का 'अभ्र' कश्मीरी में ओबुर हो जाता है क्योंकि भ बदल कर ब हो जाता है और मिश्रित वर्ण भ्र टूट जाता है । उधर प्राचीन वैदिक भाषा प्राचीन फारसी की जननी है तथा उसका अभ्र शब्द फारसी में 'अब्र' (अब्र — आलूदा) के रूप आया है । कश्मीरी वैदिक संस्कृत की अपभ्रंश है (जैसा कि पहले कहा जा चुका है) और उसमें इस शब्द का प्रयोग कश्मीर में इस्लाम के आगमन से आरम्भ हुआ है या उसके पूर्व है, यह तथ्य भाषा-शास्त्रियों के अध्ययन के लिए, (इसी प्रकार के अन्य शब्दों के साथ) महत्वपूर्ण संकेत करता है। 'गथ' करान गति करने से बना है, अर्थ है — मंडराना ; जैसे पतंगा दीपक के चारों ओर मंडराता है । 'वाव' संस्कृत के वायु से बना है । इस गीत में सांग-रूपक का शास्त्रीय-निर्वाह तो नहीं है, परन्तु रूपक के प्रयोग के प्रमाण एकदम उभर कर आ गये हैं ।

---

1. हिन्दी साहित्य-कोश, भाग-1, ज्ञानमण्डल, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 779 ।

गीत सं० 2 — में भी रूप-वर्णन है । इसमें तीरे-मिज़गां के साथ-साथ सरंजि शब्द् का प्रयोग है जो कि संस्कृत के शब्द शिंजिनी (प्रत्यंचा) से बना है और गांवों में आज भी इसी अर्थ में या कमान (धनुष) के अर्थ में प्रयुक्त होता है । बुम का संस्कृत रूप भ्रू है । कश्मीरी में चेरी (फल-विशेष का अंग्रेजी नाम) को गिलास कहते हैं, बड़ी तथा अच्छी चेरी को डबल-गिलास कहते हैं । सामान्यतः लोग यह समझते हैं कि यह अंग्रेजों द्वारा कश्मीर में लाया गया था, परन्तु नीलमत पुराण[1] में इसका उल्लेख कपित्थ नाम से है और सर ओरियल स्टाइन ने इसे चेरी ही माना है।[2] 'सोज़ना' शब्द भेजने के लिये 'पृथ्वीराजरासो' में भी प्रयुक्त है ।

गीत सं० 3 — सम्भोग श्रृंगार विषयक है । इसमें रोशनुन 'रोष' से बना है तथा कश्मीरी में रूठने (रुष्ट) के लिए प्रयुक्त होता है, जैसा कि ब्रजभाषा में 'रूसना, रूसि गयो' चलता है । संस्कृत 'सार' महत्व के लिए प्रयुक्त है । कामदीव (देव) प्रेमी के लिए प्रयुक्त है । कश्मीरी में प्रेमी को कामदेवार्थक शब्द 'मदन' से भी सम्बोधित किया जाता है तथा वीर्य [3] के लिए भी 'काम' [4] शब्द का प्रयोग होता है क्योंकि कामदेव 'काम' (वीर्य) का देवता है । पंजाबी आदि भाषाओं में जैसे कथा का 'बात' के अर्थ में प्रयोग होता है, वैसा ही कश्मीरी में होता है । वुठ (होठ) संस्कृत 'ओष्ठ' से बना है । एक अन्य महत्वपूर्ण शब्द इस गीत में है, वारअ । संस्कृत शब्द वार्य [5] से बना है, यह कश्मीरी शब्द है और इसका अर्थ है कुशल-क्षेम[6], तथा कश्मीरी में इसका प्रयोग 'अच्छी तरह' या 'ठीक तरह से ' के लिए भी होता । हिन्दू और मुसलमान दोनों इसका दिन में अनेक बार प्रयोग करते हैं । मिलते ही हिन्दू से पूछा जाता है 'वारयछिव माहरा' तथा मुसलमान से पूछा जाता है 'वारह छिव हज़' । माहरा महाराज का तथा हज़ हज़रत का संक्षिप्त रूप है। थावान (रखना) संस्कृत स्थापित करने से बना है ।

गीत सं० 4 — विरह का गीत है तथा मैंने इसे 'मान' के अन्तर्गत रखा है क्योंकि राम, सीता से रुष्ट (रूठ) से ही हो गये हैं । यह हिन्दुओं द्वारा गाया जाने वाला सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण गीत है । इसमें उभरने वाले महत्वपूर्ण

---

1. नीलमत पुराण, भाग 1, डा० वेदकुमारी, पृष्ठ 121 ।
2. कल्हण कृत राजतरंगिणी, अनु० स्टाइन, 4, 219 ।
3. वितस्ता (क० मा० वि०), पृष्ठ 29 ।
4. ऋ० वेद, 10, 129, 4, में इसी अर्थ में 'काम' का प्रयोग है ।
5. वितस्ता (क० मा० वि०), पृष्ठ 31 ।
6. निरुक्त - 8, 9, 2 ।

सांस्कृतिक संकेत हैं :—

— संस्कृत मूलक शब्दों के साथ-साथ दिलवर, शक्ल, तकसीर (दोष) आदि अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग है।

— 'अने' लाने, के लिए प्रयुक्त हुआ है, जैसे ब्रजभाषा में आनो (लाओ) होता है।

— लक्ष्मण के लिए बलवीर (सामान्यतः कृष्ण के भाई के लिए प्रयुक्त होता है) सम्बोधन का प्रयोग भी दर्शनीय है। एक तो बलराम (अनन्त, नाग, शेष के अवतार) का कश्मीरी संस्कृति में विशेष महत्व है दूसरे सहायक बलशाली भाई का प्रतीक बन गया है, यह नाम।

— ज़ाम (ननद) द्रुया (देवर) शब्दों का विशेष महत्व है। ये कश्मीरी के वैदिक-मूल के द्योतक हैं। ज़ाम जामि[1] से, तथा द्रुया देवृ[2] से बना है।

— सीता बनवास के सन्दर्भ का कश्मीरी रामकथा के अनुसार संकेत है। फादर कामिल बुल्के [3] ने अपने शोध-ग्रन्थ में इस घटना का कश्मीरी राम-कथा में होने का संकेत किया है। दशरथ की पुत्री का नाम शान्ता था और उन्होंने उसे अंग (वर्तमान बिहार) के राजा लोमपाद (या रोमपाद) को गोद दे दिया था, जिसने उसका विवाह मुनि ऋष्यश्रृंग से कर दिया था [4]। जब दशरथ ने पुत्रकामेष्ठि यज्ञ किया तब गुरु वशिष्ठ के निर्देश से अपने दामाद (जामातृ) ऋष्यश्रृंग को पुरोहित बनाकर निमंत्रित किया था।[5] कश्मीर की सांस्कृतिक परम्परा में इस तथ्य का विशेष स्थान है। सिकन्दर बुतशिकन के उत्पीड़न से जब हिन्दू घाटी छोड़कर भाग गये तब केवल ग्यारह परिवार लुक-छिप कर घाटी में रह गये थे। जब बुतशिकन के बेटे बड़शाह ने उन्हें पुनः घाटी में बुलाकर बसाया तो उनके पास धार्मिक संस्कारों को सम्पन्न कराने को ज्ञाता-पुरोहित ही नहीं रहे। सर्वसम्मति से (रामायण की परम्परा में) यह निर्णय किया गया कि अपने दामाद को (जो वैसे भी मान्य एवं पूज्य है) पुरोहित बनाया जाय। आज भी इस परम्परा का पालन होता है। जिनका

---

1. ऋ० वेद, 1, 31,10, तथा अथ० वेद, 1, 17, 2।
2. ऋ० वेद, 10, 86, 85, कश्मीरी में र तथा ऋ स्थान बदलते हैं, जैसे ताम्र से त्राम।
3. रामकथा— उत्पति और विकास, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 117।
4. हिस्ट्री एण्ड कलचर अव इण्डिन पीपल, प्रथम भाग, द वैदिक एज, ज्योर्ज एलेन और अनविन (अब भारतीय विद्याभवन) प्रथम संस्करण (सं० आर० सी० मजूमदार), पृष्ठ 290।
5. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, गीताप्रेस, आठवां संस्करण, पृष्ठ 51।

दामाद (जैसे कारकुन वर्ग का) पुरोहित बनना स्वीकार नहीं करता, वे लोग आज भी दामाद के पुरोहित को विवाहादि में निमंत्रित करते हैं — और यह आवश्यक होता है।

— सीता ने ननद के कहने पर रावण का चित्र बनाया और इस जुर्म में उसे वन भेज दिया गया, ननद की इस, जानी-अनजानी गलती का दण्ड सीता को भोगना पड़ा। (ध्यातव्य तथ्य यह है कि विभिन्न राम-कथाओं से इसी प्रकार के तथ्यों-संकेतों को एकत्रित करके दक्षिण के ईसाई लेखक ओब्रे मेनन ने [1] सीता तथा रावण के कल्पित आपत्तिजनक सम्बन्धों का वर्णन किया था।) यह गीत अत्यन्त मार्मिक तथा लोकप्रिय है।

गीत सं० 5 — में मान के वर्णन के साथ-साथ सौत का संकेत भी है। विरहिणी खून के आंसू रोती है। आदन (आदि से) के साथ चश्म (आंख) का प्रयोग है। श्रावण की हिम के समान गलना ब्रजभाषा की उक्ति 'गोरो गोरो मुख जैसे ओरो से गलानो जात' की याद दिलाता है।

गीत सं० 6 तथा 7 — अभिलाषा नामक विरह (काम) दशा का संकेत है। इसमें चश्मेबद-दूर, शीरख़ोर जैसे फारसी शब्दों के साथ माया तथा आयि (आयु) जैसे संस्कृत-मूलक शब्दों का प्रयोग है। गीर करनस का भावार्थ है 'किंकर्त्तव्यविमूढ़'।

गीत सं० 8 — में चिन्ता नामक अवस्था (काम-दशा) का वर्णन है। यह गीत सिंघाड़े बेचने वाले हाँजियों के वर्ग की विरहिन का है।

गीत सं० 9 — में स्मृति नामक विरह अवस्था का वर्णन है। इसमें मनमौजी से वास्तविक तात्पर्य है—ऐश करने वाला और संस्कृत-फारसी का मिश्रित शब्द बनाया है 'ऐश मत्त' अर्थात् ऐश करने में मस्त रहने वाला।

गीत सं० 10 — में गुणकथन अवस्था के साथ-साथ उपालम्भ का भी संकेत है। इस गीत में अरबी फारसी की परम्परा में विरह वर्णन में रक्त का प्रयोग है, संस्कृत-हिन्दी परम्परा में ऐसे प्रयोग (वीभत्स) श्रृंगार के विरोधी हैं।

गीत सं० 11 — सौत का वर्णन तो है ही साथ में अभिलाष नामक अवस्था का वर्णन है। मदिरा पीने-पिलाने का वर्णन कश्मीरी सन्दर्भ में दर्शनीय है। इस्लाम के अनुसार शराब पीना हराम है। ब्रजभाषा में मिट्टी की हांडी (विशेषकर दूध रखने की) को मलरिया कहते हैं और ठीक इसी अर्थ में कश्मीरी में 'मलर्य' का प्रयोग होता है।

---

1. 'राम-रीटोल्ड' नामक प्रतिबन्धित पुस्तक।

गीत सं० 12 तथा 13 — में उद्वेग अवस्था का वर्णन है। स्यद (सीधे), अछिन (अक्ष—आंखें), मूह (मोह), बुम्ब (भ्रू—भौंहें), सरंजि (शिंजिनी — प्रत्यंचा), नार (वैश्वानर—आग), जैसे संस्कृतमूलक शब्दों के साथ-साथ रुख (चेहरा—मुख), ज़ेब (उपयुक्त, योग्य), सुखनशक्करी (मीठी वाणी) अश्कुन (अश्क— आंसू) जैसे फ़ारसी (विदेशी) शब्दों का प्रयोग है।

गीत सं० 14 — में प्रलाप अवस्था के वर्णन के साथ-साथ उद्दीपन वर्णन भी है। प्रिय के साथ, केसर, चैरी, अनार आदि के अम्बार लगाकर ठेकेदारों को बेचने में जो मज़ा था, वह इन दृश्यों के, उसकी अनुपस्थिति में उपस्थित होने पर प्रिय की याद के कारण इस नायिका (बागबान, किसान) के विरह को और भी उद्दीप्त कर जाती है। केसर के लिए कोंग (कश्मीरी का) न होकर जाफ़रान कहा है।

गीत सं० 15, 16 तथा 17 — में उन्माद एवं प्रलाप की अवस्थाओं के साथ-साथ दूत भेजने का भी संकेत है। मति (मत्त-संस्कृत) के साथ माशूक शब्द का खूब जोड़ बिठाया गया है। जैसा सूर ने कहा है : 'बालापन को प्रेम कहो अलि कैसे छूटे ?' उसी प्रकार का संकेत है गीत 17 में।

गीत सं० 18, 19 तथा 20 — में उन्माद की अवस्था के चित्रण के साथ-साथ दूत एवं उपालम्भ के भी संकेत हैं। गीत -19 में उद्दीपन का भी क्षीण संकेत है। यावन (यौवन), गनन (घनीभूत होना), छनान (क्षीण होना), फुलय (फुल्लित) जैसे संस्कृत-मूलक शब्दों के साथ नालह (आवाज़-पुकार), ग़म, आशिक, मुशिक (मुश्क—वैसे कस्तूरी परन्तु कश्मीरी में अर्थ-विस्तार के माध्यम से गन्ध के लिए प्रयुक्त होता है) तथा गुलशन जैसे विदेशी शब्दों का प्रयोग है। इसी प्रकार गीत- 20 में भी बाल-सखा प्रेमी को दूत भेजने का संकेत है। इसमें भी अरबी-फारसी की काव्य-परम्परानुसार रक्त-मांस का प्रयोग है। पतंगे के साथ मंसूर (प्रथम सूफ़ी) का ज़िक्र करके सूफ़ी प्रभाव तथा प्रेम के अलौकिकत्व की ओर इशारा है। परवाना न कहकर पोंफर कहा है जो प्राचीन कश्मीरी-परम्परा का निर्वाह करता है। 'अश्क नार' शब्द का बड़ा ही मार्मिक प्रयोग है। अश्क फारसी का है, नार संस्कृत का है— तथा ठण्डी मीठी, गीली, आग की ओर संकेत करता है। शरीर के लिए बदन न कहकर 'तन' कहा है। गिन्दुन (खेलना) शब्द संस्कृत धातु 'गुद क्रीडायाम'[1] से बना है।

गीत 21 तथा 22 में व्याधि नामक अवस्था का संकेत है। 'बलोयो' शब्द संस्कृत के शब्दों के ठेठ कश्मीरीकरण का सुन्दर प्रमाण है।

---

1. वितस्ता (क० मा० वि०) सं० डा० रमेशकुमार शर्मा, पृष्ठ 34।

विविध गीत (1 से 27 तक)

'विविध-प्रकार' के असंख्य गीत पाये जाते हैं। इनका सही वर्गीकरण कठिन है, अतएव मैंने उदाहरणस्वरूप कुछ प्रतिनिधि गीतों को ही चुना है। इनमें भी मैंने कुछ ऐतिहासिक-सामाजिक संकेतों से युक्त गीतों को पहले ले लिया है। जैसा कि लोकगीतों में होता है, अनेक गीतों में घोर अश्लीलता तथा साम्प्रदायिक विद्वेष पाया जाता है। हिन्दुओं की जनसंख्या घाटी में कम है, अतः वे इस प्रकार के गीतों तथा तुकबन्दियों को बन्द दरवाज़ों के पीछे घर में बैठकर, कह-सुन कर मन की भड़ास निकाल लेते हैं। दूसरी ओर मुसलमान खुले आम, सड़कों पर, जुलूसों में समवेत्-स्वर में इस प्रकार के गीत गा सकते हैं, जैसे 'बटन हिन्द ब्योल खुदायस गोल' का नारा अत्यधिक सुनने में आता है, इसका अर्थ है 'हिन्दुओं का बीज़ खुदा ने समाप्त कर दिया' आदि। इस प्रकार की तुकबन्दियां हिन्दुओं-मुसलमानों में देश-विभाजन से पूर्व भी थीं, परन्तु अत्यधिक कम थी और उन्हें सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। पाकिस्तानी प्रचार के प्रभाव से धीरे-धीरे 1990 तक आते-आते घृणा का वातावरण चरम सीमा पर पहुंच गया है। 1931 ई० के बाद से 1938 ई० तक शेरे-कश्मीर शेख मुहम्मद अब्दुल्लाह तथा उनके आन्दोलन पर अनेक लोकगीत रचे-गाये गये, परन्तु उनमें भी हिन्दू (डोगरा) शासक के विरूद्ध धार्मिक घृणा के तत्व पाये जाते हैं। मुस्लिम कांन्फ्रेंस के नेशनल कांन्फ्रेंस में बदल जाने और कश्मीर के भारत में विलय के बाद इस प्रकार के गीतों की रचना कम हो गई। 1953 ई० से (शेख के दृष्टिकोण परिवर्तन के बाद) पुनः ऐसे कुछ गीतों की रचना हुई। 1965 ई० के भारत-पाक युद्ध के बाद से लोक-गीतों में साम्प्रदायिक घृणा के तत्व बढ़ते चले गये। सन् 1975 से 1990 के मध्य के काल में भयंकर घृणा-प्रसार के गीतों की रचना हुई है, जिनमें, हिन्दू-धर्म, भारत, भारत का झण्डा, भारत का संविधान, भारतीय नेतावर्ग, सारे अकश्मीरी भारतवासी तथा भारतीयता के विरुद्ध विष-वमन किया गया है। मैंने इस आशा में कि यह राजनीति-प्रेरित विद्वेष शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा और कश्मीर में पुनः आपसी भाईचारा स्थापित हो जायगा, इन गीतों को इस परियोजना के परिदृश्य में सम्मिलित नहीं किया है। हाँ, उनका संकलन अवश्य कर लिया है। आशा है निकट भविष्य में विस्थापित हिन्दू पुनः घाटी में लौट कर पूर्ववत् रह सकेंगे और लोकगीतों में पुनः स्वस्थ-साम्प्रदायिक-भावनायें परिलक्षित होने लगेंगी।

दो बातें और कहना चाहती हूँ। एक तो यह कि चिढ़े बनाना-निकालना तथा समसामयिक विषयों पर तुरन्त लोक-गीत गढ़ देना कश्मीरियों की विशेषता है। स्त्रियों की स्वतंत्रता, नलों का लगना, बिजली का आना, हवाई जहाजों का चलना, 'कण्डेन्सुड तथा पाउडर्ड दूध' का आना, नये कपड़ों का चलन, आदि ज़रा-सी कोई बात हो जाय, लोग तुरन्त तुक मिलाकर गीत बना देते हैं और सारा समाज उन्हें दुहराने लगता है। कभी-कभी केवल दो पंक्तियों (शेर कहिये या दोहे) को गीत रूप में दुहराया जाने लगता है।

दूसरी बात यह है, कश्मीरी लोक-गीत गायन की दृष्टि से गढ़े जाते हैं और गायन की विभिन्न तर्ज़ों -परिपाटियों (छकरी, लीलायि, गज़ल, कव्वाली आदि) के अनुरूप उनकी भाषा तथा लय होती है। अनुवाद में इन तत्वों का पूर्ण हनन हो जाता है; पढ़ते समय इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए। अंग्रेजी, पंजावी, हिन्दी, उर्दू के किसी खास, मुहावरे या वाक्य को पकड़कर उसके चारों ओर गीत बनाने का स्वभाव भी कश्मीरियों में पाया जाता है, इस प्रकार के प्रयोगों से युक्त गीत मनोरंजन का कारण बन जाते हैं। इस प्रकार के गीतों का उदाहरण भी मैंने रखा है। यह प्राचीन परम्परा है। मध्ययुगीन कश्मीरी सन्तों-कवियों ने भी अमरनाथ की यात्रा करने आने वाले तीर्थयात्रियों के संसर्ग से कुछेक वाक्य हिन्दी-पंजाबी आदि के पकड़कर उनका प्रयोग अपने काव्य में किया है।

गीत सं० 1 — में दान्द शब्द का प्रयोग है जो वैदिक शब्द दान से बना है,[1] इसमें उस घटना की ओर संकेत है जब सिकन्दर बुतशिकन के अत्याचारों के कारण हिन्दू घाटी से भाग गये थे और केवल ग्यारह घर (परिवार) घाटी में रह गये थे ; वे भी चावल नहीं रोटी खाते थे, एक ही तवे पर सेककर। कश्मीरियों में कहा जाता है कि जब अकाल (विपत्ति) का काल आता है तब रोटी खानी पड़ती है। उस काल में हिन्दू पस्त-हिम्मत थे अतः शिकायत भी किससे करते ?

गीत सं० 2 — में मेहमूद गज़नवी की प्रशंसा है। जिन लोगों ने भारत तथा कश्मीर में इस्लाम के प्रचार में योग दिया है, उनकी प्रशंसा में अनेक गीत गाये जाते हैं। वैसे गज़नवी प्रयत्न करके भी कश्मीर में प्रवेश नहीं कर पाया था,[2] इस कारण कुछ विद्वानों को गज़नवी-विषयक कश्मीरी लोक-गीतों पर आश्चर्य होता है। इस गीत में अनेक विदेशी शब्दों का प्रयोग है :— अहद (राज्य) नातवान, दायखर

---

1. ऋ० वे० 5, 27, 5, तथा 7, 18, 23 एवं वितस्ता (क० मा० ०) पृष्ठ 25।
2. कश्मीरी और हिन्दी के लोक-गीत - एक तुलनात्मक अध्ययन : ज०ला० हाण्डू, पृष्ठ 291।

(दुआएं), चश्म, अलील (बीमार), ज़लील, मुहमल (गरीब), अल्लाह, शरीक, नामुराद (अभागा), हिकमत तथा परवरदिगार । इसके साथ-साथ उश्वास से बना 'वोश', नाद, आदि संस्कृत-मूलक ठेठ कश्मीरी शब्दों का भी प्रयोग है । ऊंट का कश्मीरी में 'वूंट' हो जाता है क्योंकि उ बदल कर व हो जाता है।

गीत सं० 3 — में ई० 1931 के आसपास के उस वातावरण का संकेत है, जिसमें राजा हरीसिंह के शासन के विरुद्ध शेख अब्दुल्लाह ने आन्दोलन चलाया था और पुलिस की गोली से (आगे चलकर) एक दर्जन मुसलमान (जो जेल पर हमला कर रहे थे) मारे गये थे और दंगों में अनेक हिन्दू मारे गये थे । यह गीत राजा की प्रशंसा करता है तथा यह बताता है कि आखून साहब की 'बदकलामी' के कारण, झगड़ा हुआ और हरगोपाल कौल (जो काने थे) तथा उनके भाई जानकीनाथ कौल को कश्मीर से बाहर निकाल दिया गया, पीर पंजाल पहाड़ी के पार भेज दिया गया । कश्मीरी हिन्दुओं के "बच्चों को सिखों के समान पगड़ी पहिनाई गई," में उन्हें सैनिक सेवा में लेने का संकेत है । स्मरणीय है कि 13 जुलाई को इस गोली-काण्ड में मरे मुसलमानों की स्मृति में कश्मीर में प्रतिवर्ष शहीद-दिवस मनाया जाता है, सरकारी छुट्टी रहती है ।

गीत सं० 4 तथा 5 — में उस आन्दोलन का संकेत है जो 1930 ई० के आसपास श्री ताराचन्द उर्फ 'कश्यपबन्धु' ने चलाया था । उन्होंने कश्मीरी हिन्दू स्त्रियों से कहा था कि वे फिरन छोड़कर धोती-साड़ी पहिनना आरम्भ कर दें । कुछ लोगों ने इसका समर्थन किया तथा कुछ ने विरोध । दोनों पक्षों का एक-एक गीत दिया गया है । दुल्हे को महाराज़ तथा दुल्हन को महरिन कहते हैं । जिस वधू ने धोती पहिनी उसके लिए 'धोती-दुल्हिन' शब्द का प्रयोग है । विरोध-पक्ष के गीत में ध्यान देने की बात यह है कि धोती के साथ सलवार (दोनों के कश्मीरी न होने के कारण) का भी विरोध है । शेषनाग (कश्मीरी में शिशरनाग) जाने में वैराग्य लेने का संकेत है परन्तु एकलौती बहू तथा अल्पायु वाली बेटी को कैसे अकेला छोड़ा जाय ?

गीत सं० 6 — उस घटना की ओर संकेत करता है जिसमें 1931 ई० के दंगों में अनेक हिन्दू विचारनाग नामक श्रीनगर के मुहल्ले में (जहां शेख अब्दुल्लाह का निवास है) मारे गये थे । इसमें तिथि आदि सब का उल्लेख है । जनकसिंह ने निराकारी बाबा से सूचना पाकर सुरक्षा का प्रबन्ध करवाया था । इसमें एक बड़े ही सार्थक कश्मीरी मुहावरे का प्रयोग है । सांड जब क्रुद्ध होकर लड़ने को बिफर जाता है तब टक्कर मारकर (संस्कृत-वप्रक्रीडा) सींगों पर मिट्टी लपेट कर फुंकारे मारता है।

क्रोधोन्मत्त व्यक्ति के लिए इसी बिम्बात्मक मुहावरे का प्रयोग है, जो कश्मीरी में बहुप्रचलित है।

गीत सं० 7 — में शान्ति-दूत नेहरू की वन्दना है।

गीत सं० 8 — बहुत महत्वपूर्ण है। नटः शिव का विशेषण है।[1] 'फट्' का प्रयोग जादू-मंत्रादिक में रहस्य-रीति से करते हैं, जैसे अस्त्राय फट। शैव मतानुसार साधना के संकेत हैं। वह मैं हूँ, अतः मैं वह हूँ (प्रतिभिज्ञादर्शन, अपने स्वरूप को पहिचानना) के ज्ञान का प्रकाश आत्मा के शून्य में लीन होने से प्राप्त होगा, फिर ज्ञात-अज्ञात का भेद नहीं रहेगा। साधक-साध्य का भेद नहीं रहेगा। एकान्त में इस प्रकार की साधना करके अहं को मारना ही शिव-साधना है। अपने को (अहं) खो देना है, उस पूर्ण को प्राप्त करना है।

गीत 9 — में एक सुन्दर रूपक है। फसल काटकर, एक-एक दाना एकत्रित करके, ज्ञानार्जन के संकेत हैं। जगत् के प्रति प्रवृत्ति (राग) को वैराग्य की दरांति से काटना है, तभी (खलिहान में) ज्ञान की राशि (रास) क्रमशः एकत्रित हो पायेगी। आशा (इच्छा)-पाश को खोजकर काटना ही सन्तोष-प्राप्ति (निराशा) का मार्ग है। इच्छाओं के अन्धकार में से आशा-पाश-विमोचन के द्वारा ही प्रकाश की प्राप्ति होती है। तभी प्रतिभिज्ञा — पीछे देखकर अपने स्वरूप को पहचानना-सम्भव है।

गीत 11, 12 तथा 13 — दहेज से सम्बंधित हैं। हिन्दी का मुहावरा 'देखा-देखी ने संसार खा लिया' के प्रयोग पर गीत-11, बनाया गया है। इसी प्रकार 'तुम चले जाओ' 'हल्लो मत कर केयर नोवुइ रैवाज़ आव डियर, (नया रिवाज़ आ गया है) आदि अकश्मीरी पंक्तियों का खूब प्रयोग कश्मीरी लोक-गीतों में होता हैं। यह हिन्दुओं की दहेज़ प्रथा के विषय में है। दोनों स्त्रियों के नाम ठेठ कश्मीरी हैं तथा सार्थक हैं। रअच़मालि का अर्थ है ऋतमाल, जो उचित, सत्य, सही आचरण की प्रतीक है तथा दूसरी ज़िचमाल (चमक) दिखावे की प्रतीक है। 'मोल' (पिता) प्राचीन संस्कृत से बना है।[2] उसी प्रकार 'पख' पक्ष से बना है। 'कार' कार्य से बना है और सम्बन्ध (विवाह) के लिए प्रयुक्त होता है। इनके साथ गुफ्तार जैसे फारसी शब्दों का प्रयोग भी है, इस गीत में। इसी प्रकार कल्यकाक नाम भी प्रतीकात्मक है। 'कल' संस्कृत का शब्द है, इसकी व्युत्पत्ति पीछे दी जा चुकी है। कल्यकाक नाम में पत्नी से डरने वाले (हिनपैक्ड) व्यक्ति का संकेत है। पड़ौसी से

---

1. संस्कृत-हिन्दी कोश, शि० वा० आप्टे, पृष्ठ 507।
2. वितस्ता (क० मा० वि०), पृष्ठ 71।

बराबरी करने से सामाजिक कुरीतियां बढ़ती हैं, इसका भी संकेत है। पत्नी के लिए त्रिया शब्द दर्शनीय है। हश (सास), ओश (अश्रु) तथा बरथा संस्कृत-मूलक हैं। जैसे ब्रजभाषा में भर्तृ से भरतार बना है, वैसे ही कश्मीरी में 'बरथा' बना है। किसी भी हरी सब्जी को कश्मीरी में शाक कहते हैं,[1] शा का ह बन जाने के कारण 'हाक' हो जाता है। वैसे फारसी शब्द सब्ज (सब्ज़ी) का अर्थ भी 'हरा' है। इस गीत में भी 'वापस माल्युन तुम चले जाव' में हिन्दी का प्रयोग दर्शनीय है, जैसे 'चिकचाव' शब्द जो कि कश्मीरी में बहुत प्रयुक्त होता है।

भाभियों पर ननदों के अत्याचारों के अनेक वर्णन गीतों में पाये जाते हैं। कश्मीर में (विशेषकर श्रीनगर में) लड़कियों का मायका (कश्मीरी में पितृगृह - माल्युन) तथा ससुराल बहुधा पास-पास होते हैं। लड़कियां नौकरी या पढ़ने के बहाने ससुराल से निकल कर मां-बाप से चुपचाप मिल आती हैं। मनोरंजक बात यह है कि भाभी अपनी ससुराल से निकली और अपने मायके पहुंचते ही ननद बन जाती है, लौटकर फिर अपनी ननद की भाभी बनकर 'भोग भोगती' है। यह सामाजिक-व्यवहार की विडम्बना है। कश्मीरी में मुहावरा है 'ज़ाम हय आसि गाम, तति प्यठ सोज़ि पाम' अर्थात् ननद गांव में भी होगी तो वहां से भी ताने भेजेगी।

शेष देश के समान कश्मीर में भी पहले छोटी-छोटी बालिकाओं के विवाह (बहुधा सात वर्ष की आयु तक) कर दिये जाते थे, फलतः (युवती) विधवाओं की संख्या भी बहुत होती थी। मुहावरा था 'रोन्यन प्यठ खांदर, अर्थात् घुंघरू पर विवाह। बालिका-वधुओं को 'रोन्य महरिन' कहा जाता था।

गीत सं० 16 — में विधवा का विलाप है। दक्षिण की भाषाओं में विवाह को जैसे 'संसार करना' या 'कल्याण-कार्य' कहा जाता है, वैसे ही कश्मीरी में 'हर्षित करना', हर्ष-कार्य से हर्शेयस बना है। हर्ष-कार्य (विवाह) करके बालिका दुःख के अपार सागर में डूब जाती है, इस तथ्य को इस शब्द (हर्शेयस) के प्रयोग से दर्शाकर सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग है। अनुन (आनों) फिरुन (फिरिकें) ब्रजभाषा के शब्दों के ठीक-ठीक समान हैं।

गीत सं० 17 — जैसे मार्मिक-कारुण्य से भरे गीत अत्यधिक दुर्लभ हैं। युवती विधवा दिवंगत पति को सम्बोधित करके कह रही है। युवती पत्नी को छोड़कर चले जाने वाले पति के प्रति 'बावले' सम्बोधन कितना सार्थक,

---

1. नीलमत पुराण, भाग 1, डा० वेदकुमारी, पृष्ठ 118।

मार्मिक एवं अनेकार्थक-आयामों से पूर्ण है । अंतिम पंक्ति में विधवा हृदय चीरकर रख देती है ।

गीत सं० 20 — में कोढुम शब्द का प्रयोग है । कढुन (कश्मीरी) वैसा ही है जैसा ब्रजभाषा का काढनो (निकालना, उसी अर्थ में) है ।

गीत सं० 22 — में द्वितीय महायुद्ध के सामाजिक प्रभाव पर व्यंग्य के साथ-साथ रेडियो-टेलिफोन तथा वैज्ञानिकों पर व्यंग्य है । लड़ाई के बाद पैराशूट का कपड़ा बाजार में मिलने लगा था, जो कि बहुधा पारदर्शी होता था । बुर्के पैराशूट के कपड़े के बनाये थे, कुछ स्त्रियों ने, इसीलिए इस व्यंगात्मक प्रेम-गीत में इस प्रकार के प्रयोग हैं । समसामयिक संकेत दर्शनीय हैं ।

गीत सं० 23 — में विद्युतीकरण पर व्यंग्य है । महाराज हरीसिंह के समय में मोहरा (जो बूनियार के पास है) में 'पावरहाउस' बनाया गया था । नन्दलाल नाम का कश्मीरी पण्डित, उस समय का प्रसिद्ध ठेकेदार था । मूल व्यंग्य मशीनीकरण के प्रति है, लोगों को मेहनत करने से मुक्ति मिल गई । 'हाई टेन्शन', 'लाइन', 'जर्मन', 'लन्दन' आदि शब्दों का सप्रयत्न तथा सार्थक प्रयोग है ।

गीत सं० 24 — में स्त्रियों की आज़ादी का दुखड़ा रोया है । यह 'वीमेन्स लिब' के स्तर की आज़ादी नहीं थी, केवल घूमना-फिरना, घड़ी पहिनना, समय (टाइम) देखना-पूछना, मात्र था । एतराज है औरत के बेरोक-टोक बाहर निकलने पर, वह भी कानों में बुन्दे मटकाते हुए, मुंह खोले हुए ।

गीत सं० 25 — में डब्बे के दूध, घासलेट, (डालडा आदि वेजीटेबिल तेल) आदि के दुष्प्रभावों की ओर संकेत है, जिन्हें आज लोग लाइन लगाकर घण्टों की प्रतीक्षा के बाद खरीदते हैं । सवा रुपये सेर चीनी उन दिनों मंहगी लगती थी, ऐसा ज़माना था वह । आज चीनी नौ रुपये किलो मिल जाय तो ग़नीमत है । यह (तथा इस प्रकार के अनेक) गीत शादी-विवाहों में तुम्बकनारी बजा कर गाये जाते हैं तथा अति लोकप्रिय हैं । कुलचे में चिकनाई (रोगन) लगाई जाती है, लवासा पतली तन्दूरी रोटी को कहते हैं । दोनों को नानबाई बेचते हैं ।

गीत सं० 26 — में 'दुष्टा-भार्या' का चित्रण है । साग-सब्जी-मांस, चावल के साथ खाने को जो भी बनाया जाता है, उसे 'स्युन' कहते हैं । दान शब्द वैदिक-संस्कृत का है,[1] जो आज भी कश्मीरी में प्रयुक्त होता है । इस गीत से इस

---

1. ऋ० वेद 1, 55, 7 तथा 1, 48, 4 ।

बात के संकेत मिलते हैं कि उस समय प्रत्येक घर में गाय रहती थी । भैंस तो वहां रहती नहीं है । प्रत्येक घर में नीचे 'गअव- गान' गाय का कमरा बनाया जाता था, और उसका निर्माण स्थापत्य का भाग था । झगड़ालू औरत पति से कह रही है कि तुझे दिखाऊंगी 'घर करने' के मज़े । घरों में खाना पकता था और सूत काता जाता था, इसका वर्णन भी इस गीत में है । चर्खा चलाना तथा गाय-पालना अब लगभग समाप्त हो गया है ।

गीत सं० 27 —में उस पति की शिकायत है जो बीबी को 'भात' भी नहीं खिला सकता ।

खण्ड - ग

लोक-गीत संग्रह (टीका सहित)

संस्कार गीत

पुत्र-जन्म के गीत

(1) *माजि ज़्रोपनस चन्द्रायुनये मअल्य करुनस ज़ीवादान*
असि सन्तान गोछ़ आसुनये, कोरकुनये फेरनि द्राव ॥ टेक ॥
जाय यलि कअरनस गर्भस मन्ज़, च़्रोक मोदुर
ह्योतुन छ़ान्डुनये
अअठर्यथ गई पथकुन अदा नवमि रयतअ ज़ाव शाहज़ादह ।
हुरि बीठिय तय मुरि रटुनये कोर कुनये फेरनि द्राव
मअल्य सोंवरिस ज्योतिष त पंडित (टेक)
राज़पोथरस ज़ातुख गंडिव, राज़पथुरस छु राज करुनये ॥

तुम्हारी मां ने चन्द्रायन का व्रत किया तथा तुम्हारे पिता ने जीवादान किया। हमको सन्तान चाहिए, इसके लिए कहां-कहां नहीं घूमे। जब गर्भ में सन्तान आ गयी, तब खट्टा-मीठा ढूंढना प्रारम्भ किया। आठ महीने जब बीत गए तब नवें मास में शाहज़ादा उत्पन्न हुआ, 'हुर' (घास या कुश की शय्या) पर बैठी उसे अपनी झोली में ले लिया। ज्योतिषियों और पंडितों को एकत्रित किया गया, राजा के पुत्र की जन्म-पत्री बनवाने के लिए, राजा के पुत्र को राज्य करना है।

(2) *कनि फ़ोट पोन्य तय वनि कुल ज़ोयय अनिगाश ओयय त लसेनय ।*
योन्यस चानिस सोनसिन्द टेचे यिकस ड्यक बजे ज़ाव
योन्यस चानिस सोनसिन्ज़ चूने कुकिल कोतुर बचे ज़ाव
योन्यस चानिस मुक्तवि रुने यिकस राज़ रैने ज़ाव
यिहै ज़ाव वसुदीव राज़नि रअनी ब्यने ज़ाव कंसासोरने
कृष्ण महाराजो लजयो ब्यन्ये यि कस राजरेन्ये ज़ाव
च़्रस गव असरन बरग द्राव बोन्यन ब्रेहमनव गथ कर योन्यस प्यठ
बरगद्राव वसुदीव राज़नेन बोन्यन बृहस्पत गोरन गथ
कर योन्यस प्यठ
लछिबज़ ज़ीवज़ाच वुलगिथ आहम च़ाहम ब्रेहमण
जन्मस मन्ज़
वैहक ज़ून पछ चदुश दोह ज़ाखो ; यलिज़ाव पार्वतिये
गनेश अवतार ।

गगरस खसिथ प्रक्रमस द्राखो च़ाखो ब्राह्मण ज़न्मस मन्ज़
चित्रज़ून-पछ नवम दोह ज़ाखो कौसल्या माताय़ि राम अवतार
राक्षसन त दैतन गालनि आखो (टेक च़ाखो) . . . .
बदरिपित गटपछि आठम ज़ाखो दीविकी माताय़ि कृष्ण अवतार
रादाय़ि सूत्य रास खेलनि आखो (टेक च़ाखो) . . . .
रादाय़ि माताय़ि लुताशि ज़ाखो ज़न्मस आख रअच रअच
कामि करने ।
ज़न्मस यिथ च़य कर्म बोड द्राखो (च़ाखो टेक)

— पत्थर में से पानी फूटा जंगल में पेड़ उगा । अन्धेरा समाप्त होकर प्रकाश हो गया । चिरंजीवी रहो । तुम्हारे जनेऊ में सोने के टीके लगे हैं, यह किस भाग्यशाली के उत्पन्न हुआ ? तुम्हारे जनेऊ में सोने के नग लगे हैं । कोकिला के कबूतर-बच्चा उत्पन्न हुआ। तुम्हारे जनेऊ में मोतियों के घुंघरू हैं, यह किस राजरानी के उत्पन्न हुआ ? यह वसुदेव राजा की रानी के तथा कंसासुर की बहन के उत्पन्न हुआ। हे कृष्ण महाराज तेरी बहिन तेरे बलिहारी जाय, यह किस राजरानी के उत्पन्न हुआ ? असुर लज्जित हो गए वृक्षों में पत्ते निकल आए, ब्राह्मण यज्ञोपवीत पर खूब छाये रहे । वसुदेव राजा के वृक्ष पर पत्ता निकल आया, बृहस्पति पुरोहित यज्ञोपवीत पर छाये रहे। लाखों जीव-जातियां प्रकट हो गई —तुम ब्राह्मण जन्म में प्रविष्ट हुए। बैसाख शुक्ल चतुर्दशी को तुम उत्पन्न हुए, जब पार्वती के गणेश अवतार उत्पन्न हुए। चूहे पर चढ़कर परिक्रमा के लिए निकले । तुम ब्राह्मण जन्म में प्रविष्ट हुए (टेक) चैत शुक्ल पक्ष की नवमी को तुम उत्पन्न हुए— तुम कौशल्या माता के रामावतार उत्पन्न हुए— तुम कौशल्या माता के रामावतार उत्पन्न हुए। तुम दैत्यों और राक्षसों को समाप्त करने आए हो (टेक) तुम ब्राह्मण जन्म में प्रविष्ट हुए । भादों के कृष्ण-पक्ष की अष्टमी को तुम उत्पन्न हुए। देवकी माता के तुम कृष्ण-अवतार उत्पन्न हुए। तुम राधा के साथ रास खेलने आये हो (टेक) राधा माता के तुम लुताशि जन्मे, तुमने शुभ-शुभ कार्य करने के लिए जन्म लिया। जन्म लेकर तुम अपने कर्मों से बड़े बन गए (टेक)।

श्रान सौंदर के गीत

(3) *शोख़ त पनुसुन्द, शोख़ त पनुसुन्द ।*
यज़मनबाइ पत्य आई ब्रूंठ्य आई ,
सुमअ दिवान कदम दिवान,

ड्यूक बअड्य बक्त बअड्य

बअय लसिनस बब लसिनस ।

(प्रसव पीड़ा के समय प्रसूतिका को घास पर लिटाने की प्रथा है इसको 'हुर' कहते हैं । शैया के समीप ही एक मिट्टी की हांडी रखी जाती है इसको 'हुरलज्य ' कहते हैं। छठी स्नान (श्रानसौंदर) के दिन इसको पूजकर नदी में प्रवाहित किया जाता है । इस दिन प्रसूतिका तथा बच्चे दोनों को स्नान कराया जाता है । इसी दिन वह घास की शैया छोड़कर शैया पर आ जाती है । इसके पश्चात् प्रसूतिका तथा उसके बच्चे को 'सतिये' पर बिठाकर एक जलते भोजपत्र से उनकी आरती उतारी जाती है। तब यह गीत गाया जाता है ।)

— भोजपत्र से आरती उतारने का मुझे शौक था, मेरी इच्छा थी । यजमान-पत्नी के आगे पीछे से, चारों ओर से, लोग आ गए । कदम-दरकदम पंक्तिबद्ध मेहमान आये । उनका माथा ऊंचा हो (भाग्यशाली हो), उसका घर-परिवार भरा-पूरा हो तथा फले-फूले । भाई दीर्घायु हों, पिता दीर्घायु हों।

नामकरण (काहनेथर)

(4) *आकाश बछखय यन्दरगर ज़ायखय आयखय रज़ रज़ कामि करने ।*
दिवकी मअजी हुरि बीठखय मुरि ह्योतूथय रत्न फ्ल ।
विनायक ज़ोरम त आथवार दरमय, कोरुमय बरखुरदारय नाव ।
आठन रेतन क्रूठ क्या बरुमय नवमि रेतअज़ाव ललबोन ।
थन येलि प्योहोम रन प्यव करमय कोरुमय बरखोरदारय नाव ।
थन येलि प्योहोम ज़ति ज्यन कालय रनप्यव कोरुमय छम सदप्याव ।
सोन्यन डिचि त पित्र्यन थालय कोरुमय बरखोरदारय नाव ।
त्रियिस त्रे त्रख तेल क्या कोरुमय शे त्रक शस्तर गरमय क्राय ।
दन्द गूज सअरी मसाल क्या करिमय कोरुमय बरखोरदारय नाव । दन सोन्दरि
सुगुन क्या गोलमय सोन्दरि नअवमय फलिल सअत्य तन ।
नअत्य कित्य रंग रंग वस्तर करियम कोरुमय बरखोर (टेक) ।
दहन दोहन दह होंड्य मअरमय कहिमदोह कोरुमय काहनेथर ।
जितिशन त मुनशन कोरुमय सालय (टेक) ।
बहिमदोह ल्यूखमय रंगमंडोलिय, आकाश नकाश व्यूग लेखनि आव
याजयव कनि बअगरेवमय बुसरक थालय (टेक) . . . .

(मां की ओर से कथन है)

— आकाश से उतर आई और इन्द्र के घर में घुस आई, तुम शुभ-शुभ कार्य करने के लिए आ गई। हे देवकी मां, तुम प्रसूतिका बनकर कुश-शैया पर बैठ गई और झोली में रत्नफल ले लिया। विनायक चतुर्थी तथा रविवार का व्रत किया तथा तुम्हें मैंने बरखुरदार कहा। आठ मास तक मैंने अनेक कष्ट सहे तब नवें मास में ललबोन उत्पन्न हुआ। जब तुम उत्पन्न हुए तब मैंने खूब ज़ोरों-शोरों से खाना पकवाया (टेक), तुम नन्हें बालक थे। समधियाने में तो बड़ी देगचियां भेजीं तथा पास-पड़ोस वालों को थालियां भर-भर कर भेंजीं (टेक), मैंने तुझे बरखुरदार कहा। जब तुम्हारा त्रुय (तीजा) था तब मैंने तीन त्रख तिल बनवा लिया जिसके लिए मुझको छः त्रख की लोहे की कढ़ाई बनवानी पड़ी। सौंफ तथा सभी मसाले तैयार करवा लिए (टेक), तुम्हारी जब सौंदर थी तब मैंने उस पर बहुत धन व्यय किया तथा उस सौंदर के दिन अपने तन को फुलेल आदि मल-मल कर नया किया। पहिनने के लिए नये रंग-बिरंगे वस्त्र बनवाये (टेक), दस दिन तक दस भेड़ें कटवाईं तथा ग्यारहवें दिन काहनेथर (नामकरण) संस्कार किया। ज़ितिशियों तथा मुन्शियों को न्योता दिया। बारहवें दिन रंगों से रंगोली बनवा ली, आकाश से नक्काश व्यूग लिखने के लिए आ गया। याजि के बदले मैंने खस्ता नानखताइयां बटवाईं।

त्रख —त्रख छ : सेर का होता है। छः त्रख भारी भरकम के लिए मुहावरा भी है। ज़ितिशियों (जुत्शियों)-जुत्शी (ज्योतिषी) तथा मुंशी कश्मीरी हिन्दुओं में अति सम्पन्न, समृद्ध एवं कुलीन माने जाते हैं। याजि-चावल के गोले (बाटी के समान) बनाकर कण्डे की आग में सेके जाते हैं।

बरखुरदार-बेटे के लिए फारसी का शब्द , जिसका अर्थ भाग्यशाली तथा सम्पन्न भी है।

मास नेथर

(5) *मासअ नेथरस सिविमय कर मुठि कनि खअली*
सासबअद्रय मोहनिव्य बअगरनि द्राय
प्रासक्यन द्यारन कनअवअल्य गारिमय करुमय बरखोरदारय नाव

(कश्मीर में यह प्रथा है कि जब बच्चा एक मास का हो जाता है तो उसका ब्याह कर दिया जाता है, मूसल के साथ। इसी को 'मास नेथर' कहते हैं। इस अवसर पर मटर उबाल कर बांटी जाती है। यहां पर मटर के बदले 'मिगी' उबालने

से तात्पर्य सम्पन्नता से है, इसके अतिरिक्त बच्चे के लाड़ले होने का भी संकेत है।)

— तुम्हारे 'मास नेथर' पर मैंने सोयाबीन तथा मटर के बदले मिगियां उबाली, हज़ारों नौकर उसको बांटने निकले। भेंट में लोगों ने जो तुमको रुपये पैसे दिए उनसे मैंने तुम्हारे कानों की बालियां बनवाईं तथा तुम्हें बरखुरदार कहा।

अन्नप्राशन

(6) *शु मासि कोरमय अनुप्रेपुनुय*
मनस दोदस कोरमय खिर
खोस रिकिब त गिलास गोरुमय
कोरमय पोशाक त फम्ब कुर्तन्य

— जब तुम छः मास के थे तब मैंने तुम्हारे अन्नप्राशन की पूजा की। एक मन दूध की खीर बनाई। एक खोस रकाबी तथा गिलास बनवाया व तुम्हारे लिए पोशाक और रुई का कुर्ता बनवाया। (खोस-फूल-कांसे, का , विना डण्डी का प्याला)

शिशुर (जाड़े का संस्कार) के गीत

(7) *शिशिरस क्योतुये सामान करुमय, मोज़ कनटोप त फम्ब कुर्तन्य*
तथ्य प्यठ इसराफ शिशरमोन्ड गरमय (टिक करमय . . .)

— शिशरमोन्ड-शीतकाल में जरबाफ के कपड़े में कुछ धातुएं तथा चूना आदि बांध कर बच्चे के टोपे में टोटके के लिये टांकते हैं। शिशुर के लिए मैंने सामान तैयार कर लिया है :— मोज़े, कनटोपा, रुई का कुर्ता तथा उस पर ज़रबाफ में बना शिशरमोन्ड बना लिया तथा तुम्हारे कनटोपे में टांक दिया।

जन्म-दिवस का गीत

(8) *वोहर वअदिस साल क्या कोरमय*
बन्दन त बान्दवन कोरमय साल
नर्यन कित्रये सोनसिन्द गुनिस गरिमय
कोरमय बन्दन त बान्दवन साल

तुम्हारे जन्म-दिवस पर मैंने बढ़िया भोज दिया। सारे बन्धु-बान्धवों की दावत की। बाहों के लिए सोने के मोटे-मोटे कड़े बनवाये तथा सभी बन्धु-बान्धवों की दावत की।

तख्ती पूजना —

(9) *कृष्ण गोम ज़्राटहाल, माजि करस खिरहन*
मअल्य बअगराविस दोसि दोसि द्यार ।
कृष्ण गोम ज़्राटहाल वति मअठस दूज मिलर
पत गयस ब्योनि तुलर दूज मिलर ह्यथ
सोन सिन्ज़ दूज त रोपसुन्द कलमो
गोडन्युक अछुर छुय वोमा वो
बलराम जुवनि सोनसिन्द कलमो
दोयुम अछुर छुय सोयम सो ।
वोमा वो सोयम सो ति व्यस्तार पर्यज़े
ध्याना सोरिज़े श्रीरामुन ।

— कृष्ण स्कूल गया, इस उपलक्ष्य में कृष्ण की मां ने खीर बनाई तथा उसके पिता ने दोनों हाथों से धन बांटा । कृष्ण स्कूल गया रास्ते में पट्टी और बुद्दिका भूल गया, पीछे-पीछे उसकी बर्र के समान तेज़ तर्रार बहिन तख्ती और बुद्दिका लेकर गई । सोने की तख्ती है तथा चांदी की लेखनी है । पहला अक्षर जो पढ़ाया गया वह 'ओंम' है । बलराम-जू के सोने के कलम; दूसरा अक्षर 'सोयम सो' पढ़ना ।

'ओम' और 'सोयम सो' दोनों विस्तार से श्रीराम का ध्यान करके पढ़ना ।

ज़रकासय (मुण्डन) का गीत

(10) *ज़रकासय क्याह क्याह पज़े, नून वअर त मोहरा प्रास*
नअविद दपान क्याह करअ तमुलस, में गछ्यम शमल त जोरे शाल
वोस्तकार दपान क्याह करअ वरिहेनि लरिहेनि छनहअ चूरयुम पोर ।
वोस्तकार दपान क्याह करअ दान्यस, कानिहामि गछ्यम जअगीर ।

— मुंडन संस्कार के लिए कौन-कौन-सी वस्तु चाहिए:– नमक, वअर तथा नेग में देने के लिए मोहर । नाई कह रहा है कि मैं चावल का क्या करूं मुझको एक शमल और एक जोड़ी शाल चाहिए ।

नाई (वोस्तकार) कह रहा है कि मैं 'वअर' का क्या करूं मुझको तो नेग में कुछ ऐसा चाहिए जिससे कि मैं अपने मकान की चौथी मंज़िल बनवा लूं । नाई कह रहा है कि मैं धान का क्या करूं मुझको तो 'कानिहामि' (गांव) में जागीर चाहिए ।

वअर—चावल तथा मांस से बनाया नमकीन खाद्य। शमल शाल—शाल दुशाला।

(11) *मस कासनस सन्ज़ ह्यतुथो*
मन्ज़ ह्यतुथो परमेश्वर
कृष्णानि ज़यन स्युन रोन व्यन
आशेस कासव ज़यनुक मस
ज़र कासोयो दीवी आंगन
गरि करोयो मेखलि सन्ज़
मअल्य गरोयो सोन सुन्द खुरुय
गुर्य करयो चूडाकार
वुस्तयकारो खूर रटू वाराय
दाग प्यठ वालयो फम्ब दस्तार
ज़र कासोयो कर मुठ सिवयो
हंग छ़ोग थवयो बवानी-बल
नारायणजुवस मांगय मंगे
कन्या ज़ंगे अनोसे
वुस्तकार दपान क्याह कर तुमलस
म्य गछिम शमल त जोरे शाल
ज़र कासिथ द्राख ओब्रतल सिर्यो
गोबुर छुख वसुदीव राज़ोनुय
गोरस निश आख इसला करिथ
यारबल खस श्रान करिथ।
सर पम्पोश टूर्य गय ताज़य
ज़र महाराज़ लसेनय
तनि कमी विच़यो कन्सन त रामन
यारबल खसिथ गोरस निश च़ाखो
नावथो गंगज़ल सअत्यी तन
मअलिस त ग़ोरस निश ब्यूठखो
दय ड्यूठको बागेवान।

(खूर शब्द संस्कृत के 'क्षुर' से बना है, अर्थ है उस्तरा।)

— भगवान का नाम लेकर मैंने मुण्डन संस्कार का प्रबन्ध प्रारम्भ किया। कृष्णजी के जन्म पर खूब साग-सब्ज़ी पकाये, आज आशेस (आशीष) के बचपन के बाल कटवायेंगे। तुम्हारा मुण्डन संस्कार मैं देवी-आंगन में करवाऊंगी तथा घर में मेखला का प्रबन्ध करवाऊंगी। मेरे प्रिय बेटे, मैं तेरे बाल कटवाने के लिए सोने का उस्तरा बनवाकर तेरा चूड़ाकर्म संस्कार करवाऊंगी। बाल काटने वाले उस्ताद (नाई) तुम इस बाल काटने के यंत्र, उस्तरे को ठीक से पकड़ो, मैं ऊपर से रुई की पगड़ी उतार लाऊं। हे उस्ताद धीरे- धीरे तुम इसकी चुटिया बनाकर उसमें मुक्ता का हार पिरो दो। तुम्हारे मुण्डन-संस्कार पर मैं सोयाबीन तथा मटर उबालूंगी तथा तुम्हारे जो उतारे हुए बाल हैं उनको भवानी-बल में डाल आऊंगी। नारायणजू से मैं तुम्हारे लिए शुभ आशीष मांगू। ज़रा शुभ मुहुर्त के लिए कन्या को बुलाओ। नाई कह रहा है कि नेग में जो मुझको चावल दिए हैं उनका मैं क्या करूंगा मुझको वढ़िया वाला शाल चाहिए। मुण्डन करके तुम ऐसे लग रहे हो मानो बादलों के नीचे से सूर्य निकला हो। तुम तो वसुदेव राजा के पुत्र हो। तुम पुरोहित के पास से दाढ़ी बनवाकर आये हो, अब जाकर नदी पर से नहा कर आ जाओ। सरोवर में कमल के फूल ताज़े होने लगे हैं। भगवान करे मुण्डन-महाराज़ सदा जिये। तुम्हारे कपड़े किसने पहनवाये ? स्वयं कंस ने और राम ने। मामा तुमको अपनी गोदी में ऊपर ले आये। नदी से आकर तुम पुरोहित के घर में घुस गये तथा वहां तुमने गंगाजल से अपनी काया को साफ किया। अपने पिताश्री और पुरोहित के पास तुम बैठ गए। तुम बड़े भाग्यवान हो।

यज्ञोपवीत संस्कार

नोट : यज्ञोपवीत तथा विवाह में कुछ संस्कार समान होते हैं और उनके साथ गाये जाने वाले गीत भी समान होते हैं। गाते समय केवल यज्ञोपवीत या विवाह (जो हो उसका) का संकेत कर दिया जाता है और लड़के (मेखल-महाराज़) तथा कन्या या वर (जिसका विवाह हो) उसका नाम लेते जाते हैं। ये संस्कार हैं : लिवुन (लिपाई), बर्तन खरीदना, दपुन (भात न्यौतना), क्रूलखारुन (द्वार पर चित्र बनाना), मंअ़्यरात (मेंहदी रात), श्रान (स्नान) तथा देवगोन (देवपूजा)। इनका क्रम यही होता है। इन गीतों को यहां नहीं दिया जा रहा है क्योंकि ये सब 'विवाह संस्कार' के अंतर्गत रखना उचित समझा गया है।

अग्नकोण्ड

(1) *अग्न्यकोण्डस ज़ंगि कुस ओयो मंगलादीवी त नन्दकीश्वर अग्नचि ज़ंगे क्याह*

क्याह पज़े नून वरि त मोहरा प्रास क्यसिरि कनि कोंग तय पानि कनि अमृत
सोम्बरावथि खोरमय अग्नेकोंड ।
अग्नकोन्ड खोरथय राज़ बाइये ताज़तारुख ज़ंगे आईये ।
अग्नकोन्डय निशतुर सोवुय बवानी आय पोशलोव ह्यथ ।
अग्नकोन्डस सोन-सन्ज़ सेरे, ज़ेरे ज़ेरे खोरमय अग्नयकोण्ड
अग्नकोण्डस सन्दुरुय त्यंगुला मंगला ज़ंगे अनेसे
ब्रह्माजुवस मांगय मंगे कन्यख ज़ंगे अनेसे
अग्न सन्दरोवुस चन्दन गनय वन वालोस चन्दनकाठ
अग्न सन्दरोवुस चन्दन लशे ज़िनि त्रिशि लोगेसे ।

अर्थ — अग्निकुण्ड के लिए तुम्हारा शुभ शकुन किसने किया ? मंगलादेवी तथा नन्दिकेश्वर ने । अग्नि के शकुन के लिए किस-किस वस्तु की आवश्यकता है ? नमक, वअरि तथा नेग में देने के लिए मोहरें । (लिपाई की मिट्टी में धान की घास मिलाई जाती है, उसको 'क्यसर' कहते हैं) मैंने क्यसरि के बदले में केसर तथा पानी के बदले में अमृत इकट्ठा किया है । इन सभी वस्तुओं को इकट्ठा करके मैंने अग्निकुण्ड की लिपाई की और उसको ऊपर ले गई । हे राजरानी तुम अग्निकुण्ड ऊपर ले गईं, तुम्हारा शुभ शकुन श्रेष्ठ तारे ने किया । अग्निकुण्ड को शुभ नक्षत्र में ले आईं, इसीलिए भवानी स्वयं फूलों का गुलदस्ता लेकर आईं । अग्निकुण्ड में सोने की ईंटें हैं । मैं धीरे-धीरे अग्निकुण्ड को ऊपर ले गई । अग्निकुण्ड में आग सुलगा दी है, इसीलिए अब कन्या से शुभ शकुन करवा लो । ब्रह्माजी से शुभ फल मांगो तथा कन्या से शुभ शकुन करवा लो । अग्नि को चन्दन की लकड़ी से सुलगाया । वन से चन्दन की सूखी लकड़ियां ले आयें । अग्नि चन्दन की छोटी लकड़ी से सुलगा दी । लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े ले आओ ।

(हवन के लिए सामग्री लाई जाती है उसके भी गीत हैं ।)

अग्नवतर (सामग्री)

(2) *अग्नवतर अनिमय ताशे वानय अग्नराज़ योत पानय आव*
अग्नवतर अनियो सरिय ज़ानकदलय, अदलय महाराज्य साबने
अग्नवतर अनिमय बारे बारे दारि दारि ग्यव हुम सारिम्यवसान
ब्रेहमन त यज़मन हाज़ीर वुली अग्नवतर रटहस तूल्य तूली
अग्नकुन्डस ग्यव तेल नख छुय, मुख छुय चतुर्बुज़ नारायन ।

अदल—समझदार , तर्कयुक्त (अरबी का शब्द) ।

— अग्नि की सामग्री ताशवान (श्रीनगर में एक स्थान) से ले आया, अग्निराजा यहां स्वयं ही पधारे । सारी अग्नि की सामग्री ज़ैनाकदल से लायी गई, महाराज साहिब के अदल लाये । अग्नि की सामग्री मैं बारी-बारी से लाई । घी की धारा बनाकर सारी मेवा के समेत यज्ञ में डाल दो । ब्राह्मण तथा जजमानो, अग्नि की सामग्री को तोल-तोल के ले लो । अग्निकुण्ड के पास ही घी तथा तिल रखे हुए हैं तथा मुख के सम्मुख चतुर्भुज नारायण हैं ।

यज्ञोपवीत में श्रान-पट तथा सिन्दूर आदि लगाने के गीत

(3) *कुंग तय सिन्दरे वथियो ब्राटी ब्राह्मनन पिलनोवुस आटीपन*
दयि सिन्दि दर्म त यन्द्र सिन्दि ध्यानय ब्राह्मनन पिलनो-वुस श्रानपट
नमिथ गोन्ड होय दर्बो दोनडोन समिथ त दिवता सोनुय आव
कृष्ण महाराजस म्रगचम नअली माल्य छुनिसय ब्राह्मननय
वसुदीव राज़िन ज़ाफल ज़न्डो छ़ागिस छुनहय ब्रह्मगन्ड
मुक्तचव डोलस तखति खानस ट्योक कर पादशाह देवानस
दातो करुस ताब्यादारी गोरो गन्डुस नारीवन ।

— केसर तथा सिन्दूर इतना लगाया कि वह फैल गया । ब्राह्मण ने आटीपन पकड़ा दिया । 'दय' के धर्म से तथा इन्द्र के ध्यान से ब्राह्मण ने श्रानपट पकड़ा दिया । तुमको झुकाकर दूब की घास की रस्सी कमर में बांध दी । मिलकर सारे देवता आज हमारे यहां आ गये । कृष्ण महाराज मृगचर्म पहिने हैं, यह पिता ने पहिना दी या ब्राह्मण ने ? हे वसुदेव राजा के जायफल के गुच्छे तेरी चुटिया में ब्रह्म-गांठ लगा दी । मुक्ता की जो डोलची बनाई है उसमें से टीका निकालकर राजा के दीवान के टीका लगा दे । विधाता की सेवा करो । हे गुरु, तुम 'नारीवन' (कलाया) बांध दो ।

दय—देवता; श्रानपट—कोपीनः आटीपन—यज्ञोपवीत के समय जो घास का कटिबन्ध पहिना जाता है, जिसमें कोपीन बांधते हैं । सामान्यतः कपड़े का कटिबन्ध पहिना जाता है । जण्ड—गुच्छा ।

हुम (यज्ञ) के गीत

(4) *पंडितन व्यद वअन्य पननिस च़ाटस*
रातस कोरुहोम हुम कुय संज़

जमना ज़ल त गंगय म्रयचे हुमस क्यूतुय लिवेसे
वसुदीव राज़न्य गंगय म्रयच़य दिवकी माजी लिवेसे
हरमुख पतकुन श्रूच पोन्य तोरमय हुमस क्युत लिवनोवमय
हुमस ब्यूठहम गोरतय पानय सोनसिन्दन्य बानय वाहरोसे
यति छय महाराज्ञीनाय हुन्द थानय, यति किस थानस दिवता जान
योत यी महाराज्ञा त बूतीश्वर पानय सोनसिन्द बानय वाहरोसे।
च़य हो यिवनत च़य हो आदन च़य हो बागुक बादाम पोश।
च़य छखदिवकी माजि हुन्द आनन्द च़य छुख शारिकायि पादन तल।
बलराम दिवान बनडार सादन च़य हो बागुक बादाम पोश।
च़य हो शिवनाथुन आदन च़य पथ गाल्यमय मोहर त ध्यार
पूर कुन अग्न मनन वमन हुर बर्या अर्था बोज़य हुम करान
बल्लबाये करयो गनपत सअबस अरज़ा, चानि दोह चानी बक्ति क्या करान।
सीतायि लसिनम रामचन्द्र बरथा अर्था बूज्य बूज्य हुम करान।

— पंडित ने अपने शिष्य को वेद सुनाये। रातभर यज्ञ की तैयारी करते रहे। जमुना जल तथा गंगा की मिट्टी से यज्ञ के लिए लिपाई की गई। वसुदेव राजा के यहां की गंगा की मिट्टी से हे देवकी मां ! लिपाई करो। यज्ञ में पुरोहित और तुम स्वयं बैठ गए, सोने के बर्तनों को फैला दो। यहां महाराज्ञन्या का स्थान है, इस स्थान के देवता अच्छे हैं। यहां महाराज्ञान्या तथा भूतेश्वर स्वयं आयेंगे, सोने के बर्तनों को फैला कर रख दो। प्रारम्भ में भी तुम ही हो तथा अन्त में भी तुम ही हो, तुम ही बगीचे के बादाम के पुष्प हो। तुम ही मां देवकी के आनन्द हो, तुम शारिका के पादों के नीचे हो। बलराम साधुओं को भण्डारा दे रहे हैं तुम ही बगीचे के बादाम के पुष्प हो। तुम ही शिवजी के आदन हो, तुम्हारे पीछे मैंने मोहरें तथा धन व्यय किया। पूर्व दिशा की तरफ अग्नि रखी हुई है 'वोमन हुर' को भर दो मैं यज्ञ करने में अर्थ भी सुन लूं। वल्लभा ने गणपति से प्रार्थना की कि तुम्हारे दिन तुम्हारी ही भक्ति करते हैं। सीता के पति रामचन्द्र चिरंजीवी हो। अर्थ सुन-सुन कर यज्ञ कर रहे हैं।

वोमन हुर—स्रुवा, हवन करने का लम्बी डण्डी का लकड़ी का चम्मच।

(5) *पूज़ि किच़ मालय करीमय पोशन तय, गछतय रामजू बोज़िना म्योन*
दशरथ राज़न तफ कोरनम तय म्यानि गरि गोछ युन राम अवतार
तथ्य गरि ज़न्म ह्योत रामचन्द्रन तय, गछतय रामजू बोज़िना म्योन

अश्वमीद यज्ञ कोर दशरथन तय, तमि मन्ज़ खतिश खिरकी बअग्य
सुनव त्रयव खहेम बागरिथ ज़न तय, गछ्तय रामजू बोज़िना म्योन
थन यलि प्यय तिम च़ोर बारिन तय, गोरन ज़ातुखल्यूखनख जान
जातकस तिहिन्दिस रुत्य रुत्य गोन तय, गछ्तय रामजू बोज़िना म्योन।

— पूजा के लिए मैंने फूलों की मालाएं बना लीं, जा, रामजू को मेरी ओर से कह दे। दशरथ राजा ने तप किया कि मेरे घर में राम अवतार रूप में आ जायें उसी घड़ी में रामचन्द्र जी ने जन्म लिया (टिक) जाकर रामजी से मेरी कह दे। दशरथ ने अश्वमेघ यज्ञ किया उसमें से खीर का पात्र प्रकट हुआ। तीनों सौतों ने बांट के वह खीर खा ली (टिक)।

जब उन चारों भाइयों ने जन्म लिया तो पुरोहित ने उनकी बड़ी अच्छी जन्मपत्री बनाई। उनकी जन्मपत्री में उनके अच्छे-अच्छे गुण लिखे हुए हैं, जा रामजी से मेरी कह दे।

गायत्री के लिए —

(6) *सुमन कपसा वदनय आय कृष्ण महाराज़नि यछ़ायि*
वसुदीव राज़न्रयन डारन द्रायि, चूर दिनि द्रायि ग्रीसबाये
शबनम लवि सूत्य खसिथ आये, कृष्ण महाराज़नि यछ़ायि।
वसुदीव राज़नि ज़िछि ज़िछि कपसे दपसे करसे योने हन।
रथ अन्दितोस त अक्षय व्यछनोवुय तथी करनोवुय योनेहन।
दिवकी व्यछुनुय कनिकि कोतुय योनि लोदुयो नारानी
दिवकी व्यछुनुय त सुबद्रायि कोतुय योनि लोदुय नारानी
परबत अन्दरय शारिका आये कृष्ण महाराजस गायत्री ह्यथ
गायत्री ज़ंगे क्याह क्याह पज़े नून वअत मोहरा प्रास
त्रलोर गोर संज़ त्रलोर बब संज़ शुलोर योनि प्रोवुथो
त्र्यब्यनि लजियो च्यय उपहारस योनि लर तारस प्रावथो।

— शुद्ध मन से कपास को उगाया, यह सब कृष्णजू की इच्छा से ही हुआ। वसुदेव राजा के खेतों में यह कपास उग आया, इसकी गुड़ाई करने के लिए ग्रामीण स्त्रियां निकलीं। यह कपास तो ओस की बूंदों से ही उग आया है — यह कृष्णजू की इच्छा से ही हुआ। वसुदेव राजा के यहां जो बड़े-बड़े कपास के पेड़ हैं, कह दे कि उनसे ही जनेऊ बना ले। अपना रक्त तुम पर वार दूँ — इसको हमने हाथों-हाथ

तुना, उसी से हमने जनेऊ बना लिया, देवकी ने तुना तथा कन्या ने काता, नारायण की पत्नी ने जनेऊ बनाया। देवकी ने तुना तथा सुभद्रा ने काता नारायण की पत्नी (लक्ष्मी) ने जनेऊ बनाया। पर्वत पर से शारिका आई कृष्ण महाराज के लिए गायत्री (जनेऊ) लेकर आई। खीर-भवानी से राज्ञान्यादेवी आई, कृष्ण महाराज के लिए गायत्री लेकर आई। इस गायत्री के शुभ शकुन के लिए क्या-क्या चाहिए ? नमक, वअर तथा मोहर। इस जनेऊ में तीन धागे गुरु के हैं तथा तीन धागे पिता के हैं कुल मिलाकर तुमको छः धागों वाला जनेऊ प्राप्त हुआ। तीन बहिनें तेरे बलिहारी जायें। तुमने उपहार में जनेऊ प्राप्त कर लिया है।

खीर-भवानी—कश्मीरी हिन्दुओं के लिए सर्वाधिक मान्य एवं पवित्र देवी-मन्दिर जिसकी विशेषता है कि उस पर वैष्णव प्रभाव इतना है कि मांस-मछली खाकर वहां जाने पर सर्वनाश हो जाना माना जाता है। कश्मीरी हिन्दू खीर-भवानी (तुलमुल गांव में जो श्रीनगर से 30 कि०मी० दूर है) से लौटकर वहां से चार कि०मी० दूर गान्दर-बल (गन्धर्व बल) में मांस पकाकर खाया करते हैं। तरु (शहतूत के) मूल से देवी प्रकट हुई थी, उसी से तुल-मुल बना है।

जब मेखला (यज्ञोपवीत) पहिनायी जाती है तब दिनभर यजमान-महिलाएं ये गीत गाती रहती हैं :

(7) *हुमस प्यठ दिवता आमत्य सारीय रामलछमन अवतारी आव*
गर्बस यलि आव राम अवतारी खोश गय दिवता सारीये
ज़ोनुख त्रनवबनन हुन्द आदिकारी रामलक्ष्मन अवतारी ये
दिवकी गर्बस आव अवतारी मुकुट तय अलंकारी ये
सारीय दिवता आय अवतारी, राम लक्ष्मन अवतारी आव
दिवकी कोछि ह्योत पान अवतारी चतुर्बुज नारायनन होवनस पान
कथ करनस निम जमुनाय पारी राम लक्ष्मण अवतारी आव
वसुदीवन कनयख तार जमुनाय पारी दिवकी दोपुन च़ हलमदार
बाकि सूत्य हुश्यार गय सारीय (टिक राम०)
कंसस रअछदर नादस गय सअरी दिवकी अष्ट गर्व ज़ाव
मन गोस चंचल गम प्योस बारी राम त कृष्ण अवतारी आव
खोरव सअत्य तमी कन्यख रट अहंकारी, आकाश दिव़नस वानीये।
शत्र .च्योन बलवान जमुनाय पारी राम कृष्ण (टिक)
नारायन विष्नरूप श्रीरामय .च्य परमदामय बविनय जय

पथकालि ईश्वरस राज मंत्रोमय रावुन गालनिच आसम प्रय
जनक राज़नि गरिज़न्म दारियोमय .च्य परमदामय बविनय जय
मन मन्ज़ वनि आम अन्तर्यामि .च्य परमदामय बुविनय जय
तव पत ईश्वरन राज्य लज़्योमय कैकीय वासना फीरिथ गय
वनवास करनुक मनि तस आमय .च्य परमदामय बविनय जय
सामान त्राविथ यलि बुर्ज़ जामय लक्ष्मन सूत्य ह्यथ नीरिथ गव
पत पत द्रामय शहर त गामय .च्य परमदामय बुविनय जय
जंगलन मंज़ सत संग बोज़्योमय कम कम वीद कम कम निर्नय
श्रूच वीद बूज़िथ कन श्रोचोमय .च्यय परमदामय बविनय जय
वन मंज़ राक्षुस द्रेठ आयोमय लारनस तस पत व्यनथ करनम
लक्ष्मन जू पत तूर्य सोज़ोमय .च्यय परमदामय बविनय जय।
रावुन आम बडि व्यद्ध क्रद कामय लंकायि नियनस त हावि नम बय
ज़ाजिनस त गअजिनस लजिनस दामय .च्य
दम दिय दिय तम्य ब्रम दिचामय कर्मस क्याह करअ बूज़नम नय
दर्मस प्यठ म्य मन था व्योमय
राक्षस अन्दि अन्दि रअछ रोज़ामय सूत्य क्या ओसुम कीवल दय
निथ सुबह त शामन राम राम ज़प्पामय .च्य परमदाभय बविनय जय
आख यलि लंकायि पेठ बोज़ामय गोलथन रावुन करुथस क्षय।
सअथी नियथस गम गोस द्रामय .च्य परमदामय बविनय जय
दोह पांशि गयि क्याह पाफ खचामय कव जान कम पाफ वोत लिथ आम।
पर पावथस बरकरथस खामय। .च्य परमदामय . . . .
सन्ताफ त्राविथ सुख प्राव्योमय क्याह कर मर मर छुम मरनय
पनन्यव त परदयव दिच़हम पामय। .च्य परमदामय . . . .
राथ दोह ईश्वरस यी मन्जोमय ही दय आसिनम चानी प्रय
चाख गोम जिगरस वाक नय द्रामय .च्य परमदामय बविनय जय
दोह अकि बृहस्पत वुदयस आमय अर्दय रातुक ओस समय
गोस द्राम सोरुय लव त कुश ज़ामय (टिक)
कवज़ान ईश्वरन क्या लेछामय चोनुय दूर्यर कर बुज़रहा
बोन वस बूमि तल बूमि गछि त्रामय
म्याति टोठतम .च्य श्रीरामय गरि गरि छिम चानी मनिकामना

नाव चोन सोरहा सुबह त शामय .च्य परमदामक बविनय जय ।

— यज्ञ में (आह्वान के बाद) सभी देवता आ गए हैं, अवतार राम-लक्ष्मण भी आये । जब गर्भ में राम अवतार आ गए तब सभी देवता प्रसन्न हो गए, जान गये कि राम और लक्ष्मण तीनों भवनों के अधिकारी हैं । देवकी के गर्भ में अवतार मुकुट तथा अलंकारों के सहित आ गए । सभी देवता आ गए — राम और लक्ष्मण अवतार आ गए । देवकी ने स्वयं अवतार को अपनी कोख में लिया, उनको चतुर्भुज नारायण ने अपना रूप दिखा दिया । उस अवतार ने बात की और कहा कि मुझको जमुना पार ले चलो (टेक) राम लक्ष्मण अवतार आ गए । वसुदेव कन्या को जमुना पार से ले आये । देवकी से कहा तुम अपनी झोली फैला दो । रोने से सभी जग गए (राम० टेक) कंस के सभी रक्षक कंस को बुलाने गये कि देवकी के 'अष्ट गर्भ' उत्पन्न हुआ । उसका मन चंचल हो गया तथा बड़ा भारी ग़म पड़ गया (टेक राम०) उस अहंकारी ने कन्या को उसके पैरों से पकड़ लिया, उसी समय आकाशवाणी हुई कि जमुनापार तेरा शत्रु बलवान है । नारायण विष्णु का रूप ही राम हैं तुम परमधाम हो तुम्हारी जयजयकार हो । पहले काल में ईश्वर से राज्य मांगा था क्योंकि रावण को मारने की इच्छा थी । जनक राजा के घर में जन्म ले लिया, हे परमधाम तुमको प्रणाम हो । इसके पश्चात् ईश्वर ने राज्य दे दिया परन्तु कैकयी की वासना के कारण उसके विचार बदल गए और उसने राम को वनवास देने का मन बना लिया । सामान सब त्याग दिया और भूर्ज के वस्त्र धारण किये और लक्ष्मण को साथ लेकर चल दिए । पीछे-पीछे शहर और गांव चले गये । जंगलों में सतसंग सुना, कौन-कौन से वेद, निर्णय तथा शुद्ध वेदों को सुनकर अपने कानों को भी शुद्ध किया । (सीता की ओर से) वन में राक्षस दिख गया तथा मेरे पीछे आ गया, मैंने उससे विनती की फिर लक्ष्मणजी को वहीं भेज दिया । रावण आ गया, उसने विकृत रूप धारण किया, मुझको लंका ले गया तथा वहां मुझको भय दिखाया । मुझको जलाया-गलाया और मुझको अपने घर में बिठाया। दम दे देकर (धीरे-धीरे, क्रमशः) उसने मुझको भ्रमजाल में फंसाया, कर्म का क्या करूं वह माना ही नहीं, मैंने अपना मन धर्म पर अड़ाये रखा चारों ओर से मेरी रक्षा के लिए राक्षसों को रखा गया, मेरे साथ केवल भगवान् था । मैं नित्य, प्रातः संध्या राम-राम जपती थी । जब तुम लंका में आ गए मैंने सुन लिया कि तुमने रावण को मार कर उसका क्षय कर दिया । तुम मुझको साथ ही ले गए इसीलिए मेरे सभी गिले-शिकवे दूर हो गये । कुछ दिन बीत जाने पर, जाने कौन से पाप उभर कर आ गये कि तुमने मुझको दूसरों के सहारे छोड़ दिया, मुझको

अभागिन बना दिया। संताप छोड़कर मैंने सुख प्राप्त किया था पर मैं क्या करूं अब मैं हर घड़ी मरती हूँ — मरने से पहले ही। अपनों ने तथा परायों ने व्यंग्य किये। मैंने रात-दिन ईश्वर से यही मांगा कि हे ईश्वर मुझको तुमसे ही प्रेम हो। एक दिन बृहस्पति उदय करने आये, रात का समय था, मेरे सभी ग़म दूर हो गए तथा गिले-शिकवे भी समाप्त हो गए क्योंकि लव और कुश उत्पन्न हुए, परन्तु ईश्वर ने क्या भाग्य में लिखा था, तुमसे दूर रहना, मैं कैसे सहन कर सकती थी इसीलिए भूमि में दरार हो गई और मैं उसमें समा गई। मेरे ऊपर भी, हे श्रीराम, तुम अपनी प्रेम-दृष्टि रखो; मुझे हर समय तुम्हारी ही कामना रहती है — मैं तुम्हारे ही नाम को सुबह शाम जपा करूं।

(8) *वसुदीव राज़नि टाठे गोबुरो अछिन छुनहय नित्रय पठ*
च़ेर त बादाम लदुयो लंगुनी असवनि मोख छुहम हुम करान
वसुदीव राज़नि वज़ीर गोबरो अकि अकि खज़अर हुमोसो
रोछमख बबितय छहमो टोठुय हुम करय किशमिश राठय तल
च़ोत्रुह पक्षाग दुसतथ शांच़य ब्रांच रोस प्रोबथम ब्रह्म तीज
दक्षिप्रजापत निस ज़पयज्ञस तय दिवताआय पोश दस्तय ह्यथ
आवाहन करुख ब्रह्म लूकस तय ब्रह्म विष्णु सदाशिव ह्यथ
सतऋषि यति बीठिय वीद परनस तय ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ह्यथ।
बलराम जुवस दर्मपुरुषतय पूज़ा करान छोस सतरिष
पूज़ायि लाग्‌यनख़ बेलपोशि दस्तय दिवता आय पोश दस्तय ह्यथ।

— वसुदेव राजा के प्रिय पुत्र मैं तेरी आंखों पर नेत्रपट लगा लूं। खोबानी तथा बादाम को लंगुन (नापने का पात्र जो बहुधा लकड़ी का होता है) में भर दूं, मुस्कराते हुए तुम यज्ञ कर रहे हो। वसुदेव राजा के वज़ीर बेटे एक-एक करके छुआरे को यज्ञ में होम कर दो। मैंने अपना दूध पिलाकर तुम्हारा पालन पोषण किया, तुम मुझे बहुत प्रिय हो, तुम किशमिश की बेल के नीचे यज्ञ करो। चौबीस पक्षाग तथा बहत्तर शान्तियां, बिना किसी बाधा के तुमने ब्राह्मण-तेज पा लिया। दक्ष प्रजापति के जप-यज्ञ में देवता फूलों के गुलदस्ते लेकर आए। तुमने ब्रह्मलोक का आह्वान किया, ब्रह्मा विष्णु तथा सदाशिव लेकर आए। सप्तऋषि यहां वेद पढ़ने बैठ गए, देवता फूलों के गुलदस्ते लेकर आ गए। धर्मपुरुष बलराम जी की सप्तऋषि पूजा कर रहे हैं। पूजा में बेलपत्रों के गुलदस्ते लगा लिए, देवता गुलदस्ते लेकर आ गए।

नेत्रपट — आंखों की रक्षा का कार्य भी करता है और अन्यों की नेत्रों के तेज से भी रक्षा करता है।

नअरीवन खारुन

यज्ञोपवीत संस्कार में कश्मीर में यह प्रथा है कि परिवार की सभी स्त्रियां (विवाहिता) कानों में कलाया पहनती हैं। स्त्रियां इसको आभूषण की तरह पहनती हैं। इसको पहनते समय स्त्रियां लोकगीत गाती हैं, प्रस्तुत है :

(9) *अवलय अन्यथय नारिविन थाजी शाबाश शारदा माजीये।*
दन्डक वनची ऋषि बाईये दिवराइस मंगी नारिविन
वसुदीव राज़न्य आन्तन माली दान्तन सूत्य खार नारीवन।
वसुदीव राज़न्य वान्यन कूरी कान्यनि पेठ खार नारीवन
शाबाश तस माजि यस माजि ज़ाखो आयख त खअरिथ नारीवन
बिश्मक राज़न्य गाटिजकूरी, पाटिव खअरिथ नारीवन
नारीवन खअरिथय यज्ञ विज़ीय, दिवता पूज़े आमित छिय
जनख राज़नि लायख कूरी, नारीवनन छ्येक छुय।

तुम कलाये की पूरी गांठ ले आई, शाबाश हे शारदा मां ! दण्डक वन की हे ऋषि-पत्नियों तुम देवताओं से कलाया मांग लो। वसुदेव राजा के यहां की मालकिन तुम शहतूत की शाखा से कलाया कानों में पहन लो। वसुदेव राजा के यहां की शिष्ट लड़की तुम कान्यी (मकान की सबसे ऊपर की मंजिल) पर चढ़कर कलाया पहन लो। तुम राजा भीष्मक की चतुर कन्या (रुक्मिणी) हो तुमने रेशमी डोरे (पाटिव) के 'नारीवन' कलाया कानों में पहने। यज्ञ के समय तुमने नारीवन पहन लिए देवता लोग पूजा के लिए आये हैं। राजा जनक की लायक लड़की नारीवन की तुमको बधाई (छ्येक) हो।

वारिदान

वारिदान एक प्रकार का छोटा-सा मिट्टी का चूल्हा होता है। इस पर बुआ भात पकाती है। उस भात को यज्ञ में आहुति के काम में लाया जाता है। बुआ को इस कृत्य के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार नेग दिया जाता है। यज्ञोपवीत संस्कार में इसका भी विशेष महत्व है।

(10) *रथ्य वोथ वारिदान अथ्य रोट दिवते, सेविके नाराणजुवने*
वारेदानस शयत्रह ज़ारी, हारे, वाज़ रनन्य छत्रयहार
वारिदानस शयत्रह गगाछिये ब्यनिये लगछय त बोय लसनय
वारेदानस सन्दरीसी त्यन्नाला मंगला ज़गे अन्योसे

वारि बत रोन्मय खअज़र लशे हृदय शीशे करी ज्यस

वसदीव राज़न खूज ड्यार दजीये वो थी ड्येकबजीये केंच्छा ख्या ।

रथ में से वारिदान (अनेक मुख वाला चूल्हा) उतर आया, देवी (जो नारायणजू की सेविका हैं) ने शीघ्रता से उसको हाथ में पकड़ लिया । वारिदान के छत्तीस चअर्य हैं (चूल्हे क़े मुख जिन पर बर्तन रखा जाता है), हे मैना, उस पर वाज़ (खाना पकाने वाला) विशेष प्रकार की सब्जियां पकायेगा । 'वारिदान' में छत्तीस घये हैं । हे बहिन ! मैं बलिहारी जाऊं, तेरा भैया चिरंजीवी हो । 'वारिदान' में अंगारे सुलगा लो, मंगला से शुभ शकुन करवा लो, 'वारिभात' मैंने खजूर की लकड़ी जलाकर बनाया । वसुदेव राजा ने अपने धन की पोटली खोल दी, उठो भाग्यवती कुछ खिला दो ।

वारिभात — यज्ञोपवीत में विशेष चूल्हे (वारिदान) पर बुआ जो भात पकाती है और अपना नेग लेती है । यज्ञोपवीत में भिक्षा में बालक को अपने गुरु के लिए जो रुपये दिए जाते हैं उसको 'अबीद' कहते हैं ।

अबीद के गीत

(11) *हाथी पोरच चअन्दय तारनअवमय, बिक्षाय थाला गरनोवुमय*

गोरन कडनख कनतल हृयछि विथ, बिक्षाय अनिथस फोति-फोति द्र्यार ।

दोहस फ्र्यूरोहोम आमन त खामन, मासि ति आहम अबीदे

अथन छ़िनियम सोनसिन्ज़ वाजे, माजि ति गोहम अबीदे

दोहस त फ्रोहोम आनय डबन, बबन ति गोहम अबीदे

ज़ाविलयन जामन कजिमय ग्यन्ये, ब्यन्यन ति गोहम अबीदे

चाहम ईश्वर जुवनि ग़ोफे, पोफे ति गोहम अबीदे

दोहस ति फ्र्यूरोहोम जागीर गामन मामन ति गोहम अबीदे

नाम लेखय कामदीव खस सानि हेरे मामजुव बिनथरस मोहरा त्राव ।

माजि हन्ज़ व्यस तय बब सिन्द यारछिय मोहर त द्र्यार छिय फिरयवान

अबीदि वोछ़्यो रुपय त मोहरय शोहरथ गय संसारस

गोरन वनयो कनतल शब्दा रबदा द्रोयो रामुन हृयू ।

मैंने हाथीपुर (स्थान विशेष) से चांदी मंगवाई तथा तुम्हारी भिक्षा की प्याली बनवाई । पुरोहित (गुरु ने) ने कान में तुम्हें कुछ समझाया और तुम भर-भर हाथ धन ले आये । दिन भर तुम आम में भी और खाम में भी घूमे, फिर मौसी के पास भी

'अबीद' (भिक्षा) के लिए आये। (यज्ञोपवीत में मौसी तथा बुआ की अबीद का विशेष महत्व होता है) मैंने तेरे हाथों में सोने की अंगूठियां पहिना दीं, मां के पास भी तुम 'अबीद' मांगने गये। महीन वस्त्र जो तुमने धारण किये हैं उनकी मैंने सलवटें निकाल दीं, तुम बहिन से भी अबीद मांगने गये। तुम ईश्वर की गुफा में घुस गए-बुआ से भी तुम 'अबीद' मांगने गए। दिनभर तुम गांवों में, जहां तुम्हारी जागीर है, घूमे। मामा के पास भी तुम 'अबीद' मांगने गये। मैं तुम्हारा नाम कामदेव लिख दूं — हे मामा, तुम हमारे ज़ीने पर चढ़ो और अपने भानजे की भिक्षा में मोहर डाल दो। मां की सखियां तथा बाप के मित्र मोहरें तथा धन को उलट-पुलट कर रहे हैं। तुम्हारी 'अबीद' में मोहरें तथा रुपये इतने आ गए हैं कि सारे संसार में इसकी प्रसिद्धि हो गई। गुरु ने तुम्हारे कान में शब्द कहा तथा तुम्हारी आदतें रामचन्द्र जी जैसी निकलीं।

आचमन के गीत

(12) *खोरन लव द्यू जप के ज़ोरो, गोरो वन्दयो पादन रथ।*
वसुदीव राज़नि मन्य क्रेंक गबुरो सोन वाजि सूत्य कर आचमन
गुहि ग्यवअ, दोद ग्रिमिल नावद सोमरिथ अमृत सूत्य कर आचमन
कृष्ण महाराज ने सुबद्राब्यन्ये समिदन तनेय मलोसे
यिम शिछि लदहा महारोद्रस तय, गछतय बगवान वुज़नावितोन
ब्रह्मा लूकि किस ब्रह्माजियस तय, तस पज़िहे युत वातनस
मेखलि पज़िहेस तन दिनस तय, गछतय बगवान वज़नावितोन
केलाश प्यठ किस शवनाथस तय, तस पज़िहे योत वातनस
हुमपिठ पज़िहेस वीद वोज़नस तय, गछतय बगवान वुज़नावितोन
इन्द्रलूक किस यन्द्राज़स तय, पज़िहे योत वातनस
नाना रंगपोश तम्य डालि सून्ज्यनस तय, गछतय बगवान वुज़नावितोन
यियिव मालि ब्राह्मणव खसिव सानि हेरे लागिव मालि ट्यूोक अर्ग पोश शेरे।
खसिव मालि वसुदीव राज़नि हेरे कृष्णस वोत मेखलि संस्कार
रुहिन छु प्रारान चन्द्रम कर नेरे लागिव मालि ट्यूोक अर्गत पोश शेरे।
यियिव मालि ब्राह्मणव गछिव मालि जमा
करिव मालि हुमुक समाचार। अग्नुक दह खोत गगनचि
राशी काशी अन्दरिक ब्राह्मण आय।

यियि कोर वल्लवायि गनेश राज़नि राशि, तति आयि

डीशिथ यति कोर हुम

रुकमनि सूज़नम कृष्णजुवनि आशे काशी अन्दरिक ब्राह्मण आय ।

— जप के प्रभाव से अपने पैरों पर पानी छिड़क दो, हे गुरु, मैं तुम्हारे चरणों पर अपने प्राण न्योछावर कर दूँ । वसुदेव राजा के हीरे के समान बेटे सोने की अंगूठी से आचमन कर लो । गोबर, घी, दूध, मिश्री सभी को मिलाकर तुम आचमन कर लो । हे कृष्ण महाराज की सुभद्रा बहिन तुम सारी सामग्री को इसके तन पर मल दो । ये विशेष बातें मैं महारौद्र तक भेज दूं, जाकर भगवान् को जगा दे । ब्रह्मलोक के ब्रह्माजी को मेखला में यहां तक आने के लिए कुछ (उनका भाग) देना चाहिए । कैलास पर्वत के शिवजी को भी यहां आने के लिए कुछ देना चाहिए । यज्ञ पर वेद सुनने का भी कुछ चाहिए । इन्द्रलोक के इन्द्र राजा को भी यहां आने तक का कुछ देना चाहिए । हे आदरणीय ब्राह्मणो हमारी सीढ़ियां चढ़ो, अर्घ्य, पुष्प तथा तिलक अपने मस्तक पर लगा लो । हे पिता वसुदेव राजा की सीढ़ियां चढ़ो क्योंकि आज कृष्णजू का मेखला संस्कार है । रोहिणी नक्षत्र इस प्रतीक्षा में है कि चन्द्रमा कब निकलें । हे पिता, तुम तिलक, अर्घ्य तथा पुष्प अपने मस्तक पर लगा लो । हे पिता तुम लोग आओ और इकट्ठे हो जाओ और यज्ञ का समाचार सभी को दे दो । अग्नि का धुंआ गगन की राशि में पहुंच गया, यहां काशी के पंडित आए हैं । वल्लभा ने यही गणेश राजा की राशि में भी किया, वहां हम यह सभी देखकर आए और यहां हमने यज्ञ किया । रुक्मिणी ने कृष्णजू की आज्ञा से ही भेजा, काशी के ब्राह्मण आए हुए हैं ।

कलश

(13) *कलशस खारयूसी त्रशकल डूनी ज़न्मच यूनी च़जिसो*

अर्शे वथिमति अर्जुनदीवो फर्शस प्यठ कर कलशस जाय

कलशिचि विज़े दय टोठेयो, पूज़ि ब्यूठयो नारायन

वसुदीव राजनि गुर्य गन्डीय बागस बडि ब्राह्मणकर दातस ट्योक

मंज़ रोब खानस वाहरिथ डूनिय सोंन्य कोसम तय मादलि पोश

कलशस पूज़कर दर्बे तुल्यो कलशस पूज़ वारय कर

कलशिचि विज़े वछय अन्त-दारय कलशस पूज़ा वारयकर

कलशस पूज़कर अर्ग त पोशो सोरिव तपत्रघषिव सदाशिव

पूरे खतुखो सिर्ये वेशो दूरे करयो नमस्कार . . . .

कनिकन त बालकन मुकुलेय त्रेशे ।

(यहां से आगे यह गीत पीछे आ चुका है)

कलश के लिए त्रिशकल अखरोट ले जाओ, जन्म की योनि समाप्त हो गई । आकाश से उतरे हे अर्जुनदेव फर्श पर तुम कलश का स्थान बना लो । कलश के समय देवता तुमसे प्रसन्न हो गए तथा पूजा में स्वयं नारायण बैठ गए । वसुदेव राजा के घोड़ों को बगीचे में बांधो । बड़े ब्राह्मण तुम दाता के तिलक लगा दो । बीच 'रवक' में तुमसे अखरोट कोसम,मादल पुष्प फैला दिये । दूब की घास रखकर कलश की पूजा कर लो, कलश की पूजा ठीक से कर लो । कलश के समय अनन्त धारा बही । कलश की पूजा ठीक से करना । कलश की पूजा अर्घ्य तथा पुष्पों से कर लो, हे तपस्वी, ऋषियो तुम सदाशिव का जाप कर लो । पूर्व से हे सूर्य, तुम उदित हुए, तुमको मैं दूर से ही नमस्कार करती हूँ ।

त्रिशकल — जिसकी मिगी में तीन भाग हों । रवक — ऊपर की मंजिल का बड़ा कमरा ।

व्यूग के गीत —

यज्ञोपवीत संस्कार के व्यूग के गीत विवाह के गीतों के ही समान हैं । अतएव मैंने इनको विवाह गीतों में सम्मिलित होने के कारण यहां नहीं दिया है । जिसे हिन्दी में चौक (चौक पूरना) कहते हैं, उसी प्रकार की रचना को कश्मीरी में व्यूग कहते हैं । यज्ञोपवीत संस्कार में जब ये गीत गाये जाते हैं तब 'व्यूग' को कभी-कभी 'मण्डल' नाम भी दिया जाता है ।

हिन्दुओं के विवाह-सम्बन्धी गीत

(लिपाई के गीत)

(1) *शोकलं करिथ वनवुन ह्योतमय*
शुब फल दितुय माजि बवाने ।
वसुदीव राज़न्यव वनवुन ह्योतुये,
शुब फल दितुय माजि शारिकाए ॥
शोकलं करिथ रामवर दाये,
हरि गंगाये नमस्कार ।
वखनिथ कुस ह्यकि चअनि बडाये
गंग सर सूत्य ब्रयपि जमुनाये ॥
पादन चान्यन शरने आय,
हरि गंगाए नमस्कार ।
व्यष्णु पादकमलव निश मंज़ द्राये,
जटि ह्यच परमीश्वराये ॥
बगीरथनि तपह सअती आये,
हरि गंगाए नमस्कार ।
आकाश प्यठ यलि गंगा द्राये,
सीतह छिस कारण त व्ययि दिवता ॥
अछ़ह रछ़ह वनवान पतपत द्राये,
हर गंगाये नमस्कार ।
अपारि अनितोन पंडिथा तअरिथ,
वसुदीवराज़न्यन दियि साथ चअरिथ ।
नवि न्यचिपत्रे रुत द्राव साथा,
कृष्णज्युवुन दाता श्रीबगवान ॥
असि कअर म्यचि कअम प्रछिथ गोरस, ती आव परमीश्विरस खोश ॥
दिवकी माजे प्रुछ़ बृहस्पत गोरस, ती आव गणपत सअबस खोश।
दिवचि खच़यि वस्तुर वनस,
दिवग वथ हावनस छिख ।
बेरि बेरि वोवुमय लछ़जे ब्योलुय

सोवुई छुय करान सापानय ॥
विगिन्यव सग दियत दण्डक वनस,
ब्रह्मा वथ ह्यवनस छुख ।
समिथ खसवय दण्डखवनस,
नमिथ चटखय जावि लछजे ॥
बअन्दित तह खच़वय दण्डख वनस,
गण्डिथ तह वालवय ज्यावि लछजे ।
नमवी विगिन्यव लछजे गण्डवय,
दयस मंगवय आदेकार ।
अवल्यन लछज्यन मोक्तरज़ गण्डवय,
दयस मंगवय आदेकार ।
ह्ययवाल रवकन लछुज्य डालि हंगसय,
यथ राज़ह रंगसय नमस्कार ।
सोनु सुन्द टोंगरि त रोपुसुन्द बेलो,
अपारि तअरमय शेलय म्यच़ ।
अनिवे टठजत स्यन्दिवोन्य फिरवय,
ह्यन्दि लरि करवै गरनावै ।
गरनावस ज़ंगि कुस ओयय,
मंगलादीवी त नन्दकीश्वर ।
गर नोवूथय राज़ैबअयी
रंग फोल्य जम्बुक बाग सुई ।
वसुदीव राज़न्यन ज़ंग आयि रुच़्ये,
दिवकी माजि फोज बागस हिय
गरनावनस न्यछतुर सोवुय,
बवनय आयि पोश लोवुई ह्ययथ ।
म्यच़ि त्य पअनिस खोत खम्बीरय,
गम्बीर असि कर गरनावय ।
हरमुख पतकुय श्रूच़ पोन्य तोरमय,
हरिचन्दर राजुन गर नोवमय ।
गंगबल ओनमय गंगवां नोट्ये,

फलिल वोदुये लिवोसय ।

गंगबल तोरमय गंगवोन्य नावन

हावस करमय गर नावै ।

गरनोवुथय कोंगह कस्तूरी,

वस्तर वनची लछ्जे ।

गरनोवुथय शोकला पछी,

शुब वार तय न्यशत्रय प्यठ

गर नोवुथय गरुडस खसिथ

बविनय लक्ष्मी सअसितिस आय ।

(पूरे भारतवर्ष में यह प्रथा है कि किसी भी शुभ संस्कार पर घर की सफाई, लिपाई, रंगाई आदि होती है। कश्मीर भी इसका अपवाद नहीं है। विवाह के अवसर पर विवाह से दस-पन्द्रह दिन पूर्व, कभी-कभी एक महीना पूर्व भी, यह कार्य आरम्भ होता है। इस दिन पूरे घर की सफाई होती है। नए वस्त्र धारण किए जाते हैं और नमकीन चावल तथा मांस पकाया जाता है जिसको 'वअर' कहते हैं। यह 'वअर' अपने सम्बंधियों तथा पड़ोसियों में बांटी जाती है। जब यह 'वअर' भेजी जाती है तो सभी को पता चल जाता है कि अमुक व्यक्ति के घर में विवाह संस्कार होने वाला है। इस कृत्य को किए बिना शादी का कोई कार्य आरम्भ नहीं किया जा सकता है। मेरे ख्याल से यह 'वअर' खीर का ही विकल्प है। जिस प्रकार समूचे भारतवर्ष में शुभ अवसर पर खीर बनाने की प्रथा है उसी प्रकार कश्मीर में 'वअर' बनाते हैं। चूंकि कश्मीर में चीनी की बड़ी दिक्कत रहती थी, इसीलिए नमकीन 'वअर' ही बनाते थे। आगे चल कर दिवगोन पर खीर बनाना चूंकि अनिवार्य है इसीलिए लिवुन पर 'वअर' ही बनाते थे। इस अवसर पर विशेष गीतों को गाने की प्रथा अब तक प्रचलित है। उन गीतों में इस अवसर की सांस्कृतिक् महत्ता का परिचय मिलता है। विभिन्न देवताओं का आह्वान, गंगा की स्तुति, दण्डक-वन महात्म्य आदि इसके मुख्य वर्ण्य-विषय रहते हैं।

इन गीतों में पिता के लिए वसुदेव, माता के लिए देवकी सुभद्रा आदि, दूल्हे के लिए बलराम,कृष्ण,आदि का प्रयोग किया जाता है। यह बहुत प्राचीन गीत हैं।

अर्थ :– शुक्ल करके मैंने गाना आरम्भ किया, माता भवानी ने शुभ फल दिया। वसुदेव राजा के घर में वनवुन के गीतों को गाने का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। माता भवानी ने शुभ फल दिया।

शुक्ल करके राम के समान वर का काम प्रारम्भ किया, हरि गंगा को नमस्कार।

गंगा की महिमा की व्याख्या कौन कर सकता है, वह तो अपरम्पार है। गंगा की बड़ाई करना ही कठिन नहीं है, गंगासागर तथा जमुना की महिमा की पूर्ण व्याख्या करना भी सहज काम नहीं है।

मैं तो गंगा के चरणों में शरण लेने आई हूँ। हर-हर गंगा को नमस्कार। तू तो विष्णु के चरण-कमलों के पास से निकली तथा तुमको शिवजी ने अपनी जटाओं में धारण कर लिया। तुम तो राजा भगीरथ जी के तप से इस पृथ्वी पर आई हो। ऐ हर-हर गंगा तुमको नमस्कार। जब तू आकाश से धरती पर उतर आई उस समय तेरे साथ देवता भी आए तथा अप्सराएं पीछे-पीछे गाना गाती हुई आईं। हर गंगा ये—

तुम ज़रा पंडित को बुला लाओ ताकि वह वसुदेव राजा के घर में जो शुभ कार्य होने वाला है, उसके लिए शुभ मुहूर्त ढूंढ़ के दें।

नए पंचांग में बड़ा शुभ मुहूर्त निकल आया। जग का दाता श्री भगवान है। वसुदेव राजा के घर का मुहूर्त जो निकाला गया बड़ा शुभ निकला। कृष्णजू का दाता श्री भगवान है। हमने लिपाई का काम पुरोहित से पूछकर किया, परमेश्वर इसी से प्रसन्न हो गए।

देवकी माता ने गुरु बृहस्पति से पूछ कर लिपाई का काम प्रारम्भ किया, इसीलिए गणेश जी प्रसन्न हो गए। छोटी कन्याओं को वस्तर-वन भेज दिया गया ताकि वे वहां से एक विशेष प्रकार की पौधों की टहनियां ले आएं जिनको 'ज्यावि लछिज़' बोलते हैं। देवता लोग इनका पथप्रदर्शन कर रहे हैं। मैंने किनारे-किनारे इस विशेष पेड़ के बीज झाड़ू बनाने को बोये। परियों ने दण्डक वन में सिंचाई की, पथप्रदर्शन करने के लिए स्वयं ब्रह्माजी आए हैं।

इकट्ठे होकर हम लोग दण्डक वन जाएंगे और वहां झुक-झुककर हम 'ज्यावि लछजि' के पौधे उखाड़-उखाड़कर लाएंगे। ऐ परियो, तुम झुको तथा इन पौधों में गांठ बांधकर झाड़ू बना दो।

हम भगवान् से यह सारा कार्य करने का अधिकार मांगेंगे। यह जो कोमल पौधों की शाखाएं हैं इनको मुक्ता पिरोयी हुई रस्सी से बांधेंगे। भगवान् से ऐसा करने का अधिकार मांगेंगे।

जो बड़ी-बड़ी बैठकें (कमरे) हैं उनके जाले छुटा दो। आज जो यहां राजाओं का सा ठाठ-बाट है उसको नमस्कार। सोने के फावड़े और चांदी के बेलचे से मैंने

पवित्र मिट्टी खोदी है अब उसको बड़े बर्तन में रखकर सिन्धु के पानी में भिगो दो, अब हिन्दुओं के घर की लिपाई करो। भिगो दो, अब हिन्दुओं के घर की लिपाई करो।

लिपाई करने के लिए नेग किसको दिया गया। स्वयं मंगलादेवी तथा नन्दकेश्वर को।

ऐ राजरानी तुमने तो घर की लिपाई की, भगवान करे कि तुम फलो-फूलो, चमेली के फूलों की तरह। वसुदेव राजा के घर में सभी शुभ शकुन हुए, इसीलिए देवकी रानी ऐसे खिल रही हैं मानो बागों में फूल खिले हों।

घर की लिपाई स्वाति नक्षत्र में हुई। भवन (मटन) मार्तण्ड से फूलों के गुलदस्ते आ गए। मिट्टी और पानी में खमीरा उठ गया। हरमुख पर्वत से पवित्र-से पवित्र जल ले आए और उसी से राजा हरिश्चन्द्र के घर का लेपन किया गया।

गंगबल से पानी का मटका ले आए उसी से उस कमरे की लिपाई होगी जिसमें (लड़की, या लड़के जिसका विवाह है) के तेल-फुलेल लगेगा।

गंगबल से शिकारों में गंगा का पानी ले आए हैं और उसमें केसर, कस्तूरी तथा वस्तर-वन से मंगाई हुई 'ज्यावि लछजे' मिला दीं।

शुक्ल पक्ष में अच्छा मुहूर्त देखकर और गरुड़ पर सवार होकर लेपन किया और तुमको ऐसा करते देख लक्ष्मी स्वयं आशीर्वाद देने आई।

शुभकार्य प्रारम्भ : पुष्प तथा बर्तन आदि खरीदने के गीत

(2) *क़ाजी मअसी बान किथ आसी अकीय कोंदे पयनय आय*
अड़िय द्राय खंडियफ़ुटि अडि सोन खासी, राम लक्ष्मन वनवासी गव (टेक)
तिम दय सतवय बारिन आसीय तिमनिय ओसुय सतऋष नाव
सुन्द वारि पत कनि आसान आसी, राम लक्ष्मन वन-वासी गव (टेक)
तिमदय पांचवय बारन्य आसीय तिमनय ओसुय पांडव नाव (टेक)
पांडव राजन्य सन्तान आसीय राम लक्ष्मन वनवासी गव (टेक)
तिमदय त्रिनवय बारन्य आसीय तिमनुय प्योमुत त्रकारण नाव
विशनलूक, ब्रह्मलूक कैलास वासी (टेक) राम०
त्यलिकी बट क्या दर्मी आसीय काश्य दोह करान निराहर
बअश दोह ख्यवान ब्रनसुर खासी (राम०) टेक
अज़िक बट क्या पापी आसी काश्य दोह ख्यवान गारि फलहार

बअश दोह ब्यवान न्यनिबत खासी (राम०) टेक०

त्यलिक्य बट क्या दर्मी असिय सतवोहोर आस्यकरान कन्यदान

तिमनय स्वर्गिक बर वथ्य आसीय (राम०) टेक०

अजिक बट क्या पापी आसीय सतवर्यशन कोरेन अथदारान

तमिनय नरकक्य बर वथ्य आसीय (राम०) टेक

हे कुम्हारिन मौसी, बर्तन कैसे हैं ? एक ही अवां (भट्टी) में पकाए गए हैं ? आधे तो टूटे-फूटे निकले, आधे तो सोने के खोस के समान निकले। वे सातों आपस में भाई थे उन्हीं का नाम सप्त-ऋषि था। सुन्दबारि के पीछे वे रहते थे। वे पांचों आपस में भाई थे, उनका नाम पांडव था। वे पाण्डु राजा की सन्तान थे। वे तीनों आपस में भाई थे उनका नाम त्रिकारण था। वे विष्णुलोक, ब्रह्मलोक तथा कैलास के वासी थे। प्राचीन समय के कश्मीरी पंडित धार्मिक प्रवृत्ति के थे, एकादशी को निराहार रहते थे, द्वादशी को ब्रन सुर (एक अनाज) खाते थे। आजकल के कश्मीरी पंडित पापी हैं, एकादशी को सिंघाड़े का आहार खाते हैं। द्वादशी को मांस-भोजन करते हैं। प्राचीन समय के कश्मीरी पंडित सात वर्ष की कन्या का कन्यादान करते थे, आजकल के कश्मीरी पंडित पापी हो गए हैं क्योंकि सात वर्ष की कन्याओं के लिए हाथ फैलाते हैं। इन्हीं के लिए नरक के द्वार खुले हैं। इस गीत की टेक है—राम लक्ष्मण वनवासी हो गये, और यह टेक प्रत्येक दूसरी पंक्ति के अन्त में आती है।

न्यौता देना—दपुन :

लिपाई के पश्चात् घर के सभी सदस्य अपने सम्बन्धियों के यहां भोजन करने जाते हैं। इस दिन ही वह उनको अपने घर पर विवाह में आने का न्यौता भी देते हैं। इसको (दपुन) कहते हैं। अब धीरे-धीरे ये रस्में कम होती जा रही हैं।

(3) *दपनस क्युतये रथ मंगनोवमय,*

सोव न्यछतुर वुछनोवमय।

दिवकी माजि क्युत रथ मंगनोवमय, सोव॥

महाराज सअबुन होस मंगनोवमय

हस्तिस सोन साज़ करनोवमय।

तथ्य प्यठ कृष्ण महाराज़ ब्यहनोवमय

सोव न्यचतुर वुछनोवमय।

दपने द्रायिखय राज़य बअयी,

ताज़ि तारुख ज़ंगि ओयीये ।
दपने द्रायिखय कोंग कस्तूरी,
वति म्यूलये सत्यनारायण ।
दपने द्रायिखय मंअन्यि बाज़अरी,
हअरी गछ़खय बान्दवन ।
दपने द्रायिखय दछि डख़ि तलिये
अछ दअरि यजमन बअयीये ।
हरि कण्ठमाला लटि अकि द्रायिखय
दपिथ अयिखय बान्दवन ।
दिवकी मअजी लटि अति द्रायिखय
दपिथ आयिखय बान्दवन ।
गुडन्य दीवख राजन च़ायिखय,
तत ख्यथ द्रायिखय नवीदा
तमिपत बबस त माजिनिश च़ायखय
सति सिनि करहय ज़ियाफ़त
नून, च़ोचि, अतगथ तति ह्यथ द्रायिखय
दपिथ त अयिखय बान्दवन
.न्युन च़ोट कारन्दव त तबरदारव
अज़ गय खबर बान्दवन ।

न्यौता देने के लिए मैंने रथ मंगवा लिया है, मैंने न्यौता देने के लिए स्वाति नक्षत्र में मुहूर्त निकलवाया है। मैंने देवकी मां के लिए रथ मंगा लिया है, महाराजा का हाथी मंगवाया है जिसको मैंने सोने से सजाया है। उसी पर मैंने कृष्ण महाराज (जिसका विवाह है) को बिठाया और न्यौता देने के लिए भेजा। ('महाराज़' दूल्हे को कहते हैं।)

ऐ राजरानी तू न्यौता देने जा रही है, जा शकुन अच्छा है क्योंकि तेरा शुभ शकुन चमकते तारे ने किया।

ऐ कस्तूरी के समान सुगन्ध फैलाने वाली—तू न्यौता देने जा रही है। जा, रास्ते में तुझे सत्यनारायण जी मिलेंगे। तू बीच बाज़ार से सम्बन्धियों को बुलाने चली गई और उनको बुलाकर लाई। तू द्राक्ष के समान कीमती-कीमती तकियों का सहारा छोड़ कर चली गई। तू तो कितनी सुन्दर 'जजमानबाई' (यजमान पत्नी) है। तू गले

में हरि की माला लटकाकर न्यौता देने चली और अपने सम्बन्धियों को न्यौता दे आई।

सबसे पहले तो तू देवताओं के घर अर्थात् मन्दिर चली गईं और वहां प्रसाद खाकर लौट आईं।

इसके पश्चात् तू अपने माता-पिता को न्यौता देने गई और वहां से सात प्रकार के व्यंजन खाकर आ गई।

इसके अतिरिक्त वहां से 'नमक', 'रोटियां', 'अतगथ' लेकर आ गई और अपने सम्बन्धियों को न्यौता देकर आ गई। चूल्हा जलाने के लिए कारिन्दों और लकड़हारों ने लकड़ी काटी और उसके शब्द से सारे मुहल्लेवालों को खबर पहुंच गई कि अमुक के घर विवाहोत्सव है।

(अतगथ — मायके से बेटी के विदा होते समय दिये जाने वाले धन-सामग्री आदि को कहते हैं, अत्र-गच्छति)

क्रूल खारून :

इस दिन घर की स्त्रियां घर के द्वार पर चित्रकारी करती हैं। यह चित्रकारी रंगों से, मेंहदी से, की जाती है। इस दिन भी 'वअर' बनाई जाती है। इस अवसर पर महिलाएं गाती हैं :—

(4) *वरि करेथय वरि सोन्दरिये,*
करि सोन्दरियी क्रोसमन क्राव।
वरि करेथय वरि पद्मअनी,
करि पद्मअनी कोसमन क्राव।
गुलाब फोलिमय गुलाब वारे
असि करि वरे लरे प्यठ
क्रूलिय ज़ंगे क्याह क्याह पज़े,
नून वरि तय मोहरा प्रास॥
सुभद्रा माले क्याह क्याह पज़े
वसुदीव राज़न्यन मोहरा प्रास।
क्रूल खारनस जंगि कुस ओये
परमीश्वर त पारवती मअज।
वुगने लरे क्रूल खोरुथय,

लोदुये बवानि त प्रावेहम ।

क्रूल खोरुथय क्रूलय गरिये

नरयन कुन्दनदार कआरिये छिय,

वुगने प्यठची मूलय यअरी,

क्रूलय लरि च्रय बश्ह थय

वसुदीव राज़नि मूलय यअरी

कृष्णजू न्यत बअर थय

क्राजि अनि बरिथ क्रूल मलरय्य

अज़छम लअर शील दिवान ।

रोप पल कांकन्य छनिथय

क्रूल थाजे ब्रारे माजि छि मंजेराथ ।

ऐ सुन्दरी तुने 'वअर' पकाई है । तेरे बाग में गुलाब के फूल खिल उठे हैं । ऐ पद्मिनी जाकर वअर बना ले । आज फूल खिल उठे हैं ।

गुलाब के फूल वाटिका में खिल उठे हैं — हमने अपने मकान पर 'वअर' बना ली है । यह जो चित्रकारी द्वार पर करनी है (जिसको क्रूल कहते हैं) इसके नेग में क्या-क्या देना चाहिए ? इसके नेग में 'नमक', 'वरि' और एक अशरफी देनी चाहिए ।

सुभद्रा (यहां बेटी या बुआ के लिए सम्बोधन है क्योंकि 'क्रूल' का नेग उसी को मिलता है) बेटी को नेग में क्या-क्या चाहिए ? वसुदेव राजा तो एक अशरफी देंगे ।

'क्रूल' बनाने के समय शुभ शकुन किसने किया स्वयं परमेश्वर तथा मां पार्वती आई थी ।

इस पुराने सुन्दर घर पर चित्रकारी करके तुमने सजा लिया है — यह तुमको देवी ने प्रसन्न होकर दिया है ।

तुमने जिन बांहों से चित्रकारी करी वे तेरी भुजाएं सोने के कड़े पहनकर शोभायमान हो रही हैं ।

तुम्हारे मकान के जो ऊंचे-ऊंचे देवदारु के खम्भे हैं उनको तुमने खूब चित्रकारी से भर दिया ।

वसुदेव राजा ने इस मकान के जो चीड़ के खम्भे बनवाए हैं उनको तुमने चित्रकारी से भर दिया ।

कुम्हारिन जो मटके लाई थी उसमें तुमने खूब रंग भरा । देख आज तेरा घर चमक रहा है ।

'लग्न चीरि' (पीली चिट्ठी) के गीत

(5) *लग्नुक दोह खोत गगनअचि राशे, काशी अन्द्रुक ब्राह्मुन आव*
यि कोर वल्लबायि गनिशराज़स आशे (काशी-टेक)
तति आयि डीशित यति कोर कार
रुखमनि लीछनम कृष्नस लग्नचीरि
काशी अन्द्रुक ब्राह्मुन आव।
(दोह—दिवस)

लग्न के दिन गगन (शुभ मुहुर्त्त) की राशि में शुभ लग्न आ गई, काशी के ब्राह्मण 'लग्न चीरि' लेकर आए हैं। यह वल्लभा ने गणेश राजा की आशा में किया। वहां सब देख कर आए और यहां सब कार्य सम्पन्न किया। रुक्मणि ने कृष्ण के लिए 'लग्नचीरि' लिखी है। काशी के ब्राह्मण आये हैं।

मंज्य़राथ (मेंहदी रात) :

(6) *चन्दनवि राजदानि दन्तुव हंग छय,*
राज़ रंग छुय शोल दिवान।
वसुदीव राज़ुन दन्तुव हंग छुय,
गोबुर छुख बलराम ज़ुवोनुय।
कृष्ण महाराजो शोंगुन क्युथ प्रंगाछुय
राज़ रंग छुय शोल दिवान।
सद गुलाबो त अछे पोशो,
गछ हो कोरुमय रंग ख़ंकन।
वसुदीव राजनि रुपये लछो, सुय आव
कृष्णजीयिनिस नेथरस कार।
सोनरन फरमाश गहनय लछे
गछ हो करुमय रंग खंकन
शामय सोन्दरनि रुपये लछे
सूय आव महाराजनिस नेथरस कार
गामन फोरफान खारय लछे
गच हो करुमय रंग खंकन
यज़मनन सोज़नय रुपये लछे

सूय आव रादायि नेथरसकार ।
सच़न फरमाश जोरय लछे
गछ हो करुमय रंग खंकन ।
पथ ही थरे त ब्रोंठ रंगचरिए,
श्याम सोन्दरि कोड मोन्यन गछ,
वसुदीव राज़नि नोशि त कोरि
यिमन छम दीवी आंगन जाय ।
दीवी वरिनख पनने गरे
श्याम सोन्दरे कोड मोन्यन गछ,
नवि लरि कनदरि हारि त च़रे
थरि फोलि गुलाब त नाना रंग पोश ।
यथ लरि शूबनय सोनसिन्द ठठिए
यहय लर शालमार बठि सअप प्यठ
वोस्त करि छान लदि
सोठ कवि च़ीनिय
मान्ज़ि रच़य सोम्बरिथ बअच़य
वअच़य गंगा यमुना सरस्वती ।
जनक राज़न्यन सोम्बरिथ बअच़य
राच़ आयि वसुदेवराजने ।
तुलमुलि अन्दरय रअग्यन्या वअच़ये
वाच़य गंगा यमुना सरस्वती ।
असि कर मंज़िराथ बान्दवन किच़ए
लक्ष्मी दिच़ये नारनी ।
खमीर अन्दरय मंजिहुन्द तर द्राव
तिलि द्राव यलि आव लयनय गाश ।
शारिकाय आंगन मन्ज़िहुन्द तरद्राव
स्युदुय वसुदीव राजुन च़ाव ।
दिवकी माजे सोरुय शर द्राव,
त्येलि द्राव यलि आव लअयनय गाश ।
मंज़ि कुल खोरमय दोदअ सूत्य सगवन,

हर बगवानो टोठयोमो ।
वसुदीव राज़न्य दोदअ सअत्य सगवान,
कृष्णमहाराजो टोठोयो ।
पादशाह बागस तुलमुलि नागस,
त्रागस मन्ज़ खोत मन्ज़े पोश ।
वसुदीव राज़निस पादशाह बागस
फ़ोलिसय गुलि अफ़ताब त हिय ।
कृष्णजुवस दिवगोनस लागस,
त्रागस मन्ज़ खोत मन्ज़े पोश ।
पादशाह बागस दितुमय वनुए
छ़ण्डिथ अनुमय मन्ज़े पोश ।
रगिन्यायि आंगन दियुतमय वनुये
छ़ण्डिथ अनुमय मन्ज़े पोश
वसुदीव राज़नि करबूल्य खानो,
कमि बुहरि वान छि मन्ज़ मेलान
वोल मालि बोहिर्यो ब्यह सानि प्यंजे
कर मालि मन्ज़े लंजे मोल
ब्यह मालि वसुदीव राज़ंनि प्यंजे
अज़ सानि लंजे ब्यूठ बुलबुल त काव
बलराम जियो वाचयो होंजे
कर मालि मन्ज़े लंजे मोल ।
शुपियनि बूहरा अथि हूयथ त वही
बोहरे मन्ज़े मोल सही कर
बोहिर्यो मअन्ज़ अन महाराज गंजे
मअन्ज़ तोल तारच़ि डंजे सूअत्य
सोनसंछ़िज़ तारच़ि रोपसन्ज डन्ड छय
मअन्ज़ तोल होण्ड छय प्रारान च़ेय ।
बोहिर्यो मअन्ज़ अज़ ओबुर त साज़ो
राजसदिस गोबरस छि मन्ज़ेरात
मअन्ज़ खच़ स्वर्गस त मअन्ज़ आयि पानय

मअन्ज़ि कर मेहरबानी ये।
मअन्ज़ि किथ कोण्डिय अन्य अर्जुनदीवन
कथा थवनय त्रयन भवनन ।
वुर लज़ दसिलव त लरि लज़ छानव
चान्य दोह यछिनम नारनी
फुटलयन मअन्ज़ तय दान दान छानवय
खानमाजि करवै मंअज़ेराथ ।
दिलि हअन्ज़ मंअज़ तय असि वअच डअली
रंगमालि वलिथव अडराविथ
वसुदीव राज़न्यन, मन्ज़ वअच डअली
सुभद्रामालि थव अडराविथ ।
मन्ज़ि सूत्य सुरठ ब्यायि रठ पावा,
बावा करुय माजि बवाने ।

(मेंहदी रात को, जिसका विवाह होता है उसके तथा परिवार वालों के मेंहदी लगाई जाती है, गाने होते हैं तथा दावत होती है —'बचनग़मा' चलता है । बुआ मेंहदी घोल कर सबको बांटती है और नेग पाती है ।)

चन्दन से बनी राजधानी के द्वारों की चौखट हाथी के दांतों से बनी हुई है, यह राजाओं की सी ठाठ-बाट शोभा दे रही है । यह वसुदेव राजा का घर है जिसमें यह ठाठ-बाट है । कृष्ण महाराज (अर्थात् बेटा जिसका विवाह होना है) के सोने के लिए राजाओं जैसा पलंग है, यह राजसी ठाठ-बाट देखते ही बनता है । अछि-पोश और गुलाब के समान शोभायमान होने वाले पुत्र मैंने सारे बड़े कमरों में रंग-रोगन करके उनको सजा दिया है । (पुत्र के लिए कहा गया है) तुम वसुदेव राजा के एक लाख रुपये के बराबर मूल्यवान हो । मैंने तुम्हारी शादी के लिए सभी जगह अग्रिम बयाना दे दिया है । तुम्हारी शादी के लिए मैंने सुनारों को भी गहने बनाने के लिए लाखों रुपये दे दिए हैं ।

गांववालों को शाली (धान) आदि के लिए भी रुपये भेज दिए हैं, जजमान ने और लाखों रुपए राधा के विवाह के लिए खर्च किए ।

ऐ सुन्दरी, तू ऐसी प्रतीत होती है जैसे जूही की कली पर रंगीन चिड़िया बैठी हो ।

वसुदेव राजा की लड़कियों और बहुओं ने देवी से बैठने के लिए स्थान मांगा, परन्तु देवी ने उनको अपने घर में ही स्थान दे दिया । इस नए घर की जो

साज-सजावट की वस्तुएं हैं व ये चिड़ियाएं तथा मैनाएं हैं जो तेरी छत और मेरे झरोखों पर चहचहाती रहती हैं। तेरे घर पर जो बेल लटक रही है उसमें गुलाब और भिन्न-भिन्न रंगों के फूल खिले हुए हैं। इस मकान में सोने के खम्भे शोभा दे रहे हैं क्योंकि यह घर शालिमार बाग के नीचे बना है। इस घर को उन कलाकारों ने बनाया जो गृह-निर्माण कार्य में दक्ष हैं। उस पर फिर तुम्हारी कलाकार बहिन ने दीवारों पर चित्रकारी की। इस प्रकार धीरे-धीरे तुम्हारा यह घर तैयार हो गया। आज इसमें तुम्हारे सभी सगे सम्बन्धियों को इकट्ठा किया गया है और गंगा, यमुना तथा सरस्वती स्वयं पधारी हैं क्योंकि आज तुम्हारी मेंहदी रात है। आज इस राजा जनक के घर के सभी लोग इकट्ठे हो गए हैं, आज सभी मिलकर वसुदेव राजा के घर में खुशी मनाएंगे। खीर-भवानी से 'रागन्या देवी' आ गई हैं — तथा गंगा, यमुना तथा सरस्वती भी गई हैं। हमने मेंहदीरात इसलिए मनाई जिससे कि हम सभी बन्धु-बान्धवों को इकट्ठे करके मना लें। लक्ष्मी भी इसी में खुश हैं। यह मेंहदी का पेड़ सुमेरू पर्वत पर उगा था, उस समय चारों कोनों में प्रकाश फैल गया था। इसको देखकर देवकी मां का अरमान पूरा हुआ। वसुदेव राजा ने इस मेंहदी के पेड़ को दूध से सींचा, इसी से श्रीभगवान् तथा शिवजी बहुत खुश हुए थे। राजा के बगीचे में, खीरभवानी के 'नाग' के आसपास और गंगबल सरोवर के आसपास मेंहदी उग आई है। वसुदेव राजा के बगीचे में सूरजमुखी तथा जूही के फूल खिले हैं। कृष्णजी के दिवगोन के दिन ये फूल मैं दूल्हे पर चढ़ाऊंगी। राजा के बगीचे में से मेंहदी के फूल खोजकर मैं ले आई। ये मेंहदी के फूल मैं तुलमुला से खोजकर लाई हूँ। कहने का तात्पर्य है कि मेंहदी खीरभवानी की देवी राज्ञा तथा राजा के घर से आाई है अर्थात् यह बड़ी ही पवित्र है। हे वसुदेव राजा तुम किस पंसारी से मेंहदी के फूल लाते हो ? आज उस पंसारी को घर बुलाकर कहो कि वह हमारे मेंहदी के पेड़ की कीमत बता दे। आज वह हमारे घर की शोभा भी देख लेगा तथा मेंहदी का भी मोल बता देगा। उससे कहो आज इतनी प्रसन्नता का पर्व है कि आज हमारे बाग की बुलबुल चहचहा रही है। शोपियां से पंसारी जो आया है उससे कहो कि वह हमारी मेंहदी का मोल लगा दे। ऐ पंसारी तू महाराजगंज से मेंहदी ले आ और उसको सोने की तराजू में तोल ले।

ऐ पंसारी सोने के पलड़े वाली तराजू जिसमें चांदी की डंडी हो उसमें तू मेंहदी तोल ले। हम सब तेरी ही प्रतीक्षा में बैठे हैं, तू जल्दी कर क्या तुमको मालूम नहीं कि आज राजकुमार की मेंहदी रात है। मेंहदी स्वर्ग से आई है। यह स्वयं आ गई इतनी

कृपा इसने हमारे ऊपर की है। मेंहदी घोलने के लिए बर्तन अर्जुनदेव ले आए जिसकी चर्चा तीनों लोकों में हो रही है।

इस मेंहदी रात के लिए राज ने चूल्हा बनाया है तथा उसी दिन के लिए बढ़ई ने यह मकान भी बनाया है। इस मेंहदी को पोटलियों में से निकालकर, छानकर ढेले-ढेले मसल दो और फिर भिगो दो क्योंकि आज लाड़ली की मेंहदी रात है। यह दिल्ली की मेंहदी है और हमारे यहां भेंट स्वरूप आई है। रंगमाल से कहो कि इस मेंहदी को भिगो दे। वसुदेव राजा के यहां भेंट में मेंहदी आ गई है। सुभद्रा अर्थात् बुआ ने उसको भिगो दिया।

(दिल्ली से तात्पर्य फरीदाबाद से है, जहां की मेंहदी प्रसिद्ध हुआ करती थी।)

दूसरा भाग– मेंहदी लगाना :

(7) *वोथतम दोद मअजी शमादान ज़ालतय*
मन्ज़ि कोन्ड खारतय देवानखान।
ज़ाहम विलि तय रोछमख वखतय,
गोबुर छुख रामजुवुनय
कृष्णस लदिनम पनने बखतय
मन्ज लागय पादशाह तख़्तस प्यठ
पार्वथ परमीश्वर आदन मीलिथ
महाराजस लागव पादन मन्ज़
मअज पार्य लजियो शीरिनिदान कथनय
राज मन्ज़ लागयो वाज अथनय
पकमोण्डय बोरि त वरिबत म्यण्डिए,
श्यामस लागयो ट्रेयण्डिनय मन्ज़।
मन्ज़ लागनस ज़न्हि कुस ओयो, मंगला दीवी त नन्दकीश्वर।

(दोदमअजी—दुग्ध-मां अर्थात् धाय; रोछमख—पाला पोसा; पकमोण्ड—भेड़ के खुर जिन्हें उबाल कर खाया जाता है।)

उठो धाय-मां शमादान जला दो तथा इस मेंहदी के बर्तन को बैठक में ले जाओ। अपने बेटे से मां कहती है तुम अच्छी बेला में उत्पन्न हुए और तब समय भी अच्छा था जब मैंने तुमको पाल-पोस कर बड़ा किया। तुम तो रामजी के सुपुत्र हो। भगवान् करे कि मेरे पुत्र कृष्ण जी को भगवान् अपने भाग्य का ही सब कुछ दे दे।

हे कृष्णजी, मैं तुम्हारे मेंहदी राजा के तख्त पर लगाऊंगी। परमेश्वर के पादों की पूजा करके महाराजा अर्थात् दूल्हे के पैरों में मेंहदी लगायेंगे। ऐ प्यारे बेटे तुम तो इतनी मीठी-मीठी बातें करते हों, मैं तुम्हारे बलिहारी जाऊं। मैं तुम्हारे प्यारे हाथों में मेंहदी लगाऊंगी।

भेडों की टांगें तथा 'वअर' खानेवाले मैं रात को तेरे तलवों-पैरों में मेंहदी लगाऊंगी।

मेंहदी लगाने का शुभ शकुन किसने किया ? स्वयं नन्दिकेश्वर तथा मंगलादेवी ने।

दुरि-बत (भात देना)

(8) *विश्वामित्रनि ५र-बत परान, अर्जुनदेव छुस बत शेरान*

दुरिबत नावे रज़ गयि डिजिए, ब्रोंठ वल कोतर खजिए ह्यथ।

ताति द्रायि सुलि तय रथ्य विमानस,

युत वअच सअनिस थानस प्यठ।

मुख्तवि रज़ तय अतरि हंज़ तोलय,

यिम आयि लोल त बअर मुचरावितोख।

इम दय दुरिबत वाज्यनि आये,

हिन्दोस्तानचि हिन्दयाने

दशरथ राज़नि श्याम सोन्दर कूरी,

रामचन्द्र बोय ओय दुरबत ह्यथ।

तेशस त पुनर्वसस प्यठ प्यायख,

कोरिहुन्द आयख दुरबत ह्यथ

सोनसिन्द गाडिछय रोपसिन्द कन्डिये,

ब्यनिये बोय ओय दुरबत ह्यथ।

विश्वामित्र भात देने के समय की पूजा की रस्म के मन्त्र आदि पढ़ रहे हैं और अर्जुनदेव स्वयं भातइयों के लिए खाना परोस रहे हैं। जिस नाव या शिकारे में भातई आ रहे हैं उस नाव की रस्सी ढीली हो गई। अरे ओ कबूतरों के झुण्ड तुम आगे आ जाओ।

भात चढ़ाने तो हम घर से जल्दी ही निकले और भात चढ़ाने वाले स्थान पर आ गए।

यह सभी लोग मोतियों की मालाएं पहने तथा इत्र लगा-लगा कर आए हैं। ये स्नेह भरे हृदय लेकर आए हैं, इनके लिए द्वार खोल दो अर्थात् इनका स्वागत करो। यह जो हमारे भातई हैं ये हिन्दुस्तान की हिन्दू स्त्रियां ही हैं।

ऐ राजा दशरथ की सुन्दर सुपुत्री तुम्हारे भैया राजा रामचन्द्र भात लेकर आए हैं। तुमने अपनी लड़की को तेषा नक्षत्र और पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म दिया है इसीलिए आज तुमको इतना शुभ दिन देखने को मिला और तुम अपनी बेटी के यहां भात लेकर आ गईं। सोने की मछली में चांदी के कांटे हैं, भाई-बहिन के यहां भात लेकर आया है।

(बत—भात; तेषा—पुष्य नक्षत्र।)

कनिश्रान—जिस कन्या का विवाह होता है उसको विशेष मुहूर्त में विशेष मन्त्रों के साथ स्नान कराया जाता है, इसको 'कनिश्रान' कहते हैं। (कनि—कन्या तथा पत्थर कन्यका स्नान)

(9) *वसुदीव राज़नि होगे वाल्यो,*
रोगे छानस मोहनिव सोज़
वसुदीव राज़नि चन्दनव्य दारो
छानो पीरि हेन वारय गर
सोन संज़ि पीरे रूप सन्दि सनिगवे
वोथी मानारिनये कनिश्रानस
कने-श्रानस सन्ज़ ह्योतूथय
मंज़ ह्योतूथय नारायण
वोशनारि वुज़ल्यव मूलाधारये,
लोल मतिस वअच़अ कनिश्रानस विज़।
पीरि तलय प्यियिय मरेद रखय,
हक आइ बवानी ज़ाफल ह्यथ
कूंजन च़ोन छय कनिक च़ोरय,
मोल तय गोर छुय गोड दिवान
रुखमनि वुशनोवुय गंग वोन्यीय
मधुमति चोनुय करुस कनिश्रान।
आमि दोद सतित गर गर करयो,
ज़ामुति दोद सआत्ती तन मलयो

तनि मलयो गुकोश त ओटुय
सअच़ ओय पश्मीन पोटुय ह्यथ ।
कनिश्रान करिथ त अतलास नअली,
तिम पज़नय मातामाल किय ।
सअच़न अनी सुविथ अतलास
जामय सअच़स क्या पज़ी यनामय ।
वल मालि सअच़ो पख ज़ेरि ज़ेरे
वर्धनस हेरे प्रारान छिय
तनि कम्य दिच़यो कंसन त रामन
जामन वोछ्तम ज़ेबई ।

(दारो—लकड़ी—संस्कृत दारु; पीरि—पीढ़ी; मरेद रखय-मर्यादा रेखा अर्थात् लक्ष्मण रेखा समान; ज़ाफल जायफल; वुशुन-उष्ण उ का व हो गया है ।)

वसुदेव राजा के यहां उसकी बेटी का 'नहान' है इसलिए तुम बढ़ई को खबर कर दो कि वह शीघ्र आकर एक चन्दन की चौकी तैयार करे जिस पर बैठकर कन्या का स्नान होगा । उस चन्दन की चौकी के ऊपर का हिस्सा सोने का होगा तथा पायों के नीचे का हिस्सा चांदी का होगा । कन्या के स्नान की तैयारी जैसे ही प्रारम्भ कर दी वैसे ही नारायण आ गए ।

चौकी के चारों तरफ चूने की रेखा खींची गई ऐसा लगता है मानो लक्ष्मण रेखा खींची गई हो । आज इस शुभ अवसर पर मां भवानी स्वयं जाफल लेकर आ गई हैं । चार कोनों में चार कन्याओं को एक पतला कपड़ा लेकर खड़ा किया गया है जिसके नीचे चौकी पर बैठकर कन्या नहा रही है । तुम्हारे पिता, पुरोहित उस कपड़े के ऊपर से पानी डाल रहे हैं । (ऐसा होता है कि जिसका विवाह होता है उसको चौकी पर बिठाकर चार कोनों में कुमारी कन्याओं को खड़ा किया जाता है जो एक कपड़ा कन्या के सिर के ऊपर से पकड़ती हैं उस कपड़े के ऊपर से पानी डालकर कन्या को नहलाया जाता है) रुक्मिणि गंगाजल तुम्हारे नहाने के लिए गर्म कर रही है । तुम्हारे ऊपर पहले दूध डालेंगे उसके पश्चात, दही से तन को मलेंगे ।

तुम्हारे लिए दर्ज़ी पश्मीने और रेशम के कपड़े सींकर लाया है । यह स्नान करके तुम वह अतलास (एक मंहगा कपड़ा जो राजा महाराजा पहनते थे) पहन लेना जो तुम्हारी ननसाल से आया है । तुम्हारी यह कीमती पोशाक जो दर्जी सींकर लाया है,उसके लिए उसको इनाम में क्या देना चाहिए ? ऐ दर्जी जल्दी-जल्दी आ जाओ

कि इस विवाह की पोशाक की प्रतीक्षा में ऊपर सभी लोग बैठे हैं।

(सअचन—दर्जी, सूचीकार, ब्रजभाषा में दर्जी को सूजी कहते थे; मातामल — मातृमोल अर्थात् मां का पिता, ननसाल का परिवार; गुकुश—गेहूं के आटे की भूसी—गौधूम (गेहूं) कुश—भूसी; ओटुय—आटा। उबटन से तात्पर्य है।)

दिवगोनस लिवुन (दिवगोन पर लिपाई के गीत) :

(10) *गंगबल ओनमय गंगवोनि नोटुय,*
वोत्तम वोटुय लिवोसे।
आकाशि वछखय अमरावतियय,
श्री सरस्वतीयय कनिय लिव।
हरमुख पतकुन श्रूच पोन्य तोरमय
दिवगोनस क्युत लिवनोवमय
आमे दोद सूत्य कनिय लिविसे
ओर यियि ब्रह्मा खिरि वथरोस।
वोशनारि थोवयो पोशिबाग लिविथ
दशरथ राज़ खोत श्रान करिथ।
खारुस तेल मरेद तय डूनिय
ज़नमच यूनी च़जियो।
अरशे वथिमति अर्ज़नदीवो
फर्शस प्यठ कर कलशस जाय।
वसुदीव राज़नि-गुर्य गंड बागस,
बडि ब्राह्मण कर दातस ट्योक
कलशस पूज़ कर अर्ग त पोशो
स्वरिव तप ऋषव सदाशिव ॥ टेक ॥
पूरे खोतखो सिरय प्रकाशो
दूरे करुमय नमस्कार।
च़तिछुख सारनीय प्राणा वेशो ॥टेक ॥
सीतायि ओसुय सोंनसुन्द केशो
खरिथ नीयिहम डन्डक वन।
राम त लक्ष्मण सूत्य-सूत्य डेशो। स्व० (टेक)

कनिखा रछेयि वनक्यव ऋषव
खरिथ त नियहम दण्डखवन ।
युथ न ज़ि हीमाल पर्वत नीशो,
स्वरितव तपऋषिव सदाशिव ॥टेक ॥
वसदीव राज़नि दर्म पुरुषों
जायि जायि लदिथम देवानखान ।
सोठकव्य चीनि तय मोख्यतव्य पोशो । स्व० (टेक)
चित्री फोलहोम यीरिक्योम पोशो
गोशस रटथम जंगलन मंज़जाय
ज़ति छुख सोंतस त नवरेहस खोशो । स्व० (टेक)
आदन फोलहम बादाम पोशो
गोशस रटथम पर्वतस जाय
बर्ग चोन छोत तय म्यव चोन खोशो । स्व० (टेक)
प्यट्य बान फोलहम ज़ति ज़ेर पोशो
सुले फलहोम ज़ेर प्योय नाव ।
म्यव चोन छुयो दिवताहन खोशो । स्व० (टेक)
सूती फोलहम ज़ति चूंट्य पोशो
गोशस रटथम थरि प्यठ जाय ।
ज़ति छुख ठोकुर सबस खोशो । स्व० (टेक)
ज़ेठय फोलहम गोलाब पोशो
गोशस रटथम थरि प्यठ जाय
बरग चोन वजुल तय मुशक चेनि खोशो । स्व० (टेक)
हारय फोलहम ज़ति पम्पोशो
गोशस मंज़ रटथम सरस मन्ज़ जाय
चति छुख राज्ञानियायि त बूतेश्वरस खोशो । स्व० (टेक)
श्रावणय फोलहम दतरिय पोशो
गोशस रटथम छोटस प्यठ जाय ।
ज़ति छुख सदाशिवस खोशो । स्व० (टेक)
बदिरप्यत फोलहम कपसे पोशो
गोशस मन्ज़ रटथम डारस मन्ज़ जाय ।

यरिलूक परिलूक पर्दा पोशो । स्व० (टेक)
आशिद फोलहोम जाफिर पोशो
गोशस मन्ज़ रटथम बागस मन्ज़ जाय
ज़ति छुख ठोकुर सअबस खोशो । स्व० (टेक)
कार्तिक फोलहोम ज़ति कोंग पोशो
गोशस रटथम पोंम्पर जाय
चति छुख ब्राह्मण ज़न्मस खोशो । स्व० (टेक)
अनन्तनाग वते लगयो गोशो
ढायि वहीर्य बट्टन मलमास
चाकबल पितरन मोकलेय त्रेशे
स्वरिव तप ऋषिव सदाशिव ॥टेक ॥
शुपियन वते लगयो गोशो
दिगामि नागस दिवया जान
कन्यकन त बालकन मोकलेयि त्रेशो
स्वरिव तपऋषिव सदाशिव ॥टेक॥

मैं गंगबल से गंगा के पानी से भरा हुआ मटका ले आई । इस पानी से हम उत्तम कमरे की लिपाई करेंगे । (यहां उत्तम कमरे से तात्पर्य उस कमरे से है जिस कमरे में देवपूजन होगा ।) आकाश से अमरावती उतर आई है । ऐ सरस्वती, तुम मकान का सबसे ऊपर वाला कमरा ('कानीय') की लिपाई करो । मैं हरमुख के पीछे से पवित्र पानी लाई हूँ । देवपूजन के लिए इस पानी से लिपाई करो । मैं दूध से सबसे ऊपर वाले कमरे की लिपाई करवाऊंगी, सभी सेवा करने वाले इकट्ठे हो जाओ । दूध से सबसे ऊपर के कमरे की लिपाई करके उसमें ब्रह्मा जी आयेंगे । हम ब्रह्मा के पैर धोकर साफ करेंगे । हम फूलों के बगीचे को साफ सुधरा करके रखेंगे । दशरथ राजा (अर्थात् जिजमान) स्नान करके आ गए हैं । अब तुम तिल, चूना तथा अखरोट ले आओ (ये सब वस्तुएं हवन के काम में लाई जाती हैं ।) आकाश से उतरे ऐ अर्जुनदेव तुम नीचे धरती पर कलश के लिए स्थान बना लो । वसुदेव-राजा ने अपने घोड़ों को अपने बगीचे में बांधा है । ऐ बड़े ब्राह्मण, तुम दाता के अब टीका लगा दो । कलश की पूजा अर्घ्य और फूलों से करो । ऐ तप ऋषियो, तुम सदाशिव का नाम जपो (टेक) ऐ सूर्य, प्रकाश के देवता तुम पूर्व दिशा से चढ़ते हो, मैंने तुमको दूर से ही नमस्कार किया । तुम सभी में प्राणों का संचार करते हो । सीताजी के सोने के केश

थे। उनको दण्डक वन ले गए। राम तथा लक्ष्मण साथ-साथ दिख रहे थे। हे वसुदेव राजा, धर्म के पुरुष, तुमने स्थान-स्थान पर दीवानखाने बनवा लिए हैं। हे 'यीर क्योम' (इराकुसुम) तुम चैत्र के महीने में खिले और जंगलों के एकान्त में बैठे रहे। तुम 'सोंत' और 'नवरेह' से खुश रहते हो। ('सोंत' और 'नवरेह' चैत्र के महीने में ही होते हैं) हे सप्तऋषियों तुम, सदाशिव जाप करो (टेक)। सबसे पहले बादाम के फूल तुम खिले और तुमने हारी-पर्वत के बगीचों में अपना स्थान बना लिया। तुम्हारे पत्तों का रंग हल्का होता है परन्तु फल बड़ा अच्छा होता है। स्व० (टेक)

हे खुबानी के फूल तुम भी तो पहले खिले परन्तु तुम्हारा नाम 'चे़र' क्यों पड़ा, (कश्मीरी में देर के लिए भी 'चे़र' शब्द है।) तुम्हारा फूल देवताओं को बहुत पसन्द है।

चैत्र के ही मास में हे सेब के फूल तुम भी खिले। तुमने तो अपना एकान्त स्थान पेड़ पर ही बना लिया। तुम्हारे पत्ते हरे हैं तथा तुम्हारा फल अच्छा है।

बैसाख के महीने में हे, कौसम फूल तुम खिले और तुम शाखा पर बैठ गए। ठाकुरजी की पूजा में तुमको चढ़ाने से ठाकुरजी खुश हो जाते हैं। स्व० (टेक)

जेठ के महीने में ऐ गुलाब के फूल तुम खिले और तुम भी टेहनी पर ही बैठे रहे। तुम्हारी पंखुड़ियां लाल-लाल होती हैं और बड़ी अच्छी महक है तुझ में, ठाकुर जी पर चढ़ाने से ठाकुरजी खुश हो जाते हैं।

आषाढ़ के महीने में हे, कमल के फूल तुम खिले। तुमने अपना स्थान झील में बना लिया। तुम भी राज्ञन्या भगवती और भूतेश्वर भगवान को बहुत पसन्द हो। श्रावण के महीने में हे, धतूरे के फूल तुम खिले तुमने अपना स्थान कूड़े के ढेर पर बना लिया। तुम शंकर भगवान् को बहुत पसन्द हो। भाद्रपद में हे, कपास के फूल तुम खिले। तुमने अपना स्थान खेतों में बना लिया। इस लोक में तथा परलोक में तुम पर्दे का काम करते हो। आश्विन के महीने में हे गेंदे के फूल तुम खिले और तुमने बगीचे में अपना स्थान बना लिया। ठाकुर जी को तुम बहुत पसन्द हो।

कार्त्तिक मास में हे, केसर के पुष्प तुम खिले और तुमने अपना स्थान पाम्पोर में बना लिया। तुम ब्राह्मण जन्म पाकर बहुत ही प्रसन्न हो। अनन्तनाग के रास्ते में बड़ी रौनक हो गई है क्योंकि ढ़ाई साल के बाद मलमास आ गया है इसलिए मट्टन में भीड़भाड़ हो गई है। (अनन्तनाग के रास्ते में मट्टन पड़ता है।) जहां मलमास के महीने में पितरों को तर्पण देना है क्योंकि पितर प्यासे हैं —हे सप्तऋषियो, तुम सदाशिव का जाप करो। (टेक)

शुपियान के रास्ते में भी रौनक हो गई है क्योंकि वहां 'दिगामि'[1] तीर्थ बड़ा अच्छा है। वहां कन्याओं और बालकों को तर्पण देना है क्योंकि वह वहां प्यासे हैं। (इस प्रसिद्ध गीत में चैत्र से लेकर कार्तिक तक का, पितृपक्ष तक का वर्णन है।)

1. 'दिगामि'-यह शुपियन के रास्ते में पड़ता है। यहां एक 'नाग' है। इस तीर्थ का महत्व इसलिए है क्योंकि यहां जिनकी असमय मृत्यु होती है, जैसे - बच्चे, जवान उनका श्राद्ध भी श्रावण शुक्ल द्वादशी को होता है।

कोरि दिवगोन (लड़की के विवाह पर देव-पूजन)

(11) *वसुदीव राज़न्य कज़ाख तीरी, पीरिप्यठ करयय कन्य संस्कार*
वुडन्य नालस किनर्थ मलयय, कूर्य करयय कन्य-संस्कार
दान्तन सूती सुम कडयय, रुमन नार्यवन गंडयय।
सामान कोरमय गोजेवारे डेजिहोर गोरुमय विजिब्रारे।
सतन मोहरन डेजिहोर कस कोरि क्युतये, यस कोरि गुम डल्य बुम्ब खंजरस।
सतन मोहरन डेजिहोर दितुय बब गोन्दरी, छाविहम सोन्दरय त करय हो हो।
राजवार डेजहोरिस ताज गोय थोदुये, लदुये नारान त छावेहम।
आयसतानस करुमय साये, वुनिकेन्स पज़नय वायन वअल्य।
अथ्यहृयथ शमशेर थालवाय ज़ोरय, तमिसूत्य असरन वरि अन्धकार।
दक्ष प्रजापतने तस उमब्रारे हारे छु कन्य संस्कार।
यान्य आव शशिपाल रुखि कुमारे तान्य श्यछ सूज नारायनस
कृष्णजू ब्रोंठ द्राव तस कुमारे, हारे छु कन्य संस्कार।
अथ दारिथ वर मंगान शारिकाए, वाद पंकज ओस पीताम्बर
रूम प्यठ गुम वथ्य तस उमब्रारे हारे छु कन्या संस्कार।
बड मज्य लदि प्रेपुन थालस बासमत पुलाव त छत्रय हार
वसदीव राज़नि काबिल गोबरो हाबिल प्यथ थव अनयकन
ब्राह्मणस दिल मालि वस्तर वासा आसिनय रूमय ऋषिनुय आय
गोरस पोंबुर त गौरमालि पोटुये लालो त्रुट छो शोल दिवान।

(कज़ाख तीरी — कज्ज़ाकों के बाण समान दीर्घ-काय तन्वंगी कन्या। गोन्दरी — प्रिय। संस्कृत गुन्द्र, प्राकृत गुंद, कश्मीरी गोन्दुर।)

हे वसुदेव राजा की सुन्दर पुत्री पट्टे पर बिठाकर तुम्हारा कन्या-संस्कार करूंगी। तेरे इस कीमती फिरन के गले में किनारी लगाऊंगी। ऐ पुत्री तेरा 'कन्या-संस्कार' करूंगी। हे मेरी प्रिय पुत्री, तेरे सारे शरीर को 'तोसा' (पश्मीना का एक विशेष प्रकार जिसका पूरा शाल अंगूठी में से निकल सकता है) कपड़े से ढक दूंगी। तेरे सिर पर मैं 'कलपुश' पहनाऊंगी (कलपुश एक विशेष प्रकार की ज़री की टोपी होती है जो विवाह में पहनाई जाती है, उसको विशेष प्रकार से सजाया जाता है। पूरी टोपी सजाकर जब तैयार हो जाती है तो उसको 'तरंग' कहते हैं।) और गले में चन्दन की माला पहनाऊंगी। शहतूत की डंडी से तेरी मांग निकालूंगी और फिर तेरे बालों को कलाये से बांधूंगी। (कश्मीर में जब

'कन्या-संस्कार' होता है तो 'दिवगोन' (देवपूजन) के दिन कन्या के बालों में शहतूत की डंडी से मांग निकाली जाती है और फिर कलाये से बाल बांधे जाते हैं। फिर लग्न के दिन तक वह न बालों को धो सकती है न उनमें कंघी कर सकती है, न वह कलाया खोल ही सकती है।) गोजवारा से मैंने तेरे ब्याह का सामान खरीदा तथा विजविहारा में मैंने तेरा 'डेजिहोर' बनवाया। (वहां के सुनार प्रसिद्ध थे) सात मोहरों का डेजिहोर किस कन्या के लिए है? उसी कन्या के लिए जिसकी खड्ग जैसी भौंहें पसीने से भीगी हैं। इस समय गानेवाले होने चाहिये। हाथ में थाली लेकर तलवार से बजाओ, जिससे असुरों पर अंधेरा छा जाय।

ऐ बाबा की प्यारी तेरे बावा ने तुझे सात मोहरों का डेजिहोर दिया। ये गहने तुमको पहनने नसीब हों। ऐ सुन्दरी मैं तुम्हें स्नेह करूं। मैंने तेरे सिर पर साया कर दिया, राजरानियों जैसा डेजिहोर तुम्हारे लिए बनवाया। उस डेजिहोर के ऊपर का हिस्सा थोड़ा ऊंचा बन गया है। नारायण करे कि यह गहने तुमको पहनने नसीब हों। मैं वर के लिए आई थी और मैंने ब्याह पक्का कर दिया। अब तो इस समय गाने बजाने वाले होने चाहिए। दक्षप्रजापति की उस उमा का आज 'कन्या-संस्कार' है। जैसे ही रुक्मिणि के लिए शिशुपाल आ गए वैसे ही हमने नारायण को संदेश भेज दिया। कृष्ण भगवान स्वयं उस कन्या के आगे-आगे निकले। आज कन्या का संस्कार है। हमने हाथ बढ़ाकर शारिका देवी से वर मांगा और उन्होंने हमको पीताम्बर दिया। उमा ऊपर से नीचे तक पसीने-पसीने हो गई। आज मैना का कन्या-संस्कार है। बड़ी मां भगवान पर प्रसाद भोग चढ़ाने के लिए भोग थाली में भर दें, प्रसाद में बासमती चावल का पुलाव है, एक छत्र तथा हार भी रख दे। ब्राह्मण अर्थात् पुरोहित के लिए कपड़े, पुरोहित की पत्नी के लिए गर्म कपड़े रखना। भगवान करे कि तुम्हारी रोमऋषि जितनी आयु हो।

मसमुचरावन-वंअख पारन्य (केश खोलने तथा संवारने के गीत)

(12) *बाज़ार ओनमय फलिल त हिये, कूर्ये वार-वार मलये*
बाज़ार ओनमय फलिल त हिये यूरिहय यी चोन अर्जुनदीव।
लन्दन यलि गयस चंदनहट तारमय
तथ हय गरनावमय कंगने।
कंगन्या अनिमय छानय वानय,
मोक्तदानय वोरोसे।

वसुदीव राज़नि छानय वानय,
कूर छल दिवकी माजे हन्ज़ ।
रुखमनि अनिनय गछिथ त पानय
मोक्तदानय वोरोसे ।
कंगने चाने सुनसन्ध बरिये,
हर्यल्यूखय कूरि विवाहकार ।
चन्दनवि कंगने ज़ठ वालये
अठ पारये पाटिवय ।
रुम छिद ज़ाविल्य सुम स्यज़ द्रायिय,
शारिका आयय वांख पारने ।
वाअंकह पारये रुमय रुमय
कवय छिय गुमय गल्य गछान ।
वाअंकह पारये लबे लबे,
दछिनि दारि त लबे प्यठ ।
वाअंकह पारअये कअर थव थज़ये,
टोठेये ब्रार त ववअनी ।
वाअंकह पारोये मीनिथ गज़य
मोक्तय रज़य वोरोसे ।
निच-निच जालि पाटिव पारयय
तारयय दिलि हुन्द बुहरी साज़
वसुदीवराजुन पत-पत सारयय
रोगनि कुलचि त दोगमुत माज़
सदोह सदोह वारिव चअनि
गरिहय तारय दिलि हुन्द बुहरी साज़ ।
सोन संज़ि कंगने रुपसन्द्रय बरिये
परिये वांअक पारये ।
वसुदीवराज़नि कूर सौंदरिये
पठिनय ड्यक तय गछिनय वार ।
नाल्य दिमय खाल्यमाल वोडि दिमय ज़रिये
परिये वांअक पारये ।

मैं बाज़ार से तुम्हारे लिए खुशबूदार तेल और फुलेल ले आई, जिसे तुम्हारे सिर पर धीरे-धीरे मलूंगी। बाज़ार से खुशबूदार तेल और फुलेल ले आई। तुम्हारे अर्जुनदेव यहीं आयेंगे। जब मैं लन्दन गई थी तब मैं वहां से चन्दन की लकड़ी ले आई, उसकी मैंने कंघी बनवाई। मैं यह कंघी बढ़ई की दुकान से ले आई हूँ, अब इसमें मुक्ता के दाने पिरो दो। ओ देवकी मां की लाड़ली पुत्री यह कंघी तो वसुदेव राजा के बढ़ई वाली दुकान से मंगवाई है। रुक्मिणि ने स्वयं जाकर यह कंघी खरीदी है; इसमें मोती के दाने पिरो दो। तुम्हारी कंघी के सोने के दांत हैं, भगवान् ने ऊपर ही लिख दिया कि तुम्हारा विवाह होना है। चन्दन की कंघी से मैं तुम्हारे बाल सुलझा दूंगी तथा तुम्हारे कानों में, मैं रेशमी धागे की 'अठ' पहनाऊंगी। तुम्हारे बाल महीन हैं, इसलिए मांग एकदम सीधी निकली। शारिका देवी स्वयं चुटिया गूंथने आ गई। मैं तुम्हारी चुटिया एक-एक बाल अलग करके बनाऊंगी, तुम क्यों पसीने-पसीने हो रही हो। मैं तुम्हारी चुटिया बालकनी में जो दाईं तरफ खिड़की है उस पर बैठकर बनाऊंगी तथा सिर के दोनों तरफ नाप के बनाऊंगी। उसमें मोतियों की लड़ी पिरो दो। तुम्हारी, मैं छोटी-छोटी झालरदार चुटिया बनाऊंगी तथा उसमें रेशम के धागे से बना चुटीला बांधूंगी। मैं तेरे लिए दिल्ली से सिंगार का सामान मंगाऊंगी। वसुदेव राजा के यहां के लिये मैं 'रोग़नी कुलचे' तथा कूटा हुआ क़ीमा लाऊंगी। सोने की कंघी में चांदी के दांत हैं ऐ परी, तेरी चुटिया बांधूंगी। वसुदेव राजा की सुन्दर पुत्री भगवान् करे कि तुम्हारा भाग्य बड़ा उज्ज्वल हो। तुम्हारे पहनने के लिए खुबानी की मिगी की माला तथा सिर पर पहनने के लिए ज़री की टोपी दूंगी। हे परी मैं भी तुम्हारी चुटिया गूंथूंगी।

('लन्दन से चन्दन' तुक के लिए भी है; भगवान ने ऊपर—विवाह विधाता द्वारा निश्चित होते हैं; अठ-विवाहित नारियों द्वारा कान में पहनने के सुहाग—आभूषण, दजहेरु का एक-भाग; रोग़नी कुलचे—चिकनाई युक्त कुलचे जो चाय के साथ खाये जाते हैं; माज़-मांस; खुबानी की मिगी की माला शुभ मानी जाती है।)

दिवत्-गूल्य (देव-पूजन) के लिए एक विशेष प्रकार के चावल के गोले बनाये जाते हैं जिनको पूजा के पश्चात् नदी में विसर्जित किया जाता है, इन्हीं चावलों की गोलियों को 'दिवत् गूल्य' कहते हैं, इनको देवताओं को अर्पण किया जाता है। कश्मीर में दिवत्-गूल्य के भी लोकगीत हैं।

दिवत्-गूल्य

(13) *दिवत् गूल्यन सन्ज़ ह्योतु थय*
मन्ज़ ह्योतु थय परमेश्वर
दिवत् गूल्यन थाल च़ोनुथये
लाल ज़ोयय रंगमाली ये
नमिथ तुलथय दिवतय गूलिय
समिथ वसवय यारबल
दिवत् गूल्यन अलुत त वलुत
फलुत त फ्रेचर दियेनय
दिवत् गूल्य कडिथय बढि दरवाज़य
राज़य गणेश सूतिय ह्यथ
दिवत गूल्यन ब्रोंठ-ब्रोंठ च़ोंगुय
पत-पत ब्रह्मा वीद परान
ज़ाजि पुलहोर छिन अडिनय खोरन
राज़रन्य सान्य वस यारबल
वसदीव राज़नि संग शावरिये
लूक लछ वोथुये यारबल
राज़रन्य साने मुक्तहार हटे
रान्य वछ पअनिस च़टने
दिवत् गूल्यन नावद मीशे
लशे-लशे बअगरज़े
वसदीव राज़नि दान्तिव डबे
अस्य वअत्य पनने लबे तल
बताह करुथ मल्य माजी प्रिछिथ
दरबार्य बाजिन ज़ियाफत
बत विज़ि बवान्य गय खुशहालो
अंगन वलुनय दुशालो
बताह करुथ मालि बागन अन्दर
आगन करथ मालि ज़ियाफत
ट्यकिस मन्ज़बाग छुय मालि चिवन
ज़िवन करुथ मालि ज़ियाफत

भगवान् का नाम लेकर तुमने 'दिवत्-गूल्य' बनाना प्रारम्भ किया। दिवत्-गूल्य को तुमने थाली में रखा, हे रंगमाली (नाम है) तुम्हारे तो लाल पैदा हुआ है (जिसका आज दिवगोन है) तुमने झुककर दिवत्-गूल्य उठाए। चलो मिलकर नदी के किनारे उतरें (इन दिवत्-गूल्यों का विसर्जन करने) ये दिवत्-गूल्य बड़े शुभ हैं, भगवान् करें कि ये तुम्हारे लिए भी शुभ सिद्ध हो। गणेश जी को साथ में लेकर इन दिवत्-गूल्यों को लेकर तुम बड़े दरवाज़े में से निकली। इन दिवत्-गूल्यों के आगे-आगे दीपक है तथा पीछे-पीछे ब्रह्मा वेद पढ़ते हुए जा रहे हैं। 'जाजि पुलहोर' को आधे ही पैरों में पहनकर हमारी राजरानी यारबल उतर के गई। हे वसुदेव राजा की संगिनी एक लाख लोग नदी के किनारे उतरे हैं; हमारी राजरानी के कंठ में मुक्ताहार है, वह नदी के किनारे पानी को काटने उतरी है। (जब 'दिवत्-गूल्य' के विसर्जन के लिए नदी पर उतरते हैं तब पूजा होती है और चाकू से पानी को काटने की प्रथा है, कुछ मन्त्र पढ़े जाते हैं) चाकू से पानी काटना विघ्न-बाधाओं के निवारण का टोटका है जो कल्याण-कामना के लिए किया जाता है। 'दिवत्-गूल्य' मिश्री जैसे बहुत मीठे हैं इनको थोड़ा-थोड़ा करके सभी को बांटना। वसुदेव राजा की एक हाथीदांत की गौख है, हम वहीं अपने घर की दीवार के नीचे पहुंच गए हैं। तुमने अपने मां-बाप से पूछकर सभी को भात खिलाया जिसके साथ तुमने ऐसे व्यंजन खिलाए जो बड़े-बड़े राजाओं के दरबारों में चलते हैं। उस भात के समय मां भवानी बड़ी प्रसन्न हो गई और उन्होंने तुम्हारे अंगों पर दुशाला ओढ़ा दिया। इस 'भात' के खान-पान का प्रबन्ध तुमने बड़े-बड़े बगीचों में किया है जिसमें तुमने (भांति-भांति प्रकार के) व्यंजन खिलाये।

(फ्रेचर या फ्रूच—अच्छा या मंगलमय; जाज़ि पुलहोर—ज़री लगा हुआ मूंज का जूता; अडिनय ख़ोरन—आधे पैरों अर्थात् पैरों का ज़मीन पर न पड़ना।)

तरंग गंडनस के गीत ('तरंग' बांधने के गीत)

कश्मीरी पंडितानियों की वेशभूषा का एक मुख्य अंग, तरंग है। यद्यपि आज इस प्रकार की वेशभूषा का प्रचलन नगरों में कम हो गया है, तथापि ग्रामों में आज भी कश्मीरी पंडितानियां फिरन पहनती हैं तथा सिर पर तरंग बांधती हैं। तरंग एक विशेष प्रकार से बांधा जाता है। एक गर्म टोपी होती है जिसे 'कलपुश' कहते हैं, वह पशमीने की होती है। उसके ऊपर के सिरे पर ज़री (जो शुद्ध चांदी से बनती है) का आधा भाग बना होता है। इस टोपी को आधे माथे तक रखते हैं, ऊपर से कलफ़

लगी हुई मुड़ी हुई पट्टी को कई परतों में बांधा जाता है। पीछे से एक 'ज़ूज' लटकाई जाती है। 'ज़ूज' जाली तथा सुनहरी धागे (तिल्ले) से दोंनों किनारों पर बुनी होती हैं। इसको कलपुश के ऊपर रखा जाता है। उसके ऊपर पूच रखी जाती है तब इसको विशेष प्रकार से बांधा जाता है। पूरे को मिलाकर तरंग कहते हैं। जब लड़की का विवाह होता है तब उसके सिर पर तरंग बांधा जाता है। इसका बनाव-शृंगार भी विशेष ही होता है। इसके बांधने के समय लोकगीत गाने की प्रथा है। सामान्य पहनावा यही है, विवाह के लिए प्रस्तुत की जाने वाली कन्या के तरंग में 'पूच' नहीं होता है।

(14) *सुमन कपसा ववनय आय*
सुबद्राये हन्ज़ यछाये।
शबनम लवि सूत्य खसिथ आये
सुबद्रायि-हन्ज़ि यछाये
यति गयस वोवर्य वान अथ ह्यथ
प्रचितय तति करनोवमय तरंग त पूच़।
वोवुर्य ओनुनय तुरदार दोब्य ओनुनय मायदार
बक्तावार कूरी गंड तरंग त पूच़।
वोवुर्य ओनुनय तुरदार दोव्य ओनुनय मायदार
बक्तावार कूरी गंड तरंग त पूच़।
माज्य बवानि आयि मन्ज़ बवसरिए,
महारिने क्युत ज़रिये तरंगा ह्यथ।
मोहरा छलवन्य वार वार छलिज़ि
ओबुर त मायि करज़ी आदि अन्त तान्य
दोब्य ओनुय तरंगाह, गाह लोगुय त्रावने
ताह करुये मांजि बवाने।
तरंगस चानिस ताह गव थोदुये
गोंडये बवानि त ड्यक बडास।

(तुरदार— तुर्रेदार; मायदार— कलफ लगा हुआ; बक्तावार— भाग्यवती; ओबुरदार— अभरक वाला।)

अच्छे मन से कपास को उगाया गया। ऐसा सुभद्रा की इच्छा से हुआ है।

ओस की बूंदों से यह कपास उग आया है । यह भी सुभद्रा की इच्छा से ही हुआ। इस कपास को लेकर मैं जुलाहे के पास गई । उससे पूछकर फिर इसका 'तरंग' और 'पूच' बुनवाया । जुलाहा तुर्रेदार पूच बनाकर लाया, फिर धोबी ने इस पर कलफ लगाया । हे भाग्यवती लड़की, तुम यह तरंग और पूच बांध लो । दुल्हन, भवसागर से मां भवानी तुम्हारे लिए ज़री का 'तरंगा' लेकर आई । इसकी धुलाई के लिए एक मोहर दी है, इसको धीरे-धीरे धोना तथा ऊपर से नीचे तक 'ओबुरदार' कलफ़ लगवाया । धोबी जो यह तरंग ले आया है यह तो झिलमिलाने लगी है, इसकी तह स्वयं मां भवानी ने की । तुम्हारे तरंगे की तह ऊंची हो गई, यह मां भवानी ने स्वयं आकर तेरे सिर पर बांधी है । भगवान् करे कि तुम्हारा भाग्य उज्ज्वल हो ।

(बवसरिए—भवसागर; थोद—ऊंचा, ऊपर; ड्यक बअड़ —उन्नत ललाट हो आशीर्वचन भी है ; सुमन — शुद्ध मन से ।)

मेंहदीरात के दिन वर/वधू की माता को नए वस्त्र पहनाये जाते हैं तब स्त्रियां यह मंगलगान गाती हैं :–

(15) *अनिगटि कन्यन सअत्य करिथ नालमतिये,*
श्री सरस्वतीये यारबल वस ।
यारबल खचखय श्राना करिथ,
द्याना स्वरिथ बरथा सुन्द
दंडखवन खचख़य नअरी सअरी,
बडि बयन्य हअरी तरंगा गन्ड ।
तरंगस चानिस ताह गव थोदुये,
वनतय मालिन्यव लोदुये क्याह
आकाश वछ़ खय यन्द्रगर च़ायिखय
आयिखय रुच़-रुच़ कामि करने ।
दिवकी मअजी हुरि बीठखय,
मुरि ह्योतू थम रत्नय फल
कृष्णानि ,ज्यनय वर्गस च़ायिखय,
आयिखय रुच़ रुच़ कामि करने ।
थ्ययकवुन्य फ्यरन मुख क्थ्यि द्रायव
सुख , सअत्य यज़मन बअयी ये ।

चिकन्य फिरन थ्यकन बअयी,
अज्य यछ नारान्य यज़मन बाय ।
ट्यक्य पूच़ चाने पयट किनअरी
बडि बयन्यि हारि दिवगोन दिम ।
दिवकी माजे प्यठ किनअरी,
मोत्तह छुस डुलन त सोन छुस शोख ।
कृष्णनिस दिवगोनस गंडथय सर्दारी
बडि ब्यन्यि हारि दिवगोन दिम ।
ट्यक्य पूच़ चाने अर्तलि वथर
शथर प्ययनय खोरन तल ।
पोशतह मअजी पोशतह छुयय
ठठरदार दोरन त ज़ाल्य जुमकन
छेखय मअजी छेखय छुयय,
नोश छख हरिचन्द्रराज़नी ।
अबलय अनिथम मोत्तय थअजी,
शाबाश शारदा मअजीये ।

(अनिगटि —अन्धकार; नालमत— भेंटते हुए; यन्द्र—इन्द्र ।)

हे सरस्वती ! प्रातःकाल अंधेरे में ही पत्थरों का सहारा ले-लेकर (थामकर) तुम नदी के किनारे उतरीं । (यहां सरस्वती माता के लिए सम्बोधन है ।) यारबल से तुम स्नान करके आ गई तथा अपने पति (ब्रह्मा) का ध्यान किया । सभी को लेकर तुम दण्डक वन चली गई । हे मैना, (यह भी सम्बोधन है) तुम अपनी बड़ी बहिन के तरंगा बांधो। तुम्हारे तरंगे की तहें ऊंची हो गई हैं । बताओ तुम्हारे मायके वालों ने क्या-क्या भेजा है ? तुम आकाश से उतरकर इन्द्र के घर में घुस आई हो । तुम यहां उत्तम-उत्तम कार्य करने के लिए आई हो । हे देवकी मां तुमने कृष्ण रूपी रत्न को जना तथा उसको अपने आंचल में पाला-पोसा । कृष्ण को जन्म देने से तुम उच्चपद पर आसीन हो गई । (उच्च पद से तात्पर्य है सम्मान होने लगा है) तुम यहां शुभ-शुभ कर्म करने आई हो । कृष्ण को जन्म देने से तुम इतनी सुखी तथा सुन्दर हो गई हो कि यह जो तुमने प्रशंसा के योग्य फिरन पहन रखा है, तुम्हारे ऊपर (मुख पर) यह खिलने लगा है । हे श्रीमती जजमान आज तुम पत्थरों तक को उलट-पुलट कर सकती हो । तुम तो आज विष्णु की पत्नी के समान लग रही हो । तुम्हारी जो

'ट्रेयक्य पूच'[1] है उसके ऊपर किनारी लगी हुई है । तुम बड़ी बहिन से कह दो कि वह 'मैना' को देवपूजन करा दे । देवकी मां की 'ट्रेयक्य पूच' में ऊपर से किनारी लगी हुई है उस किनारी में सोना तथा मुक्ता लगा हुआ है । हे बड़ी बहिन तुम 'हारि'(मैना जिसका विवाह है) का देवपूजन करा दो । तुम्हारी 'टेयक्य पूच' जो है उसमें 'अर्तलि के पत्ते' लगे हुए हैं । तुम्हारे जो मित्र हैं वे 'गुलिम्यूठ' (भेंट के रुपये) लेकर आए हैं । देवकी मां के पास 'अर्तली के पत्ते' हैं, शत्रु तुम्हारे पांवों में पड़े । तुमको मां 'पोशतह' हो अर्थात् बधाई हो । यह जो तुमने मूल्यवान वस्त्र और झुमके पहने हैं, उनके लिए तुमको 'छ्येयख' (नए कपड़े पहनने पर कश्मीरी में 'छ्येयख'कहते हैं) तुम राजा हरिश्चन्द्र की (कुल -वधू हो), नोश हो । हे देवकी, मां तुम ढ़ेर सारे मुक्ता लाई हो । धन्य हो (शाबाश) मां शारदा ।

नोटः—

(अ) (कश्मीरी में आरम्भ की 'इ' य में बदलती है यथा इन्द्र का यन्द्र; रुच -ऋत शुभ) ।

(ब) वर या वधू के पिता को यज़मन (जिजमान अर्थात् यज्ञमान तथा माता को यजमन बाइ (श्रीमती यज़मान) कहा जाता है ।

यारवल—नदी घाट; हारि—मैना, शारिका— भवानी ने शारिका रूप धारण करके जलोद्भव राक्षस का वध करके कश्मीर घाटी को आवास योग्य बनाया था; अर्तलि-सुनहरा पत्र (कागज); गुलि म्यूठ-गुलि अर्थात् हाथ, म्यूठ अर्थात् मीठा तथा पुचकारना, तात्पर्य है हाथ चूमकर भेंट देना; पोशतह—दीर्घ आयु होना, बधाई देने का मुहावरा है ।

बारात के स्वागत के गीत

(16) *पअरि पअरि लगितोस रथ सवारे,*
महाराज़ राज़कुमारे आव ।
बय ज़ोल म्यत्रन दयने ज़य सूत्य
दयि संज़ि नय मन्ज तोता व्राव ।
हीमाल परवतनि वन हारे । महा० (टेक)

1. विवाह के समय स्त्रियां, शुभ शकुन के संकेत रूप में 'तरंग' के ऊपर या साड़ी पर सुनहरे काग़ज का या काग़ज़ पर सिन्दूर से शुभ चिह्नों के लेख से युक्त एक प्रतीक लगाती हैं ।

सअनिस पोश बागस आव गोशा
पोशस प्यठ पोशनूला ब्यूठ ।
रोश च़ाव पोशनूल मन्ज़ पोशवारे । महा० (टेक)
पम्पोश पादन कुछ साद शाहज़ादा
बागस मन्ज़ नागरादा द्राव ।
आकाश अमृत प्यव दारि दारे (टेक) महा०
पम्पोश फरशाह कोर बंगलस
त्रिज़गत पालस दोप सालस ।
बाल ब्यूठ बालादरि प्यठ दारे (टेक)
विमानस क्यथ छुस पोत महाराज़्य
सिंहासन क्यथ छिस राज़ -ऋष्य
ब्रोंठ-ब्रोंठ वुछि हअस हस्य अम्बारे (टेक)
सालरव डाल दिच़ प्यठ डालानस
देवानखानस दिवता बीठ्य
अड्य अपारि त अड्य यपारे (टेक)
कनवाजन छुख मुक्त अलरावान
रुम रुम गुम शेहलावान आव ।
सोन संज़ि नावे रुप सुन्द हम छुय
नम रठ गणपत सोबुन कुन ।
गुर्य सय च़अनिस सोनसुन्द ताज छुय
आहम बैरव राज़नि किन्य ।
सोदर खोत लोदर फोल कोरिहुन्द लोनुय
यन्दराजुन यनिवोल हय आव ।
सुबद्रायि लसिनम वसुदीव मोलुय
दिलि तोरमय खास ज़रबाफ ।
कनन दिमस डेजिहोर, वोड़ि दिमस सोलुय
यन्द्राजुन यनिवोल हय आव ।
हस्तिस खसिथ मदवोन्य च्यवान
ब्यवान आहम नागर पन
समन्दरस सोथ दिथ चन्दन लते

रामचन्द्रनि वते आख ।
बाज़र्य पकुहम नाबद ख्यवान
वन्य छहोम लालो दोदं च्यवान ।
लारियन लूख तय मोटरन शाह छुय
गाह आव त्रावान मअदानस
डाय सास लूख पक्य हालि मअदानस
गरदि गुबार खोत आसमानस
अशनाव बट्ट आयि पोश विमानस
छाव दामानस मोहरी दोव ।
तति द्रायि सुलि तय योत वअत च़ीरी
वति आयि अस्य पोश छावान
आंगनस सअनिस गुल फल्य ताज़य
सानि कोरि मोक्त महाराज़य आव ।
लूख आयि च़र्य तय
अच़न कमि दोरे, राज़ बीरबल ने कोरे आव ।
राज़पोत्रस छम शोरबल खोरन
गाह प्यव दार्यन त दरवाज़न ।
महाराज़ आव तय च़ाव बजि दोरे
मुक्तव छथर छुस लोरे प्यठ ।
च़ाख मालि जनक राज़नि दोरे
कोरे आव रामच़न्द्रने ।
अनअ डबि अन्दरछि खास मोक्त जोरे
मुक्तव छथ छथर छुस लोरे प्यठ ।
क्यमखाब वथुरमय दोरे दोरे
प्यठय बानचि कोरे आव ।

मैं इस रथ की सवारी के बलि जाऊं, आज महाराज स्वयं राजकुमारी के लिए आये हैं। भगवान् की कृपा से आज मित्रों का भय दूर हो गया । भगवान की नय में से तोता निकला है । वनहारी हीमाल (श्रीमाल, तथा वनहारी सम्बोधन है) के लिए महाराज आए हैं, उसे परदेस ले जाएंगे ।

हमारे फूलों के बगीचे में बड़ा अच्छा दृश्य है । फूल पर 'पोशनूल' (एक पक्षी)

बैठ गया। 'पोशनूल' फूलों के बगीचे में घुस आया। (टेक) महाराज राजकुमारी के लिए आया है।

आकाश से अमृत की धार गिर रही है। कमल के फूलों का फर्श बंगले में बनाया फिर त्रिजगतपाल को न्यौता दिया। दूल्हा बारहदरी में खिड़की पर बैठ गया। महाराजा राजकुमारी के लिए आया है (टेक) विमान में पोत महाराज़ है सिंहासन पर राजऋषि है। आगे-आगे हाथियों के झुण्ड हैं। (टेक)

मेहमान ऊपर दालान पर भटक रहे हैं। देवता दीवानखाने में बैठ गए। आधे इस कमरे में तो आधे उस कमरे में बैठ गए हैं। महा (टेक) कानों की बालियों के मोतियों को हिला रहे हैं, अपने रोम-रोम के पसीने को ठंडा कर रहे हैं। सोने का शिकारा है तथा उसमें चांदी का 'हमतुल' (डांड़-लग्गी, एक लम्बा डंडा, जिससे शिकारा चलाते हैं) हैं, तुम अपने शिकारे का मुख गणपति की तरफ करो। तुम्हारे घोड़े का सोने का ताज है, तुम भैरव राजा के घर की तरफ से आये हो। कीमती दानों (लोदर फोल) के समान लड़की का भाग्य निकला क्योंकि उसके लिए राजा इन्द्र के यहां से बारात आई।

हाथियों पर चढ़कर मद से भरा पानी पी रहे हैं तथा नागर पत्ते खाते हुए तुम आ गए हो। जिस सागर में रामचन्द्र जी ने अपने चन्दन जैसे पैर लगाकर 'सेतु' बना दिया था तुम उसी रास्ते से आए हो। बाज़ार में तुम मिश्री खाते हुए आए। अभी हे दूल्हे लाला, तुम "दूध ही पी रहे हो ?" लारियों में लोग हैं तथा मोटरकार में शाह (दूल्हा) प्रकाश फैलाता हुआ आ रहा है। ढाई हज़ार लोग चले जिस कारण धूल के गुबार आकाश तक चढ़ गए। वसुदेव राजा के मैदान में तथा भीष्मक के आकाश तक धूल के गुबार चढ़ गए।

रिश्तेदार (भट्ट पंडितों का सम्बोधन) फूलों के विमान में आ गए। तुम अपने आंचल में सुनहरा गोटा लगा लो। वहां से (लड़के वालों के यहां से) हम जल्दी निकले थे परन्तु यहां हम देर से पहुंचे हैं क्योंकि रास्ते में हम अपने ऊपर फूलों की वर्षा करवाते आ रहे हैं। हमारे आंगन में ताज़ा-ताज़ा फूल खिले क्योंकि हमारी लड़की के लिए सुन्दर-सुडौल दूल्हा आ गया है। लोग (बाराती) अधिक हैं अब किस ड्योढ़ी में से घुसेंगे ? राजा बीरबल की लड़की के लिए यह बारात आई है।

राजकुमार के घुसने से खिड़की और दरवाज़ों पर प्रकाश-सा पड़ गया। महाराज आ गए और बड़ी ड्योढ़ी में से घुसे। मोतियों का छत्र छड़ी पर रखा हुआ है। मौला (लला) तुम राजा जनक की ड्योढ़ी में घुसे और तुम रामचन्द्रजी के लिए

लड़की (वधू) लेने के लिए आए हो। शीशे तथा मोतियों की झालरों से सजावट की गई है और मोतियों का छत्र छड़ी पर तना हुआ है। मैंने हर गली में तुम्हारे आने के स्वागत में कीमखाब विछा दिया है क्योंकि तुम पहलौटी लड़की (को ब्याहने) के लिए आये हो।

(हीमाल—श्रीमाल एक प्राचीन आर्य-कन्या; पर्वतनि वन हारि—पर्वत की वन-मैना, वनहारि सुन्दरी कन्या का सम्बोधन है; पोशनूल—पक्षी विशेष; पम्पोश — पद्म-पुष्प; पम्पोश — पादन, चरण-कमल; रुम — रोम; गुम—पसीना; मदवोन्य — मदिरा; च्यवान—पी रहा है ; नागर पन—पान; सास—सहस्र-हज़ार ।)

(17) *वुश्क द्रायि हेलि तय दानि कर पूरे*

दूरियुक यनिवोल करवाते ।

वन के ककवा त सरके पछिना

अछ़ हो लोसम त कर वातख ।

पूरे कने खोत खो सिरियो

पश्चिम कुनय ज़िछ़िय त्राव,

दशरथ राज़नि खोतखो सिरियो

जनख राज़नि ज़छ़य त्राव

पूरे कने नब्यक़ोर वोदये

दूरे सोनसुन्द बोदय आव

दशरथ राज़नि नब्य कोर वोदय

बीष्मक राजुन बोदय आव ।

गंदर्व लूक छिय वायान बाजे

त्रयून बवनन हुन्द राज़हय आव ।

शक्तिपात दृष्टिवर करु प्रसादा

साद शाहज़ादा आंगन च़ाव ।

ज़ोनुन त मोनुन ज़गतच़ि माजे

त्रयन बवनन हुन्द राज़ हय आव (टिक)

ओर कनि जटा योर मुकटा

ओर वासुक त योर च़न्दन हार ।

ओर कनि तरिकि त योर कन्वाजे । त्रयेन (टिक)

सर्व मंगली मेलि सूत्य चानि वरनय

नत क्याह बनि सानि करन सूत्य ।
त्रबवन बरनआय दन दाजे । (त्र्येन । टेक)
सूर्य बगवान आव तीज सूत्य बरनय
य यंद्र राजस मुकुट जरनय आव
रत्न रत्न ज़त्न द्रायि मन्ज तीज ताजे (त्र० टेक)
सूर्य बगवान आव बीज सूत्य बरनय
यंद्रराजस मुकुट जरनय आव
चन्दन कोंग गोह कोंगचे काजे
ओंकार रूपस छ द्वार पूज़ाह ।
कृष्ण त विष्ण नाव खन मनचे वाजे
त्र्यन बवनन हुन्द राज हय आव ।
नाबन कोख मालि पोश वथ रोनोय
हावय पनोन जायोनोय ।
जनख राजुन पोशि वथरोनोय
दशरथ राजुन जायोनोय
दक्षिणकि सोदागर वथिवो नावे
मुक्तय दावे मोल करान ।
हस्तिस चानिस थज़ अम्बरी
प्रिछ़ितोस कमि बाज़ारी आव ।
अड्य आय वोखल्य त अड्य रंग नावन
हावस गरि आय खावन पिठ
वसुदीव राज़नि हंकलि ठस गव
ह्यस रोज़ दुनियादार हय आव ।
राज़स बव राजकुमारी
ताज रोज़ राज़ यनिवोल हय ओय ।
बागस सानिस गुल फल्य ताज़य
सान्य कोरि मुक्त महाराज़ हय आव
विश्वामित्र बबस तय नूरमाल माजे आव
दूरबीन किन्दहर राज़य आव ।
पाथशाह कूरी खोतये टारे

वज़ीर वोतुय दारे तल।

सोन मन्य कूरी प्यतमी सोरजे

लोन चोन वोतुय बरने तल।

वसुदीव राज़नि थज अम्बरी

गोबुर छुख बलराम ज़ुवोनुय

कृष्णज़ुवन करयो परन्द सवारी

प्रछि तोख कमि बाज़ारी आख।

सोन्य ज़्राव आंगन वथरितोस पिंजे

लंजि सान ज़ाफ़ल बदलितोस।

जौ पक के तैयार है। धान कब तैयार होगा ? दूर की बारात कब पहुंचेगी। हे वन के उड़ने वाले पक्षी तथा झील की बतखों (जो उड़ती नहीं हैं) मेरी आंखें पथरा गई तुम कब पहुंचोगे। हे सूर्य, (दूल्हे के लिए है) तुम पूर्व से तो उदित हुए परन्तु तुम्हारे प्रकाश की किरणें पश्चिम तक पड़ रही हैं। हे सूर्य तुम तो राजा दशरथ के यहां उदित हुए परन्तु तुम्हारे प्रकाश की किरणें राजा जनक के घर में पड़ रही हैं। आकाश ने दूर पर पूर्व दिशा में स्वर्ण-नक्षत्र (बुद्ध अर्थात् दूल्हा) उदित किया। दशरथ राजा रूपी नभ-कोण में उदित होकर भीष्मक राजा के यहां (बुद्ध) पहुंच गया।

गन्धर्व-लोकवासी बाजे बजा रहे हैं क्योंकि तीनों भवनों का राजा आया है। हे, सरल शहज़ादे आंगन में प्रवेश करके अपनी श्रेष्ठ दृष्टि के स्पर्श रूपी प्रसाद से (हमारे ऊपर) शक्तिपात करो (अर्थात् तुम्हारी पवित्र दृष्टि मात्र से हम सब पर मानो शक्तिपात हो जाएगा) एक तरफ से तो जटा है, दूसरी ओर मुकुट है। एक ओर वासुकि है तो एक ओर चन्दन की माला है। एक और तरकियां है तो एक तरफ कानों की छोटी बालियां हैं। तीन भवनों के राजा पधारे हैं। (टेक)

हे सर्वमंगली तुम्हारे मेल से ही यह सब कुछ हुआ है, अन्यथा हमारे करने से क्या होता है। तीनों भवन, तुम्हें जो दान-दहेज मिला है उससे भर गए हैं। (टेक) सूर्य भगवान् तो तेज से भर गए हैं, उसी प्रकाश से मानो राजा इन्द्र का मुकुट बन गया हो। शुभ-शुभ प्रकाश इस तेजस्वी मुकुट में से निकला है (टेक) तीन भवनों के राजा पधारे हैं। चन्दन, केसर आदि पूजा के काम में लाया गया क्योंकि आज ओंकार रूप की द्वार पूजा है। तुम (बराती) मन-रूपी अंगूठी में कृष्ण तथा विष्णु के नाम उत्कीर्ण कर लो। आज तीन भवनों के राजा पधारे हैं (टेक) हमने शिकारों को फूलों

की मालाओं से सजा दिया है। तुमको मैं अपना स्थान दिखा दूंगी। राजा जनक का फूलों का पलंग तथा राजा दशरथ का स्थान। हे दक्षिण के सौदागरो, तुम नावों में से उतरो और मोती की मालाओं का मोल करो। तुम्हारे जो हाथी हैं वे ऊंचे हैं, इनसे ज़रा पूछो कि ये किस बाज़ार में से होकर आये हैं। आधे लोग पैदल आ गए हैं तथा आधे रंगीन शिकारों में आए हैं। तुम देखना घर में लोग खड़ाऊं पहने हैं। वसुदेव राजा के यहां की सांकल बजी। होश में रहो, दुनियादार आया है। हे राजकुमारी तुम खुश रहो, राजाओं की बारात आई है। हमारे बगीचे में ताज़ा-ताज़ा फूल खिले हैं—हमारी लड़की के लिए खूब सुन्दर, महाराजा-सा, दूल्हा आया है। जिस पुत्री के पिता विश्वामित्र हैं तथा मां नूरमाल है उसके यहां दूरदर्शी राजा आया है। हे राजा की बेटी क्या तुमको जचा ? वज़ीर तुम्हारी खिड़की के नीचे आया है। ऐ मेरी स्वर्ण जैसी बेटी तुम्हारा भाग्य बहुत उज्ज्वल है। कृष्णजू ने गरुड़ की सवारी पसन्द की इनसे ज़रा पूछो कि ये किस रास्ते से आए हैं, समधी ने आंगन में प्रवेश किया उनका स्वागत खूब अच्छी प्रकार से करो। आज शाखा के समेत जायफल को बदल लो।

(वोदय— उदय, बोदय— बुद्ध, वज़ — अंगूठी, परन्द-परिन्दा (फा०), अर्थात् गरुड़, अम्बरी— हाथी का हौदा।)

जब बारात (लड़के के ब्याह की) चली जाती है तो स्त्रियां घर में ही रह जाती हैं क्योंकि स्त्रियां बारात के साथ नहीं जाती थीं (अब जाने लगी हैं)। बारात के चले जाने पर स्त्रियां व्यूग पर गोलाकार बनाकर 'अरनि रोथ' (एक प्रकार का लोक नृत्य) करती हैं। इसके भी लोकगीत हैं। जब बालक का यज्ञोपवीत होता है तब भी समापन इसी 'अरनिरोथ' से होता है। (ब्रज आदि क्षेत्रों में बरात के जाने के बाद वर-पक्ष की स्त्रियां, रतजगा करती हैं और 'खोइया' करती हैं, जिसमें कुछ स्त्रियां पुरुषों का रूप धारण करके विवाह का पूरा स्वांग रचती हैं। ब्रज-क्षेत्र में इसमें अश्लीलता तथा भदेस का पुट भी आ जाता है।)

अरनि रोथ

(18) *अस्य करव अरनि रोथ त बेयि वनवुनये*
हअर द्रायि नच़नि त कअर स्वन सन्ज़ये। अस्य० ॥
हारि गछ़्यम डेजिहोर सुति स्वनसुन्दये। अस्य० ॥
हारि गछ़्यम अटहोर सुति स्वनसुन्दरये। अस्य० ॥

(उपर्युक्त अंश विवाह में गाया जाता है तथा यज्ञोपवीत में 'हुम' के समाप्त

होने पर 'अरनि रोथ' होता है उसमें इन पंक्तियों को गाया जाता है, टेक ऊपर लिखित ही है।)

हुम वथुम तअ वेगि खतुम, तोतअ वथुम यारबल
हुम वथुम तअ वेगि खतुम राजअ वथुम यारबल

(हुम — ' होम' से बना है अर्थात् हवन।)

हम 'अरनिरोथ' तथा 'वनवुन' करेंगे। मैना नाचने निकली, उसकी कमर सोने की है (टेक) अस्य करव 'अरनि रोथ' त बेयि वनवुनये।

मैना को डेजिहोर चाहिए वह भी सोने का ही। (टेक)

मैना को 'अटहोर' वह भी सोने का ही चाहिए (टेक)। 'हुम' से उठा तथा 'व्यूग' पर चढ़ा, तोता नदी के किनारे उतरा 'हुम' से उठा तथा व्यूग पर चढ़ा राजा नदी के किनारे उतरा।

अटहोर—जंजीर (जिसे 'अठ' कहते हैं) के नीचे सिंघाड़े के आकार का 'डेजिहोर' होता है उसमें फुंदने लटके होते हैं जिन्हें अटहोर कहते हैं। सुहाग का प्रतीक इस आभूषण के 'डेजिहोर' भाग को कन्या का पिता देता है तथा अन्य दो भाग ससुराल में पहिनाये जाते हैं।

'व्यूग' के गीत

(19) *पेंजे कूनस व्यस्तार लिवयो*
अवतार कृष्ण जुवअनी
व्यूग लेखयो सम्य सम्य जाये
शाये श्री बगवानने।
व्यूग लेखयो सतय रंगय
जंगे ओयो परमेश्वर
वीगिस चअनिस शूबा गरय
मन्ज़े मरेदय बरयो
व्यूग लेखयो जानावार करिथिय
पान बगवान ओय व्यूग लेखनी
व्यूग लेखयो सूर्य प्रकाशो
नकाश ओयो व्यूग लेखने
वीगिस चअनिस करम पोशि थरे

दरे ल्यूख हरिचन्द्राज़ने

अछ़ रछ़ क्राज्य ल्यूख कछ़कर व्यूगुय

राज़िरेन्स माजि थोवनुय प्रास

वीगिस चअनिस गुल गय रोशन

वुन्य वुन्य पोशन फुलया जान

ओर आव नारान अस्य लोग शेरे

नेरुस नरिपान आलवोस

रत्नय सरसय दिचथम छ़ालय

रत्नय च़ांगी आलोवोस।

('व्यूग '(चौक) रंगों से धरती पर बनाया जाता है। इसमें भांति-भांति प्रकार की चित्रकारी की जाती है। जब दूल्हा आता है तो सर्वप्रथम दूल्हा -दुल्हन को व्यूग पर ही खड़ा किया जाता है। जब लड़की ससुराल पहुंचती है तो वहां भी दुल्हा-दुल्हन को व्यूग पर खड़ा किया जाता है।)

एक पवित्र कोने में विस्तार से लिपाई करेंगे, हे कृष्णजू के अवतार। व्यूग को समतल स्थान पर बनायेंगे भगवान की छत्रछाया में। व्यूग को सात रंगों से बनाएंगे, स्वयं परमेश्वर ने उसका शकुन किया। तेरे व्यूग की मैं शोभा बढ़ा दूं, बीच में चूना भर दूंगी। तेरे व्यूग में पक्षी बना दूं, स्वयं भगवान् तेरा व्यूग लिखने आए हैं। सूर्य प्रकाश में तेरा व्यूग लिखेंगे। नक्काश व्यूग लिखने आये हैं। तुम्हारे व्यूग में मैंने फूलों की डालियां बना लीं। व्यूग लिखने राजा हरिश्चन्द्र आ गए हैं। परी जैसी कुम्हारिन ने व्यूग बनाया। मां राजरानी ने उसको नेग में सोने की चूड़ी दी। तुम्हारे व्यूग के पुष्प खिलने लगे हैं, देखो कैसे सुन्दर फूल खिले हैं। नारायण जब आये तो हमने अपने सिर पर स्थान दिया (उनका आदर-सत्कार किया) ज़रा जाकर उसकी अपने हाथों से आरती उतारो। जाकर दीपकों की आरती उतारो।

(पेंजे—पवित्र अच्छा स्थान; जू —जैसे हिन्दी में आदरसूचक 'जी' आता है और राजस्थानी में 'जू' आता है उसी प्रकार कश्मीरी में आदरसूचक 'जू' आता है; पक्षी -गरुड़ आदि (पक्षी) के चित्र बनाना प्राचीन वैदिक परम्परा है; लिखना— चौक बनाने के स्थान पर चौक लिखना कहा जाता है; आलवोस-आरती; रत्न चांगी— रत्नदीप।)

द्वार पूजा

(20) *गोड आव ब्रह्मा कलश विज़े*
अद आव नारायण द्वार पूज़े ।
गनपत सोबुन यम्बरज़ल दोस्तो
खस्तो करयो द्वार पूज़ा ।
महाराज़ आव तय च़ाव बजि बरने
पाठ पूथ्य वलितोस परनस किच़ ।
जनख राज़नि च़ाव बजि बरने
कोरि आव वसुदीव राज़ने ।
कृष्ण जूवनि ब्यनि आव करने
पाठ पूथ्य वलितोस परनस किच़
महाराज आव तय बर थव वथिये
लतिए सेनापतिये ओय ।
कोरि कुमअरी न्यन्द्रे वुज़तय
नारायण द्वार पूज़े ओय ।
सुबद्रा मअली न्यन्द्रे वुज़तय
अर्जुनदीव द्वार पूज़े आव ।
सिर्य आव सतन हस्तिन खसिथ
वसिथ करयूस मालि द्वार पूज़ा ।
द्वार पूज़ कर माल्य ऋष कुमारे
वार पूज़ कर मालि सालिग्रामस ।
जनक राज़नि ऋषि कुमारे
वसुदीव राज़ने सालिग्रामस ।

(21) *वसुदीव राज़नि लोहुर्य तोतो*
होहवुर्य हंगस पूज़ा कर
वन वन अछ़ रछ़ स्वर्ग द्वारय
वारय करिज्यस द्वार पूज़ा
चानि सत्संग सूत्य गंगा द्राये
द्वारस कर्म-कूल खारनि आव
रगं रंग कोसम द्राव गंग आरय

वारय करि्ज्योस द्वार पूज़ा ।
हर दृष्टि द्वारस कोर हरद्वारस
दासबाव दासस बन्यव कैलास ।
क्रूल खोर लबि तय नबचे तारय
वारय करिज़ियस द्वार पूज़ा
वुज़ सोन बैकुण्ठ बन्यव वार वारय
कुठिस मन्ज़ बीठि कूटी तीर्थ ।
नारायण नाव द्राव दीवय दारय
वारय करिज़ियस द्वार पूज़ा ।

(22) लग्नस वेल वोत विघ्न निवारन
अग्नस प्यठ छिय प्रारान दीव
गुनवान सोन हेरि खसू वार वारय
वारय करि्ज्यस द्वार पूज़ा
ओर आयि सतऋषि योर द्रायि पांडव
जनक राज़नि छू मण्डल वाहरअविथ ।
अन त मालि पोशे बबरे लोवुय
सोव खसि हेरि तय वथरअव्यूस
सोठक हेरि खोतुख मालि पंटक दिथ
छ़ाये छ़ांडान ईश्वर मायाये ।
जनक राज़नि हेर दअन्तवय
दशरथ राज़नि देवादेव ।
यियिव मालि ब्राह्मनव गछ़िव मालि जमा
करिव मालि लगनुकुय समाचार
यियिव मालि ब्राह्मनव खसिव सानि हेरे
लअगवि मालि ट्योक अर्गत पोश शेरे ।
हेरि खसान गण्डिथ सौंदरी
वअजमख न्यन्दरे वुज़नअविथ ।
सुलि फल्य गिलि टूर्य आय क्याह करने
यम्बरज़लि सुम्बुलपोश वरने आव ।

(23) दशरथ राज़ सोन क्याह करने आव

कोरि कुमारे आव लोल बरने
नत आव लगनुक वीदाह परने
यम्बरज़लि सुम्बलपोश वरने आव ।
यति प्यठ गछ़हा माजि शारिकाये
शारिका डीठम वीद परान
रुक्मणि कृष्ण जू आमुत छु वरने
यम्बरज़लि सुम्बलपोश वरने आव ।

(24) कमीय कूरी तोरुय लान्युन पन तय
वनतय नअग्य अर्जुन हय आव
वसुदीव राजुन किशमिश मन तय
दअरिथ दितुनय पोलावस
नअल्य छव खअल्य माल
कुर्तनि तल तय वनतय नअग्य अर्जुन हय आव ।
जनक राजुन सोन रोफ़ मन तय
गरुन दितुनय मअन्त्रविथ ।
ती बूज़ दिवकी शेहलेयस तन तय
वनतय नअग्य -अर्जुन हय आव
शेरस गोन्द तय गोन्दिस ताजा
राज बीरबल दान हेरि आव
वोमन हुरिस च़न्दनुव दन तय
वनतय कम ऋषि दान हेनि आय
जनक राजुन च़न्दनुव दन तय
अर्जनदीव योत दान हेनि आव
रामच़न्द्रोन किशमिश मन तय
वनतय कम ऋषि दान हेनि आय

(25) अर्जुनदीवो पादशाह पसन्दो
होहवुरि ब्यूठखो मसनन्दस प्यठ
सोन पअज़ारस मोक्त जरअवो
यथ गर वथ कम्य होवुयो
गोडआव दशरथ राजुन यनिवोल

सतन हस्तियन ज़ीन करिथ
योर द्राव जनकराज़ सोन सोवुय
यथ गर वथ कम्य होवुयो
ओर आव लाल तय गंज़िर तोस मालय
प्रछितोस कमि शाहरय आव ।
त्यलि कोनअ आयोख यिमन्य कोचन
यलि असि मोक्त ओस पूच लोच़न
त्यलि कोनअ आयोख यथ बाज़ारस
यलि असि सोन ओस देवारस
अंगव खोत छय पोम्बर ज़ीठय
लगनस बीठअय चिन्तामनि
कूरी रछमख दुद तय दानय
हरि बगवान हय प्रारान छुय
असि रछ कूरा आलनि नाराण
रुखमणि कृष्णजू अथ दारान ।

(इन गीतों की टेक समान है तथा इनमें शब्द एवं भाव भी समान हैं अतएव 20 से 25 तक का अर्थ साथ ही दिया है।)

पहले ब्रह्माजी कलश लेने आये फिर नारायण द्वार-पूजा करने आए। गणेशजी के यम्बरज़ल मित्र तुम ऊपर आ जाओ, तुम्हारी द्वार-पूजा करें। दूल्हा आ गया और बड़ी ड्योढ़ा में से प्रविष्ट हुआ है, ज़रा ऊपर से पोथियों को उतार लाओ। जनक राजा की बड़ी ड्योढ़ी में से घुसा है, यह वसुदेव राजा की कन्या के लिए आया है। यह कृष्णजू की बहिन से विवाह करने के लिए आया है, ज़रा ऊपर से मंत्र पढ़ने की पोथियां उतार लाओ। दूल्हा आ गया है ज़रा दरवाज़े खुले रखो। अरे, सखी सेनापति आया है। हे कुमारी कन्या तुम निद्रा से जगो, नारायण द्वार-पूजा के लिए आये हैं। प्यारी सुभद्रा तुम नींद से जगो, अर्जुनदेव द्वार-पूजा को आये हैं। सूर्य सात हाथियों पर चढ़ कर आया है, उतरकर हे पिता, द्वार-पूजा करवाओ। ऋषि पुत्री की द्वार-पूजा करो तथा शालिग्राम की पूजा भी अच्छी प्रकार से करो। राजा जनक की ऋषि-कन्या है और वसुदेव राजा के शालिग्राम हैं। वसुदेव राजा के लाहौर के तोते अपने ससुराल वालों को पूजो। परियां स्वर्ग के द्वार पर 'वनवुन' गीत गायेंगी, द्वार-पूजा ठीक से करना। तुम्हारे सत्संग से गंगा निकल पड़ी है, तुम द्वार पर कर्म

रूपी चित्रकारी करने आए हो। गंगा की धारा में भिन्न-भिन्न प्रकार के 'कोसम' पुष्प खिल गए, द्वार-पूजा ठीक से करना। दीवार पर हमने आकाश के तारों की चित्रकारी (क्रूल) करवाई, द्वार-पूजा ठीक से करना। 'वुज़' (पोली) हमारी धीरे-धीरे बैकुण्ठ बन गयी है। कमरे में साक्षात् कूटी-तीर्थ बैठेंगे। विघ्न-निवारण वाली बेला लग्न के लिए निकल आई है। अग्नि के पास देवता प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे गुणवान सोने के ज़ीने पर धीरे-धीरे चढ़ाना। उधर से सप्तऋषि आ गए तो इधर से उनके स्वागत के लिए पांडव निकले, राजा जनक के यहां अग्नि मण्डल फैला हुआ है। हे पिता तुम बबरे फूलों का एक गुच्छा ले आओ। जब दूल्हा सीढ़ियों पर चढ़ेगा तो उसको बिछा देना। सुन्दर सीढ़ियों पर तुम वस्त्रों का वितान बनाकर चढ़े, ईश्वर की माया को देखते हुए। राजा जनक की सीढ़ी हाथी-दांत की है, राजा दशरथ के यहां देवी-देवता हैं। हे ब्राह्मणो, तुम लोग आकर इकट्ठे हो जाओ और लग्न का समाचार दे दो। हे ब्राह्मणो, तुम आ जाओ और हमारी सोने की सीढ़ियां चढ़ो और टीका लगवाओ। अर्घ्य और पुष्प सिर पर चढ़ाओ। हे, सुन्दरी ऊपर जाकर मैंने तुमको नींद से जगाया और वहां से नीचे उतारा। 'गिलिटूर्य'(फूल विशेष जो कश्मीर में होता है और वर्ष में सबसे पहले खिलता है) शीघ्र खिल गए—ये शीघ्र क्यों खिले? ये क्या करने आये हैं? अरे नरगिस (फूल)सुम्बल पुष्प से ब्याह रचाने आया है। राजा दशरथ हमारे यहां क्या करने आये हैं? वे तो कुमारी कन्या को प्यार देने आये हैं अथवा वे लग्न के वेद-मन्त्र पढ़ने आये हैं (टेक) यहां से मैं मां शारिका के पास जाना चाहती हूँ शारिका मां मुझको वेद-पाठ करते हुए दिखी हैं। रुक्मिणी को कृष्णजू ब्याह कर ले जाने के लिए आए हैं (टेक) नरगिस से सुम्बल पुष्प ब्याह रचाने आया है। हे पुत्री, कर्म की डोरी से तुमको किसने बांधा है? कहो नागार्जुन आया है (टेक)। वसुदेव राजा के यहां की एक मन किशमिश मैंने पुलाव में डाली हैं। कुर्ते के नीचे बादाम की मिंगियों की माला पहने हो। (टेक) कहो नागार्जुन आया है। जनक राजा के यहां का मन-भर सोना-चांदी गुरुओं को मन्स कर दे दिया है। देवकी ने जब यह बात सुनी तो उसके तन को शीतलता मिली। सिर पर मुकुट है और उसमें कलगी लगी है, राजा बीरबल दान लेने आए हैं। वामन हुर (स्रुवा—हवन की चम्मच) की जो डण्डी है वह चन्दन की है, ज़रा बताना कौन से ऋषि दान लेने के लिए आए हैं? राजा जनक की चन्दन की डण्डी है, अर्जुनदेव दान लेने आए हैं। रामचन्द्र जी के यहां से मन भर किशमिश आयी है। राजसी ठाटबाट पसन्द करने वाले अर्जुनदेव ससुराल में तुम कालीनों पर बैठे। सोने के पैज़ार में

मुक्ता जड़े हैं तुमको इस घर का रास्ता किसने दिखाया। पहले राजा दशरथ की बारात सात हाथियों पर ज़ीन, होदा, चढ़ाके आई है। राजा जनक अगवानी के लिए सोने से लदे हुए निकले। इधर से लाल (दुल्हा) आया इसकी मालाओं की गिनती कर लो तथा यह पूछ लो कि ये किस शहर से आये हैं। तब तुम इन गलियों में क्यों नहीं आये जब हमारे आंचल तक में सोना जड़ा हुआ था (जब हम सम्पन्न थे)। तब तुम इस बाज़ार में क्यों नहीं आये जब हमारी दीवारों तक में सोना जड़ा था। अपने अंगों से तुम्हारा पीताम्बर लम्बा है तुम्हारा लग्न कराने के लिए चिन्तामणि बैठे हैं। पुत्री मैंने तुमको दूध तथा चुन-चुन कर दाना खिला कर पाला, हरि भगवान तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

(26) *शेरस पोश लागय प्रेम हतिए*

सतिये वोतुय विवाहकार

वोम शब्द सुत्यन शोकूलं करिथ

वीद शास्तर द्रायि रुत्य रुत्य ग्वन

वल्लबा वर्नख महागनपतिये

सतिये वोतुय विवाहकार (टिक)

व्यज़्या सुत्य छय ब्यथि सरस्वतिये

वन वन मन्ज़ शुब वासना द्राये

शवनाथन वर्नख मअज पार्वतिये (टेक) सति०

जमुना शारदा छय सूत्य सूत्ये

नमन त पादन गण्डयय सोन

बूतीश्वर वरनि आव राज्ञा ततिये (टेक)

ज्वाला लम्बूदर ब्यथि गनपतिये

करहअय पोम्पुरि कोंग सूथ्य पूज़

बालहामि बालिकायि वनवोन ह्योतुये (टिक) सति०

अकिन गाम शिवायि वनवुन ह्योतुये

वोतरसि वमायि करनय जाय

लोल चोन जनकस गर छुय ततिये (टिक) सति०

खसवुन तेल वुरुय पुरुहतिये

तमिसूत्य असुरन वसि अन्धकार

चक्रीश्वर वरनि आव बगवतिये (सति०)

कैलास पर्वत कि इमय सूरमतिये
वोलास गंडि गंडि आंगन च़ाव
आकाश खअत्य किन पाताल वथिये (सति०)
महाराज़ ओयय ताक दारि पतिये
गुरीन छस गुनोदीत शुरयन गजगाह
अस्य गय हुशार तुहिन्द शेंक शब्द सूतिये (टेक)
वेल वोत जल वुछमअज्य पार्वतिये
लोल महाराज़ हय आंगन चाव
व्यूग ओस प्रारान वीगिस खतिये (सति०)
रत्न च़ांगिजिं आलवोसी मीनाबतिये
सोन सिन्दिस थालस रुपसिन्द च़ांगी
अथ्यादि नविदस प्रास दिस सतिये (टेक)
पार्वत परमीश्वर लग्नस खतीये (टेक)
लग्नस बीठख मअज पार्वतिये
अग्नस कुन रोज़ मोख दारिथ
अग्नुक रुतफल तोहि दोन कितुये (सति०)
पारन डून्य रटी मअज्य पार्वतिये।
कारण बूज़िथ हलमदार, तिम दी हेहरस नीरनय रुतिये
(वोम—ओ३मू, खन— गुण; वल्लभा—महागणपति की पत्नी, कोंग—कुंकुम)

(27) कूर छय कुठितय पोस्तक परान, कूर छय मअलिस नेछ नावान।
वसुदीव राज़ छुम कनिक प्रतिपालान, अर्जुनदीव छुस अथ दारान।
कनिदान करुथो वासुकि रेषो बूमिदान ह्योतूथो ब्राह्मनो।
दिवचमालि गाव गर बूतराथ, दानस, तिम च़ोर फल छिय कन्यदानस
युस करि माघश्रान न्यथ पूज़ि सालिग्राम सुयकरि सतवोहर कन्यादान।
गंग व्यस ज़ंगि आयि ह्यथ गंग वोन्युय, लायि बोय सोन जय त्रोनुयद्राव।
युसअ बेनि रछिथन नरिव त कुछे, सोय बेनि ख़च़य गंगे व्यस।
लाईबाई लायो लाई छख वेछे जमना बेनी गछी वअरिव।
(26 तथा 27 का अर्थ एक साथ दिया है।)

तुम्हारे मस्तक पर प्रेम से पुष्प चढ़ाऊं यह सती का विवाह कार्य है। ओम् शब्द से शुक्लं किया—कार्य प्रारम्भ किया, शास्त्र तथा वेद में अच्छे-अच्छे गुणों का

वर्णन है। वल्लभा को श्री महागणपती के साथ ब्याह दिया (टेक)। (दूल्हे के) साथ में विजया तथा सरस्वती हैं। वनवुन गीत गाने से शुभ इच्छाएं उत्पन्न हुईं। शिवजी ने पार्वती के साथ ब्याह किया। जमुना और शारदा तुम्हारे साथ-साथ है, तुम्हारे नाखूनों तथा पैरों में सोना पहना दूं। भूतेश्वर भगवान् राज्ञादेवी से ब्याह रचाने आये हैं (टेक) ज्वाला, लम्बोदर तथा गणपती ने तुम्हारी पूजा पाम्पोर के केसर से की। बालहामि (गांव का नाम) में बालिकाओं ने वनवुन गीत गाने प्रारम्भ किए। अकिनगाम में शिवाय-मंगलगीतों का गान प्रारम्भ किया, उत्तर दिशा में उमा देवी का स्थान दिया। जनक को तुमसे स्नेह है अब तुम्हारा घर वही है। चक्रीश्वर भगवती को ब्याहने आये हैं। कैलाश पर्वत के यह राख मले तथा मृगचर्म पहने बाबा हमारे आंगन में घुस आये। आकाश में गए या पाताल में उतर आए। दूल्हा मकान के पीछे वाली खिड़की के पास पहुंच गया है। उनके घोड़ों की विशेष सजावट हो रही है तथा बच्चों तक का विशेष सत्कार किया जा रहा है। हम इनकी शंख-ध्वनि से ही सतर्क हो गए। (टेक) हे मां पार्वती, शुभ वेला आ गई तुम शीघ्र उतर के आ जाओ, प्रिय दूल्हा आंगन में आ पहुंचा है। व्यूग प्रतीक्षा कर रहा था — वह व्यूग पर खड़े हो गए हैं (सतिये० टेक) ऐ मीनावती सोने की थाली में चांदी के दीए रखकर आरती उतारो। नाई को अच्छा सा नेग दो (टेक) पार्वती तथा परमेश्वर लग्न के लिए चले गए (टेक) लग्न करने के लिए मां पार्वती बैठ गई अग्नि की ओर अपना मुख कर लो। अग्नि का शुभ फल तुम दोनों को मिले (टेक) कारण सुनकर तुम अपने आंचल में 'पारन अखरोट' ले लो हे मां पार्वती। उनको अपने ससुर को दो, भगवान् करे कि तुम्हारे लिए शुभ-फलदायक हों। लड़की कमरे में पुस्तक पढ़ रही है तथा अपने पिता की नामवरी करा रही है। वसुदेव राजा अपनी पुत्री की रक्षा तथा पालन करते हैं। अर्जुन देव हाथ बढ़ा कर उस कन्या को मांग रहे हैं। हे ऋषि वासुकि, तुमने कन्यादान किया तथा ब्राह्मण ने भूमिदान ले लिया। हे पिता, तुमने गाय दान में दे दी तथा कन्यादान के साथ चार फल भी दे दिए हैं। जो माघमास में नहाता है तथा नित्य शालिग्राम पूजता है वह ही सात साल की कन्या का कन्यादान कर सकता है। गंग-व्यस ने गंगाजल लेकर शुभ शकुन किया तथा लायिबोय भी शुभ शकुन वाला ही निकला। हे लाई भाई! तुम खीलें मोटी-मोटी फेंको क्योंकि आज जमुना बहन अपने ससुराल जायेगी।

(शवनाथ—शिवजी—कश्मीरी में शिव का उच्चारण शव हो जाता है; शुब—शुभ; बूतीश्वर—भूतेश्वर; कोंग—कुंकुम; वोतरसि—उत्तरसू; वमा—उमा;

गर—घर; बगवती—भगवती; सूर—राख; सूरमतिये—राख मले हुये; हुशार—होशियार करना अर्थात् जगाना; शेंक—शंख; मीनावतिये—सम्बोधन हेतू है ; नविद—नापित अर्थात् नाई; डून्य—अखरोट; हलमदार—झोली फैला दे; हेहर—श्वसूर; गाव—गाय; व्यस—सहेली; गंग-व्यस कन्या पक्ष की वधू के कन्धों से छुआकर गंगाजल के छींटे देती है। दाहिने कन्धे से शकुन के लिये पांच मेवाएं छुलाई जाती हैं। बोय—भाई, लायि—खीलें ; लायिबोय—जो वर पक्ष की ओर से खीलें बिखेरता है।)

'बतस' (बत—भात, अर्थात् दावत के गीत)

(28) *असि रअछ कूरा तफ करि करिये*
बत टअक्य शीरज़्यूस बर्य बरिये
असि क्याह तोहि क्युत रुनमुत आसे
हांज़निव दोगदित्य सोख दासे।
खासन क्युत कोर मालि बासमति पोलाव
म्यतरन किछ कर नून पोलाव
असि रोन तोहि क्युत सरतलि बानन
तुहि ल्यालि बानन ज़ियाफत
असि रनि तोहि किच़ नव तरकअरी
मीथ पालक त द्रद वांगन
साबि छिय बीहिथ बलिया ज़ादय
कलियस प्रिछतोख स्वाद छा जान
असि वोत जागीर सोरुय मुफ़्तुय
शुफतस प्रिछतोख स्वाद छा जान।
दशरत राज़नि सोदय ब्रार्यो
दोदय त नदरी वतीयो
मअज पअर्यीं लजियो चअनिस रननस
मीठ्य कनगिछन स्वाद छा जान
असि कर राज़न सूत्य टअक्यदारी
वाज़न सूत्य फीर बवानी
छोटं प्यठ लीस खोत दंर्म सभाये
चम्बानाथनि आज्ञाये

हरगोपालस वकील सरदारस

राक्षसस कति गय दिवता बोद्ध

कठ मोकलअविन बजि बलाये । (टेक)

चम्बा नाथनि आज्ञाये

विष्ण कोलन च़ामन कड क्राये

सिरिज मोटिया दोपुस छ़ाये थव

मलखाह अंदरय कननय आये । (टेक) चम्बा

नखन छिव मालि फम्ब दुशालय

अथन क्यथ प्यालय ह्यथ

मनबद्य मोंजि तय त्रक़बधि ल्यदरे

दिदरे छिप सब होरान

अर्जुनदीव वोदनी रामच़न्दर गोंन्दरी

सोन्दरी बब छिय सब होरान ।

हमने पुत्री को इतने परिश्रम से पाला है जितना परिश्रम तप करने में लगता है। तुम चावल को मिट्टी की (सकोरेनुमा) थालियों में भर-भर कर रखना । हम तुम्हारे लिए क्या पकाते अगर हांजियों की स्त्रियां धान कूट के नहीं रखतीं ? हमने विशेष-विशेष लोगों के लिए बासमती का मीठा पुलाव बनाया और मित्रों के लिए नमकीन पुलाव ; हमने तुम्हारे लिए खाना पीतल के बर्तनों में पकवाया तथा बड़े बर्तनों में ज़ियाफत पकवाई । हमने तुम्हारे लिए नौ तरकारियां पकवाई । मेंथी, पालक तथा दहीवाले बेंगन। पांत में वली-ज़ादे बैठे हैं ज़रा पूछना कि कलिये (मांस का भी कलिया बनता है तथा पनीर का भी) का स्वाद कैसा है ? हमको सारी जागीर मुफ्त में मिल गयी है । पूछना कि मुफ्त का स्वाद कैसा है ?

दशरथ राजा के सीधे-सादे बेटे दहीवाले नदरू (कमल-ककड़ी) आए हैं । मां तेरी बलिहारी जाय । पूछना गुच्छी का स्वाद कैसा है ?हमने सम्बन्ध राजाओं से कर लिए हैं, खाना बनानेवालों का साथ स्वयं भवानी दे रही हैं । कूड़े (झूठन) के ढेर पर लीसअ (एक सब्जी) उग आई ; धर्म-सभा के पास ऐसा चम्भानाथ की आज्ञा से हुआ । हरगोपाल जो वकीलों के सरदार (मुखिया) थे, की राक्षस-बुद्धि देवताओं की बुद्धि में परिवर्तित हो गई । उन्होंने भेड़ों को कटने से बचाकर उनके ऊपर से बड़ी बला टाल दी । विष्णु कौल ने पनीर को तलवाया तथा सिर्य भट्ट ने कहा कि इस पनीर को ओट में रख दो । यह पनीर मलखा के अन्दर से खरीदा गया (मलखा श्रीनगर के भीतरी इलाके में एक स्थान है जहां का पनीर आज भी प्रसिद्ध है ।) कन्धे पर

पशमीने की रुई के दुशाले रखे हुए हैं तथा हाथों में प्याले लिए हुए हैं। मनों मुंडी की सब्जी तथा हल्दी खर्च कर ली, सुन्दर स्त्रियां पांत को खाना खिला रही हैं। अर्जुनदेव तथा रामचन्द्र जी स्वयं खड़े होकर खिला रहे हैं। हे सुन्दरी, तुम्हारे पिता पांत का खाना खिला रहे हैं।

(सरतल—पीतल, रोन—पकाया (बंगला में रान्ना कहते हैं), ज़ियाफत —विशेष व्यंजन (फा०), द्वद—दूध, ज़ामद्वद —दही, शुफ्ऱ्त —काजू किशमिश नारियल आदि मेवा तथा पनीर को चाशनी में डालकर बनाया जाने वाला व्यंजन, कनगिछ—गुच्छी, मीठ्य —स्वादिष्ट, छअक्यदारी —रिश्तेदारी (टीका लगा कर), वाज़, —पेशेवर रसोइये; बोदि—बुद्धि, फम्ब—रुई, त्रक —पसेरी, गोन्दरी —(फूलों के गुच्छे समान) सुन्दरी, दिदरे —तड़क-भड़क वाली 'स्मार्ट 'महिला, सब —पांत (खाने वालों की), होरान —खिला-खिला कर पांत समाप्त करना।)

विवाह संस्कार के अन्य गीत

बारातियों के आने पर व्यंग्य-प्रधान गीत भी कभी-कभी गाए जाते हैं।

(29) *मार पेच शोक तअ कअलीन बरदार, यिम सरदार बीठिय स्यद्रय स्योद*
काकन हान्ज़ी काकन्य कूरी, वअरिव चअन्य बीठिय ताकन प्यठ।
क्याह करिज़ि लअनिस,लअन्यन्यन कारनन
सअह रुद शालन प्याल बरदार।
(स्यद्रय स्योद —आमने सामने।)

अर्थ — गलीचों तथा कालीनों पर आसीन होने का जिनको अभ्यास है, वे ही सरदार आज हमारे सामने आकर बैठ गए। हे काकों के काका की पुत्री, तुम्हारे ससुराल वाले खिड़कियों पर बैठ गए हैं। क्या करियेगा भाग्य के कारणों का, शेर आज गीदड़ों की आवभगत कर रहे हैं।

(काक श्रेष्ठ माने जाते हैं, उनके काक अर्थात् वयोवृद्ध व्यक्ति : सअह —सिंह।)

लग्न के गीत —

(30) *हारन्य दोह तय पोहन्य राच़य कोरि हिन्द्रय बाव़ छि बराबर*
लग्न छिय करान कान्यनी अन्दर सोन्दरी रूप चोन सिर्यस प्यठ
वसदीव राज़न्य सत दार्य मन्दरी कमी छानन गरिये दारित बर
वरने आमुत छुय श्रीकृष्ण सोन्दरी, सोन्दरी रूप चोन सिर्यस प्यठ
लग्न छिय करान देवान-खानस करी बगवानस नमस्कार
लग्न छिय करान नवि लरि ताकस बोलाकि ब्राकस नस्तवाजे
लग्न छिय करान दछने दारे हारय ब्रारे स्यदिय स्योद।
(समानता होने के कारण 30 तथा 31 का अर्थ नीचे लगातार दिया है।)

(31) *कडमख क्रंडतय दिच़थम शोलय हअर छय तोतस बोलि यिवान*
सारनीय हुन्द वरदन दितुमय योरय सच़स मोहनिव दोरनवमय
नअल्य यलि छोनथम त दिच़थम शोलय हारि छय तोतस बोलि यिवान
कनन हुन्द डेजिहोर दियुतमय योरय सूय कूर्य पूशनय आदि अन्त ताम,
कनन यलि छुनथम त दिच़थ शोलय।
लोहुर तोत त कश्मीर हअरी तोहि दोन कती गय पारीज़ान

राजसन्दि गोबरो त वज़ीर सिन्ज़ कूरी तोहि दोन जुर्यी छिय बराबर
आकाश परी कुश छ़नी खोरन पद्‌य दी हेहर संजन मोहरन प्यठ
सतव पंअसव प्यठ पकनावहख पननी गोत्रय फिरनाव हख ।

गीत सं० 30 का अर्थ —

आषाढ़ मास के दिन तथा पौष मास की रातों के समान लड़की की ससुराल के यहां के लोग (बराती) होते हैं । लग्न-संस्कार सबसे ऊपर वाली मंज़िल पर हो रहा है, हे सुन्दरी तुम्हारा रूप सूर्य से भी तेजस्वी है । वसुदेव राजा के सात मंज़िले इस भवन के खिड़की दरवाज़े किस बढ़ई ने बनाये हैं ? तुमसे विवाह रचाने श्रीकृष्ण आये हैं, हे सुन्दरी तुम्हारा रूप सूर्य से भी तेजस्वी है । तुम्हारा लग्न दीवानखाने में हो रहा है, भगवान को नमस्कार कर लो । तुम्हारा लग्न नए मकान में हो रहा है (जहां सभी ऊंचे परिवारों के लोग हैं ।) तुम्हारी नाक की बुलाक चमचमा रही है (जैसे पानी खौलता है) । तुम्हारा लग्न, दक्षिण में जो खिड़की पड़ती है, उस पर हो रहा है — मैना वहां से सीधी दिखती है ।

गीत सं० 31 का अर्थ —

मैंने तुमको पालपोस कर बड़ा किया और तुम इतनी सुन्दर निकल आई ; मैना तोते से बोलने के लिए चली । मैंने सभी के भेंट में आये कपड़े आदि, यहीं से दे दिए हैं, दर्जी के पास मैंने तुम्हारे कपड़े आदि मंगाने के लिए नौकर भेज दिए हैं । कानों का डेजिहोर (डेजिहोर दोनों कानों में पहनने का एक आभूषण है . इसे पिता अपनी पुत्री को देता है । यह सुहाग की निशानी मानी जाती है, इसको सोने की ज़ंजीर में लटकाया जाता है, वह जंज़ीर ससुराल से आती है ।) मैंने तुमको दिया है अब यह अन्त तक तेरे पास बना रहे —तुम सुहागिन अन्त तक बनी रहो । जब तुमने यह कानों में पहना तो तुम बहुत सुन्दर दिखने लगीं (टेक) हार छय तोतस । लाहौर का तोता है तथा कश्मीर की मैना है, तुम दोनों की जान-पहचान कहां हो गई । राजा के बेटे और वज़ीर की बेटी तुम दोनों के सम्बन्धी एक ही स्तर के हैं । हे आकाश की परी तुम कुश का पुलहोर अपने पैरों में पहन लो तथा अपने तलवों को अपने ससुर की मोहरों के ऊपर रख दो । सात पैसों के ऊपर से चलाकर उन्होंने तुमको अपने गोत्र में परिवर्तित किया ।

(नोट :– ब्रज आदि क्षेत्रों में भांवरों से पूर्व कन्या पक्ष की ओर से 'पीली

चिट्ठी' या 'लगुन' भेजी जाती है। कश्मीर में 'लग्न' से तात्पर्य है सप्तपदी आदि का विवाह के दिन का कार्यक्रम। विवाह से पूर्व जो लग्न-पत्र या 'पीली-चिट्ठी' भेजी जाती है उसे कश्मीरी में 'लग्न चीरि' कहते हैं जो संस्कृत के 'लग्न-चूड़िका' से बना है)।

बुलाक — ब्रजभाषा में नाक के इस आभूषण का जो अर्थ है, वही कश्मीरी में है। पुलहोर उपानह (कुश-घास का जूता) जिसे विवाह के अवसर पर थोड़ा सजा-संवार दिया जाता है, वधू को पहनाया जाता है।

मननमाल बांधने के गीत

(32) (दूल्हा-दुल्हिन के सिर पर बांधी जाती है और वरमाला की भांति अदली-बदली जाती है।)

सुली वोथी पोशिनी बिली खसी बालस लालस किच़ वाल मननमाल
सोर्ग़्य खच़खय महानन्द पोशनी पोशे माल त वसुरी ह्यथ
दनडख वनची ऋषि-बाईये दिव राईस मंगी मननमाल
होहवरेन लदुयो गुलाब दस्ता वस्तो गनडयो मननमाल
मननमाल गंडअस माजि छतिस दस्तारस थदि कोटि वथरोस सबज़ारस।
मननमाल गंडयो सुबद्राये अर्जुनदीवनि बर्याये
मननमाल गंडयो लकुचे हशे यशिज़ा मति पूति लशेहम
मननमाल गंडयो म्याति पिल्य वाजे लकुचि माजि लोल बर्यी
मननमालि चाने निच निच सालन कन्द फल्य रट दन्द मालन तल
भक्ति वत्सल मोनुक म्यानि मननय शक्तिनाथ गंडमय मननमाल।
बोज़ बोज़ कनवी करु करु मनन,ज्ञान सूत्यन ध्यान-दीप ज़ाल
साक्षात्कार छोख शिव रूप ननती। शक्ति नाथ० (टेक)
मीना हिमालस कुन वननय सानि गरि आमुत त्रिज़गतपाल
अन्यछा करतम अनुग्रह पननुय। शक्ति नाथ० (टेक)

(वसुरी —दूब की घास के गुच्छों में फूल लगाकर बनाते हैं ; इन्हीं गुच्छों से मननमाल बनती थी।)

हे फूल बेचनेवाली तुम शीघ्र उठ खड़ी हो तथा लाला (दूल्हे) के लिए मननमाल ले आओ (मननमाल तिल्ले की एक माला होती है जो दूल्हे की पगड़ी पर तथा दुल्हिन की साड़ी में सिर पर बांधी जाती है।) हे महानन्द (सम्बोधन) पोशनी (फूल बेचने

वाली) तुम स्वर्ग गई तथा वहां से फूलों की मालाएं तथा 'वसुरी' लेकर आ गई । हे दण्डक वन की ऋषिबाई देवता से तुम मननमाल मांग लो । ससुराल से तुम्हारे लिए गुलाब का गुलदस्ता आया है, हे वस्ता (सम्बोधन) तेरे मैं मननमाल बांध दूँ । मां ने हल्के रंग की पगड़ी पर मननमाल बांधी, ऊंचे कमरे में हरा फर्श बिछा दिया । तुम्हारी मननमाल सुभद्रा, जो अर्जुनदेव की भार्या है, ने बांधी । छोटी सास ने तुम्हारी मननमाल बांधी है । यशस्वी पुत्र तुम चिरंजीवी हो । तुम्हारी मननमाल में छोटे-छोटे फुन्दने हैं, तुम 'कन्द' (शंकु के आकार की शक्कर मात्र की मिठाई) को अपने दांतों में दबा लो । तुमको मेरे मन ने भक्त-वत्सल माना । हे शक्तिनाथ, मैंने तेरे मननमाल बांधी । तुम कानों से सुनो और मनन करो फिर ज्ञान से ध्यान द्वीप जलाओ, मुझको तो तुम साक्षात शिवरूप दिखाई पड़ते हो । हे शक्तिनाथ मैंने तुम्हारे मननमाल बांधी । मैना हिमालय से कहती है कि हमारे घर त्रिज़गतपाल आए हैं । अनिच्छा से भी तुम मुझ पर अनुग्रह करना । हे शक्तिनाथ, मैंने तुम्हारे मननमाल बांध दी है ।

(मननमाल—मनन की माला ; मन के निश्चय एवं ध्यान की माला, जो विवाह में 'वरमाला' समान है और आराधना में ध्यान-धारणा की प्रतीक है, जैसे वैष्णो देवी आदि देवी-दर्शन के यात्री आज भी बांधते हैं । आजकल तिल्ले की मननमाला बनती है ।)

पोशि-पूजा (पुष्प-पूजा)

(33) *बाव पम्पोश फोल्य प्रेमय सरसअय*
शेव शंकरसअय छय पोशि पूज़ा ।
शेव ध्यान दरुम वीद विस्तोरुम अमृत छि हारान कारण न दीव
बैकुण्ठ सुपुदुइ सानिस गरसय रामीश्वर सअय छि पोशि-पूज़ा
अमरनाथ किस अमर सअय तीर्थ-यात्रा द्रायि हय्थ पुनि-फल
सर्व तीर्थन हुन्द फल छु कश्मीर सअय मुक्तीश्वरस छि पोशि-पूज़ा ।
हंसदार वार प्यठ कोल सरसय शिवलूक गंगाय मन्ज़ कर श्रान
विश्वरूप ज़ानिथ व्यशम्बर सअय गंगादर सअयछि पोशि पूजा
अर्जुनदीवन ह्यथ युधिष्ठर सअय, नाराननाग कर द्यान पूज़ा
मनकिस मन्दरस मन्ज श्रीधर सअय चक्रीश्वर सअय पोशपूज़ा
रंग रंग कोंग पोश फोल्य पोम्पुर सअय, ज्वालाय बालिकायि पूज़ाय लाग ।
श्री महादेवस त बस्मादरसअय हर्शीश्वर सअय पोशि पूज़ा ।

अर्थ— प्रेम सरोवर में जो कमल खिले हैं उनको तुम शिवशंकर पर चढ़ा दो क्योंकि आज शंकर-पार्वती की पुष्प-पूजा है। मैंने शिव का ध्यान किया तथा वेदों को विस्तार से सुनाया, देवता आज अमृत बांट रहे हैं। हमारा घर बैकुण्ठ बन गया क्योंकि आज रामेश्वर की पुष्प-पूजा है। हमारी अमरनाथ की तीर्थयात्रा ने हमको पुण्य-फल दे दिया क्योंकि आज अमरनाथ के 'अमरेश्वर' की पुष्पपूजा है। सभी तीर्थों के फल कश्मीर को प्राप्त हैं, मुक्तेश्वर की पुष्प-पूजा है। हंसद्वार (में प्रवेश करके) शक्ति-सर, शिवलोक गंगा में अच्छी तरह स्नान करो। विश्वम्भर को विश्वरूप जानकर गंगाधर की पोश-पूजा है। अर्जुनदीव ने युधिष्ठिर को लेकर नारान नाग में ध्यान पूजा की, मन के मन्दिर में श्रीधर की, चक्रेश्वर की पुष्प-पूजा है। पाम्पोर में रंगीले केसर के फूल 'ज्वाला' बालिका की पूजा में लगा लो। श्री महादेव की, भस्माधारी की; हर्षेश्वर की पुष्प-पूजा है।

(34) *मुक्त कनि तारख छिसय तापदानस छमय ईशानस पोशि पूज़ा*
आकाशि पोशि वर्षुन हनि हनि छुम रथवान कनि छोम सिर्य दीवत
सायबान बनोवमुत छुस आसमानस छमय ईशानस पोशपूज़ा
अथस क्यथ चन्दरम हिथ रुमाल छस वाव लूकपाल छुस करान गजगाह
ब्रह्मा विष्न छुस सूत्य जांपानस छम ईशानस पोशपूज़ा
चित्रगुप्त ताह करान छुस सामानस यन्द्रराज़ छुस मोरछल बरदार (टिक)
दरमराज़ थोवमुत प्यठ दरमदानस छम ईशानस पोशपूज़ा
सत ऋषि सथज़ल ह्यथ मंज़ बानस कोफूर मिल विथ छिस छकान
सतवय ग्रिहदीय छिस हिथ विमानस, बछमय ईशानस पोश पूज़ा
गंगासागर हिथ गंगा छस, वीदज़ालान छस चन्द्रवागा।
लक्ष्मी मीठिय छय दिवान दामानस। छमय० (टिक)
नाबद आपरान महाविद्या छस करान जमनाछस वावजि वाव
दुदमाजि सरस्वती सूत्य छय पानस छमय ईशानस पोश पूज़ा
ज़ंगिथाल अनवान पान स्यदा छय व्यून लेखान छस कर्म-लीखा
आथम रूप वसवोन छो मनकिस थानस। छमय०
वासुक त शीशनाग छिरिबरदार छिस रतनन हुन्द मुक्तहार छुस नअली (टिक)
गट चज्य त गाश आव सअरसिय जहानस छमय ईशानस पोश पूज़ा
कुबीर त वरुन खर्चबरदार छिस सोरुय स्वर्ग दारय सअती ह्यथ।
रथ छिय गंडिमती मन्ज़ मअदानस छम ईशानस पोश पूज़ा (टिक)

ड्यकस पेयठ चन्द्रम ट्योक तीजवान छुस बुथिस छुस करोरुक सिरियुक तीज़
छय दया गुलिगंडिथ तस दयावानस छम ईशानस पोशपूज़ा (टिक)
अरग कर मनस तय पूजकर प्राणस कृष्ण पूज़ाय सनिदानस लग
ज़आलिथ पाफ गअलिथ अज्ञानस । छय० (टिक)

अर्थ —मोतियों के बदले झरोखे में तारे चमकते हैं, ईशान की पुष्प-पूजा है। आकाश से धीरे-धीरे पुष्प वर्षा हो रही है, स्वयं सूर्य देवता सारथि बनकर आये हैं। पूरे आकाश को शामियाना बना दिया है, ईशान की पुष्प-पूजा है, चन्द्रमा हाथ में रूमाल लेकर हैं। पवन, लोकपाल पंखा झल रहे हैं। ब्रह्मा तथा विष्णु डोली के साथ हैं —ईशान की पुष्प-पूजा है। चित्रगुप्त सामान की तह कर रहे हैं। इन्द्र स्वयं मोरपंखी लेकर विजन डुला रहे हैं। धर्मराज सबके ऊपर धर्म तथा दान की देखभाल के लिए रखे गए हैं। ईशान की पुष्प-पूजा है। सप्त-ऋषि सात जल बर्तनों में लिए हैं और कपूर मिलाकर छिड़क रहे हैं। सातों ग्रह विमान लेकर हैं — ईशान की पुष्प-पूजा है। गंगासागर गंगा लेकर हैं तथा चन्द्रभागा वेदों को लेकर आई है। लक्ष्मी आंचल चूम रही है —ईशान की पुष्प-पूजा है। महाविद्या मिश्री खिला रही है तथा यमुना विजन डुला रही है। सरस्वती दूध-माँ बनकर तुम्हारे साथ है, आज ईशान की पुष्प-पूजा है। सिद्धि स्वयं थाली लेकर शुभ शकुन कर रही है, व्यून (वैमाता) कर्मलेखा लिख रही है। 'आत्म रूप' मन के स्थान पर उतरने वाला है। वासुकि तथा शेषनाग रक्षक के रूप में (पीछे) खड़े चंवर तथा मोरपंखा डुला रहे हैं। तुम रत्नों का हार पहने हो। सारे संसार का अन्धकार समाप्त हो गया है तथा प्रकाश फैल गया है, ईशान की पुष्प-पूजा है। ख़र्चबरदार के रूप में कुबेर तथा वरुण हैं, पूरा स्वर्ग (लोक)साथ में है। रथों को बीच मैदान में बांध दिया है, ईशान की पुष्प-पूजा है। माथे पर चन्द्रमा रूपी टीका तेज टपका रहा है, चेहरे पर करोड़ों सूर्यों का तेज है। दया स्वयं हाथ जोड़े उस दयावान के पास खड़ी है, ईशान की पुष्प-पूजा, पुष्प पूजा है। अपने मन को अर्घ्य बना कर प्राणों की पूजा कर तथा कृष्ण उपासना में लग जा। पापों को जला कर तथा अज्ञान को समाप्त कर, ईशान की पुष्पपूजा है। (ज़ापान —डोली ; जंगिथाल —शकुनथाल ।)

सथपद्य (सप्तपदी-भांवरें)

(35) *मथुरा नगरी हुन्द मुरलीदर छुय, शेरि छुस मुकुट तय अलंकार*
निश छस रुखमन्य तमिसुन्द वर छुय, हर छुय सअथ्य कर प्रदीक्षण

कअशी नगरी हुन्द व्यशम्बर छुय, ज़टि छस गंगा त हटि वासुक
निश छस पार्वती तमिसुन्द वर छुय, हर छुय सअथ्य कर प्रदीक्षण
जनक राजुन स्वयंवर छुय, दनुरदण्ड तुलने आव
अयोध्या नगरी हुन्द राम छुय, हर छुय सअथ्य कर प्रदीक्षण।

मथुरा नगरी का मुरलीधर है, शीश पर मुकुट तथा अलंकार हैं। साथ में रुक्मिणी बैठी हैं, ये उन्हीं के वर हैं, शिव (हर) साथ में हैं प्रदिक्षणा करो। काशी नगरी के विश्वम्भर हैं, सिर पर गंगा तथा गले में वासुकि है। साथ में पार्वती बैठी है, ये उन्हीं के वर हैं, शिवजी साथ में है, प्रदक्षिणा कर लो ; धनुर्धर (धनुष) उठाने आए हैं। अयोध्या नगरी के राम हैं। शिव साथ में हैं, प्रदक्षिणा कर लो।

दयबत तथा अथवास के गीत (देवभात तथा पाणिग्रहण के गीत)

(36) *सोनसन्दिस थालस रोपसुन्द ख़ूरी कूरी लज़मय दयबत हन*
दयबत लोदुमय चरकी थालस सतवोहर लालस मदमती
दिमयय यिम रतन त दाजे फेरी कूरी वाजे अथवास करान
यिछ़ कूरी रछखय देवकी माजे तिथनय ह्यकी कांह ति रछीथ
ख्यन दितिनय खंड खासी चिनी दुद पाजे फेरी करी वाजे अथवास करान
वसुदीव बबन त दिवकी माजे तिथनय ह्यकी कांह ति रछीथ
पोशपूज़ कर मालि व्यश कोमारे वार पूज़ कर मालि सालिग्रामस
केंह छिख गमगीन राम राम मोठये कर्मय लोन चोन पोठये द्राव
गनपत सअबन गोरुय नालुक त्रोटुये, वल्लबाय करुनय अथरोटये
केह छिख़ व्याठि व्याठि मुक्त अलरावान लदिनम लदय रंग नावन क्यथ।

सोने की थाली में चांदी के गिट्टे लगे हुए हैं। हे लड़की, मैंने तेरे लिए देवताओं का जैसा भात परोसा। मैंने तेरे लिए देवता-भात चरख़ी वाली थाली में परोसा है। सात साल के दूल्हे के लिए मीठा भात परोसा। मैं तुमको ये रत्न तथा दहेज दूंगी। तू अथवास करती हुई फेरे ले ले। इतनी अच्छी लड़की को देवकी मां ने पाला, इस प्रकार से क्या कोई पाल सकता है ? वसुदेव बाबा तथा देवकी मां-ने जिस तरह से तुमको पाला, इस प्रकार अन्य कोई नहीं पाल सकता है। खाने को मीठी-मीठी वस्तुएं दीं तथा पीने को दुग्ध के मटके दिए, तू अथवास करते हुए फेरे ले ले। हे पिता तुम विष्णु-कुमारी की पुष्प-पूजा कर लो, तुम शालिग्राम की भी ठीक से पुष्प-पूजा करना। कुछ लोग ग़मगीन हैं, वे राम-राम भी भूल गए; तुम्हारा भाग्य

उज्ज्वल है। गणपति ने गले का हार बनाया तथा वल्लभा ने तुम्हारी सहायता की, कुछ तो मोटे-मोटे मुक्ता हिला रहे हैं, जो रंगीन शिकारों में भरे जा रहे हैं तथा भरे जायेंगे।

अथवास के गीत —

(37) *अथवास करान यिन अथ डलिये, कथ करी लोहुरय तोतस सूअत्य*
अथवास करान अथ रटीय चीरय कथकरी सीरय बअचस सूअत्य।

'अथवास' करते में हाथ इधर-उधर न हो जाय, लाहौर के तोते के साथ तुम बातें कर लो। 'अथवास' करते में तुम हाथ में हाथ कस कर पकड़ लो, अपने जीवन-साथी के साथ तुम गुप्त बातें करो।

विदा के गीत —

(38) *वसुदीव राजुन दारि मंज़ोलुय, दिवकी ह्योतनय अलरावोन*
रुखमनि ह्यतूय बबि द्राद दिनुय,
तानि कोरि वअरिव्युक कोनय आव।
कोरि कोमारी माम ज्युव नख छुय डख छुय चतुर्बुज़ नारायन
वुनि छख लकअट तय गिन्दी कूरय हारन,
वसी कूरय नवचन तारन सूत्य।
हीमाल फोजिखय वोगन्यन बालन, पूश वाजिख पोशमालन सूत्य
गहन कमी गोरनय वसुदीव लालन कृष्णजू ब्यूठय सुनर्यवानन
बलराम दपान बुय कोछि वालन, पुश वाजिख पोशमालन सूत्य
लाल छुय लोतिलोति कन्द फल्य च़ापान,
बोज़ मालि नोश छय साज़ करान।

(39) *दारि किन्य दिच़मय रूमाल दअरिथ, सोन मन्ज़ नियथम हिय ज़ारिथ*
अमला कमला निर्मल दारी तुहि बूज़िव कन दारिथ क्याह
यज़मन आयोय मुरि दारि दारी दिवकी दिच़नस तारीये
रादाय मुचरिनस बरनयन तअरी तोहि बूज़िव कन दअरिथ क्याह
सानि कनि गंगा तुहिन्दि कनि वितस्ता यि गर च़तस थवीज़े
यज़मनो रूदयो च़्यतस यमि गरि आहम मुर्य दारिथ
दिवकी मअजी परन प्यतसी यि गर च़तस थवीज़े।

(40) *ईत्य नबस तारख त्योत सोन क्रोनोय ज़ोरि अकि लोन गव ज़ोरावार*
वुछुम यन ज़ातकस प्रछुम यन लानिस कूरे लानिस नमस्कार।
दारिप्यठ बुलबुल बोज़ महाराज़ो राज़कोमार छिय साज़ करान
त्योलि ननी यज़मन वोछे यलि सानि कोरि रछि कोछे क्यथ
ख्यन दियस खंड खास्य लाल गंडिज़ेस मछे
माजि हन्ज़ि कुंज़ बरदअरिये।
माजि मय पेनय कामि च़यतस, माजि हन्ज़ि कुन्ज़ बरदअरिये
वुनिसताम करथम हेरि बोन रअछी, माजिहेन्ज़ि टअछी गर गछखय
दार मालि पोम्बुर दारिकिन्य वालोन, बोज़ मालि कूर सअन्य पालन छय।
असि मालि पुशरव दयस थिये, फीरिथ तोहि अथि पिये क्याह
सोन सन्ज़ गंगये रोपसन्ज़ हीय छय,
दय सन्ज़ द्रय छय वार रछिज़यन
व्यसन हन्ज़ी व्यस सोंदरिये, व्यस चानि दारि त बरिये छय
यति दिच कोंग मोंड तथ नो तछिज़े, कूर नो रछि ज़यन लूकु होन्द माल।
बाहन वरियन दितिमय कुछये आखर द्रायख पछिये बाय
त्रयन ववनन हिंद लूख गय जमा,
कोरि हुन्द तमा करिज़िन ज़ांह।

(गीत सं० 38, 39, 40 का अर्थ एक साथ दिया गया है)

वसुदेव राजा के यहां की गुड़ियों का झूला देवकी ने हिलाना-डुलाना प्रारम्भ किया। रूक्मिणि को दूध पिलाना प्ररम्भ किया, तोनारी कन्या के ससुराल वाले क्यों नहीं आए ? हे कन्या कुमारी तुम्हारे पास ही तुम्हारे मामा हैं तथा तेरे सहारे के लिए स्वयं चतुर्भुज नारायण हैं। अभी तो तुम छोटी कन्या हो, अभी तुम कोड़ियां खेलो। तुम ऊंचे पर्वतों पर हीमाल के समान खिल उठी हो —फूल वाली तुमको फूल मालाओं के साथ उतार लाई है। गहने तुम्हारे किसने बनवाये ? वसुदेव लाल ने स्वयं बनवाये और श्रीकृष्ण सुनार के पास देखरेख को बैठे रहे। बलराम कह रहे हैं कि मैं ही गोदी में नीचे उतारूंगा पर फूल वाला तुमको फूलमालाओं के साथ नीचे उतार लाया। (कन्या इतनी तन्वंगी-हलकी है।)

लाला धीरे-धीरे कन्द के टुकड़े खा रहे हैं, सुनो हे पिता, बहू श्रृंगार कर रही है। खिड़की में से मैंने रूमाल फेंका, सोने में से तुम हिय (उसके प्राण) छांट के ले गए, विशेष वस्तु निकाल के ले गए। अमला, कमला तथा निर्मला तुम कान लगाकर

क्या सुनोगी? जज़मान झोली फैला-फैला कर आए परन्तु देवकी मां ने दरवाज़ों के कुण्डे लगा लिए; परन्तु राधा ने द्वारों की कुन्डियां खोल दी, तुम लोग कान लगाकर क्या सुनोगी? हमारी तरफ से गंगा (गवाह है) और तुम्हारी तरफ से वितस्ता (गवाह है) इस घर को भूलना मत। हे जजमान, क्या तुमको याद है कि तुम झोली फैला कर आए थे। हे देवकी मां, तुम पैरों में पड़ जाओ। जितने आकाश में तारे हैं उतने ही हमारे सम्बन्धी हैं, जरा से झटके में भाग्य बलवान हो गया। जब से मैंने जन्मपत्री में देखा तथा भाग्य से पूछा, हे पुत्री भाग्य को नमस्कार है। हे महाराजा तुम खिड़की पर बुलबुल को सुनो. राजकुमारी श्रृंगार कर रही है। हे जजमान तुम्हारे बड़प्पन का पता हमें तब पड़ेगा जब तुम हमारी बिटिया को गोदी में पालोगे। खाने को खंडखास दोगे तथा उसकी कलाई में रत्नभूषण (लाल, मोती आदि) पहनाओगे।

हे मां की चाबी-बरदारिन, तेरी मां को तेरी याद तो नहीं आएगी कि तू उसका कितना काम करती थी। अब तक तो तुमने ऊपर-नीचे रखवाली की; अब हे मां की प्रिय, तू अपने घर (ससुराल) जायेगी क्या ? हे पिता तुम पीताम्बर फैलाकर रखो हम खिड़की में से कन्या को उतारेंगे अब तुमको हमारी लड़की पालनी है। हमने तुम लोगों को अपनी कन्या देवताओं के सम्मुख सौंप दी है, इसको ठीक से पालना नहीं तो दुबारा से तुम्हारे हाथ कुछ नहीं लगने वाला है। सोने के गंगासागर में चांदी का हत्था है, तुम लोगों को भगवान् की सौंगन्ध है, हमारी लड़की को ठीक से पालना। अपनी सखियों में से सुन्दर सखी तुम ही हो ; देखो वे खिड़की तथा दरवाज़ों पर खड़े होकर तुमको विदा होते हुए देख रही हैं। हमने तुमको केसर की पूरी गांठ (लड़की के लिए है) दे दी है, अब तुम वहां (अपने घर) जाकर इसको छीलना-खुरचना मत अर्थात् उसे तंग मत करना, दुख मत देना। लड़की को दूसरे का माल समझकर मत पालना। बारह वर्ष मैंने तुमको अपनी गोद में पाला, परन्तु आखिरकार तुम मेहमान ही निकलीं। तीनों लोकों के लोग इकट्ठे हो गए हैं। लड़की की तमन्ना कभी नहीं करनी चाहिए।

(लानिस —भाग्य ; ज़ातक —जन्मपत्री ; गंगज —गंगासागर नामक पात्र; कोंग मोंड —केसर की गांठ (बल्ब), तमा —तमन्ना ।)

कश्मीरी मुसलमानों के संस्कार-गीत

जन्म के गीत (शअदियान) —

(1) *चाने ज़ेनय आथवार दरमय, करुमय दिलजान जिगरो नाव ।*
आठन र्‌यतन क्रूठ क्या तुलमय, नवमें र्‌यतय ज़ाव गुलज़ार
थनअ यलि प्योहोम हमुदाह परूमय, कनन करुमय दीन इस्लाम
दीन इस्लामुक लोल क्या बरुमय, करुमय दिलजान जिगरो नाव ।

तुम्हारे जन्म के लिए मैंने इतवार का रोज़ा रखा, तुम्हारा नाम मैंने 'दिलजान' रखा। तुम मुझे दिलोजान जिगर से भी प्यारे हो । आठ मास अनेकों कष्ट सहने के पश्चात् नवमें मास में तुम पुष्प के समान सौन्दर्य से युक्त उत्पन्न हुए । तब मैंने खुदा को शुकुर अदा किया तथा तुम्हारे कानों में मैंने इस्लाम की आयतें पढ़ी (सुनाई), इस्लाम के प्रति प्रेम-श्रद्धा तुम्हारे मन में जागृत की ।
(हमुदाह —धन्यवाद दिया; लोल —प्यार ।)

ख़तना के गीत —

(2) *लअलिहन्दि कुठि छय आल्यहन्द्य टेकेय,*
लअलिहन्दि लाल गव तार तरिथ ।
खतनहाल मंडहव गिन्दहव फोतस,
अज़ छम तोतस खतनहाल
माहमद सअबन सन्नत पअजी
ख़तनहअजी मुबारक ।
वसुतय कारस सोन सिन्द टेंडिये
ह्‌युन्द हय करुख मुसलमान
फतिस तल ककुर तय अथस मोहर पअजी
खतनहअजी मुबारक ।

लैला के कमरे को इलाइचियों की मालाओं से सजाया है । लैला का लाल (बेटा) पार हो गया अर्थात् उसका कार्य सम्पन्न हो गया, ख़तना हो गया । ख़तने के बाद (वह) इलाइचियों की मालाओं से सजे शामियाने में खेलेगा । आज तोते का (प्रिय बेटे का) ख़तना है ; उसने मुहम्मद साहब की 'सुन्नत' पा ली है, प्राप्त कर ली है । जिस लड़के का ख़तना है उसकी मां को मुबारक है । वोस्ता की अंगुलियों के पोरुए सोने के हैं, हिन्दू को

मुसलमान बना दिया। डलिया के नीचे मुर्गा है और हाथ में मोहरों से भरी डलिया है। जिसका ख़तना हुआ है उस (लड़के) की मां को मुबारक है।

(सुन्नत —इस्लाम के अनुसार पवित्रता पाना —ख़तना इस बात का प्रमाण है कि बालक इस्लाम में दीक्षित हो गया है। वोस्ता —'उस्ताद' का बिगड़ा हुआ रूप है। यहां ख़तना करने वाले (नाई) से तात्पर्य है, वैसे मोटर-चालक, बढ़ई आदि किसी भी व्यावसायिक (पेशेवर) कर्म करने वाले को 'वोस्ता' कहते हैं जो बोलने में वस्ता हो जाता है।)

नोट :- बालक को ख़तने के बाद कुछ क्षणों के लिए मुर्गों के दड़बे (या डलिया) में रखते हैं फिर एक मुर्गा खतना करने वाले को इनाम (धन, रुपया, मोहर आदि) के साथ देते हैं। ख़तना को अंगरेज़ी में 'सरकमसिशन' कहते हैं, जब यहूदी मिश्र में गुलाम बनाकर रखे गये थे तब (लगभग ई० पू० 4000 वर्ष) यहूदियों में, अपने भगवान (याह्वेह) के साथ अनुबन्ध के प्रतीक रूप में बालकों के ख़तने की प्रथा चली थी। वहीं से मुसलमानों ने इसे लिया है।

मसाला पीसने के गाने —

(3) *मअसालय दगयो स्वन व्यन कंज़न, रोपअ परिनयुन छानयो*
गंडरि छि च़ेटान फंडरि छि मारान
आंगन साने छु शअदीयानय, मुश्क त्रअव बअदीयानन !

मसाले को सोने की ओखलियों में कूटो, चांदी की छलनियों में छानो। गांठों को तोड़ रहे हैं मूसल मार-मार कर। हमारे आंगन में शादियाना है, सौंफ की खुशबू फैल गई।

(कंज — ओखली, बादियान — सौंफ।)

बारात के आगमन के गीत —

(4) *कुकिली रौव त्राव मंज़ पोशवननय,*
माहराज़ आव मेहरूनये लो।
बुलबुल डीशिथ बाग पोशन्नय,
शीरिथ रोज़तय हा हीतनी
माहराज़ आव मेहरुनये लो।
फरहाद छारान छुय शीरिनिये,
माहराज़ आव मेहरुनये लो।

ऐ कोयल तुम पुष्प-वन में रोफ नाच नाचो क्योंकि महाराज़ (दूल्हा) तुम जैसी (मेहरू) सुन्दरी से ब्याह रचाने के लिए आया है जिस प्रकार पुष्प वाटिका में पुष्पों को देखकर बुलबुल प्रसन्न होता है, इसी प्रकार दूल्हा, दूल्हन को देखकर प्रसन्न हो रहा है। हे सुन्दरी, तुम जाकर सज-धज कर रहो क्योंकि तुम जैसी सुन्दरी के लिए ही तो दूल्हा आया है, ऐसा लगता है जैसे फरहाद शीरी को खोज रहा है।

निकाह के गीत —

(5) *असि प्यठ ज़ातिपाक छुय मेहरबानय,*
निकाहन पानअ आई सरकारय
च़ोर यार हज़रतन सअत्य शूबअनी
असि प्यठ गटअ मन्ज़ नूर नूरअनी
निकाहन पानअ आई सरकारय।

(जाति पाक —खुदा ; च़ोर यार —हज़रत मुहम्मद के चार यार प्रसिद्ध हैं।)

हम पर भगवान् कृपालु हैं। निकाह के लिए स्वयं ही सरकार आये हैं। इन हज़रत के साथ चार यार शोभा पा रहे हैं। हमको अन्धकार में 'नूर' (प्रकाश) मिल गया है क्योंकि निकाह के लिए सरकार स्वयं आ गये हैं।

(6) *ओबरास करिमय शांदयगांडिये, थोद रोज़ी बोम्बरस बराबर।*

अर्थ— मैंने तेरे लिए बादल का तकिया बना लिया है, ज़रा अपनी आंखें ऊंची कर ले और अपने भौंरे के बराबर जा बैठ। (अबुर—अभ्र, आकाश ; बोम्बर —भ्रमर।)

निकाहनामा लिखते समय का गाना —

(7) *हवालय करमख पीरि पीरानस, चीर थफ करिज्यस दामानस।*

अर्थ — तुमको पीरों के पीर (सन्त पुरुष) के हवाले कर दिया। उसका आंचल कस कर पकड़ लेना।

(8) *अतिनस कुस छुव च़ादर रटि थई, हीमाल खटिथी खअरिज्यन।*
हत मन्य कुलफन करि वसज हरकत, बरकत वअचवह बरमुच़रान।
हेरि खस पनन्ये कुठि बेह वारय, युथनय स्वनह तारय लवि लगनय।
जिगरे थोद तुल बुम्ह कमानय, डाय सास लुख गय दीवानय।
वअरिव वअच़ख क्यहय छख न्यन्द्रे, सोन्दरी सोरमय अछ मुच़राव।

अर्थ — यहां पर चादर लेकर कौन है, हीमाल को ऊपर छुपाकर ले जाना। सौ मन के तालों को आज हरकत में ले आओ, आज तुम्हारे घर बहू रूपी बरकत द्वार खोलते हुए आ पहुंची है। ज़ीना चढ़ जा तथा अपने कमरे में ठीक से बैठ जा। ध्यान रखना कि तुम्हारे जो सोने के तार (आभूषण) हैं दीवार से न लग जायें। हे जिगरी (प्यारी) कमान रूपी भौंहों को ऊपर उठा ले, ढ़ाई हज़ार लोग तुमको देखने के लिए दीवाने हो रहे हैं। सो क्यों रही हो। सुन्दरी अपनी सुरमा लगी आंखें खोल दो।

(9) *अज़ छम मंअज़िरात पगाह यनिवोलुय, कुकिलव पोट गुलि वोलुये*
मंअज़ेरेव़य सोंबरिम बअच़य, रहमत वअच़य बरकत सान।
अज़ हृय वाति मंअज़ च़े चन्दन कुलि तलिये, दन्दन छिय मोक्तहार यों बरज़लिये।

अर्थ — आज मेंहदी रात है और कल बारात आएगी, कोकिलों ने अपनी कलाइयों में रेशम की डोरियां बांध ली। मेंहदीरात के अवसर पर मैंने सारे कुटुम्ब को इकट्ठा किया। खुदा ने बरकत के साथ रहमत भेजी। आज तुम्हारे लिए मेंहदी चन्दन के पेड़ के नीचे से आएगी, ऐ नरगिस तुम्हारे दांत मुक्ता के हार के समान हैं।

(10) *बुनिस्ताम सूजिनम मंज़िमयअरी, अज़ हय आव पान बापअरिये*
कदलह तोर महाराज़ह, आबस गव गूरह-गूरह, असि दोप रंग बुलबुल हय आव।
शाह हमदानिन्य कूरिये, महाराज़ वोतुय यूरिये।
ग्यदिये वोतुय खानय मोलुय, नेरिसी रोनि मंज़ोलुय हृयत।

सोन संजि सदरे रोपसंज़ कछवचि, यि है छुय मोगुल बचह वारह वनि वितोस।
गोडअ आख वुछिने मंज आख खबरे, अज़ हय आख बबरे मोल करने।
अस्य हय वननावव बाईजानस, हिन्दोस्तानकिस पठानस।

अर्थ — अब तक तो मध्यस्थ ही भेजे थे, आज व्यापारी स्वयं आ गया, पुल पर से दूल्हा चला और पानी हिलने-डुलने लगा, हम समझे कि रंगीन बुलबुल आ गया है। हे शाहेहमदान की पुत्री दूल्हा यहीं आ गया है। हे दादी, लाडला आ गया है। घुंघरू लगे हुए झूले को लेकर निकलो। सोने की जैकट में चांदी की बगलें लगी हुई हैं। यह तो मुग़लों का बच्चा है, ज़रा ध्यान से व़नवुन गीत गा दो। पहले तो तुम देखने आये, बीच में खबर लेने आये आज तुम बबरे (सुगन्धित वनस्पति) अर्थात् कन्या का मोल करने आये हो। हम भाईजान के लिए, हिन्दोस्तान के पठान के लिए, वनवुनगीत गवाएंगे।

(11) *युथनबा डोलि [illegible]*
डूलय पकनाव्यून रूज्य रूज़ी, असलय मान्ये बूज्य बूज़िये
अनह जंपानस चटिमय ज़अली तथ्य अन्दर छ्यख हीमअलिये ।

डोली कहीं हिल-डुल न जाय क्योंकि इसके भीतर दामिनी की आग के समान सुन्दर युवती है । डोली को रोक-रोक कर ही ले चलो, जो मैं कह रही हूँ उसका असली अर्थ समझते जाना । मैंने इस आइनें वाली डोली में झालरें लगाई हैं, इस डोली में हीमाली-सुन्दरी बैठी है ।

(अनह जपांनस —शीशों लगी डोली ।)

मुसलमान दूल्हा जब अपने घर से निकलता है तो स्त्रियां यह गीत गाती हैं :–

(12) *योर यलि गछहम दछिन्य किन्य दअर छय*
तथ्य अन्दर हअर छअय शोलह मारान
बजि वति खोतखव बजि ब्रसवारे
पीर सुन्द गुर हव छुई सवारे ।

हे दूल्हे, जब तुम यहां से अपनी ससुराल जाओगे वहां दाई ओर एक खिड़की है । उसी के अन्दर मैना (दुल्हिन) बैठी शोभायमान हो रही है । तुम शुभ बृहस्पतिवार को पीर के घोड़े पर सवार होकर राजमार्ग पर जाना ।

शोक (मृत्यु) गीत

इन गीतों को गाने की एक विशेष परिपाटी है । 'वानरेन्य' अथवा 'वानुवाजेन्य' कहलाने वाली महिलाएं, व्यावसायिक रूप से इन गीतों को गाने का कार्य करती हैं । एक 'वानरेन्य' गीत गाती है तथा एकत्रित परिवारी-परिजन महिलायें 'टेक' की अन्तिम पंक्ति समवेत्-स्वर में दुहराती हैं, जिसका अर्थ है —'हां री, सच कह रही हो ।' इन गीतों को केवल किसी नाती-पोतों वाले वयोवृद्ध परिवारीजन की मृत्यु पर, केवल महिलाएं ही गाती हैं ।

(1) *काकस सोरिन्य हेतिनय प्रान,*
बन्द त बान्दव छिस सोम्बरान ।
अन्तदान करन सअत्य वस्यस निरवान,
दान त दरम छिस करान ।

ज़ुरय त पितुरय छिस सोम्बरान,
ब्रह्म विद्या छिस बोज़नावान।
गीता पाठ छिस बोज़नावान
अहान बी पोज़ छख़ वनान तय। (टेक)

काकाजी के प्राण-पखेरु उड़ने वाले हैं इसलिए उनके बन्धु-बान्धवों को इकट्ठा किया जा रहा है। उनके हाथ से अन्न-दान कराया जाएगा जिससे उनको निर्वाण मिलेगा। उनके हाथ से दान-धर्म कराया जा रहा है। उनके बच्चों, दामाद, नाती-पोतों, सभी को इकट्ठा किया जा रहा है। काक को ब्रह्म-विद्या सुनाई जा रही है। इसके अतिरिक्त गीता-पाठ भी सुनाया जा रहा है। हां री, सच ही कहती हो।

(2) *दम दिथ खोरथम वोम कुय शब्द,*
ब्रम दिथ चलमति काकव
पथकुन खरचमति काकव, ब्रोंहकुन त्रावमति काकव
ब्रम दिथ चलिमति काकव
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

हालांकि काक मरणासन्न अवस्था में थे परन्तु खूब दम लगाकर उन्होंने 'ओम्' शब्द कहा और हमें भ्रम में डालकर (कि अभी वे हैं) चले गए। इस गीत का एक पाठभेद यों भी मिलता है :–

हृदय खोरथम दम दिथ वोम तय
ब्रम दिथ चलिमति काकव,
कोरि खेलि काकव नौशिवालि काकव।
ब्रम दिथ चलिमति काकव
पथकुन ज़रचुथ ब्रॉहकुन त्रोवुथ
लारि जायि लज़था काकव।
अहान बी पोज़ छख वनान तय।

भाव इसका लगभग वही है जो पीछे वाले का है; जो भेद है वह नीचे दिये अर्थ से प्रकट हो जायेगा :–

तुमने दम लगाकर हृदय से 'ओम्' शब्द को खींचा। हमको भ्रम में डालकर (कि अभी हो) चले गए। पुत्रियों के झुण्ड तथा पुत्र-वधुओं वाले काक तुम हमको भ्रम देकर चले गए। ओम् शब्द के साथ काक ने प्राण त्याग दिए। हम समझ ही नहीं पाये, वे इतने दम-खम के साथ ओंम् शब्द बोल रहे थे कि हम भ्रम में पड़ गए।

अतीत में काक ने खूब धन खर्चा और भविष्य के लिए भी खूब छोड़ गए। मकान बनवा लिए तथा ज़मीनें भी खरीद लीं। हां री, सच कहती हो।

(3) *हर हर करान गर गव काक*
हर हर करान गर गव कोरिवोल काक
गर गव मेखल दिवान थोकमुत काक
गर गव लरि लदान थोकमुत काक।
हर हर करान गव तीर्थयात्रा करनवोल काक।
अहान बी पोज़ छख़ वनान तय। (टेक)

काक की मृत्यु हो गई। वे 'हर हर'जपते हुए अपने घर चले गए। अर्थात् ब्रह्मलोक चले गये, मृत्यु को प्राप्त हुए। बच्चों का जनेऊ कराते-कराते थके हुए काक अपने घर चले गए। 'हर हर' जपते हुए, पुत्रियों वाले काक, अपने घर चले गए। सभी के लिए खूब मकान बनाते-बनाते थके हुए काक अपने (असली) घर, ब्रह्मलोक चले गए। तीर्थ-यात्रा करने वाले काक 'हर हर' कहते हुए अपने घर चले गए।

हां री सच ही कहती हो।

(4) *नयन्द्रे वुज़तव काकव,*
शुरय ब'अच त्राविथा काकव।
दान दर्म कोरुथा काकव
मन्दरन गछ़ान थकिमति काकव
अहान बी पोज़ छख़ वनान तय।

नींद से जग जाइए काक ! बच्चों तथा घर के सभी सदस्यों को काक छोड़कर चले गए। मन्दिरों में जाते-जाते थक जाने वाले काक चले गए, दान और धर्म करके चले गए।

हां री, सच ही कहती हो।

(5) *रथ्य-रथ्य काक निव अथ्य ललवान,*
अरबाब ओनमस ज़रबाब थान।
कोंतुल्य त बाजि हो छिस वज़ान।
ब्राह्मन च पंडित छिस परान।
रथ्य रथ्य काकक निब अथ्य ललवान।

कश्मीरी पंड़ितों में भारतवर्ष के अन्य हिन्दुओं की तरह ही जब किसी बड़े-बूढ़े की मृत्यु हो जाती है तो उसकी अर्थी को खूब सजाया जाता है। इसके अतिरिक्त ढोल

तथा नगाढ़े भी बजाए जाते थे। यहां तक कि अर्थी को ज़रबाब (Brocade ज़री) से सजाया जाता था। इन पंक्तियों में यही भाव प्रस्तुत किया गया है।

काक की अर्थी धीरे-धीरे श्मशान घाट की ओर ले जाई जा रही है। अर्थी ज़रबाब से ढ़की हुई है। बाजे तथा नगाढ़े बज रहे हैं। ब्राह्मण तथा पंडित मंत्रोच्चार कर रहे हैं।

इस गीत में निम्नलिखित पंक्तियां भी मिलती हैं :—

न्यरवानिच सखर छिस करान,

आकाश पोशि वर्षुन छुस प्यवान।

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

निर्वाण की तैयारी कर रहे हैं। आकाश से फूलों की वर्षा हो रही है। (कश्मीरी शैव मतानुसार ही 'निर्वाण'का अर्थ है। इसके लिए विशेष प्रकार का एक कर्मकाण्ड भी निर्धारित है।)

(6) *आकाश वोथुयो पोशि व्यमान,*

रथ'अ येति क्याह शूरमय जान।

पंडित त ब्राह्मन वीद परान,

महिमनापार छिस बोज़नावान।

पटि त पश्मीन सअत्य सजावान।

अहान बी, पोज़ छख़ बनान तय। (टिक)

काक की मृत्यु पर आकाश में पुष्प-विमान उतर आया, इधर हमने काक को श्मशान घाट तक ले जाने के लिए बहुत सुन्दर तरीके से रथ को सजा लिया। पंडित तथा ब्राह्मण वेदोच्चार कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त महिमनापार भी सुना रहे हैं। काक की अर्थी को पट्टू तथा पश्मीने से सजा रहे हैं।

हां री, सच ही कह रही हो।

(7) *कृष्नन बूजुय, व्यशनन सूज़िय मोहनिव।*

नारायनन बूजुय यन्द्राज़न सूज़िय मोहनिव

दर्मराज़न बूजुय, गरुड़राजन सूज़िय मोहनिव,

अग्नराज़न बूजुय वरुन राज़न सूज़िय मोहनिव।

सिरयराज़ेन बूजुय, चन्द्रराज़न सूज़िय मोहनिव।

कुबीर राज़न बूजुप ब्रह्मान सूज़िय मोहनिव।

अहान भी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

(काक के अन्तिम समय पर सभी देवताओं ने अपने दूत भेज कर काक को अपने पास बुलाना चाहा । इस शोक-गीत में अनेक पौराणिक तथा वैदिक देवताओं का उल्लेख है । इन पंक्तियों का भाव यह है कि काक इतने पुण्यात्मा हैं कि सभी देवता उनको अपने पास स्वर्ग में बुलाते हैं । तात्पर्य यह है कि ये सभी देवता दिवंगत आत्मा की परलोक-यात्रा में सहायता करने को प्रस्तुत हैं ।)

कृष्ण ने काका की मृत्यु का समाचार सुना तथा विष्णु ने अपने नौकर अर्थात् दूत भेज दिए । नारायण ने सुना, इन्द्र ने दूत भेजे । धर्मराज ने सुना, गरुड़राज ने दूत भेजे । अग्नि ने सुना और वरुण ने दूत भेजे । सूर्य-देवता ने सुना, चन्द्र-देव ने भी दूत भेजे । कुबेर ने सुना तथा ब्रह्मा ने दूत भेजे ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(8) *शान्द प्यठ गीता कम्यू वखनय,*
पोत्रन गीता पान वखनय ।
अहान बी पोज़ छख बनान तय ।

तुम्हारे सिरहाने गीता की व्याख्या किसने की ? अरे, तुम्हारे पुत्र ने ही तुम्हारे सिरहाने बैठकर गीता की व्याख्या की ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(9) *राम राम करान त्राविथम प्रान,*
बबन कर तीर्थ यात्रा ओसुम जान,
अहान बी पोज़ छख वनान तय ।

बाबा (पिता) ने राम का नाम लेकर प्राण त्याग दिए । बाबा पुण्य-आत्मा थे उन्होंने अनेक तीर्थ-यात्राएं कीं थीं ।

हां री , सच ही कहती हो ।

(10) *वति- वति म्यूलुय कत्यू बगवान,*
बबहय क्रियावान ती ओस जान ।
बब हय मूक्षदामस ती ओस जान ।
अहान बी पोज़ छख वनान तय ।

तुमको रास्ते में कहां-कहां भगवान् मिला ? बाबा जो थे, क्रियावान थे, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बाबा को हर पग पर भगवान् मिल जाए । अच्छा है कि बाबा मोक्षधाम चले गए ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(11) *.च्य पोशि वरषुन काकव*

नारायनुन कोरुथ .च्य दरशुन ।

गरुड़राजुन करुथ चे दरशुन ।

वयकुन्ठुक करुथ चे दरशुन ।

अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टिक)

(हे काक तुम्हारे ऊपर फूलों की वर्षा हो । भगवान नारायन के तुमने दर्शन कर लिए, भगवान् गरुड़ के तुमने दर्शन कर लिए । तुमने बैकुण्ठ के भी दर्शन कर लिए ।)

हां री, सच ही कह रही हो ।

(12) *बूज़िथ गीताजी हुन्द अर्थ सदाबर्थ काकव*

बागवत बूज़था काकव

अश्वमेद यज्ञ कोरुथा काकव

अहान् बी पोज़ छख वनान तय । (टिक)

(हे काक, तुमने गीताजी का अर्थ सुना, सदाबर्त किये । तुमने भागवत की कथाएं भी सुनी, तुमने अश्वमेघ यज्ञ भी किया ।)

हां री, सच ही कह रहो हो ।

(13) *संतज़न वथ कम्यू होविय,*

नारायनन पान'अ वथ होविय ।

कृष्नन पानअ वथ होविय ।

बगवानन पानअ वथ होविय ।

अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टिक)

सन्तों के रास्ते पर चलना तुमको किसने सिखाया ? स्वयं नारायण ने रास्ता दिखाया, कृष्ण ने स्वयं रास्ता दिखाया, स्वयं भगवान ने रास्ता दिखाया ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(14) *काक गव खेलि मेलिनि*

पननुय क्रिया करुन त ब्योन गव मेलिनि

अहान् बी पोज़ छख वनान तय । (टिक)

(काक भरे पूरे परिवार में से अपना कर्त्तव्य पालन करके अकेले उनसे मिलने चले गए जो परिवार के सदस्य आज तक स्वर्ग सिधार गये हैं ।)

हां री, सच ही कह रही हो ।

(15) *सती सरस वोतहमो*

दरम त दान कोरथमा यती

सादन बूज़न द्रियुत थमा यती

गुपुरदाना करुथमा यती

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

तुम सतीसर पहुंच गये तुमने धर्म और दान यहीं पर किया तथा साधु सन्तों को भोजन भी यहीं तुमने कराया। गोदान भी तुमने यहीं पर किया।

हां री, सच ही कह रही हो।

(16) *ग़स गव कस मूद बब सरदार?*

ग़स गव बाअचन मूद बब सरदार

अहान बी पोज छख वनान तय। (टेक)

ये किस के घर का बड़ा-बूढ़ा सरदार मर गया? उनकी मृत्यु से भयंकर पीड़ा पहुंची है (सबको)। घर के सभी सदस्यों को घर के सरदार, बावा की मृत्यु से भयंकर आघात पहुंचा है।

हां री, सच ही कह रही हो।

(17) *दरमराज़अ न्यन्द्रअ कत्यू त्राविथ,*

मूक्षदामस मन्ज़ त्राविथ।

पारिलूकस मन्ज़ त्राविथ।

यमदारस मन्ज़ त्राविथ

अहान् बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

(इन पंक्तियों में मृतक को धर्मराज नाम से सम्बोधित किया गया है।) हे धर्मराज तुम कहां सो गए हो? क्या तुम मोक्षधाम में सो गए हो? क्या तुम परलोक में सो गए हो? या तुम यमराज के भवन (यमलोक)[1] में सो गए हो?

हां री, सच ही कह रही हो।

(18) *कावुज़िर्स[2] अथि चन्दनग़ ग़ेन्ता लदनअवमय*

न्यर्वान पद हो प्रावनोवमय

शास्त्र त वीद हो परनोवमय

---

1. कश्मीरी में 'यमदार' का अर्थ यमद्वार (यम का द्वार) अर्थात् यम का घर या यमलोक लिया जाता है। 'यमदाढ़' से तात्पर्य नहीं है।
2. वैदिक शब्द है 'कृव्याध' अर्थात् चिता सजाने-जलाने वाला, उसी से बना है कावुज़।

कोतुल्य त गुरच़ हो त्रावनोमय
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

कावुज़ से मैंने तुम्हारे लिए चन्दन की चिता बनवाई, तुमको निर्वाण प्राप्त हो इसलिए मैंने शास्त्रों तथा वेदों का पाठ करवाया। नगाड़े तथा अन्य बाजे बजवाये।

हां री, सच ही कह रही हो।

(19) *आकाश खच़यो नार रेह*
बबस ओसुम क्रियायिहुन्द श्रेह
बबस ओसुम गरिकुय श्रेह, बबस ओसुम दरमुकुय श्रेह।
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

बाबा (पिता) का जब अन्तिम संस्कार हो रहा था तो चिता में आग लगाने पर आकाश की तरफ आग की लपटें जाने लगीं। बाबा को कर्म करने से बड़ा भारी प्रेम था। बाबा को घर का बहुत प्रेम था। बाबा को धर्म का भी प्रेम था।

(20) *रेह वछ़िस टेह-टेह करानी,*
चन्दुनुक दाह छिस दिवानी।
निरवानुक पद छिस प्रावअनी
वीद त शास्त्र छि पराअनी।
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

चिता की अग्नि धूं-धूं करती हुई ऊपर को उठ रही है। चन्दन की चिता में दाह दिया गया है। निर्वाण संस्कार किया जा रहा है तथा वेद और शास्त्र पढ़े जा रहे हैं।

हां री, सच ही कह रही हो।

(21) *मअसम बतस पेव्यूसी*
बोछन त लछन दियूसी
जान-जान बूज़न दियूसी
लोल त प्रेमसान दियूसी
अहान बी पोज़ छख़ वनान तय। (टेक)

इन पंक्तियों का भाव है कि बड़े-बूढ़े के मरने पर अच्छे-अच्छे पकवान बनाकर भूखों-नंगों और बच्चों को पेट भरकर खिला दो। भर पेट भोजन के साथ-साथ नाना प्रकार के व्यंजन भी पकाओ और व्यंजनों को प्रेम से तथा श्रद्धापूर्वक सभी को खिला दो।

हां री, तुम सच ही कह रही हो।

(22) *मअसम बतस त्रिच़ोरदान*
कन्यक त बालक ख्यवान जान
कम कम पदार्थ छिस रनान ?
श्रूच त श्रोन क्या करहोस जान ?
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

('मअसम बत 'एक विशेष प्रकार का भोज्य पदार्थ है जिसे मृत्यु के प्रथम दस दिनों तक छोटे बालक-बालिकाओं को खिलाया जाता है और उसे 'शिशु-भोज'कहते हैं। इसकी विशेषता होती है कि इसे एक विशेष प्रकार के चूल्हे पर पकाया जाता है जिसको 'त्रिच़ोर दान' कहा जाता है, अर्थात् तिमुहां चूल्हा। फ़ारसी के 'मासूम' से मअसम बना है, अर्थ है शिशु-बच्चे, इसीलिए अर्थ हुआ 'शिशु-भात' या शिशु-भोजन।)

बड़े-बूढ़ों की मृत्यु पर तीन मुंह वाले चूल्हे पर भोजन पकाया गया और कन्याओं तथा बालकों को खूब अच्छी प्रकार खिलाया-पिलाया गया। भांति-भांति प्रकार के पकवान बनाए गए। बड़े पवित्र तरीके से सब कार्य किया गया। हां री, सच ही कह रही हो।

(23) *यारबल क्रयि तय गरि छिस वान,*
वुछ तो काक ओस बाग्येवान।
लूख त दाख़ छिस यिवान जान,
यार त बोय छिस यिवान जान
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

काक (या काकी) की मृत्यु हो गई ; दस दिनों तक मृत्यु-संस्कार चलता है। उसका वर्णन इन पंक्तियों में है :– नदी के किनारे मृत्यु का कर्मकाण्ड चल रहा है तथा घर में 'वानरेन्य' (जो मृत्यु-गीत गाती हैं) मृत्यु गीता गा रही हैं।

देखो काक तो भाग्यवान हैं। भाग्यवान इसलिए भी हैं कि अपनी आयु पूरी करके मृत्यु को प्राप्त हो गए। दूसरी बात यह है कि उनके बाल-बच्चे नाती-पोते सभी हैं जो उनकी मृत्यु पर अच्छी प्रकार से उनका अन्तिम संस्कार कर सके हैं। खूब अच्छे-अच्छे घरों के लोग तथा सम्बन्धी शोक मनाने आ रहे हैं। यार-दोस्त तथा भाई-बन्धु भी आ रहे हैं।

हां री, सच ही कह रही हो।

(24) *जवान ब्यीठिय देंवानखान,*

नोशि त कोरि छस रिवान।

पूरय त पकवान छिस ख्यवान

मिठाइ त मलाय छख वातान

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

कश्मीर में यह प्रथा है कि जब किसी वृद्ध या वृद्धा की मृत्यु होती है तो सम्बन्धी, विशेषकर लड़के के ससुराल वाले, खूब मलाई तथा मिठाइयां, खाना एवं पकवान आदि लाते हैं। जिसके जितने अधिक तथा अच्छे सम्पन्न सम्बन्धी होंगे उतने ही अच्छे और अधिक पकवान भी आएंगे। इन पंक्तियों में यही दिखाया गया है कि जवान-जवान लोग ऊपर दीवानखाने में बैठे हैं तथा नीचे बहुएं तथा लड़कियां विलाप कर रही हैं। समधी तथा अन्य सम्बन्धियों के यहां से पकवान, मलाई तथा मिठाइयां आ रही हैं।

हां री, सच ही कह रही हो।

(25) *यी च्य वोनुथ ती ओय जमा*

ब्रह्माजीयिनि काकव

तपीश्वर काकव, यूगीश्वर काकव

मनीश्वर माल्यव

न्यन्द्रिहति काकव

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

जो तुमने चाहा वही हुआ। ब्रह्माजी के शिष्य काक, तुमने तप किया, इसलिए हे, तपेश्वर काक। योग किया इसलिए हे, योगेश्वर। तुम मुनि के समान पिता हो, हे मुनीश्वर काक। नींद में सो रहे काक।

(26) *हयन्दव्यन्द खरबुज्य ख्येथम सरदय*

हरदुन बरगाह बर गव काक

अहान भी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

तुमने भांति-भांति प्रकार के फल खाए; जैसे तरबूजे-खरबूज़े , जो खाने में ठण्डे प्रभाव के होते हैं।

(27) *कपसे कस्तूर बोलान छय,*

नोशि कोरि अनिथम ती ओस दस्तूर।

लरि जायि लज़थम ती ओस दस्तूर।

बबस वोत अन्तिम समय ती ओस दस्तूर।

डाक्टर अनिहस ती ओस दस्तूर।

च़न्दनुव़ पटा अनिहस ती ओस दस्तूर।

शंख त घंटा अनिहस ती ओस दस्तूर।

गंगज़ला वुशनोवहोस ती ओस दस्तूर।

शूबदार अरथिया करहस ती ओस दस्तूर।

पोशि -वर्शुन करहोस ती ओस दस्तूर।

अडवति प्रयन्डा थोवहोस ती ओस दस्तूर।

च़ोन कूंजन च़खा दितहोस ती ओस दस्तूर।

छ़ाया ज़जिहस ती ओस दस्तूर।

काया नअवहस ती ओस दस्तूर

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

पहले दिन मृतक की अन्तिम क्रिया करने के लिए उसको श्मशान-घाट ले जाने की तैयारी में ही निकल जाता है। दूसरे दिन शोकगीतों की गायिकाओं (जिन्हें 'वानरेन्य' कहा जाता है) को बुलाया जाता है। जिस कमरे में स्त्रियां बैठती हैं, शोक मनाने के लिए, उसी कमरे में शोक-गीत- गायिका का आसन बिछाया जाता है तथा एक चौकी पर फूल, दीप-धूप आदि रखे जाते हैं। शोक-गीत-गायिका धूप आदि जलाती है तथा शोक गीतों को प्रारम्भ किया जाता है। 'अहान बी ' के वाक्य से शोक-गीत प्रारम्भ होता है। शोक-गीत-गायन में केवल महिलायें भाग लेती हैं। इस गीत में प्रथम दिवस को क्या-क्या हुआ उसी का वर्णन है, इसमें परम्परा-पालन का प्रेम झलकता है :—

काक वृद्ध थे उन्होंने अपनी आयु पूरी की, इसलिए एक न एक दिन उनकी मृत्यु तो होनी ही थी क्योंकि मृत्यु तो अटल सत्य है। काक का अन्तिम समय आ गया, यही दस्तूर था। यह कोई अस्वाभाविक मृत्यु नहीं है। इसीलिए कस्तूर पक्षी कुसमय नहीं बोला है।[1] वे बेटों का ब्याह करके, बहुएं आदि ले आए। चूंकि बुढ़ापा था, काक की मृत्यु हो गई। डाक्टर को बुलाया गया, यह भी तो दस्तूर ही था। काक की मृत्यु हुई परन्तु वह अपनी जिम्मेदारियों को बख़ूबी निभाकर चले गए। खूब मकान बनाए, अन्य कामों के लिए भी ज़मीन आदि खरीद ली। अब अगर उनका

---

1 कस्तूर पक्षी कपास पर बोला है, अर्थात् कुसमय नहीं बोला है, भाव है कि 'बब' की मृत्यु अकाल नहीं है। कश्मीरी में कुसमय बोलने वाले को 'कुवक्त कस्तूर' कहते हैं।

अन्तिम समय आ भी गया तो भी कोई दुःख की बात नहीं है, यह तो दस्तूर ही था। काक की मृत्यु पर चन्दन की 'अर्थी'[1] लाई गई, शंख-घंटा भी आ गए। मुंह में डालने के लिए गंगाजल लाया गया। वह गंगाजल गर्म किया गया (कश्मीर चूंकि शीत प्रदेश है इसलिए गंगाजल भी गर्म करके ही पिलाया जाता है) बड़ी अच्छी तरह से अर्थी सजाई गई। यही दस्तूर है। होना भी यही चाहिए था। फूलों की वर्षा की गई। आधे रास्ते पर पिण्ड रखे गए। चारों कोनों पर चिता में आग लगाई गई। काक का अन्तिम संस्कार हो गया-वे चिता में भस्म हो गए परन्तु आत्मा तो अमर है। शरीर तो ऊपरी चोला है। यह शरीर समाप्त हो गया। अब आत्मा किसी नई काया में प्रवेश कर जाएगी, तो काया भी नई हो जाएगी। ऐसा होना तो आवश्यक था, यही दस्तूर है। 'छाया'[2] जलायी, यही दस्तूर था।

हां री, सच ही कह रही हो।

(28) *सोनन्य त सामठन्यन लोगमुत रसतय*
जसतयदार काकव
फत्य त पजि गामच़ बसतय
बड़्य-बड़्य दोदअ डूल्य गअमित बसतय
कूत्या लूख आय वति आय बसतय।
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

समधी तथा लड़की के सभी ससुराल वालों का आना-जाना लग गया। काक तो अनेक सम्बंधियों वाले हैं। खाने की तथा फलों की बड़ी-बड़ी लदी हुई टोकरियां आ रही हैं। बड़े बड़े (सजाव)दही के बर्तन (कूंढ़े) आ रहे हैं। काक की मृत्यु पर कितने लोग आ रहे हैं, रास्ते में भीड़ हो गई।

हां री, सच ही कह रही हो।

(29) *काक गव च़ोरि दोह्य कोरि हुन्द प्यठ*
पूरय त पकवान तति द्राव ख्यथ।
रंग रंग पूज़न ततिद्राव ख्यथ।

---

1. कश्मीरी हिन्दुओं में शव को ले जाने के लिए लकड़ी के पट्टे का प्रयोग किया जाता है।
2. शवदाह के उपरान्त परिवारी-जन नदी पर स्नान करने जाते हैं। स्नान के बाद यहां घास का एक पुलन्दा-सा जलाकर उसकी परिक्रमा करते हैं, इसे 'छाया जलाना' कहते हैं। मुस्लिम काल में हिन्दुओं को नदी-तट पर शव-दाह की अनुमति नहीं दी जाती थी, यद्यपि धर्म-परम्परानुसार नदी-तट पर ही शव-दाह अच्छा माना जाता है। अन्यत्र शव-दाह करके नदी-तट पर घास की, चिता -छाया बनाकर, चुपचाप उसका दाह एवं उसकी परिक्रमा करके, कर्मकाण्ड को पूरा करने को बाध्य हो गये थे, कश्मीरी हिन्दू। यही रीति, परम्परा बन कर चली आ रही है।

जुरय सन्ज़ त्रैशा तति द्राव च्यथ

कम-कम पदार्थ तति द्राव ख्यथ।

श्रूच त श्रोन करुहोस जान।

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

यह गीत मृत्यु के चौथे दिन ('चौथे पर') गाया जाता है। इस दिन का एक विशेष महत्व है। कश्मीर में ऐसा विश्वास है कि मृतक अपने प्रेत-शरीर में अपनी पुत्री के घर जाते हैं, उसी का वर्णन इस गीत में है :–

काक चौथे दिन अपनी सुपुत्री के घर गए। वहां से पूड़ियां और पकवान खाकर निकले। विभिन्न प्रकार के व्यंजन वहां से खाकर निकले। धेवतों के हाथ से पानी पीकर वहां से चले। जाने क्या-क्या पदार्थ खाकर वहां से चले। सभी व्यंजन उन्होंने बड़ी पवित्रता से बनाये थे।

सम्मिलित नारी-मण्डली जो शोक सभा में आई होती है इसकी स्वीकृति देती है कि:–

हां री, सच ही कह रही हो।

(30) *पीठरन वाज़, छिस मीठरावान*

नोशयेन[1] *त कोरयन अथि कार करनावान*

रंग-रंग पदार्थ बनावान

लोकुट त मअसुम ख्यवनावान

पननी क्रुछ छिय गिलनावान।

जो बड़े लोग घर में हैं वे सब काम को सुचारु रूप से करने की व्यवस्था दे रहे हैं जिससे मृतक का सारा काम बड़े ही मीठे ढंग से हो रहा है। बहू-बेटियों से ही मृतक के सारे कार्यों को करवाते हैं।

उन्हीं के हाथों अलग-अलग प्रकार के पदार्थ बनवा रहे हैं। छोटे, भोले बच्चों को खिला रहे हैं। सभी अपनी-अपनी कड़छियों को चला रही हैं।

(31) *काक गव बरज़ोल बाग अन्दर,*

नोशि कोरि अनिनम क्या सोन्दर।

लरि जायि लज़नम क्या सोन्दर।

वीदा पोरनम क्या सोन्दर।

यूगा सोदनम क्या सोन्दर।

---

1. कश्मीरी में पुत्रवधू को 'नोशि' कहते हैं। यह वैदिक शब्द 'स्नुषा' से बना है।

वक्ता गुज़रोवनम क्या सोन्दर

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

काका हरे-भरे उद्यान (बागात बर्जुला) में भ्रमण हेतु जाते थे। क्या खूब। वे सुन्दर बहुएं लाए तथा लड़कियों का ब्याह रचाया, क्या खूब। इसके अतिरिक्त सुन्दर-सुन्दर मकानों का निर्माण भी करवाया। क्या खूब ! क्या सुन्दर बात है।

वेद भी बड़े सुन्दर ढंग से पढ़े। इसके अतिरिक्त योग-साधना भी की। सभी अच्छे-अच्छे कार्य किए, इस कारण उनका समय भी बड़े सुन्दर ढंग से व्यतीत हुआ। क्या सुन्दर बात है।

हां री, सच ही कह रही हो।

(32) *ज़ुर नोशि शुर छिय काकव*

ताह-ताह दिवान देवानखानन हेरि छिय

ब्यवान त च्यवान हेरि छिय

क्रिया-कर्मुच़ सामग्री हेरि छय

पोश च़ारान देवानखानन हेरि छय

रनान त प्यवान हेरि छय

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

नाती-पोते, बहुएं-बच्चे सभी ऊपर दीवानखाने में हैं। तुम्हारे सन्दूकों में जो मूल्यवान कपड़े इत्यादि हैं उनको तह-ब-तह खोलकर देख रहे हैं। इसके अतिरिक्त ऊपर ही खा-पी भी रहे हैं।

क्रिया-कर्म की सामग्री भी वहीं जुटा रहे हैं। ऊपर दीवानखाने में ही फूलों को बीन रहे हैं।

हां री, सच ही कह रही हो।

(33) *वनमाला वननोवमय,*

मुकुन्दमाला परनोबमय।

सअरीय शास्त्र परनअविमय,

सअरी पाप हरनवअमय

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

धार्मिक परम्परा के अनुरूप ही तुम्हारे देहान्त पर मैंने सभी वेद, मन्त्र, शास्त्र आदि का पाठ करवाया जिससे कि तुम्हारे सभी पापों का हरण हो जाय।

हां री, सच ही कह रही हो।

'वनमाला' वस्तुतः 'उत्पलमाला' को कहते हैं। कश्मीर में आठवीं शती में शैव-शास्त्र के महान् आचार्य 'उत्पलदेवपाद'हुए हैं। शैव-दर्शन की गम्भीर गरिमा का मन्थन करने के अनन्तर आनंन्द की अवस्था में उन्होंने जो मौखिक रचना की उसको उनके प्रमुख शिष्य विश्वावसु ने क्रमशः चुन-चुन कर व्यवस्थित किया, इसी को 'उत्पला स्तोत्रावली' कहते हैं। इस समय भी कश्मीरी हिन्दू जनता में इस रचना के एक विभाग, 'संग्रह स्तोत्र' का महान् प्रभाव है। पिता के निमित्त इस रचना का पाठ कराना उसकी दिवंगत आत्मा के लिए शान्ति की वर्षा के समान है।

(34) *हन्ना प्यठ बूजतव काकव*
पोत्र सुन्द रंग रथि खोत काकव
अहान बी पोज़ छख बनान तय। (टेक)

इस गीत का अर्थ है कि गाने वाली स्त्रियां कहती हैं, स्वर्गीय के सभी कार्य अच्छी प्रकार सम्पन्न हो गए, इसलिए पुत्र को सफलता प्राप्त हुई है। कहने का तात्पर्य है कि पुत्र यह घोषणा करता है कि उसने सभी कर्तव्य ठीक ढंग से निभाए हैं।

हां री, सच ही कह रही हो।

पुत्र अपने पिता के दिवंगत होने पर घोषणा करता है कि हे तात्, तुम्हारा दिवंगत होना यथार्थ हो गया, क्योंकि पिता का पुत्र के प्रति जो कर्तव्य होता है, वह तुम अच्छी प्रकार निभा गए। अब तुमको शान्ति मिलेगी। पुत्र के लिए कोई चिन्ता भी नहीं रहेगी, क्योंकि तुमने अपने पुत्र को यश, गौरव कीर्ति तथा महिमा रूपी रंग से रंजित किया है। जाने वाले तात तुम यह यशोगान पंचम स्वर में सुनो। ('हन्ना' अर्थात् द्वार के ऊपरी भाग से, यह घोषणा पुत्र करता है।)

(35) *पुत्रि वूनिनय पत्रि हन्ज़ ज़ीथरा*
शवनाथन बूज़य तमी बनीय मअथरा।
गरुड़जियन बूज़य तमी वनीय मअथरा
रामजियन बूज़य तमी वनीय मअथरा
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

देहावसान के पश्चात् कश्मीरी हिन्दू धर्मशास्त्र में से विशेष प्रकार का कर्मकाण्ड होता है जिसके अनुसार पुत्री एक विशेष प्रकार का कुशा-आसन बनाती है जिस पर बैठकर क्रिया-कर्म किया जाता है। इन पंक्तियों में यही कहा गया है कि तुम्हारी पुत्री ने कर्मकाण्ड करने हेतु विशेष प्रकार के सुगन्धित पत्तों-युक्त कुशा का आसन बनाया। चूंकि तुम पवित्र आत्मा हो इसीलिए शिवजी तथा गरुड़जी ने तुम्हारे

देहावसान का समाचार सुना और स्वयं मंत्रोच्चार करने पधारे हैं । इनके अतिरिक्त रामजी भी सुनकर पधारे हैं—मंत्रोच्चार करने के लिए ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(36) *पलियारि नानगण्ड रोवहोम*

गरयुक ज्युठा रोव होम

शुरयन त बअचन रोव होम

दर्मराज़ बबो ज़लुहोम

मन्दोरि डेखा डोलहोम

पीरि प्यठ प्रतिमा रोवहोम

अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टेक)

इस गीत का भाव यह है कि स्वर्गीय वृद्ध अथवा वृद्धा हमसे ऐसे बिछुड़ गए जिस प्रकार सरकण्डों की दीवार एक गांठ के खुल जाने से छिन्न-भिन्न हो जाती है । उसी प्रकार हम भी छिन्न-भिन्न हो गए । स्वाभाविक है कि बड़े-बूढ़े से घर एक सूत्र में बंधा रहता है, उनके जाते ही पूरा परिवार उसी प्रकार छिन्न-भिन्न होकर बिखर जाता है जिस प्रकार माला का डोरा टूटने से सारी माला बिखर जाती है ।

आपने ऊंचे-ऊंचे भवन बनाए पर आपके न रहने से वे सब श्रीहीन हो गए । आप तो हमसे उसी प्रकार बिछुड़ गए जैसे पवित्र आसन पर स्थापित देवता की प्रतिमा खो जाती है । जिस प्रकार अपने आराध्य देव की प्रतिमा खो जाने पर आराधना करने वाला छटपटाता है, उसी प्रकार हम भी तुम्हारे बिना छटपटाते हैं । तुम तो धर्म के राजा थे ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(37) *दछिनि दारि वथ छय काकव*

लसिनय पोत्र पननीय तीहिन्ज़य सथ छय

अहान बी पोज़ छख वनाऩ तय । (टेक)

दक्षिण की तरफ से जो खिड़की है उसी तरफ रास्ता है । भगवान् करे कि तुम्हारे पुत्र जीवित रहें, अब हमको उनका ही सहारा है ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(38) *बब गव हरदवार फेरिनि*

बब गव तीर्थ यात्रा करनि

ज़न्म रथि खोरुन त फेरिनि

रत्य कार करीने त फेरीने

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

बाबा (पिता) हरिद्वार घूमने गए हैं। (कल्पना यह है कि बाबा ने यद्यपि अपने पार्थिव शरीर को छोड़ दिया परन्तु उनकी पुण्यात्मा हरिद्वार, आदि तीर्थ-स्थलों में विचरण कर रही है।) इसके अतिरिक्त घर वालों की भी यही कामना रहती है कि पिता को सद्गति मिले। उनका जन्म सफल हो गया।

उन्होंने जीवन भर अच्छे-अच्छे तथा पवित्र कार्य ही किए।

(39) *वब ब्यूठ द्वारिकायि दारे प्यठ*

क्रियावान बब ब्यूठ दारे प्यठ

दर्मराज बब ब्यूठ दारे प्यठ

यूगीश्वर बब ब्यूठ दारे प्यठ

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

तात (अब) द्वारिका में खिड़की पर बैठ गए हैं। वे क्रियावान थे निष्क्रिय नहीं थे। वे ही क्रियावान तात खिड़की पर बैठ गए हैं। धर्म के राजा खिड़की पर बैठ गए हैं। योगेश्वर बब खिड़की पर बैठ गए हैं।

हां री, सच ही कह रही हो।

(40) *बब ओस ख्यवान नाबद नख*

बबस ओस क्रियाये हुन्दुय शोक

बबस ओस गोरुसेवायिहुन्द शोक

बबस ओस सुलिवथुनुकुय शोक

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

इन पंक्तियों में यह दर्शाया गया है कि बब को क्या-क्या करने का शौक था। बब मिश्री खाने के शौकीन थे, कर्म करने का शौक था उन्हें, इसके अतिरिक्त अपने गुरु की सेवा करने का, सबेरे जल्दी उठने का शौक भी था।

हां री सच ही कह रही हो।

(41) *हना बना बल्योखो*

अशिनावन हन्दि वोतुय नाबद मना

सोन्यन हन्दि वोतुय नाबद मना

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

कुछ रीति-रिवाज़ों को व्यक्ति के जीते-जी यदि पूरा न भी किया जाए तो

किसी हद तक निभ जाता है परन्तु मृत्यु-संस्कार पर इन सभी कर्मकाण्डों को कर्ज़ा आदि करके भी निभाना पड़ता है। दूसरी बात यह है कि जीते-जी मृतक के साथ क्या व्यवहार हुआ है इसको कोई नहीं देखता परन्तु मरने पर यशोगान में मृतक की प्रशंसा ही होगी। इसी तरह एक सामाजिक रीति-रिवाज यह भी है कि बहू के मायके से हर संस्कार पर कुछ न कुछ भेंट पूजा आनी आवश्यक है, तो मृत्यु संस्कार इससे कैसे वंचित रह सकता है वह भी जब बहू के घर के बड़े-बूढ़े की मृत्यु हुई हो।

कश्मीर में यह प्रथा है कि लगभग प्रत्येक संस्कार पर 'नाबद' (मिश्री) तथा दही भेजे जाते हैं, मृत्यु संस्कार पर भी। इन शोक-गीतों में इनका वर्णन अवश्य मिलता है।

इस गीत में यही कहा गया है कि रिश्तेदारों के यहां से मिश्री आई है। समधी के यहां से एक मन मिश्री आई है। वास्तव में 'एक मन' मिश्री नहीं आती है।

हां री, सच ही कह रही हो।

(42) *ज़ुरप् कर यिन वोन्य मातामाल।*
कारबार वातुख़ त मातामाल।
माम मामनि लसिनख त मातामाल।
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

कश्मीर में मृत्यु संस्कार में ग्यारहवें दिन का विशेष महत्व है। शेष देश में जैसे तेरहवीं मनाई जाती है उसी प्रकार कश्मीर में ग्यारहवें का महत्व है। क्योंकि शैव-मत में इसका विधान है। कश्मीर में शैवदर्शन का प्रचार-प्रसार है, इसलिए कर्मकाण्ड की पद्धति शैव-मत के अनुसार ही चलती है। इस गीत में कहा गया है — आज पुत्रों, नाती-पोतों की भीड़ लग रही है क्योंकि कल उनके दादा-नाना का ग्यारहवां दिन है ईश्वर धेवतों की ननसाल को सदा सुखी रखें, इसके साथ-साथ उनके मामाओं, मामियों को भी सदा सुखी रखें।

हां री, सच ही कह रही हो।

(43) *जयकार ज़्ननिस मरनस*
जयकार ज़्ननिस रामायण परनस
जयकार ज़्नानि गीता जी परनस
जयकार ज़्ननिस शास्त्र परनस।
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

सभी लोग वयोवृद्ध पिता के दिवंगत होने पर जय-जयकार करते हैं, क्योंकि

उनकी अकाल मृत्यु नहीं हुई है । अतएव मृत्यु संस्कार किसी विवाहोत्सव से कम नहीं होता, इसीलिए सभी लोग उस पवित्र आत्मा की मृत्यु पर जय-जयकार करते हैं। स्वर्गीय अपने जीवनकाल में रामायण, शास्त्र तथा गीता पढ़ते रहे, इसलिए उनके इस गीता-शास्त्र और रामायण पढ़ने की जयजयकार हो।

हां री, सच ही कह रही हो।

(44) *.च्यथ गथ .च्यतस मन्ज़ लय करने*

.च्यताकायि .च्यतायि मन्ज़ गथ करने

क्रियावान काक गव गथ करने

रामायन पोरुन त गथ करने

बागवत पोरुन त गथ करने

शाआस्त्र पोरुन त गथ करने

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

इस गीत में शैवदर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है । शैव मतानुसार आत्मा परमात्मा के सम्वन्ध तथा जीव की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है :—

मरकर मृतक की आत्मा महाचित में लीन होने के लिए चल पड़ी । उस महाचेता की आनन्दमय लीला ही थी कि जीव का स्वरूप प्रकट हुआ । अन्य कोषों को पार करके वह आनन्दमय कोष की ओर अग्रसर हुआ । अन्नमय, मनोमय, प्राणमय तथा विज्ञानमय कोषों में स्थित रहने के कारण जीव भौतिकता से ग्रस्त चिन्ताकाय बनता है परन्तु मरने के पश्चात् वह आनन्दमय हो जाता है ।

यहां जो उन्होंने रामायण, भागवत् तथा शास्त्र आदि पढ़े हैं, उनका वास्तविक सार उनको उसी परब्रह्म के पास मिलेगा, जहां वे उस फल के मुक्त भोगी भी होंगे।

हां री, सच ही कह रहीं हो ।

(45) *दर्मराज़न शेच्छा वनीय*

विश्वामित्र काकव

ब्रह्म विद्या बूज़था काकव

तीर्थयात्रा करथा काकव

कन्यदान करिथा काकव

अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टेक)

धर्मराज ने तुमको कोई रहस्य की बात बता दी है । विश्वामित्र के समान काक तुमने ब्रह्मविद्या भी सुनी, तीर्थयात्रा भी की । इसके अतिरिक्त कन्याओं का दान करके

यह पुण्य भी कमा लिया।

हां री, सच ही कह रहीं हो।

(46) *जसतयदार काकव*

लोगुय दूरि दूरि प्यठ रसतय

पितरयन त गुतिरयन लगुय रसतय

अपसर लूकन लगुय रसतय।

इतने नाते-रिश्ते वाले हैं, दूर-दूर से लोगों का आने-जाने वालों का, तांता लगा हुआ है। पास-पड़ोसियों के अतिरिक्त अफसरों के आने-जाने का भी तांता लगा हुआ है।

यहां अफसर शब्द से इस बात का संकेत है कि कश्मीरी-पंडित-वर्ग अधिकतर कारकुन[1] हैं।

(47) *काक छुय यारबल तल प्रारान*

गोरस त कोरतिस छुय छ़ारान

त्रेशि त पनिस अथ दारान

ब्राह्मण त पंडित छिस छ़ारान

कोरि त ज़ामतुरय छिय छ़ारान

नोशि त नेचिव छिस छ़ारान

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

इस गीत में समूचे भारतवर्ष के हिन्दुओं की भांति कश्मीरी हिन्दुओं के उस विश्वास की ओर संकेत है कि मरकर भी आत्मा तब तक मुक्त नहीं होती जब तक मृतक के पुत्र-पुत्रियां तथा नाती-पोते उसका पिण्डदान, तर्पण तथा श्राद्ध आदि नहीं कर देते हैं।

काक को घर पर ब्राह्मण पंडित ढूंढ रहे हैं कि वह हमको छोड़कर कहां चले गए, लड़की दामाद, बहुएं बेटे ढूंढ रहे हैं। उधर काक नदी के किनारे प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कब पुरोहित, क्रियाकर्म करने वाला पुत्र आएगा और तर्पण तथा पिण्डदान करेगा, जिससे उनकी (मृतक की) तृषा एवं क्षुधा शान्त होगी।

हां री, सच कह रही हो।

(48) *अंग त अशनाव आयि लारान*

लालअ छुय थाल-थाल पोन्य मेनान

---

1. नौकरी (सरकारी) पेशा हैं।

होहवारियु दह दारि आसि लारान

सअरिय अशनाव छिस छ़ारान

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

दिवंगत की मृत्यु का समाचार सुनकर सभी सगे-सम्बन्धी भागे-भागे आ गए। क्योंकि स्वर्गीय का पुत्र थालों से घाट पर तर्पण दे रहा है। ससुराल वाले तथा उनके जितने भी सम्बन्धी हैं, वे भी भागे-भागे आ गए हैं। तुमको सभी सम्बन्धी ढूंढ रहे हैं।

हां री, सच ही कह रही हो।

(49) *लालस कमी तअर नालस तुज*

हहरन तअरनस नालस तुज

अहान बी पोज़ छख बनान तय। (टेक)

कश्मीर में जब किसी के माता-पिता का देहान्त होता है तो जो वस्त्र वह पहने होता है (वैसे तो 'फिरन' ही पहले सामान्य वेशभूषा थी) उसके गले को वह फाड़ डालता है। फिर दसवें दिन उस कपड़े के दोनों छोरों को पकड़कर आपस में सीं देते हैं। यह काम मृतक के पुत्र का साला करता है।

इस गीत में यही कहा गया है कि मृतक के पुत्र के फिरन का गला किसने सिया ? हां, साले ने सिंया।

हां री, सच ही कह रही हो।

(50) *योस दअर रछिथम फलिल त अतरे*

सोय दअर खोतुहमो कसिथ व्यथ।

मजलिसि मन्ज़ छुख मन्दछान,

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

मृतक का पुत्र दसवें दिन नदी के किनारे अपने सारे बाल, दाढ़ी-मूंछ कटवा लेता है जो हिन्दू रीति-रिवाजों के अनुसार आवश्यक होता है। जब मृतक का पुत्र बाल, दाढ़ी-मूंछ कटवाकर आता है तो शोकगीत गाने वाली गायिका गाती है :—

जिन बालों तथा दाढ़ी को तुम फुलेल और इत्र से सजाते थे उसी दाढ़ी-मूंछ और बालों को तुम वितस्ता के किनारे कटवा आये हो। अब मजलिस में आने में तुम शरमाते हो। पर इसमें झिझक या शरमाने की क्या बात है ? यही अवसर होते हैं जब पुत्र अपने माता-पिता के पारलौकिक कर्म के लिए अमूल्य से अमूल्य वस्तु को भी त्याग सकता है। तुम्हारा यह उत्सर्ग देखकर आज देवताओं को भी ईर्ष्या हो रही है।

हां री, सच ही कह रही हो।

(51) *ज़ेर त बादाम लदितोस गोये,*

काक मूद माग दोये दोह।

रंग रंग पदार्थ लदितोस गोये

किशमिश त बादाम लदितोस गोये

खज़अर त नाबद लदितोस गोये

ध्यद मोयि माग दोये दोह।

कश्मीरी हिन्दुओं में यह प्रथा है कि जब किसी बड़े-बूढ़े का देहान्त होता है तो घर के प्रवेश-द्वार की दीवार के पास गवाक्ष (आला) बना दिया जाता है और उस आले में दसवें दिन तक रोज़ मृतक के लिए कुछ सूखा मेवा रखा जाता है। जो मेवा आदि न रख सके वह चावल आदि रखता है। यह समझा जाता है कि यह सामान मृतक तक पहुंचता है और इससे उसकी आत्मा को तृप्ति मिलती है। गरीब लोग चावल आदि रखकर इस प्रथा को निभाते हैं, जबकि सम्पन्न लोग सूखा मेवा आदि रखते हैं। इन पंक्तियों में यही दिखाया गया है कि मृतक कोई साधारण व्यक्ति नहीं था, या थी :

मृतक के लिए गवाक्ष में खुबानी और बादाम रख दो। काक की मृत्यु माघ मास की द्वितीया को हुई है। इनके लिए गवाक्ष में विभिन्न प्रकार के पदार्थ रख दो, जैसे किशमिश, बादाम, खजूर। इसके अतिरिक्त उनके लिए मिश्री भी रख दो। दादी माघ मास की द्वितीया को स्वर्ग सिधारी हैं, (माघ में सूर्य उत्तरायण हो जाता है) अतएव पुण्यात्मा थीं।

(52) *लालअ खोत शाआल फ्र्योकि गिलनावान*

होहवरियुक दुस फ्र्योकि गिलनावान

होहवरियुक पोशाक थ्यक्नावान

होहवरियुक द्रयार थ्यक्नावान।

लाला (बेटे के लिये प्रिय सम्बोधन) शाल को कन्धे पर फहराता हुआ गया, ससुराल से पशमीने की जो चादर आई है उसको फहराता हुआ जा रहा है। ससुराल से जो पोशाक आई है उसकी प्रशंसा में लगा हुआ है, ससुराल के धन का ही बखान कर रहा है। तात्पर्य यह है कि मृतक के पुत्र के ससुराल वाले जो हैं वे भी सम्पन्न हैं, उन्होंने अपने दामाद के लिए, उसके पिता की मृत्यु पर पशमीना और बढ़िया पोशाक भेजे हैं।

(53) *सति कम हति गोखा काकव*

सथ पीरा वुछिथ गोखा काकव

नोशि त कोरि हरशिथ गोखा काकव

पिंजुर्य त पर-जुऱ्य हरिशिथ गोखा काकव ।

अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टिक)

सौ में केवल सात साल रह गए थे जब काक या (द्रयद) की मृत्यु हो गई । सात पीढ़ियां देखकर काक की मृत्यु हुई । बहुएं घर में लाकर तथा लड़कियों का ब्याह करके काक स्वर्ग सिधारे । नाती-पोतियों का भी ब्याह रचाकर काक स्वर्गवासी हुए ।

(54) *आच़ोर सोन सिन्दिस थालस प्रारान*

आच़ोर दूरि प्यठ आव लारान

खानदअन्य काकस ओस प्रारान

बानन त बरतनन ओस प्रारान

अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टिक)

हिन्दुओं में यह मान्यता है कि मृतक के बर्तन, बिस्तर कपड़े आदि सभी 'आच़ोर' को दान कर देने चाहिए । ऐसा करने से ये वस्तुएं सभी दिवंगत आत्मा के पास पहुंच जाती हैं, जिससे उसको परलोक में सभी प्रकार की सुविधा हो जाती है ।

पांयोछ या आच़ोर (एक विशेष कर्मकाण्डी-पुरोहित वर्ग है जो मृतक का सामान ले जाता है, इसको कश्मीरी 'पांयोछ' भी कहते हैं) सोने की थाली की प्रतीक्षा में है, वैठा है । बड़ी दूर से यह भागा-भागा आया है । चूंकि तुम खानदानी हो इसलिए आच़ोर को मालूम ही था कि तुम्हारी मृत्यु पर उसको सोने के थाली आदि बर्तन मिलेंगे । (हिन्दी में-ब्रजभाषा में-पांयोछ को घटवरिया या कट्या ब्राह्मण कहते हैं ।)

हां री, सच ही कह रही हो ।

(55) *सोन्यन त सामठ्यन कथ मोदरेयि*

व्यथ मोदरेयि काकव

अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टिक)

इस समय तुम्हारी मृत्यु के अवसर पर तुम्हारे समधियाने के लोग, ससुराल वाले तथा सम्बन्धी इकट्ठे हो गए हैं और वे स्नेहपूर्ण बातें ही कर रहे हैं । कडुवे बोल नहीं बोल रहे हैं । इन मीठे वचनों से पास बहती वितस्ता भी मानो मीठी हो गई हो । आज के दिन इन समधियों तथा नातेदारों ने कैसी मधुर वाणी में स्वर्गीय की प्रशंसा

की है और उनके गत जीवन के वैभव की प्रशंसा करके हर तरफ मिठास भर दी है (तात्पर्य यह है कि दिवंगत सतकर्मी एवं सज्जन थे)।

हां री, सच ही कह रही हो।

(56) *रस रस लालो वसू यारबल वेतस्तायि।*
येति ज़िठिय त जिठ्य समेयी।
होहविर लूक आई त वसू यारबल
सोन्यय त सामठ आई वसू यारबल
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

मृतक के बेटे के लिए लालो शब्द का प्रयोग किया। ऐ लाला तुम धीरे-धीरे वितस्ता नदी के किनारे उतरो, यहां सभी बड़े-बूढ़े इकट्ठे हो गए हैं। ससुराल वाले भी आए हैं, अब तुम वितस्ता के किनारे उतर आओ। समधियाने से, तथा अन्य सभी सम्बन्धी भी आ गए हैं, इसलिए अब तुम नदी के किनारे उतर आओ।

हां री, सच ही कह रही हो।

(57) *नोविव नोविद वोतयो*
कबील वाल्यो, वोतुयो
लूंग्य त हूर ह्यथ वोतुयो
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

तुम्हारी मृत्यु पर हमने सबसे अच्छे नाई को बुलाया है। हे, घर-गृहस्थी वाले, तुम्हारे पुत्रों आदि के बाल कटवाने के लिए नाई आ गया है। कपड़ा और नाड़ा भी लेकर आया है।

हां री, सच ही कह रही हो।

(58) *सोंजल पोन्या छोवथो*
जिठन्यन हिन्ज़ अहिया प्रावथो
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

पानी में विशेष (सुगन्धि-शुद्धतादायक) जड़ी-बूटियां डालकर तुम्हारा अन्तिम स्नान कराया गया। तुम्हारे परिवार के बड़ों ने तुमको जो आशीर्वाद दिए थे वे सभी तुमको फल गए।

हां री, सच ही कह रही हो।

(59) *नगर प्यठ वअतीय हुमुय चीज़*
तेल वुशख त हुमुय चीज़।

मेव हना त हुमुय चीज़

डून्य हना त हुमुय चीज़ ।

मृतक के ग्यारहवे दिन हवन होता है । कश्मीरी पंडितों का कोई भी संस्कार हो उसमें अखरोट का होना आवश्यक है । इस गीत में कहा गया है :–

हवन की सामग्री नगर से आ गई है । तिल, जौ तथा हवन का सामान सभी; इसके अतिरिक्त सूखा मेवा, अखरोट आदि भी नगर से हवन के लिए आ गए हैं ।

(60) *दहिम दोह दशीहार*

यार त बोय क्या आई जान

यारबल गंडिमय सोनसुन्ध्य साम

बब हय ओस क्रियावान ती ओस जान ।

आज दसवां दिन है । जो दशहरा के त्यौहार से कम नहीं है । देखते नहीं कितने मित्र तथा भाई-बन्धु आ गये हैं । नदी के घाट पर भीड़ लगी हुई है । श्रेष्ठ लोग भी आ गए हैं । आज घाट कितना शोभायमान लग रहा है ऐसा लगता है मानो इस पर स्वर्ण-स्तम्भ लगे हुए हैं । ऐसा क्यों न हो स्वर्गीय काक इस योग्य तो थे ही, कर्मठ तथा क्रियावान थे ।

(61) *यारबलुक वक़ छुय काकव*

ज़ियठ त ज़ीठिय समेयी काकव ।

हाकिम लूख समेयी काकव

बन्द त बान्दव आई काकव

अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टेक)

नदी के किनारे उतरने का समय है हे काक । सभी आयु तथा पदों में बड़े लोग आ गए हैं । बन्धु और बान्धव भी आ गए हैं ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(62) *अर्गस लग लज्य स्वर्गस तान्य*

बाग्यवान बबाओसुम जान ।

यारबल फोलुस त ओसुम जान

कूत्या लूख आस त ओसुम जान

अहान बी पोज़ छख बनान तय ।(टेक)

आज मृतक का दसवें दिन का संस्कार है । इस अवसर पर पुष्प युक्त अर्घ्य इतना चढ़ाया गया कि लगता है वह ढेरी स्वर्ग को छू रही है । ऐसा होगा भी क्यों नहीं, स्वर्गीय तो बहुत भाग्यवान थे । सम्पन्न तथा श्रेष्ठ लोग शोक मनाने घाट पर

आए हैं, इसीलिए इन उच्च कोटि के सम्बंधियों ने नदी किनारे की शोभा बढ़ा दी है।

हां री, सच ही कह रही हो।

(63) *सूत कोम्ब[1] नारि छय मोखतव रज़*

पनुन ज़न्म रथि खोरुथ द्राहम पोखतय

गुरु सेवा करथ द्राहम पोखतय

वति वति बण्डारा करुथ द्राहम पोखतय

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

तर्पण करने का पात्र जो मृतक को पानी देने के लिए है उसमें मोतियों की लड़ियां लगी हुई हैं (पुत्र दसवें दिन तक अपने पूज्य माता या पिता का तर्पण करता है। जिस पात्र से जल देता है उसी का वर्णन है)।

दिवंगत ने गुरुसेवा करके, जगह-जगह भण्डारा करके तथा पुण्य-कर्म करके अपने जन्म को सफल बनाया।

हां री, सच कह रही हो।

(64) *होंछ चालि गोंछ खसि कसिथ*

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

किसी की मृत्यु होते ही उसके सभी सगोत्रियों को सूतक लग जाता है। उसमें बाल कटवाना, दाढ़ी बनवाना निषिद्ध होता है। यही कहा गया है कि सूतक के समाप्त होते ही वे दाढ़ी-मूंछ बनवा लेंगे।

हां री, सच ही कह रही हो।

(65) *स्वर्गस बर वथ्य त्रविहय।*

मूछदामस बर वथ्य त्रविहय

यमदारस बर वथ्य त्रविहय

वैकोंठस बर वथ्य त्रिविहय

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

सभी धर्मों में विश्वास है कि जो अपने जीवनकाल में पुण्य ही पुण्य करता है उसको या तो स्वर्ग मिलता है या वह मोक्ष को प्राप्त होता है। इसीलिए इस गीत में कहा गया है कि :–

---

1. स+उदक (जल)- सोदक से कश्मीरी 'सूत' शब्द बना है। कुम्भ (घड़ा) से 'कोम्ब' बना है। सूत-कुम्ब का अर्थ हुआ, वह घट जिसमें दसवें दिन तक मृतक के तर्पण हेतु जल रखा जाता है, अन्त में उसे वितस्ता में विसर्जित कर देते हैं।

दिवंगत आत्मा के लिए स्वर्ग के द्वार खोले गए मूछदाम (मोक्ष-धाम) के द्वार खोले गए, यमराज के घर के द्वार खोले गए, व्यकोंठ (बैकुण्ठ) के द्वार खोले गए।

हां री, सच ही कह रही हो।

(66) *नोशव त कोरयव कोरुहोय च़ोरुग*
स्वर्ग असिनय काकव
जुर्यव त पोत्रव करुहोय च़ोरुग
स्वर्ग असिनय काकव।
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

वयोवृद्ध के मरने पर उसकी बहुओं ने, लड़कियों ने, नाती-पोतियों ने चारों ओर से 'चरागां' किया। भगवान् करे कि दिवंगत को स्वर्ग मिले।

हां री , सच ही कह रही हो।

(67) *शाह आव लबि तल्ल गाह त्रावान*
ज़िठन्यहुन्दुय थ्यकनावान।

काक के मृत्यु पर राजे-महाराजे भी आ गए। उनके आते ही चारों ओर प्रकाश सा फैल गया अर्थात् वह ऐसे शोभायमान हो रहे हैं, जैसे उनके मुख से तेज-सा टपक रहा है। स्वयं इतने बड़े तथा राजा होते हुए भी वे काक की प्रशंसा कर रहे हैं।

हां री, सच ही कह रही हो।

(68) *लूख डेढ़ि प्यठ प्रारान छिय*
दफ्तर लूखुय प्रारान छिय
रोखसथस प्रारान छिय
ज़िठय त ज़ीठिय प्रारान छिय
अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

कश्मीर में यह प्रथा है कि जब कोई किसी के घर पर शोक मनाने जाता है (फिरने जाता है) तो वह तब तक नहीं जाता है जब तक कि उससे यह नहीं कहा जाता है कि 'अब आप जाइए' — इसको कश्मीरी में 'रुखसत दियुन' कहते हैं। यहां यही कहा गया है :—

दफ्तर के लोग, सम्बन्धी, बड़े छोटे सभी आए हैं, अब वे द्वार पर 'रुखसत' के लिए अर्थात् जाने की आज्ञा मिलने के लिए खड़े हैं।

हां री , सच ही कह रही हो।

(69) *मलियारि म्यानि पलियोर जान*

सोन्य त सामठ क्या आयी जान

लज़नम डेढ़ि तय देवानखान

कूत्या लूख आयीजान

देवानखानन फरश जान

यार त बोय आयी जान

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

तुम जीवन रूपी उपवन की बाड़ का काम करते थे। आने-जाने वालों, परिवारी-जनों, सम्बंधियों की इतनी भीड़ हो गई है कि उनको एक स्थान पर बैठाना असम्भव-सा हो गया है, इसलिए उनको दीवानखानों, बरामदों तथा ड्योढ़ियों में बिठाने का प्रबन्ध किया गया है। तुम यह मत समझना कि दीवानखाने में या और जगहों पर व्यवस्था अच्छी नहीं है। दीवानखानों को अच्छी तरह सजाया गया है, अच्छा फर्श बिछाया गया है। हमको मालूम था कि बड़े-वड़े उच्च के लोग आएंगे।

हां री, सच ही कह रही हो

(70) *बुलबुल आंपस प्रारान छय*

हाकिम लूख आयी बीठिय साफस

चायिहेना दियूखी बीठिय साफस

बावनायि सान दियूखी बीठिय साफस

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टिक)

कश्मीर में यह प्रथा है कि जब किसी की मृत्यु होती है तो सवेरे-सवेरे पक्षियों को अन्न खिलाया जाता है तभी उस अन्न को और लोग खा सकते हैं। जो भी कोई वस्तु खाने की हो उसे पहले पक्षियों को खिलाया जाता है, जैसे शेष भारत में 'गौ-ग्रास' होता है :–

बुलबुल खाने के लिए आ गयी है। हाकिम लोग तथा अफसर लोग जो आए हैं उनको स्वच्छ स्थान पर बैठा दिया गया है। इन लोगों को ज़रा चाय-पानी आदि दे दो। प्रेम-भावना के साथ इन लोगों को चाय आदि पिला दो। भावना का ही अधिक महत्व है। तभी उसका फल मिलता है नहीं तो सब व्यर्थ है।

हां री, सच ही कह रही हो।

(71) *ख्य मुजि खंजि त कंदी चीज़*

द्रद हना त कंदी चीज़

चायिहना त कंदी चीज़ मिठाइहना त कंदी चीज़

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

कश्मीर में जब किसी के माता या पिता की मृत्यु हो जाती है तो दस दिन तक वह व्रत करता है, एक ही समय अन्न खाता है। क्या क्या खा सकता है, उसी का उल्लेख है :—

कश्मीर में श्राद्ध इत्यादि अनुष्ठानों में मूली का प्रयोग किया जाता है, इसलिए कहा गया है मूली के टुकड़े तथा मीठी वस्तुएं दूध, दही, कन्दमूल चाय मिठाइयां आदि खा ले। (कश्मीर में गाजर के समान एक कन्द होता है, जिसे 'कन्द-मूल' ही कहते हैं।)

हां री, सच ही कह रही हो।

(72) *"चन्दच गोच़र दिच़नय च़ेय*

जिछी नोशि वन्यसी केह।

ब क्याबी वनस?

छेट फल्य लेसनस बंत फलि सान"

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

कश्मीरी समाज में भी बड़ी बहू का विशेष स्थान है। सास के मरने पर सारा उत्तरदायित्व उसी पर आ जाता है। गृहस्थी को तो उसी को संभालना होता है। मृतक के दसवें दिन के बाद शोक-गीत गायिका बड़ी बहू को अपने पास बुलाकर कहती है कि, "तुम अपनी सास के विषय में कुछ तो बोलो। उसने तो अपनी जेब का तालियों वाला बटुआ भी तुमको दे दिया। बटुए में ही उसकी चाबियां आदि भी होती हैं, इसलिए वह बटुआ तो समस्त पूंजी ही है।" इस पर बहू कहती है कि मैं क्या कह सकती हूँ क्योंकि वे तो मेरी पूजनीया थीं। मैं तो प्रार्थना करती हूँ कि उनके पतिदेव और बच्चे दीर्घजीवी हों।

हां री, सच ही कह रही हो।

(73) *वोथ बी नोशी म बी कर च़ेर*

कहिम दोह बानन कर बी ढेर

कहिम दोह सामग्री कर बी ढेर

कहिमन पदारच़न कर बी ढेर

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

दसवें दिन के संस्कारों के बाद ग्यारहवें दिन का प्रबन्ध आरम्भ हो जाता है।

इस दिन हवन होता है । ब्राह्मणों, गरीबों और नाते-रिश्तेदारों को भोजन कराना होता है, इसलिए काम काफ़ी बढ़ जाता है । इस सबको सुचारु रूप से कराने का जिम्मा बड़ी बहू पर ही होता है, इसलिए बड़ी बहू से कहा जाता है :–

ऐ बहू उठो । देर मत करो । गयारहवें दिन के लिए सामग्री इकट्ठी करो । इसके अतिरिक्त आवश्यक ग्यारह पदार्थों को इकट्ठा करो ।

हां री, तुम सच ही कह रही हो ।

(74) *न्यरवाण पोरुहोय न्यरवान पोथ्यव*
च़ानि वनन कोरुहोय शैव संस्कार
अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टेक)

हे दिवंगत ! यथाक्रम 'निर्वाण-पोथियों' में से मन्त्रों का उच्चारण किया जा रहा है । तुम्हारे ही निर्देश पर शैव-संस्कारों की विधि के अनुसार अन्त्येष्टि क्रिया की गई है ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(75) *अगूरि गोरव माला हा ज़पुय*
गथ हा करय काकव (या मालयव)
तंत्रव पूज़होख काकव
अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टेक)

तांत्रिक जाप के लिए अघोरी और तांत्रिकों को बुलाया गया । तुम्हारी अन्त्येष्टि में तान्त्रिक भी आये उन्होंने भी तुम्हारी अन्तिम क्रिया की ।

हां री, सच ही कह रही हो ।

(76) *लोगाक्षि परि़ज्यस न्यरवान करि़ज्यस*
कोलक्रम थवि़ज्यस निशअ निश ।
शिव-शिव कोरथम ़व्यथ च़ोनथम काकव ।
अहान बी पोज़ छख वनान तय । (टेक)

गायिका ज्येष्ठ पुत्र को सम्बोधित करती हुई कहती है :—

लौंगाक्ष के अनुसार वेद-पाठ, काक या दादी की मृत्यु पर अवश्य करना चाहिए, यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि निर्वाण अवश्य प्राप्त करना है क्योंकि इसके बिना मुक्ति नहीं हो पाती है । हे ज्येष्ठ पुत्र 'कौल' तन्त्रों (शक्ति-उपासना) के पालन पर अधिक ध्यान देना । हे काक ! शिव-शिव शब्द का उच्चारण करते हुए, चेतना जगाकर तुमने अपनी आत्मा को प्रत्यक्ष रूप में देखा । (प्रतिभिज्ञा की) ।

हां री, सच ही कह रही हो।

(77) *बबस मंगिव अहिया*

अहलस महलस अहिया।

यथ मजिलिसि अहिया

सारीनिय प्रूशिन अहिया।

अहान बी पोज़ छख वनान तय। (टेक)

कश्मीरी शोक-गीतों की विशेषता है कि अन्त में सभी के लिए आशीर्वचन होता है। कश्मीर में यह मान्यता भी है कि मृत्यु-शैया पर जब कोई पवित्र आत्मा हो उस समय जो मांगा जाता है वह सिद्ध-वाक्य हो जाता है, प्राप्त होता है। कुछ लोग मानते हैं कि इन गीतों में संस्कृत नाट्यशास्त्र के अनुरूप ही, अन्त में, 'भरत वाक्य' जैसा है:—

बाबा से आशीर्वचन मांगो अपने लिए, आस-पड़ोस वालों के लिए, यहां उनकी शोकसभा में जो सभी एकत्र हुए हैं, उनके लिए। अन्त में (सर्वेभवन्तु सुखिनः के अनुसार) ये आशीर्वचन सब तक पहुंचे, सबके लिए हो, यथा- ओउम् शान्ति।

हां री, सच ही कह रही हो।

खेल-गीत

(1) *हुकुस बकुस, तोलिवन च़कुस,*

ओनुम बतुख, लोवुम देगि,

शाल किच किच वांगनो,

ब्रामिज वारस पोन्य छोकुम

ब्रमिज बनेय ट्यकिस ट्यक्खा।

'वह कौन है ? मैं कौन हूँ ? तब बताओ तुम कौन हो। (मैं) बतख लाया, (उसको) देगची में डाला। बैंगन को देखकर (उसके कारण) गीदड़ ने 'किच किच' की। ब्रमिज वृक्ष की पंक्तियों में मैंने पानी दिया और ब्रमिज भी ललाट-तिलक समान शिरोधार्य (पूज्य) बन गया।'

ब्रमिज नामक पेड़ के विषय में अनेकानेक विश्वास, कश्मीरियों (विशेषकर हिन्दुओं में प्रचलित है) जैसे :— (1) इसकी लकड़ी नहीं जलाते हैं (मुसलमान इसकी लकड़ी जलाते भी हैं) (2) इसमें पानी नहीं देते हैं। (3) इसके पास से नहीं

निकलते, इसकी छाया में होकर नहीं आते-जाते । (4) इसमें फल नहीं आते । सम्भवतः यह वन-देव तथा देवियों अथवा प्रेतात्माओं का निवास-स्थान है । वैसे मुसलमान इसकी लकड़ी जलाकर उसकी राख से कपड़े धोते हैं और यह मानते हैं (या मानते थे) कि उससे कपड़े साफ हो जाते हैं । ध्यातव्य है कि कश्मीर घाटी में धोबी का व्यवसाय केवल मुसलमान करते हैं । ब्रमिज के प्रति भय, रहस्य तथा उसके त्याज्य एवं अभागे होने की भावनाएं हिन्दुओं में प्रचलित हैं और आज भी वह इन सब भावनाओं का प्रतीक-सा बन गया है । एक कहावत है :–

ब्रमिज ह्‌य असिस त म्यव कोनअ द्राम

लूक छिम खोच़ान छ़ाय पकनस ।

अर्थात् 'मैं ब्रमिज थी परन्तु वृक्ष तो थी, (मुझसे) फल (मेवा) क्यों नहीं निकले (आये) ? लोग मेरी छाया में होकर चलने से डरते हैं ।'

उपर्युक्त कथन में सन्तानहीन (बांझ) स्त्री की करुण पुकार है कि वह सन्तानहीन होते हुए भी है तो स्त्री, फिर वह समाज में इतनी त्याज्य क्यों है ?

यह गीत अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा प्राचीन है और इसके अनेक भ्रष्ट रूप कश्मीर में प्रचलित हैं तथा इसका उच्चारण भी भ्रष्ट हो गया है, अधिकांश लोग (विशेषकर मुसलमान) इसे निरर्थक तुकबन्दी मानते हैं । इसके विभिन्न रूपों का अध्ययन करके तथा विशेषज्ञों से परामर्श करके इसका लगभग सही रूप निर्धारित किया गया है और अर्थ की व्याख्या की गई है । इस छोटे से गीत में जो समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक संकेत हैं वे अन्य किसी भी भाषा के किसी भी (इतने प्रचलित एवं लोकप्रिय) लोक-गीत में दुर्लभ हैं ।

(2) *तुल लंगुन, तुलान छस*

दाजअ लंगुन, तुलान छस

सोन लंगुन, तुलान छस

रोप लंगुन, तुलान छस

मोकत लंगुन, तुलान छस ।

लंगुन एक पात्र है जो कश्मीर में घरेलू नाप-तोल के काम आता है, धान चावल इत्यादि इससे तोले जाते हैं । यह लकड़ी का बना होता है । इस खेल में दो बालिकाएं होती हैं, एक पूर्व की तरफ मुंह करती है, दूसरी पश्चिम की ओर । पहले एक अपनी पीठ पर दूसरी को गाना गाते हुए उठाती है फिर दूसरी पहली को उठाती है । यह एक तरह की कसरत भी है जो बालिकाओं की पीठ मज़बूत करने के लिए कराई जाती थी। इसके साथ इसी कारण नाप-तोल का गाना ही रखा गया है । यह

गीत कथोपकथन रूप में है ।)

'तू लंगुन उठा ले ।' 'उठा रही हूँ ।' 'दहेज से भरा पात्र उठा ले ।' 'उठा रही हूँ ।' 'सोने से भरा पात्र उठा ले ।' 'उठा रही हूँ ।' 'चांदी से भरा पात्र उठा ले । ' 'उठा रही हूँ ।' 'चावलों से भरा पात्र उठा ले' । 'उठा रही हूँ' । 'मोतियों से भरा पात्र उठा ले' । 'उठा रही हूँ ।'

(3) *बिश्त, बिश्त ब्रार्यो खोतुखो वन, तोरअ क्योह वोलुथ बबरेपन*
सु कमन छकुथ ? कोतरन, कोतर बीठिय मारकन
जून छय गिनदान तारकन, बिश्त बिश्त ब्रार्यो खोतखो वन ।

अर्थ — बिल्ली वन चली गई, वहां से पत्ते लाई, पत्ते कबूतरों को डाले, जो पंक्तिबद्ध समूह में बैठे हैं । चन्द्रमा तारों से खेल रहा है ।

(कश्मीरी में बिल्ली को भागने के लिए 'बिश्त-बिश्त' की आवाज़ की जाती है, जैसे हिन्दी में 'हिश्ट' 'हट' 'शी' या 'शू', बबरे एक वनस्पति है । पन का अर्थ है पत्ते ।)

(4) *ओम्बुर बोम्बुर बोन्य तल, गाव प्याई लचि तल,*
वोछ त्रोवुम कुल्यन तल, वलिवू शुरैव खसव वन,
तोरय वालव बबरे पन, सु दिमव कचिलयन,
कचिल्य बाय कचिल्यो, नाग नेन्दर पेइयो
सोर्फ कलन ख्योनखो
हारि ओनुनम सिया दान बिया बिया कोतरो ।

'भौंरा चिनार के पेड़ के नीचे है । गाय ने पूंछ के पास से बच्चा दिया । उसके बछड़े को मैंने पेड़ के नीचे छोड़ दिया । आओ बच्चो हम लोग वन चलें । वहां से 'बबरे पन' (एक विशेष पेड़ के खुशबूदार पत्ते) ले आयें । वे पत्ते हम बकरियों को खिलायें । ऐ, बकरी, ऐ, बकरी, तू तो सर्प के समान गहरी नींद में सो गई । तुझको सर्प के फन ने काट खाया । मैना एक काला दाना ले आई । आ, आ, कबूतर खा ले । (बोम्बुर— भ्रमर, वोछ-वत्स, बछड़ा ।)

(5) *हिकटाह मिकटाह, बअय अनिनम डून्य काह ।*
ख्यमह क्याह चमह क्याह, हशि हेहरस दिमह क्याह ।
बानह कुठिस थवह क्याह ।
हश वुछिम यारबल, पूच़ थविथ तालि प्यठ ।

अर्थ — 'हिकटाह-मिकटाह' कह कर खेल प्रारम्भ होता है । (यह शब्द ताल

और लय के लिए हैं और यही टेक भी है) एक बालिका दूसरी बालिका से कहती है कि : —

'मेरा भाई ग्यारह अखरोट लाया है । मैं खाऊं क्या और पियूं क्या । सास और ससुर को क्या दूँ, तथा भण्डार-घर में क्या रखूं ? मैंने सास को नदी के किनारे देखा वह अपनी पूछ़ सिर पर रखे थी ; काम में लगी थी ।

हिकटाह का खेल केवल कन्याओं का है । गोलाकार खड़ी लड़कियों के मध्य में दो लड़कियों के जोड़े बारी-बारी से गाना गाते हुए नाचते हैं ।

(डून्य — अखरोट, काह — ग्यारह, हश — सास (श्वसा), हेंहर — ससुर (श्वसुर) कश्मीरी में आरम्भ का श ह में परिवर्तित होता है । यारबल— नदी का घाट, पूछ़ — कश्मीरी हिन्दू-नारियों की वेश-भूषा का एक भाग, एक श्वेत वस्त्र जो कि सिर पर पहना जाता है, जिसका रज्जूकृत भाग पीछे लटकता रहता है जिसे काम करते समय वे इकट्ठा करके सिर पर रख लेती हैं ।)

(6) *कावह यनिवोल, मुरादुन मोल*
चेति बअत टोक, मेति बअत टोक
दिहम नय रस हअन कडय मूल छोग ।

पाठ भेद :—'दिहम नय रस हअन कड़य मूल ओल ।'

अर्थ — देखो कौवों की बारात है, मुराद का पिता (उसमें है) । तुम्हारे पास भी चावलों से भरा टोक (मिट्टी का पात्र) है, मेरे पास भी चावलों से भरा पात्र है, अगर तुमने मुझको रसा नहीं दिया तो मैं तुम्हारी चुटिया जड़ से उखाडूंगा । (पाठ भेदः— मैं तुम्हारा घौंसला उखाडूंगा।)

(छोग — शिखा (चुटिया) ओल — घोंसला, मोल — पिता ।)

(7) *बिलबिचरो मअज हा मोयी पादशाह सअबनिस प्रंगस प्यठ*
वोथीय रंग च़रिये दामान दरिये ।
हब्बकदल लुहरान, ज़अनकदल लदान
बोड मअज वदान पशस प्यठ
वातान वातान वअचिस मुकदुम सअबुन निशी
मुकुदुम सअबन वनुनम, मअलिस माजि लस
मअल्य माजि दोपुनम बानुकुठ खस ।
बानकुठि तोमुला मेनान छस,
वाजन अथि दिवान छस ।

वाज़न दपुनम स्वर्गस खस

स्वरगुक दरवाज़ मुचरान छस ।

अर्थ — ऐ बुलबुल तेरी मां बादशाह साहब के पलंग पर मर गई । ऐ रंगीन चिड़िया उठ जा । हब्बाकदल को तोड़ रहे हैं और ज़ैनाकदल को बना रहे हैं । बड़ी मां छत पर रो रही है । चलते-चलते मैं मख़दूम साहब के पास पहुंची । मख़दूम साहेब ने मुझसे कहा कि तुम अपने मां-बाप के लिए जियो ।

मां-बाप ने मुझसे कहा, आ ऊपर भण्डार घर में चढ़ आ । वहां मैं चावल नाप रही हूँ । वह चावल मैं रसोइये के हाथ में दे रही हूँ । रसोइये ने मुझसे कहा कि तुम स्वर्ग चली जाओ । मैं स्वर्ग के दरवाज़े खोल रही हूँ ।

(बिलबिचरो —बुलबुल, रंगच़र — रंगीन चिड़िया, कदल — पुल, वानकुठ —भण्डार-कोठा, मुकदुम — मखदूम साहब, वह मुस्लिम नेता जिसने विशेष रूप से कश्मीर में इस्लाम का प्रचार किया था । उसका मज़ार मुसलमानों का तीर्थ है ।)

(8) *जून मअज जून, आंगन मंगान च़अतजी*
तिम कस कनने, रेअयि कनने ।
रेअयि क्या दितुनय, खसवुन गुर त वसविन्य नाव
शेगोनअ मोला, शेगोनअ मोल सिय ।
कुकिला ज़ाय, कुकिलि ब्योनि माल्युन कतिये ?
येति जून बत प्यारान, अनगुर पोन्य सारान
रहमानस वान्दुर नसमोंड़र च़टान ।
वति समछिम छोटिय मोटिय मामन्या
तमी दितुनम ग्यव दूर, सुय लोदुम जजीरि
जजीर लजिम नचनि ।
हारि बेछम बुछिनि, बुलबुल बीठिम बोलनि
दोह पंअशि लोकचार हक छी छी ॥ टेक ॥

अर्थ — (कथोपकथन रूप में) . . . .

चन्द्रमा ने चालीस आंगन मांग लिए । वह किस को बेचे । चींटी का बेचे । चींटी ने क्या दिया । चढ़ने के लिए घोड़ा और उतरने के लिए नाव । छः गुने मूल्य में ? हां छः गुने मोल में । कोकिला उत्पन्न हुई । कोयल का मायका यहां है ? वहां, जहां चन्द्रमा भात का मांड़ निकाल रहा है । छछूंदर पानी भर के ला रही है । बन्दर रहमान की नाक काट रहा है । मार्ग में मुझको छोटी-मोटी मामी मिली, उसने घी से

भरा टूर (पात्र) दिया, उसको मैंने हुक्के (जंजीर) में भर दिया, हुक्का नाचने लगा। मेनाएं (सारिकाएं) देखने लग गई, बुलबुले बोलने लगीं। बचपन पांच दिन का है, नाचो झूमो (टेक)।

(9) *बुड़ा वोथू वन्य, ब ना वोथय न*

सोन सुन्दर हार हा गरय, बना वोथय न

सोन सुनद खोस हा गरय, बना वोथय न

पोशाक हा सुवय, बना वोथय न

ज़नान हा करय, वोथु स हा वथुस हा।

(10) *च़ कोत ओसुख गोमुत ? अमरनाथ*

क्याह करनि ? ट्योकाह करनि

नअल्य क्याह ओसुय ? लोछ़ त पोछ़

खोरन क्या ओसुय ? गासह पुलहोर

वोडि क्या ओसुय ? कोरिह कलपोश।

गीत सं० 9 का अर्थ — (सम्वाद शैली में) —

'बूढ़े उठो अब।' 'मैं नहीं उठूंगा।' 'सोने का हार बनवा दूंगा।' 'मैं नहीं उठूंगा। 'सोने का खोस बनवा दूंगा।' 'मैं नहीं उठूंगा।' 'पोशाक सिलवा दूंगा।' 'मैं नहीं उठूंगा।' 'पत्नी ला दूंगा' (लो) 'उठ गया, उठ गया।'

गीत सं० 10 का अर्थ —

तुम कहां गए थे ? अमरनाथ। क्या करने ? तिलक लगवाने। क्या पहने थे ? गर्म कपड़े का फिरन तथा उसके भीतर सफेद कपड़े का पोछ। पैरों में क्या पहने थे ? घास का पुलहोरु (एक विशेष प्रकार का मूंज घास का जूता जिसको पहनने पर बर्फ में फिसलते नहीं हैं) सिर पर क्या पहने थे ? लड़कियों का कलपुश ? (कलपुश केवल स्त्रियां ही पहनती हैं) यह सुनकर सब हंसते हैं।

(खोस—फूल की धातु का, बिना हत्थे का प्याला, लोछ —पट्टू का फिरन, पोछ—फिरन के नीचे पहना जाने वाला सूती वस्त्र, नअल्य—पहने, खोरन—पैरों में, वोडि-सिर पर।)

(11) *बोड़ मअज कति छय, पशस प्यठ प्यामिच़।*

ज़ामुत क्या छुस, न्यचिव पल्लाह।

नाव क्या करुहोस, सदानन्द ।

नअल्य क्या छुनुहोस लोछ़ त पोछ़

वोडि क्या दितुह्रोस कोरि कलपुश

खोरन छुनह्रोस लचिदार पअज़ार

स्युन क्या दितुह्रोस, स्वचल त हन्द

स्व कहांज़ि वारे, गिलि हन्ज़ि वारे

गिल मा मारे, रोपय दारे ।

अर्थ — (सम्वाद शैली में) — बड़ी अम्मा कहां है ? छत पर बच्चे को जना है । क्या जना है ? शिला जैसा पुत्र । नाम क्या रख दिया ? सदानन्द । पहना क्या दिया ? फिरन और पोछ़ । सिर पर क्या पहनाया ? लड़कियों का कलपोश । पैरों में क्या पहनाया ? नोंक वाले (जोधपुरी) जूते । खाने को क्या दिया ? 'स्वच़ल' तथा 'हन्द' — (ये सब्ज़ियां कश्मीर में ही मिलती हैं, इनमें लौह-तत्व बहुत होता है, इसलिए जच्चा को ये सब्जियां खिलाई जाती हैं, दूसरे ये सस्ती सब्जियां हैं ।) यह सब्जियां किसकी बारी (बगिया) की हैं ? यह गिल की बारी में हैं । गिल मारेगी तो नहीं ? नहीं उस पर हमारा एक रुपया उधार है ।

(न्यचिव पल्लाह — पत्थर जैसा बच्चा, दारे—उधार से बना है ।)

(12) *कोत गछ़ख ककुरो, बालादरि प्यठ ।*

क्या करनि ककुरो, ज़नान च़जिम ।

छुनुस बलाय ककुरो, छुर वदान छिम ।

बतअ दिखू ककुरो अनिगटअ छम ।

चोंग ज़ालू ककुरो, ब्रोर नचान छुम ।

बिश्तह करुस ककुरो, मुश्तअ दिवान छुम ।

अर्थ — (सम्वाद शैली का खेल गीत है) —

मुर्गे कहां जायेगा ? बारादरी पर ।

क्या करने मुर्गे ? पत्नी भाग गई है ।

बला मारो मुर्गे । बच्चे रो रहे हैं ।

खाना दे दो मुर्गे । अन्धेरा है ।

दिया जला दो मुर्गे, बिल्ली घूम रही है ।

(बिल्ली को) 'बिश्त' करके भगा दे मुर्गे, वह खोंसा मारती है ।

(हिन्दी तथा ब्रज में हिश्श, हट या 'दू' कहते हैं वैसी ही कश्मीरी में बिल्ली

भगाने के लिए 'बिश्त' है)।

(13) *आतालि पातालि कोंग तोलो*

यि गोर ति गोर शक्कर त खण्ड

राधामअली बअलिये, कनन छिय कनवआलिये

गुर खैयि बंगअ, लोबर चंगअ

अस्य क्या ख्यमव, हुमिस ज़्ारि होन्द वांट।

'आताल-पाताल में केसर तोलो। यह गुड़ वह गुड़, शक्कर तथा खांड़। राधामाल के कानों में बालियां हैं। घोड़ा भांग खायेगा और लीद के चोथ करेगा। हम क्या खायेंगे? उस चिड़िया का कलेजा।

(कोंग — केसर, कुंकुम से बना है, बंग—भांग, बांट—कलेजा)

ॠतुओं के गीत (1 से 15 तक)

सोंत : (वसन्त)

(1) *आव बहार बोलू बुलबुलो, सोनवला बर वो शअदी*

प्राव कठकोश ग्रोज़ह पान छलो, ज़रा छलनय

वन्द की दअदी, वज़ू न्यनदरे वुनि छा सुलो।

काव, कुमरि वुछू पोशनूलो, आय नालन ज़न फरयादी।

बाव वन्दकी गमगोशा गुलो। नाव हयथ नेरू सुम्बलो,

ह्यथ ज़मीनस खति आज़ादी, प्याल ह्यथ छय योम्बुरज़लो

चाव सोंत तय नब गव खुलो बुतराज़्र प्यठ चलि फसअदी

टेंकअबटने त यीरिक्योमी फोलो।

अर्थ — बसन्त आ गया है बुलबुल तुम बोलना प्रारम्भ कर दो, हमारे यहां आ जाओ, हम भी आनन्द मनाएं। बर्फ जो जम गई थी अब पिघल गई है तुम अपने-आपको धो डालो जिससे कि शीतकालीन व्याधियां भी तुम्हारी धुल जाएं। तुम निद्रा से जागो अभी क्या सवेरा ही है ? पोशनूल देखना अब कौआ कैसे मरेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि ये पक्षी यही शिकवे तथा फरियाद कर रहे हैं। हे पुष्पो तुम अपने शीतकालीन दुःखड़े सुनाओ। नाम लेते ही हे, सुम्बल पुष्प तुम खिलना। यह बसन्त धरती की स्वतन्त्रता लेकर आया है। नरगिस प्याला लेकर खड़ी है। बसन्त के

आते ही आकाश स्वच्छ हो गया । (बुतरात)[1] भूमि से फसादी भाग गये । 'टेंकअ बअटनी' तथा यीरिक्योम पुष्पो तुम (अब) खिलो ।

(2) *शालमअर बागस फेरू पोशनूलो, दअच्छगामन फेरू पोशनूलो*
स्वनलअंकन फेरू पोशनूलो, वीरि सब्ज़ारस फेरू पोशनूलो ।

हे पोशनूल (पिलक) तुम शालिमार बागों में घूमो । हे पोशनूल तुम दाछीगांव में घूमो । हे पोशनूल तुम स्वनलअंकों में घूमो । हे पोशनूल तुम हरे-हरे सफेदे के पेड़ों के जंगलों में घूमो ।

बादाम के पेड़ों पर जब फूल लगते हैं तब जो गाने गाये जाते हैं :—

(3) *लज्य फुलय बादामन, यार कमन गव मोतुई ?*
रोशि करेमस पोशि चमन, द्रयव यियम पोतुय
हाय पेयम यम्बरज़लन, यार कमन गोम मोतुई ।

अर्थ — बादाम के पेड़ों में फूल आ गए हैं, मेरा प्रिय अभी तक नहीं लौटा, जाने वह किस के पीछे बावला हो गया । मैंने उसके लिए पुष्पों से भरे चमन बना लिए शायद वह लौट कर आएगा । नरगिस के पुष्पों में जाले लग गए (वह मुरझा गया) जाने मेरा प्रीतम किसके पीछे बावला हो गया ।

(मोत —मत्त, बावला ।)

(4) *बहार आव तय संज़ लोग नावन, सोंन लंअक वथरो बो,*
शोक चानि जूल ज़ालय रंगनावन, हा मति यावनरायो वे ।

अर्थ — बसन्त आ गया, सभी अपनी नौकाओं को ठीक-ठाक करके चलाने लगे । शिकारों में लोग 'सोनलअंक' जाकर उसको सजाने में लग गए । तुम्हारे लिए मैंने रंगीन शिकारों में झालरें लगवा दीं । हे मेरे यौवन के राजा (मेरे प्रियतम) ।

वहरात (बरसात) —

(5) *क्रुहुन ओबुर गर गर करे, छोत ओबुर दरे न ज़ाह*
सूसमार मार करे, वाद करे न ज़ांह ।

काले बादल गरजते हैं, श्वेत बादल टिकते नहीं हैं । चुप्पा, घुन्नेटा (न बोलने-गरजने वाला) मार (वार, हमला, चोट) करता है, प्रत्युत्तर (जवाब) नहीं देता ।

(क्रुहून — कृष्ण, काला ; ओबुर — अभ्र, आकाश, बादलों से घिरा आसमान; छोत— श्वेत; सूसमार— गोह, फ़ारसी का शब्द है ।)

1. बुतरात संस्कृत भूतरात्रि (पृथ्वी) से बना है— तैत्त० ब्राह्मण 21-9-6 तथा एत० ब्रा० 4-6

(6) *अगनह गगनह गयि गगरायि,*

नबअ मन्ज़ नारह वुज़मल द्रायि, अनतन पी। अनतन पी।

आंगन सानि फोजमच़ ही, च़टिथ लागस शेरि, अनतन पी ! पी !

(गगनह अगनह — गगन आंगन; नव — नभ, नार — बैश्वानर, आग ; वुज़मल — विद्युत माल; पी — प्रिय तथा पपीहा; फोजमच़ — फुल्लित, खिल गई; ही — श्री।)

अर्थ — आकाश में बादल गरजे, नभ में बिजली कौंधी। तुम पपीहे को लाओ, तुम पपीहे को लाओ हमारे आंगन में 'ही' लिखी है, उसको तोड़कर (प्रियतम) पी के मस्तक पर लगा लूंगी। तुम पपीहे (प्रियतम) को ले आओ तुम पपीहे को ले आओ।

हरुद (शरद) के गीत

केसर सुषुमा

(7) *शेखबाब सअबुन क्या छुय होशो, पोम्पुर के हा कोंग पोशो*

नाद लायै हा जिगर गोशो, पोम्पुर के हा कोंग पोशो।

नालय रटथ हा लोल पोशो पोम्पुर के हा कोंग पोशो।

शेखबाब सअबुन क्या छुय होशो, पोम्पुर के हा कौंग पोशो।

अर्थ — हे पाम्पोर के केसर के पुष्प, तुम तो सन्त शेखबाब साहिब के होश का परिणाम हो। (ऐसी लोककथा है कि सन्त शेखबाब की करामात का फल केसर है) हे मेरे जिगर के टुकड़े मैं तुम्हें हर समय पुकारता हूँ। हे प्रिय पुष्प, मैं तुमको अपने गले से लगा लूं। पाम्पोर के हे केसर के पुष्प, तुम शेखवाब साहिब के होश का परिणाम हो, हे पाम्पोर के केसर के पुष्प।

(नाद — आवाज़, पुकारना, पोम्पुर—पद्मपुर।)

(8) *कोंगस रंग छु स्वन ह्यू,*

समद यार कुछ वार लो लो, डेर करान— करान वथी असि गुमअ

अद गछि कोंग पोश सरकार लो लो।

केसर का रंग सोने जैसा है, ठीक से देखा। हे समद यार ठीक से देख लो। इसके ढेर लगाते-लगाते हम पसीने-पसीने हो गए। अब सरकार अपना ठेकेदार भेजकर इस केसर को ले जाएगी।

(स्वन—स्वर्ण, गुम-घुम—पसीना संस्कृत के घर्म[1] से बना है। 'लो लो' तुक मिलाने के लिए प्रयुक्त होता है।)

(9) *स्वन ह्यू प्रज़लान वारि मन्ज कोंग पोश,*
लग्यो पअरी हा कोंग पोशो।
ज़ोंग ह्यू प्रज़लान जून पछस मन्ज़,
लग्यो पअरी हा कोंग पोशो।
कअम्य च़य दितुनय रंग हा कोंग पोशो
लग्यो पअरी हा कोंग पोशो।
रंग हा ग्रेस्तयो खोदायन दियुतनम
लग्यो पअरी हा कोंग पोशो।
कअम्य च़य दितुनय मुशक हा कोंग पोशो
मुशक हा ग्रेस्तयो खोदायन दियुतनम
लग्यो पअरी हा कोंग पोशो।
ब करहय नालमोत चे कोंग पोशो
लग्यो पअरी हा कोंग पोशो।

(प्रज़लान - प्रज्वलित।)

अर्थ—वाटिका में केसर का पुष्प सोने के समान प्रज्ज्वलित हो रहा है। हे केसर के पुष्प, मैं तुम पर बलिहारी जाऊं शुक्ल-पक्ष में तुम दीये के समान प्रज्ज्वलित होते हो (टेक) हे केसर के पुष्प, मैं तुम पर बलिहारी जाऊं। हे केसर के पुष्प, तुमको इस रंग से किसने रंगा है (टेक) हे किसान यह मेरा रंग मुझको खुदा ने दिया है। हे केसर के पुष्प, तुमको यह सुगन्ध किसने प्रदान की। (टेक) हे किसान मुझको यह सुगन्ध खुदा ने दी। (टेक) मैं तुमको गले से लगा लूं, हे केसर के पुष्प, हे केसर के पुष्प मैं तुम पर बलिहारी जाऊं।

(10) *यार द्रायोम पोम्पुर वते, कोंग पोशव रोट नालमते*
सु छुम तते बअ छस यते, बार साहिबो वोज़तम ज़ार।

अर्थ — मेरा यार पाम्पोर के रास्ते गया कि केसर के पुष्पों ने उसको गले से लगा लिया। वह वहां है और मैं यहां हूँ। हे बार साहिब, तुम मेरी विनती सुनो।

(वते — वथे, पथे, रास्ते होकर ; नालमोत — आलिंगन, संस्कृत के निलीन

---

1. संस्कृत घर्म से प्राकृत 'घम्म' ('देशीनाममाला' -1-87 तथा 'गाथा सप्तशती'-414) से कश्मीरी 'गुम' हुआ है। घ का कश्मीरी में ग हुआ। बंगला में भी पसीने के लिए ऐसा ही शब्द है।

तथा मत्तः से बना है, देखिये वितस्ता—क० भा० विशेषांक, पृष्ठ 46)

शीत ऋतु के गीत :

(11) *वन्दह हय ओवुयी, दितय जन्दन फाह।*
वाल कअन्यी लोबर पअज, करतय कांगरि माह।
चठ तय वांकहलचि त हाख, गोगजि टुरना कुनि छुमा।

अर्थ — शीत ऋतु आई है अब तुम चीथड़े निकालो (सेयो)। ऊपर की मंजिल से कंडे, भर टोकरी ले आओ तथा कांगड़ी का चुम्बन करो।

तुम पत्तों की सूखी सब्जी की मालाओं को काट लो तथा यह भी ढूंढ लो कहीं सूखी शलगम के टुकड़े तो नहीं पड़े हैं।

(वांकहलचि — चुटीले - अतः माला ; जन्दन—फटे पुराने कपड़े।)

(12) *शीन आव शीन आव नवशीन आव*
वलो यारो वलो यारो नवशीन आव
वलो गुलो वलो सुलो वलो यारो मूतीलाल . . .
. . . बबस दिमई नवशीन पछिन ख्यमई
ह्योदि खार नवशीन तोर रट चपात।

बरफ आई, बरफ आई, नई बरफ आई। आओ यारो नई बरफ आई। आओ गुल्ला, आओ सुल्ला, आओ यार मोतीलाल। बब को नई बरफ देंगे और पछिन (बतखआदि) खायेंगे। (मोतीलाल कहता है) दादी पर यदि बरफ चढ़ाई तो उधर से थप्पड़ मिलेगा।

(शीन—बरफ ; वलो — आ, आओ।)

बर्फ का गीत :

(13) *शीनाप्यतो प्यतो, मामा यितो यितो*
शीना प्यतो प्यतो, ब्योयि यितो यितो
शीना प्यतो प्यतो माम टाठ्या यितो यितो।

अर्थ — बर्फ तू गिर, तू गिर, मामा तुम आओ, आओ। बर्फ तू गिर और बार-बार आ। बर्फ तू गिर, मेरे मामा प्यारे तुम आ जाओ।

कांगड़ी के गाने :

(14) *अय कांगर अय कांगर, कुरबान त हूरो परी . . .*
. . . कमसिना कोनडलि नी म्येन कांगर
क्या करअ छस ज़्ालान, कति प्येम टोपुक कडहस
क्या करअ छस ज़्ालान ।

हे, कांगड़ी तुम पर हूरें तथा परियां कुरबान हों । . . . जाने किस कुलटा ने मेरी कांगड़ी चुरा ली ? क्या करूं मैं सहन कर रही हूँ । अगर (वह चोट्टी) मुझे कहीं मिल जाय तो मैं उसका झोंटा पकड़ कर (झकझोर) खींच लूँ, क्या करूं मैं (कांगड़ी की चोरी तथा उसके फलस्वरूप ठण्ड) सहन कर रही हूँ ।

(कोनडल — कुलटा तथा कांगड़ी के भीतर का मिट्टी का पात्र ।)

(15) *माघ आव द्राग वथुय कांगरी*
फागुन आव ज़ागुन ह्योतुख कांगरी
च़िथर आव मुथुर करितव कांगरी
वहयक आव ट्रयक पेयबी कांगरी
ज़ेठ आव ब्रेठ गयख कांगरी
हार आव लार करीतव कांगरी
श्रावुन आव यावुन सोरोय कांगरी
बअद्रप्यथ आव वअदर पेययी कांगरी
अशिद आव कअसिद सूज़मय कांगरी
कार्त्तिक आव नार ट्रयख लज़मय कांगरी
मोंजहोर आव कोंजिह लजय कांगरी
पोह आव तोह लोदुमय कांगरी ।

अर्थ — माघ आया, कांगड़ियां महंगी हो गईं । फागुन आया, सभी कांगड़ियों की ताक में लगे हैं । चैत्र आया, कांगड़ी में मूत दो । वैशाख आया कांगड़ी पर पक्षियों की छेर आदि गिरने लगी (क्योंकि कांगड़ियों को उपयोग में नहीं लाते हैं ।) ज्येष्ठ के महीने में कांगड़ी तू सठिया गई । आषाढ़ आया, कांगड़ी को भगा दो, श्रावन आया, कांगड़ी का यौवन चला गया । भादों आया और कांगड़ी को (वअदर) गालियां पड़ गईं । क्वार आया, कांगड़ी के लिए कासिद भेज दो । कार्त्तिक आया, कांगड़ी में थोड़ी अग्नि भर दो । अगहन आया, कांगड़ी में जला कूड़ा-करकट (कम तेज़ आंच) भर दो । पूस आया, कांगड़ी में जली भूसी (तेज आंच) भर दो ।

त्यौहारों के गीत (1 से 31 तक)

(1) *नोव नवरेह सोंत हय आवय,*
यि कुसुय द्योदिये बोय म्योन आवय,
हस्तयन खसिथ आंगन च़ावय,
आंगनस पेयमय छत्रय छाये
तथ तलअ लबिमय मोक्तफल्य डाये,
तिमनय कअरमय मालाये।
(रेह—वर्ष से वरिय फिर रेह।)

नया 'नवरेह' (नया साल) तथा सोंत (बसन्त) आ गया, हे दादी यह कौन आ गया ? भाई मेरा आ गया। हाथियों पर चढ़कर आंगन में प्रवेश किया। इसके छत्र की छाया मेरे आंगन में पड़ गई, उस छाया के नीचे मुझे ढाई दाने मुक्ता के मिले जिनकी मैंने माला बना ली।

बसअखी (बैसाखी) :

(2) *वलय मय न्राव नेन्दर मस्तय, डल हय गछ्व शिकारस्तय*
शोरअ बरयोम बन्दूकस तय, डल हय गछ्व शिकारस्तय
दसगीर सअबनिस मअदा नस्तय, डल हय गछ्व शिकारस्तय
(नेन्दर — निद्रा ; शोरा — बारूद ; दस्तगीर — श्रीनगर में नौहट्टा के पास मुसलमानों का पवित्र स्थान है, जिसका प्राचीन नाम कुछ लोग दशगिरा बौद्ध विहार मानते हैं।)

आओ तुम मस्त निद्रा में मत सोओ, हम डल शिकारे में जायेंगे। मैंने बन्दूक में बारूद भरी है, हम डल (झील) शिकारे में जायेंगे। हम दस्तगीर साहब के मैदान में जाएंगे, हम डल शिकारे में जायेंगे।

गनचौदह (गणेश चतुर्दशी) :

(3) *जय गनीशा बोज़ू ज़ारपार, बवसर तार लो लो।*
कास त मे मोह अन्धकार, स्वर्गस मे खार लो लो।
गोमुत छुस गिरफ्तार, समयिकि ज़ाल लो लो।
छ्युना च़े केंहति म्योन आर ? कअंसि हन्द छा यि संसार ?

छु यि तावनुन बाज़ार, सोरुय छु ब्रम त बअज्यगार

जय गनीशा बोजू ज़ारपार बवसर तार लो लो।

अर्थ — हे गणेश तुम्हारी जय हो, तुम मेरी विनती सुनो, मुझको भवसागर से पार ले चलो। तुम मेरा मोह-अन्धकार काटो (दूर कर दो) मुझको स्वर्ग में ले चलो। मैं गिरफ्तार हो गया हूँ, इस समय के जाल में। तुमको क्या मेरे ऊपर दया भी नहीं आती ? यह संसार क्या किसी का हुआ है ? यह बीमारियों का बाज़ार है, यहां सभी कुछ भ्रम तथा जादू है। हे गणेश तुम्हारी जय हो, तुम मेरी विनती सुनो, मुझको इस भव-सागर से पार ले चलो।

(बोजू —सुनो; कास — काटो ; तावुन—ताऊन, प्लेग अर्थात् झंझट; वअज्यगार —बाजीगर।)

(4) *च़राचर छुख परमीश्वरो रछ़तम पनन्यन पादनतल*

गजमोख बालचन्द्र लम्बूदरो विनायक बविनय जय-जय।

अर्थ — तुम चराचर हो, परमेश्वर हो, तुम अपने चरणों के नीचे मेरी रक्षा करो। हे ए गजमुख भालचन्द्र लम्बोदर, विनायक तुम्हारी जय-जय हो।

हार अष्टमी (ज्येष्ट अष्टमी) का देवी से सम्बन्धित गीत (लीलायि) :

(5) *शुर छुस मअज्य बवानि च़ेय रोस छुस खोच़ान*

सूत्य सूत्य आसतमी रोज़ानय।

छुस वुछान संसार ज्योठि खोत ज्यूठुय यथ न अन्द

बोठ त तार बेयि क्रूठुय।

सुय तअरि यस करख कटाक्षुक बहानय

सूत्य सूत्य आसतमी रोज़ानय।

योदुवय वुल्ट नेरि माजि कांह सन्तान

गरि गरि तोति तस छि मअज बखशान।

(रोस — बिना, रहित ; वोठ — किनारा : क्रूठय — कठिन ; वुल्ट — उल्टा, बुरा ; गरि-गरि — घड़ी-घड़ी अर्थात् क्षण-क्षण या बार-बार।)

हे मां भवानी, मैं बच्चा हूँ, तुम्हारे बिना डरता हूं, तुम सदैव मेरे साथ-साथ ही रहा करो। मैं इस संसार को देख रहा हूँ जो बहुत ही विस्तृत है, इसका न कोई आर है न कोई पार है, इसको पार करना बहुत ही दुष्कर है। वही पार जा सकता है जिसके ऊपर तुम एक कटाक्ष (कृपा-कोर) का बहाना ही कर दोगी। तुम सदैव मेरे

साथ-साथ ही रहा करो। चाहे मां की कोई सन्तान कपूत ही निकले, समय-समय पर मां फिर भी उसको घड़ी-घड़ी क्षमा कर देती है। हे मां, तुम सदा मेरे साथ-साथ ही रहा करो।

(6) *ओम श्रीमत् मअ्ज्य बवानी छमअय आशा चअनी*
ख्यन सअय मन्ज़ दोख त संकट, दूर करतय ज़अ मअजी
छय च़े अरदाह न'रि बवानी, छख सहस प्यठ .च्य सवार।
अन्द्रय अन्द्रय छिय दिवता सअरी छिय करान च़ेय ज़ारपार
अष्टसिद्धि मातहत च़ेय, छिय पाद च़अनी नेथ छलान।
ख्यन सअय मन्ज़ दोख त संकट, दूर करतय च़अ मअजी।
सिर्य त बेयि चन्द्रम, प्रारान चेय हुकुमस।
यलि यन्द्राज़अ बेयि दिवता तंग अन्य महिशासोरन अय,
यन्द्राज़ आव च़ेय शरनअय, पादन प्योय च़े परनय
पत पत तस दिवता आई फ़्रकहत्य तअ दोरानिय।
ख्यन सअय मन्ज़ दोख त संकट दूर करतय च़ मअजी।
बूज़िथ तिहुन्दुय हाल अवहाल, अदअ महिशासोरनअय
वातनोवथन च़ेय पाताल यलि ज़ीर दिच़िथस ख़ोरसिय।
मोकलअविथख दीव बयनिश करअख मेहरबाअनी।
वोम शब्द छक सर्वशक्तिमान महामाया च़ेय वनान
काम क्रूद लूब बेयि बय बक्तियन छख च़ कासान
ओम श्रीमत मअज बवानी छमय आशा चअनी।

(मअज्य—माता; ख्यन—क्षण, दोख—दुख; न'रि—भुजाएं; अन्द्रय-अन्द्रय—चारों ओर से; नेत—नित्य ; यन्द्राज़—इन्द्रराज ; फ्रक—हांफना; मोकलय—मुक्त किया; दीव — देवता ; बयनिश —भय से; क्रूदलूब — क्रोध-लोभ।)

ओम श्रीमद् मां भवानी मुझको तुम्हारी ही आशा है। क्षण भर में ही दुःख और संकट आ जाते हैं, इन सभी को तुम दूर करो मां। हे भवानी तुम्हारी, अठारह बाहें हैं तथा तुम सिंह पर आसीन हो। तुम्हारे चारों ओर देवता बैठे हैं जो तुमसे अनुनय-विनय करते हैं। हे अष्टसिद्धि, वे तुम्हारे ही अधीन हैं, नित्य तुम्हारे पाद धोते हैं। (टिक) सूर्य तथा चन्द्रमा तुम्हारी ही आज्ञा की प्रतीक्षा में हैं। जब महिषासुर ने राजा इन्द्र तथा देवताओं को परेशान किया था तब इन्द्र तुम्हारी ही शरण में आये, तुम्हारे चरणों में पड़ गए थे। उनके पीछे-पीछे सभी देवता भागते हुए, हांफते हुए आये थे

(टेक) उनका महिषासुर से सम्बन्धित सारा हाल सुनकर तुमने उसको पैरों से ज़रा-सा धक्का मार कर पाताल में पहुंचा दिया। इस प्रकार तुमने देवताओं को भय से मुक्त कर दिया था तथा उन पर बड़ी भारी कृपा की। तुम ही ओम् शब्द हो, सर्वशक्तिमान हो, तुमको ही महामाया भी कहते हैं। तुम अपने भक्तों को भय, काम, क्रोध तथा लोभ से मुक्त कर देती हो। हे श्रीमत् मां भवानी, मुझको तुम्हारी ही आशा है।

(7) *द्रदहर की प्याल बरये सालकरये दीवियॆ*
अशि वान्य सअत्य पाद छलय, नाद बोज़तय म्यअनी।
व्रथ चोनुय नेथ ब दरय, साल करय दीवियॆ।
कोंग त कोफ़ूर तनि मलय, जामय वलय ज़रकारी।
बक्ति बावकिय श्लूक परय, साल करये दीवियॆ।

(द्रद — दूध ; साल—दावत; अशि वान्य—अश्रुजल; नाद—पुकार; व्रथ—व्रत; दरय— धारण, ध का द हो गया है; बक्ति बाव—भक्तिभाव; श्लूक— श्लोक।)

दूध से भरे प्याले भर-भर दूँ तथा तुम्हारी दावत करूं। मैं अपने आंसुओं से तुम्हारे चरण धोऊं, हे मां, तुम मेरी पुकार सुनो। मैं नित्य तुम्हारा व्रत करती हूँ। मैं तुम्हारी दावत करूं। (टेक) तुम्हारे शरीर पर मैं केसर, कपूर मलूं तथा ज़रबाफ के वस्त्र तुम्हें पहना दूँ। भक्तिभाव से पूर्ण श्लोक पढ़ूं, मैं तुम्हारी दावत करूं।

नेरज़ला काह (निर्जला एकादशी) ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी :

(8) *बीमसेनस बोछ लज रअच़ हन्जि कअश*
गाछिथ त दितुनय नमबले नार।
(बोछ - भूख — बुभुक्षा)
भीमसेन को एकादशी की रात में भूख लगी और उन्होंने (नम्बल) झील में आग लगा दी।

हार चौदाह (आषाढ़ चतुर्दशी) :

(9) *खिव खस पोशपूज़ कर ज़ालायो, महामायाये जय जयकार।*
महावेद्यायॆ, जगत्र मातायें, महालखमी, शव प्रयाये।
विष्णुमायाये, सर्वसप्रदाये, महामायाये जयजयकार
समयाह अख ओस छंडिन द्राये, ज़लायि रूपस वेष्न ब्रह्मानन्द
कुनि लोबहोस न फीरिथ आये, महामायाये जयजयकार।

प्रजापतस यलि खोत क्रुदुय, चानि सुमरन निश रूदुय दूर
वीरबदरन मोरुय यक्ष : महामायाये जय जयकार ।

(ज़ाला—ज्वाला; शव प्रयाये—शिव प्रिया; सर्वसयूदाये—सर्वसिद्धि; लोब—लब्ध अर्थात् प्राप्त; वीरबदरन — वीरभद्र ने ।)

श्रावनपुनिम (श्रावण-पूर्णिमा) :

(10) *हरमुख दर्शन दितम, ईश्वरो रछतम पनन्यन पादन तल*
निःशकल नाव चोन निरंजनो, स्वरूप कल् दरिथ त्रिकारण ।
सुमरन चानि सअत्य ज़न्म-मृत हरो, रछतम पनिन्यन पादन तल ।

(निःकशल —निराकार; स्वरुफ — सर्प; रछतम —रक्षा करो; निरंजन —कलुष रहित; त्रिकारण —शैव मतानुसार शिव का नाम, जन्म, पालन, मृत्यु आदि के कारण ।)

अर्थ — हरमुख मुझे दर्शन दो, ईश्वर तुम मेरी रक्षा, (पालन-पोषण) अपने चरणों के नीचे करो । हे निराकार, तुम्हारा नाम निरंजन है । हे त्रिकारण, तुमने गले में सर्प को धारण किया है । तुम्हारा स्मरण करने से जन्म और मृत्यु का जो आवागमन है, उससे पीछा छूटता है । तुम मेरी रक्षा अपने चरणों के नीचे रख कर करो ।

जन्म-अष्टमी (लीलायि) :

(11) *समिथ करवअथवास, पकिव रास गिन्दने ।*
शे रयथ सपुज़ कुनी राथ, गूपीनाथ नच़्नि लोग ।
वहर दोह गव पहर मास पकिव रास गिन्दने ।
यथ बालपनस दिमव छोह, युथूय दोहा गनीमत
सासस योगस करव रास । पकिव रास गिन्दने
शुर्यन बअचन लबिकनि सअविथ
वछिवलह त्राविथ न्येरखना, सअत्य हूयथ ब्योनि, पोफ, मअज, मास ।
पकिव रास गिन्दने । दआरिबर वछि त्राविथ न्येरव,
वथलब त मस्तानावथ फेरव,
दयि लोला रोसतुय क्या लवि अतहलास । पकिव रास गिन्दने
वनिव कस छुव कृष्णुन लोल, ज़्चुक ज़ु त कम्य क्या च़ोल

निवन्वय मन दिवनवय वेकास । पकिव रास गिन्दने ।

तोतिकति सोन ह्यू बन्योवाहाल, अदहकति ज़अन्यून तोहि

नन्दलाल बे हखना पअरिथ वोलास । पकिव रास गिन्दने ।

अस्य कमि बापथ करव त्याग, असि गछि आसुन कृष्णुन राग ।

सुय गव तफ, ज़फ यूगाभ्यास । पकिव रास गिन्दने ॥

रातस दोह गव दोहस राथ । नच़ान छु शामस सूत्य प्रबात । पकिव रास गिन्दने ।

(र्‌यथ—मास; गिन्दने—खेलने-रचाने; वहर—वर्ष; सास योग—सहस्रयुग; **वछिवल** —उत्साह से; अतलास—मू ल्यवान कपड़े ।)

अर्थ —मिलकर अथवास करेंगे, चलो रास खेलने चलें । गोपीनाथ जब नाचने लगे छः महीने एक रात के समान, साल दिन के समान तथा मास प्रहर के समान प्रतीत होने लगा । इस बालपन का आनन्द लूटें, यह दिन गनीमत है । सहस्रों युगों तक हम रास खेलें । (टेक) बाल-बच्चों को एक तरफ सुलाकर, उत्साह से चलना । तुम चलना साथ में बहिन, बुआ, मां तथा मौसी को भी ले लेना, चलना (टेक) चलो रास खेलने । खिड़की-दरवाज़े खोलकर चलना, रास्ता ढूंढ लो, चलो मस्त घूमें । कृष्ण के प्रेम के बिना मूल्यवान कपड़े व्यर्थ हैं । (टेक) बताओ कृष्ण का प्रेम किसको है ? (हमारा) मन ले लिया तथा विकास दिया । (टेक) हम जैसा हाल तुम लोगों का कहां हुआ है जो तुम नन्दलाल को जीतोगे । तुम तो सज-धज के मूल्यवान पोशाक पहन कर बैठो । हम किसलिए त्याग (योग) करेंगे, हमको तो कृष्ण का राग चाहिए । (टेक) वही तप, जप तथा योगाभ्यास है । (टेक) रात को दिन हो गया दिन को रात । संध्या के साथ प्रभात भी नाच रहा है ।

जन्म अष्टमी :

(12) *गाश आव लालो, वलो नन्दलालो, हरे गोपालो दर्शुन हाव ।*

अनिगटअ च़्ज्य फअज्य संगरमालो, हरे गोपालो दर्शुन हाव ।

श्रीकृष्ण-स्मरण करव कलि कालो । हरे . . .

बवसर तारान छुय कृष्ण नाव, आकाश पृथ्वी बेयि पातालो,

प्रकाश चोनुय हा गाश लालो, हरे गोपालो दर्शुन हाव ।

(गाश—प्रकाश, 'प्र'लुप्त हो गया है; अनिगट—अन्धकार; संगरमाल—श्रृंगमालाएं ।)

प्रभात हो गया लाल, हे नन्दलाल अब तुम आओ, हरे गोपाल तुम दर्शन दे दो। अन्धकार समाप्त हो गया, पर्वत की चोटियों पर प्रकाश हो गया, हरे गोपाल तुम दर्शन दे दो। इस कलिकाल में हम श्रीकृष्ण का ही स्मरण करेंगे (टेक हरे०) श्रीकृष्ण ही इस भवसागर से नैया पार ले जाते हैं। आकाश, पृथ्वी तथा पाताल तीनों पर तुम्हारा ही प्रकाश है, हे गाशलाल। हरे गोपाल तुम दर्शन दो।

(यह गीत स्त्रियां तुम्बक-नारी पर भी सहगान रूप में गाती हैं)

(13) *आरस मंज अच़अवय, विगिनि ज़न नच़अवय।*
लागोस पोश पूज़े, कृष्णजू न्यस न्यन्द्रि वुज़े
वोपरस कस पच़अवय। विगिनि ज़न नच़अवय।
लगहअस तानि तानय, शहलेख हनि हनय
कमव प्रेमव हचअवय ॥ विगिनिज़न नच़अवय।
वनस मन्ज़ ननवारे, छांडान कृष्ण प्यारे
कन्यव तापस तच़अवय ॥० विगिनि ज़न नच़अवय।

(आरस —गोला; विगिंन —परियां; वोपर —अपर अर्थात् पराया; शुहल—शीतल; हनि हनय —शनैः शनैः ; ननवोर—नग्न पैर।)

आओ सखियो गोलाकार बनाएं तथा ऐसे नाचें कि हम परियों जैसी प्रतीत हों। कृष्णजू को नींद से जगाकर उनकी पुष्प-पूजा करें। हम किसी पराये पर कैसे भरोसा कर सकती हैं। (टेक) हम अपना अंग-अंग उन पर न्योछावर कर देंगी जिससे हमारे रोम-रोम में ठंडक पड़ जाय। प्रेम भरी कलाइयां उनके गले में डालेंगी। वन में हम नंगे पैर कृष्ण को ढूंढते हैं। पत्थर धूप से इतने गर्म हो गए हैं कि पैर जलते हैं। चलो हम ऐसे नाचें कि हम परियों जैसी प्रतीत हों।

देवाअल्य-दशहार (दीपावली-दशहरा) :

(14) *लाला लगयो बालबावस, राम नावस पअर्य लगय*
बक्त बावय, नाद लायय, अर्द रातन स्वन्दरो।
चानि दर्शनुक छुम में हावस, राम नावस पअर्य लगय
ही मुरारी बोज़ ज़अरी, म्योन बोज़खना कनव
छुख च़ टोठान बक्ति बावस राम नावस पअर्य लगय।

(बाल बाव —बालभाव अर्थात् बाल स्वरूप; अर्द रातन—अर्द्ध रात्रि में; हावस —हविस ; टोठान — प्यार करने लगते हो।)

अर्थ — तेरे बाल स्वरूप पर मैं बलिहारी जाऊं, राम-नाम पर मैं न्योछावर हो जाऊं। हे सुन्दर, मैं भक्ति-भाव से आधी रात को पुकारूंगी। मुझको तुम्हारे दर्शन की अभिलाषा है। राम-नाम पर मैं न्योछावर हो जाऊं। हे मुरारी, तुम मेरी आर्त-पुकार अपने कानों से सुन लो। तुम भक्ति-भाव से भक्ति करने पर भक्त को चाहने लगते हो। मैं राम-नाम पर न्योछावर हो जाऊं।

महाकाली जन्म :

(15) *श्री महाकाली बोज़तम ज़अरी लगहय पअर्य पअरिये ॥*
कास म्य वन्य मोह अन्दकारी ॥० लगहय ०॥
च़तुर बोज़ रूप चोन हा निराकअरी ॥० लगहाय ०॥
कल माल नअल्य छय बअर्य बरिये, मोख मुच़अरविथ
छख शूबिदअरी ॥० लगहय ०॥
नावन चअनी बवसर तअरी, पाद कमलन अस्य लगहोय
पअर्य पअरिये ॥०

(कलमाल—कपाल माला, कपाल में से 'पा' लुप्त हुआ है।[1] ; नअल्य पहने।)

श्री महाकाली मेरी विनती सुनो, मैं तुम पर न्योछावर जाऊं। तुम मेरा मोह-अन्धकार अब दूर करो। (टेक) तुम्हारा चतुर्भुज रूप है, तुम निराकार हो। (टेक) भर-भर के तुमने मुंडमाला पहनी है, मुख खोलकर तुम शोभायमान हो रही हो। तुम्हारे नाम ने ही हमको भवसागर पार करा दिया। मैं तुम्हारे चरण-कमलों पर न्योछावर हो जाऊं।

काव पुनिम (माघ पूर्णिमा) :

(16) *कावा गछतो दख्यन किनये, तोरय अन तो बोट्अ दछिगुरुन।*
च़ेति ब्यख बअति ब्यमअ यडा बरिथ।
बरस तल कुस छु बोद्व ब्रोर, बोद्वय ब्रारयो क्याबा गछियो ?
सिर्यस च चन्द्रमस छुय नमस्कार।

(गछ —गच्छ, जाओ; दखयून—दक्षिण; बोट्अ —लद्दाखी; दछिगुरुन—द्राक्षों का गुच्छा ; च़ —तू ; ब—मैं ; यडा— पेट; ब्रोर — विडाल, बिल्ली।)

---

1. वितस्ता (कश्मीरी भा० विशेषांक), सम्पा० डा० रमेशकुमार शर्मा, पृष्ठ 50।

कागा, तुम दक्षिण की ओर जाना वहां से बोट-अंगूरों का गुच्छा लाना। तुम तथा मैं भी भर पेट खा लेंगे। द्वार पर कौन है ? बुद्ध- बिल्ला, हे बुद्ध बिल्ला, तुमको क्या चाहिये ? सूर्य और चन्द्रमा को नमस्कार।

(17) *काव बट काओ, ख्यचरे कावो, काव तू कअविन्य सूत्य ह्यथ*
गंगबलअ श्राना करिथ, गुरटे म्यच्चे ट्योका करिथ
वलबा काओ साने नवे लरे, कना दरे बारे बता ख्य।

'कौवे, बट्ट — कौवों', खिचड़ी कौवे, हे, कौवे (अपनी) कविनी को साथ लेकर गंगबल में स्नान करके और वहां की पीली मिट्टी से टीका करके आओ। कौवे हमारे नए मकान पर आ जाओ जिससे उसकी नींव पक्की हो जाय और 'वारे भात' खाओ।

(बट — भट्ट अर्थात् हिन्दू; ख्यचर — खिचड़ी; ह्यथ — लेकर; श्रान — स्नान; मूयच — मृत्तिका — मिट्टी; ट्योक — टीका; नवे लरे — नया मकान; कना — नींव; दरे — दृढ़; वारे बता — पीतल या मिट्टी के छोटे कुल्हड़ नुमा पात्रों में पक्षियों के खाने के लिये रखा गया भात।)

शिवरात्रि (बच्चे गाते हैं) :

(18) *हेरथ मअज्य आयि, असि बरअ च़ायि*
अख त अख खोदाया, ज़अ ति ज़िन गेड़राह
त्रिशक्ल डूना, च़ोर कंजुला
पांच गई पांडव, शे त शे रेशअ
शत ज़ाल सतम्, अठ हुर्य आठम
नव चित्रनवम, दह दशहारा,
काह गाडअ काह, वागअरय बाह
हेरच़अ त्रुवाह, क्राल चोदाह,
डून्य मावस, सोज़िन ओकदोह
वाह बलि वाह। वाह बलि वाह।

(च़ायि[1] —प्रवेश किया; ज़िन—ईधन लकड़ी; गेडर—गट्ठा; कंजुला— बड़ी ओखली; हुर्य आठम—शिवरात्रि पूर्व की अष्टमी; चित—चैत्र; गाड— मछली;

1. संस्कृत 'अच गतौ' से बना है। वितस्ता (क० भा० विशेषांक) सं० डा० रमेशकुमार शर्मा, पृष्ठ 32

काह—ग्यारह अर्थात् एकादशी; क्राल—कुम्हार; डून्य—अखरोट ।)

हेरथ—माता आई और हमारे द्वार में प्रविष्ट हो गई । एक, तो खुदा है, दो, लकड़ी के गट्ठर, तीन, त्रिमुखी अखरोट, चार, कंजुला के लिए है । पांच, पांच पाण्डव भाई हो गए । छः, छः, ऋषि हो गए । सात, ज्वाला-सप्तमी । आठ, हूर्यय अष्टमी । नौ, चैत्र-नवमी । दस, दशहरा । ग्यारह, 'मछली एकादशी ' । बारह, 'वागूअरय द्वादूशी' तेरह, 'शिव-तेरस'; चौदह, 'क्राल चौदस' । अखरोट अमावस्या । सोज़िन ओकदोह (प्रतिपदा)। वाह बलि वाह, वाह बलि वाह ।

(19) *अमी दय सूरमती सन्यअसी*
चूंरि दिल ति म्योन वोदहसी नियुव ।
ज़टि छस गंग त हटि शाहमारो,
ड्यकह छुस शूबान चन्द्रम दार
अथअ छस पोशकी त अमृत खअसी
चूरि दिल ति म्योन वोदहसी नियुव ।

(सूर—राख—भस्म; वोदहसी—उदासी; हटि—गला; शाहमार—सर्प (अजगर): डूयकह — माथा ।)

इसी भस्म मले हुए संन्यासी ने, इसी उदासी ने, मेरा दिल चुरा लिया । सिर में जटा है तथा गले में शाहमार है । चन्द्रयुक्त माथा शोभायमान हो रहा है । हाथ में पुष्प तथा अमृत से भरा हुआ 'खोस' (प्याला) है । मेरा दिल 'उदासी' ने चुरा लिया ।

वितस्ता का गीत :

(20) *वार-वार पकवन्य व्यथी लो लो, लगये पअर्य पअर्य व्यथी लो लो ।*
च़े किछ छय शान वेथी लो लो, लगये पअरी व्यथी लो लो ।

धीरे-धीरे चलने वाली वितस्ता मैं तुम्हारे ऊपर न्योछावर हो जाऊं । तुम्हारी कैसी शान है । हे वितस्ता, मैं तुम्हारे ऊपर न्योछावर हो जाऊं ।

भीष्म-अष्टमी का गीत :

(21) *बीशम प्यतामहन बान-शय्याय प्यठ*
अर्ज़नदीवस मंजनय त्रेश ।
अर्ज़नदीवन वान सूत्य दिच़नस
बीशमराज़न च़ेहनयि त्रेश . . .

(त्रेश —तुषा अर्थात् प्यास तथा पानी; च़ेइ — पिया।)

भीष्म पितामह ने बाण-शैया पर अर्जुनदेव से (प्यास बुझाने को) पानी मांगा। अर्जुनदेव ने वाण से पानी दिया और भीष्मराज ने पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई।

रमज़ान के गीत :

(22) *व्यसिये जानिजान वन्दी जानानस, महिरमज़ानस वन्दहव जान।*
पअर्य पअर्य लगहव हकि सुबहानस, युस अज़ रहमत बअगरावान।
दोह दोह रोज़दर बाईमानस् रोज़ छु जनतच वथ हावान।
ईद आयि शअद्रय छय मुसलमानस, महिरमज़ानस वन्दहव जान।

(व्यस — सखी; हक — सत्य; सुभान — पवित्र (अल्लाह , खुदा) रहमत — दया (अरबी) ; रोजः — व्रत।)

है, सखी, तू अपने आपको अपने प्रीतम पर न्योछावर कर दे। माहे रमज़ान पर मैं न्योछावर हो जाऊं। मैं उस हक़ेसुबहान (खुदा) पर भी न्योछावर हो जाऊं जो आज यहां रहमत बांटने आया है। ईमानदार आदमी रोज़-रोज़ रोज़े रखता है, रोज़ा स्वर्ग का रास्ता दिखाता है। ईद आने पर मुसलमानों को खुशी होती है (यह उनके लिए खुशी का त्यौहार है) मैं माहेरमज़ान पर न्योछावर हो जाऊं।

नोट : ईद अरबी के शब्द 'ऊद' से बना है, जिसका अर्थ है प्रतिवर्ष आने वाला, वार्षिक। वैसे ईद का अर्थ है हर्ष, खुशी। ईद के दिन बच्चों- छोटों को ज़ो इनाम दिया जाता है, उसे भी 'ईदी' कहते हैं, वास्तव में पढ़ाने वाले मुल्ला को ईद के समय जो इनाम दिया जाता था उसे ईदी कहते थे।)

(23) *येति हय ओस रमज़ान, रेत्रय हय द्राव लो लो।*
अस्य हय रूदिय प्रारान रेत्य हय द्राव लो लो।
ब रटहस दामानय, रेत्य हय द्राव लो लो।
वन्दहस ज़ुव त जान, रेत्य हय द्राव लो लो।
यति हय द्राव रमज़ान, रेत्य हय द्राव लो लो।

यहां रमज़ान था, एक महीने के बाद समाप्त हुआ। हम इस रमज़ान की प्रतीक्षा में ही थे। आज एक महीने के बाद समाप्त हुआ। मैं इस रमज़ान महीने का आंचल पकड़ लूं, आज एक महीने बाद समाप्त हुआ। मैं अपना तन-मन इस रमज़ान पर न्योछावर कर दूँ। यह एक महीने के बाद समाप्त हुआ।

अर्फा का गीत :

(24) *छुम फिराक बाव कस, यारह दोद मारनस,*
अरफ छुम आलमस, ईद छम आशकस
यार रोस ईद कस, यार दोद मारनस
मज़ छुमा नाबदस, कुनुन छुम बाज़रस
हारि रोस मोल कस, यार दोद मारनस ।

(रोस — रहित, के बिना; नाबद — मिश्री — मिठाई; हारि — कोड़ियाँ — पैसे धन, दोद — दर्द ।)

मुझको अपने प्रेमी की खोज है परन्तु उसके दर्द ने जो मुझको मारा है, वह मैं किससे कहूं । आज सारे आलम में 'अर्फा ' है, मेरे आशिक की ईद है — पर प्रीतम के बिना कैसी ईद ? मुझको तो प्रीतम के दर्द ने मारा । मिश्री मीठी होती है और बाज़ार में विकती भी है परन्तु बिना पैसों के कुछ नहीं मिलता है । मुझे प्रीतम के दर्द ने मारा ।

ईद के गीत :

(25) *ईद आयि रसह-रसह ईदकाह वसअवय, ईदकाह वसअवय ।*
ईद आयि सोरान कोनय छव नेरान, कोनय छव नेरान

(रसरस — धीरे-धीरे ; सोरान — समाप्त होने को — शीतल होने को ।)

ईद धीरे-धीरे आ गई है, चलो ईदगाह उतरें, ईदगाह उतरें । ईद समाप्त होने को आई, तुम लोग निकल क्यों नहीं रही हो, क्यों नहीं निकल रही हो ।

(26) *वलय रोफ हय करवय, वलय रोफ हय करवय,*
मुकुदुम सअबुन तरवय, दसगीर सअबुन तरवय । (टेक)
हज़रतबल तरवय । वलय रोफ हय करवय ।

आओ रोफ नाच नाचें, मख़दूम साहिब के यहां जायें, दस्तगीर के यहां जायें, हज़रतबल जायें । आओ रोफ नाच नाचें ।

(27) *ईद आयि लो लो, ईद आयि लो लो ।*
समीतव विगन्यव रोव हय करवय ईद आयि लो लो ।
संगरमालन छाये लो लो, छाये लो लो ।
सोमसिन दिस ज़ांपानस मोक्तिव जालर, मोक्तिव जालर
ओरह यलि यियम त ब्रोंठअ हय नेरस, ब्रोंठअ हय नेरस
सूत्य ह्यथ छोज़अ त दाये लो लो, दाये लो लो ।

(संगरमाल — श्रृंग मालाएं ; जांपान — पालकी ; मोक्तिव ज़ालर — मुक्ता की झालर ;ब्रोंठ-पहले-आगे)

ईद आई है, ईद आई है। परियो आओ एकत्रित होकर रुफ (रोफ) नाचें। ईद आई है। श्रृंग मालाओं की छाया में सोने की पालकी में मुक्ताओं की झालरें लगी हैं। मुक्ताओं की झालरें लगीं हैं। जब मेरा प्रिय आयेगा, मैं उसका स्वागत करने निकलूंगी, वह दास-दासियों को साथ लेकर आयेगा। आओ परियो एकत्रित होकर रुफ (रोव, रोफ) नाच नांचें।

(28) *छ्य ईद आमच़ अज, मुबारक तय*

वस्तय वेसी आस्तय आस्तय . . . (रोफ में बार-बार दुहराया जाता है।)

आज ईद आई है तुम लोगों को बधाई हो, हे सखी तुम धीरे-धीरे नीचे उतर आओ।

(29) *च़ गछ्तो गाफिलो बेदार, बनी दीदार हज़रतबल,*
सखर कर अज़ दिलोजान लार, बनी दीवार हज़रतबल
छू क्रूठ अशकुन यि.ज्यूठ मंजिल, च़ रोज़म वन्य बसिथ दरदिल
रटह क्याज़िवन्य यिम गोफ त गार, बनी दीदार हज़रतबल।

(बेदार—जाग जाना—होशियार होना; — दीदार— दर्शन; — सखर— तैयारी; क्रूठ — कठिन बनी — बन सकेगा, हो सकेगा)

हे गाफ़िल तू जाग जा, तुझे हज़रत-बल में दर्शन होंगे, तू आज जी-जान से (एकाग्र होकर) तैयारी कर ले, तुझे आज हज़रतवल में दर्शन होंगे। यह इश्क (खुदा से) की मंजिल बड़ी कठिन है, तुम मेरे दिल में बसे रहो। मैं अब क्यों इन गुफाओं तथा गारों में बैठूंगा। मैं तो हज़रतबल में दीदार करूंगा।

नबीशाह जीलानी के विषय में (उनके उर्स पर गाते हैं) :

(30) *नूरुक परतव प्यव आसमअनी, असि बूज़ शाह जीलअनी आव*
कलिमय महमूद गोख दपअनी, शेखन त वलियन इकरार आव।
तामत ओसुख च़ रुहअनी, नोहस तूफ़ान मोकलेयि नाव।
बादशाह सअरी मोहताज च़अनी, दरगाह चअनी छि खाक ड्डुवअनी
शूबविन्य जाय कि बगदाद चअनी। असि बूज शाह जीअलानी आव।

इस गीत में 'नबीशाह जीलानी' के नूर (प्रकाश)के विषय में लिखा है कि किस प्रकार उनके दैवी प्रकाश से यह पृथ्वी प्रज्ज्वलित हुई। उनके आने से सारा

जगत् प्रकाशमान हो गया। मेहमूद स्वयं उनको न्यौता देने गए तथा सभी शेखों और वलियों ने स्वीकार किया। तुम रूहानी थे, नूह की नौका तूफान से मुक्त हो गई। सारे बादशाह तुम्हारे मोहताज हैं, तुम्हारी दरगाह में झाड़ू लगाते हैं। तुम्हारी शोभायुक्त जगह है बगदाद। हमने सुना है शाह जीलानी आ गये।

(31) *यन्द्रो मो कर गमाज़े, खान माल्यो न्यमाज़े।*
शेख पाकिन रुत वाज़े, खान माल्यो न्यमाजे॥
साव सअब छुम पाकवाज़े खान माल्यो न्यमाज़े।
पोश छकसय व ताज़े खानमाल्यो न्यमाज़े॥
दसगीर सअबुस छुय नाज़ें खान माल्यो न्यमाज़े।
द्ययव यियम अथवाज़े, खान माल्यो न्यमाज़े॥

(यन्द्र—चर्खा, यंत्र से बना है[1] खानमोल लाडला—इकलौता बेटा; गमाज़[2] — समझ में न आने वाली बात; रुत — ऋतु-शुभ अच्छा; द्ययव — शायद; वाज़ — कोई-कोई कतिपय[3]; यियम — शायद आयेगा।)

हे चर्खे व्यर्थ (घूं घूं की) आवाज़ मत कर। मेरा लाड़ला नमाज़ अदा कर रहा है। पाक शेख अच्छी वाज़खानी कर रहा है। स'अब भी पवित्र वाज़खानी कर रहा है। लाड़ला नमाज़ अदा कर रहा है उस पर ताज़े फूल चढ़ाओ। नमाज़ी लाड़ले पर दस्तगीर साहब को (भी) नाज़ है, किसी-किसी (कोई-कोई) का दस्तगीर साहब हाथ पकड़ते हैं, शायद मेरा लाड़ला भी उनमें आ जाएगा।

विभिन्न जातियों (पेशों) तथा श्रम-परिहरण के गीत
(1 से 30 तक)

बांड जशन (भांडों के) गीत :

(1). *नम्बरदार कोमाह छु गोमुत तैयार, छु ज़न नसल शैतान बद रोज़गार*
बनेमित तिमय मीरसअनी तमाम, युहन्दुय खोय छु पुरज़हरेलाल
यिहिन्दी शेव सअत्रयन ग़छ़न सीनअ चाक।

---

1. संस्कृत के इस शब्द से चर्खा और 'जन्दरा' अर्थात् ताला दोनों बने हैं।
2. उर्दू-हिन्दी शब्द कोश, उ० प्र० हिन्दी संस्थान, पृष्ठ 181 (यह अरबी का शब्द है)
3. वही, पृष्ठ 433।

नज़र छि यिहिन्ज़िय सरासर फतूर, करान रोब किसानस प्यठ बकोब ।

अदावत करान तस प्यठन बेशुमार, करान पालसी तसप्यठन हरकिनार ।

नम्बरदार-कौम तैयार हो गई है, यह शैतानों की जैसी कौम है । किसी को रोज़गार तक उपलब्ध नहीं होने देते । ये तमाम हमारे मीर बन बैठे हैं । इनके साथ सम्पर्क तो विषैला है । इनको शोषण करने की जो लत पड़ गई है, इससे दूसरों के कलेजे विदीर्ण हो जाते हैं । इनकी दृष्टि पूर्णरूपेण फितूर से भरी रहती है । हर समय किसान पर रौब झाड़ते रहते हैं, उससे बहुत अधिक ईर्ष्या करते हैं । किसान वर्ग का शोषण करने के लिए तथा उससे प्रतिशोध लेने के लिए नित्य नए हथकण्डे अपनाते रहते हैं ।

(2) *करान गिरया ज़मीन आसमान*
प्रज़ीडन्डव करी वअरान, करान कर कानिस छिय अहसान,
प्रज़ीडन्डव करी वअरान ।
प्रज़ीडन्ड, सेकरटरी, सरपंच अनान लूट लूटय बनावान गंज
करान मज़लूमियस नुकसान, प्रज़ीडन्डव करी वअरान ।

अर्थ — प्रेसीडेण्टों के राज्य में सभी बर्बाद हो गए । यह करते तो अत्याचार हैं (मारते हैं) परन्तु इनका कहना यह है कि हम तुम लोगों पर अहसान करते हैं । अपने अत्याचार से आकाश-पाताल को हिलाकर रख देते हैं । प्रेसीडेन्ट, सेक्रेटरी तथा सरपंच तीनों मिल कर, लूट-लूट कर, लाते हैं तथा अपने कोष भरते हैं । ये शोषितों का और नुकसान करते हैं । इन 'प्रेसीडन्डों ' ने बर्बाद कर दिया ।

(3) *नन्दराम ओस ज़मीदार, हूरिथ धार त सूरस न लार*
वांगुजवारिच चजिस न गांगल, सन्तोष ब्यालि बवि
आनन्दुक फल ।

(द्रयार—धन; ज़मीदार —किसान, जमीनदार; वांगुजवारिच — बिना किराये के रहना; गांगल — झंझट ; बवि — उत्पन्न होता है ।)

नन्दराम था तो ज़मीदार परन्तु जुए में अपना सारा धन हार गया । बिना किराये के किसी के मकान में रहता है, वह समय-समय पर मकान खाली करने को कहता है, यह झंझट उसके जीवन में लगा ही रहा । सन्तोष के बीज से आनन्द का ही फल उगता है ।

(3अ) *गोडनिच कोलय छय रुनि माशूक*
दोयिम कोलय छय तोति केंछाह
त्रेयिम कोलय छय तालि मकज़ाह ।

पहली पत्नी तो अपने पति की प्रेयसी होती है। दूसरी पत्नी फिर भी कुछ होती है। तीसरी पत्नी तो हर समय सिर पर तनी कुल्हाड़ी के समान होती है।

लडी शाह के गीत :

'लड़ी शाह' (गायक) का गाना प्रायः व्यंग्य-प्रधान होता है। यह चंग पर द्रुत लय में गाता है। 'लड़ीशाह' का मुख्य उद्देश्य समसामयिक सामाजिक कुरीतियों आदि का चित्रण होता है। लड़ी शाह हाथों में लोहे के बहुत से छल्ले डालकर, एक छोटे डण्डे से उन्हें ताल में बजाता हुआ भी गाता है।

(4) *त्रुम-त्रुम- त्रुम हब्बकदलस*
मलिकबाई लारान फारियादस,
मलिको दब दि दस्तारस, पांच सास गबि खच़्रि पांचालस।
मालिको दब दि दस्तारस।

('लड़ी शाह' की तुकबन्दियों का अर्थ करना कठिन होता है क्योंकि तुक और लय के लिए कहीं-कहीं पूरी की पूरी पंक्ति निरर्थक भर दी जाती है।)

हब्बाकदल पर त्रुम-त्रुम-त्रुम शब्दों की ध्वनि गूंजने लगी। मलिकबाई (सम्बोधन) फरियाद के लिए चल पड़ी, चूंकि वह अपने पति मलिक के विरुद्ध शिकायत करने चल पड़ी है इसलिए मलिक ने अपनी पगड़ी धरती पर पटक दी। पांच हज़ार बकरियां पांचाल पर्वत पर चढ़ गई।

(5) *पोम्पुरच बुजि ओस काचुर मस, दितुहोस चरस त गय बेहोश।*
काच़्रि सूअत्य असिस नेतनावान। नेतखव मनकिन मुसलवसान।
कोर जर्मन जंग मरदान।

(बुजि—बुढ़िया; काचुर—लाल बाल; मुसल—खाल)

पाम्पोर की बुढ़िया के लाल बाल थे। चरस देकर उसको बेहोश कर दिया। कैंची से उसके सारे बाल उतार दिए। पर उसके बाल, खाल के साथ ही उतार लिए। जिन्होंने जर्मन जंग लड़ी वे मर्दाने थे।

चूड़ी बेचने वालों (मनिहारों) के गीत :

(6) *मसवलन किथ दूर ह्यथ आमुत छुस बाज़रिये*
केंह वोज़िली, केंह नीली, केंह गुलाबी केंह अनअरिये।
शूबरअविव दूरकऩ हुसन त लोलस छ़ोह दियिव।

जल यियिव कें छाह नियिव, कें छाह दियिव, सौदा हेयिव ।
शूबवन्य ज़विल्य त अविल्य मसतस अन्दरी ज़ोतविन्य ।
तुहिन्दे लोलय अनिमित छिम, असनक्यन द्‌यारन कनन्यी
जल यियिव ज़न बाग बबर्यन, नाग नेन्दर हिश प्येव
जल यियिव कें छाह नियव कें छाह दियिव, सौदा हेयिव ।

(दूर—बुन्दे ;— जल—जल्दी ।)

लम्बे केशों वाली सुन्दरियों के लिए मैं बुन्दे लेकर बाज़ार में आया हूँ। कुछ लाल हैं, कुछ नीले हैं, कुछ गुलाबी हैं, कुछ अनार के रंग के हैं । ये झुमके पहनकर अपने सौन्दर्य और प्रेम में वृद्धि करो तथा इन झुमकों की शोभा बढ़ा दो । शीघ्र आओ, कुछ ले जाओ, कुछ दे जाओ, सौदा ले लो । ये झुमके सुन्दर पतले तथा कोमल हैं, ये बालों के भीतर से चमकेंगे । तुम लोगों के प्रेम के कारण ही मैं इन्हें लाया हूँ, ये हंसने के मूल्य में मिलते हैं अर्थात् इन झुमकों के बदले में केवल मुस्कराट मांगता हूँ, पैसे नहीं । तुम शीघ्र आ जाओ, जैसे बागों में बबरे-पेड़ उग आते हैं । तुम लोग तो सर्प की निद्रा में सो गए । शीघ्र आओ कुछ ले जाओ, कुछ दे जाओ, सौदा ले जाओ ।

नाविकों के गीत :

(7) *या इल्लाह, या इल्लाह, कालियार बालियार,*
या पीर, दस्तगीर , खआलिको मआलिको ।

(खलिक—ईश्वर सृष्टिकर्त्ता, अरबी का शब्द है ।)

(यह श्रम-परिहरण के लिए एक विशेष लय में समवेत स्वर में गाये जाने वाले बोल हैं, लगभग उसी प्रकार जैसे ब्रज आदि हिन्दी-भाषी प्रदेशों में श्रमिक कहते हैं:— हेइसा-हेइसा, जोर लगाओ हेईसा, हां मेरे भइया हेइसा — आदि । नाव के चप्पू चलाते समय यह गीत गाते हैं) या अल्लाह,या अल्लाह, कालियार, बालियार । या पीर, दस्तगीर । हे ख़ालिक-मालिक ।

नोट :— अला शब्द का अर्थ होशियार, खबरदार होता है (उर्दू-हिन्दी शब्दकोश, पृष्ठ 24), हो सकता है इल्लाह, अलाह से बना हो । वैसे अरबी ला का अर्थ है 'नहीं ' जैसे 'ला इलाह इल अल्लाह' । लगता यही है कि यहां 'या अल्लाह' कहने का तात्पर्य है ।

(8) *नन्दपुर हंज़न लाव लोग रोपयन, काहन रोपयन कनिहय डेम्बहाक नाव ।*
स्वर्म साज़ छांडान, जुमकन ग्राय मारान,

बूज़ि तव क्या खोचर ग़ाव द्यारन
टअंक्य रोपय, नेरान हलम छि दारान
तोशान, ग्रज़ान, राश हय आव।
सौदा निनाविज़ अफसूस लारान
बूज़ितव द्यारन क्या खोचर ग़ाव
पोंसस नून गछ़ान टूलन तारान
खोदाया वान्यन छ़िनतन ट्र्येन्डिखाव
नून दिथ अड़हन प्राघ़ि सूत्य लारान
बूज़ितव द्यारन क्या खोचर ग़ाव।

(स्वर्म —सुरमा; ग्राय मारान—मटकाना; खोचर—खोट—बुराई; टअक्य —टका; हलम दारान—झोली फैलाना; ट्र्येण्डिखाव—पोरे गल जाना-कोढ़ ।)

नन्दपुर के हांजियों के रुपयों में फफूंद लग गई, ग्यारह रुपयों में 'डेम्बहाक' (एक प्रकार के पत्तों की सब्ज़ी जिसको उगाने में न श्रम की आवश्यकता है न ही कोई विशेष खर्चा आता है) की एक नाव बेची। अब तो ये लोग सुरमा तथा श्रृंगार की वस्तुएं ढूंढ़ने लगे हैं। सुनो, धन में अब कितना खोट आ गया है। रुपये-पैसों के लिए, झोली फैलाकर निकलते हैं और प्रसन्न होकर गरज कर चलते हैं, ऐसा लगता है जैसे इनको राज्य मिल गया हो। जब सौदा लेने जाते हैं तो रुपये खर्च करके भी कुछ नहीं आता है, मात्र अफसोस ही होता है। सुनो, रुपयों में अब कितना खोटापन आ गया है। अब तो एक पैसे का नमक खर्च होता है। अंडे लेने जाते हैं तो उसमें भी ठगविद्या चलाते हैं। हे खुदा, इन पंसारियों की उंगलियां गल जाएं। इतना थोड़ा नमक दिया कि होठों के कोरों से लग कर रह गया। सुनो, धन में कितना खोट आ गया है।

हांजियों के गीत :

(9) *हंज़न कोर काल-कालय गाडि बूज़ आब तलय।*
हंज़ म्यान्या डूंगलय , ज़ालस ति वन्य दिमय।
शाह यलि ब्यूठ तखतस नेन्दर प्येयी तस बदबखतस
बेदारस वन्य दिमय, हंज़न कोर काल-कलय।

(काल कालय—पूर्व रात्रि ; वन्य दिमय -खोजो ।)

हांजी ने एक रात पहले ही मछली पकड़ने की सोची, पर दुर्भाग्य से मछली ने पानी के अन्दर से ही सुन लिया। हाय ! मेरे हांजी, डोंगे के नीचे तथा जाल में भी

ठीक से देख लो कहीं मछली है तो नहीं। शाह जब सिंहासन पर बैठा तो उस अभागे को बैठते ही नींद आ गई। जो जागृत हैं उनको ढूंढो। हांजी ने एक रात पहले मछली पकड़ने की सोची, मछली ने पानी के नीचे सुन लिया।

साग-सब्जी बेचने वाले हांजियों का गीत :

(10) *ताज़ह-ताज़ह मयति अनिमय डल हे,*
हा वलो हा वलो, हा वलो हे,
फूलह वांगन त पारिम अल हे, हा वलो हा वलो हा वलो

(मयति—पानी की, अरबी शब्द है[1]; फूलह वांगन—छोटे—छोटे बैंगन; अल-लौकी[2]; पारिम अल—कद्दू।)

पानी में उगने वाली ताज़ी-ताज़ी सब्जियां मैं डल झील से लाया हूँ। तुम आ जाओ तुम आ जाओ, मैं फूल बैंगन और कद्दू लाया हूँ। तुम आ जाओ, तुम आ जाओ, तुम आ जाओ।

बचनगमा :

(11) *खोश यिवुन वनुन्दबोन बेसियै म्योन दिलबर आवनै,*
थर-थर छम मर ब शायद शर म्य जिगरुक द्रावनै,
वादह कुरुमुत याद छुयना सादह कोताह ज़ानिथस
आदने अद कौन थावयोत म्योन दिल तमृबलावनै।

(खोश यिवुन — प्रियदर्शी; नन्दबोन-सुन्दर; तमृबलावन — आकर्षित, लुब्ध करना, बहलाना।)

हे सखी, अच्छा लगने वाला मेरा सुन्दर प्रियतम आया नहीं। मैं थर-थर कांप रही हूँ, मैं शायद मर जाऊंगी परन्तु मेरी जो (प्रियतम से मिलने की) इच्छा थी वह पूर्ण नहीं हुई। तुमने मुझसे जो वादा किया था वह तुमको याद नहीं है क्या ? तुमने मुझको कितना सीधा समझ लिया है। काश, आरम्भ में ही तुमने मेरे दिल को आकर्षित न किया होता।

(12) *नुन्दबानि माशोक म्य छु च्योंजुय तमाह*
अख दमा अज़ वलो सोनये।

---

1. उर्दू-हिन्दी शब्द कोश, पृष्ठ 489।
2. अलाबु (अथर्व०वे० 8, 10, 29) से बना है।

(तमा —चाह, इच्छा ।)

हे ! मेरे सुन्दर माशूक़, मुझे तुम्हारी चाह है, तुम दम भर के लिए मेरे यहां आ जाओ ।

धोबियों का गीत :

(13) *मली-मली साबन छली दोबि बाइये छलि धोबि बाइये*
रीशम डुपट म्योन छलि दोबि बाइये छलि दोबि बाइये
मायिदार डुपट म्योन छलि दोबि बाइये छलि दोबि बाइये ।

(माया —कलफ ; छलि —प्रक्षालन से बना है ।)

हे धोबिन, तुम साबुन मल-मल के कपड़े धो लो । मेरा रेशम का दुपट्टा, मेरा मायेदार दुपट्टा धो लो, धो लो ।

नेन्दअ बअत :

(14) *बोय ओय बेरे बेरे, थअज कादस करी वल्य वल्य*
बायि लगयो दुसकिस रादस, थअज कादस करी वल्य वल्य
मोल ओये बेरे बेरे, थअज कादस करी वल्य वल्य ।

(दुस-धुस्सा — पश्मीने की चादर ; राद — लम्बाई ; थअज — धान के पौधों के गट्ठे ।)

तुम्हारा भाई मुड़ेर-मुड़ेर होकर आया है, तुम शीघ्रता से धान की पौध के गट्ठे बनाओ । हे मेरे भाई, तेरी पश्मीने की चादर की लम्बाई पर मैं बलिहारी जाऊं, तुम जल्दी-जल्दी गट्ठे बना लो ; तुम्हारे पिता मुड़ेर-मुड़ेर होकर आये हैं, तुम शीघ्रता से गट्ठे बना लो ।

(15) *मे दअज ववमय करु लो लो, नबीसअबुन तरु लो लो ।*
मे दअज ववमय करु लो लो, ऋषि सअबुन तरु लो लो ।
मे दअज ववमय करु लो लो, दसगीर सअबुन तरु लो लो ।
मे दअज ववमय करु लो लो, शेखबाब सअबुन तरु लो लो ।

(ववमय — रोपाई ; तरु — जाओ, पार ।)

मैंने रोपाई का कार्य कर लिया है अब तुम प्रसन्न होकर नबी साहब के यहां चलो। मैंने रोपाई का कार्य कर लिया है, अब प्रसन्न होकर तुम ऋषि साहिब के यहां चलो । मैंने रोपाई का कार्य कर लिया है अब तुम प्रसन्न होकर दस्तगीर साहिब के

यहां चलो। मैंने रोपाई का कार्य कर लिया है अब तुम शेखबाबा साहिब के यहां प्रसन्न होकर चलो।

(16) *छस अलमदारस सूत्य लड़ाये, द्राव डाड़सर आब लड़ाये*
गरिक्यव दिचिहस तार, वोतखव तहसीलदार।
इस्समीरस च़ाय थथराये द्राव डाडसर आब लड़ाये।

(अलमदार — ध्वजवाहक, नेता अर्थात् मुखिया ; वोतुख — आ गया; इस्समीर — इस्स नामक मुखिया।)

'डाडसर' के किसानों का अपने अलमदार के साथ पानी को लेकर झगड़ा हो रहा है। घर वालों ने तार दे दिया और तहसीलदार को बुलवाया। इस्समीर थर-थर कांपने लगा। डाडसर के किसान पानी पर झगड़ा करने निकले।

(17) *वन द्र्यदरी बोलखना, मकाई चूरस ति शोलखना।*
वन द्र्यदरी बोलखना, दानि लोननस ति शोलखना।
वन द्र्यदरी बोलखना, पिंगअ लोननस ति शोलखना।

(वन द्र्यदरी — पक्षी विशेष ; शोलह — चमकना, कान्ति।)

वनद्र्यदरी बोलोगी नहीं ? मक्का को गोड़कर उसकी वृद्धि की प्रसन्नता (चमक) को प्रकट नहीं करोगी ? वनद्यदरी बोलोगी नहीं, धान की लुनाई की प्रसन्नता प्रकट नहीं करोगी ? पिंग (अनाज विशेष) की लुनाई की प्रसन्नता (चमक) प्रकट नहीं करोगी ?

(18) *रंग छा मलिये लो लो, शहरच कोलये हेमथय मलिये लो लो।*
रंग छा मलिये लो लो, च्रारिच कोलये हेमथय मलिये लो लो।
रंग छा मलिये लो लो, हअरवनच कोलये हेमथय मलिये लो लो।

(कोल-नदी, संस्कृत के कुल्य से बना है।)

रंग क्या मोल मिलता है, शहर की नदी, मैं तुमको खरीदूंगा। रंग क्या मोल मिलता है, च्रार (स्थान) की नदी ? मैं तुमको खरीदूंगा। रंग क्या मिलता है, हारवन की नदी? मैं तुमको खरीदूंगा।

(19) *परियि वनवान पोशबहारस, परियि वनवान बक्त बेदारस,*
परियि छारान लोलगुलज़ारस, परियि प्रारान नूर नूरानस
परियि आम' च़ छि बेहनि सब्ज़ारस, परियि द्रामच़ बुछनि दीदारस।

परियां ऐसे स्थान पर 'वनवुन'गीत गा रही हैं, जहां चारों ओर पुष्प निकले हैं, ऐसा लगता है बसन्त है। परियां भक्त (जो जागृत है) के लिए वनवुन गीत गा रही हैं।

परियां उस प्रियतम को खोज रही हैं, परियां उस नूर (प्रकाश) की प्रतीक्षा में हैं। परियां हरियाली में बैठने आई हैं। परियां दर्शन के लिए निकली हैं। वह 'दीदार' के लिए निकली हैं।

नेन्दह त लोननुक ग्युन (निलाई तथा कटाई के गीत) :

(20) *यितो म्यानि यावन चूरो लो लो, करयो गूर त गूरे लो लो*
हा पानह क्या करुथ कारोबार, नाहक गोख
मुल्कस मन्ज़ बज़गार, रावरोवुथ टोठ संसार,
वातान छू मलकिन मौत ज़ोरवार,
सुछुनै मानान ज़ार त पार,
सु छु करान नारह खोतह नार गुफ्तार
मोत करान बख्तस लुरपार
सु छु करान यावनस ति सूरो लो लो,
यितो म्यानि यावन चूरो लो लो।

(पान — शरीर; टोठ — प्यारा ; बजगार — बदनाम ; गुफ्तार — बातें।)

मेरे यौवन को चुराने वाले तुम आ जाओ, मैं तुमको झुलाऊं। हाय, मेरे शरीर तुमने यह क्या कारोबार किया ? बिना मतलब के तुम देशभर में बदनाम हो गए तथा तुम इस प्यारे संसार को खो बैठे। मौत पास आ रही है, वह बहुत बलवान है। वह किसी की अनुनय-विनय नहीं सुनती है। उसकी अग्नि से अधिक प्रचण्ड वाणी है। मौत मनुष्य को मटियामेट करके रख देती है। वह यौवन को भी राख बनाकर रख देती है। मेरे यौवन के चोर तुम आ जाओ।

पोहल्य बअत (चरवाहों के गीत) :

(21) *वलो यारो च़ सअर जंगलुक ब करनावथ, च़ हावय क्या छि*
खुदावन्दी, च़ाति क्या याद थावक।
वुछक वसवुन आबशारय, त असमान खोतमुतुय गासय।
वु छक अकि खोतह अख थोद कुल। खुदायस अदह च़ याद पावक।

(गास — घास ; कुल — पेड़ ; थोद — ऊंचा ; खोतह — चढ़ना।)

हे मेरे दोस्त, आओ मैं तुम्हें जंगल का भ्रमण करा लाऊं, तुमको दिखाऊं कि भगवान् का चमत्कार कैसा होता है, तुम भी क्या याद रखोगे। मैं तुमको उतरते

झरने तथा ऊंचे-ऊंचे घास के पेड़ जो आकाश की तरफ बढ़ते चले जा रहे हैं दिखाऊंगा, तुम एक से एक ऊंचा पेड़ देख लोगे। इन सभी प्राकृतिक वस्तुओं को देखकर तुम उस खुदा को अपने आप याद करोगे।

(22) *हा म्यानि पाहल्यो वलो वलो, व्येशचावनि म्यानि वेथि वलो वलो, ज़ूलाह ज़ालय नावन चान्यन वलो वलो। हा म्यानि पाहल्यो वलो।*

हे मेरे चरवाहे आओ, आओ, मेरी वितस्ता में अपनी (भेड़-बकरियों) को पानी पिलाने आओ। तेरे शिकारों में, मैं दीप-मालाएं प्रज्जवलित कराऊंगी।

(23) *जंगलुक ज्युन हय गव थिर लो लो, फ़सार ह्यथगवथिर लो लो,*
निंगल नार ह्यथ गव थिर लो लो, जंगल ज्युन ह्यगवथिर लो लो।

जंगल की लकड़ियां बह गई। सफेदे के पेड़ों को लेकर बह गई। जलते हुए पेड़ बह गये, जंगल की लकड़ियां बह गई।

धान कूटते समय का गाना :

(24) *शुत फू शुत, गोवा जू रुत, बावस क्युत; शुत फ्शुत*
बायिस क्युत, शुतफू शुत।

शुतफू शुत (धान कूटते समय की ध्वनि) बाबा का भला हो, भाई का भला हो।

चर्ख़े के गीत :

(25) *गूं गूं मसेहकर हसह यन्द्रो, तोर्कह छानन*
गोरनखो हसह यन्द्रो, रंग कम्यू करुयो हसह यन्द्रो
डालि कम्यू सूज़खो हसह यन्द्रो।
गूं गूं गूं गूं
हा म्यानि यन्द्रो गूं मो कर।
वज़अदार यन्द्रो गूं मो कर
रंगदार यन्द्रो गूं मो कर
डोनिवि यन्द्रो गूं मो कर
अनन्तनअग्य यन्द्रो गूं मो कर।

(तोर्क छान — बच्चों के खिलौने बनाने वाला बढ़ई।)

हे चर्खे ! तू घूं घूं मत कर, तुमको तोर्कछान ने बनाया है। हे चर्खे ! तुमको किसने रंगा ? तुमको भेंट में किसने दिया, हे चर्खे ?

हाय मेरे चर्खे तू घूं घूं मत कर। वज़ाअदार चर्खे तू घूं घूं मत कर, तुम्हारा काम जो है तुम अपना वही काम करो। हे रंगदार चर्खे तू घूं घूं मत कर। अख़रोट की लकड़ी के चर्खे तू घूं घूं मत कर। अनन्तनाग के चर्खे तू घूं घूं मत कर।

ललनावुन (लोरी) :

(26) *छ़नथ रोनिमंज़लिस करय गूरअ गूर,*
शान्द दिमया शान्दगौंड मखमलच बूर
ललनावुन त्राविय स्वर्गच हूर
छ़नथ रोनिमंजलिस करय गूरअ गूर
थन यलि प्योहोम अडरातन, ज़ातुख ल्यूखनया बगवानन
जातकस वुछमया छ्य उमर पूर
छनथ रौनिमंजलिस करय गूर गूर।

(रौनि— घुंघरू; गुरअ गूर— झुलाना; शान्दगौंड— तकिया; ज़ातुख— जन्मपत्री।)

मैं तुमको घुंघरुओं से सजे हुए पालने में झुलाऊं। तुम्हारे सिरहाने ऐसा तकिया लगाऊंगी जिसमें ज़रबाफ का गिलाफ हो। स्वर्ग की परियां तुमको झुलाएंगीं। जब तुमने जन्म आधी रात को लिया तब भगवान ने स्वयं तुम्हारी जन्मपत्री बनाई। तुम्हारी जन्मपत्री मैंने दिखवाई, उसमें तुम दीर्घ-आयु हो। मैं तुमको घुंघरुओं से सजे हुए पालने में झुलाऊंगी।

(27) *हो हो करय अडकलयो, द्वद चतो दाम दाम गल्य गल्यो*
जसुदाय हिन्दे दूर फल्यो, रोछमखो खोनि के मंज़िलो।

(अडकोल — तुतला ; खोनि — गोद ;रछुन — पालना, रक्षा करना ; मंजुल — झूला।)

हे मेरे 'तोतले' तुम घूंट-घूंट करके दूध पी लो, हे जसुदा के कान के झुमके, मैं तुमको अपनी गोदी के झूले में पालूंगी।

लोरी :

(28) *निका हेमयो ब दाय, हेमयो ब दर बाय*
निका हेमयो ब दाय, हेमयो ब कौल बाय
निका हेमयो ब दाय, हेमयो ब मुनिश बाय
निका हेमयो ब दाय, हेमयो ब ज़ितिश बाय।

(दाय-धाय, निका शिशु का सम्बोधन ।)

हे ! निका मैं तुम्हारे लिए धाय रखूंगी वह 'आया' मैं 'दर' परिवार की रखूंगी। हे ! निका मैं तेरे लिए आया रखूंगी, वह आया मैं 'कौल' के परिवार की रखूंगी । हे, निका मैं तेरे लिए आया रखूंगी, वह आया मैं 'मुन्शियों' के परिवार की रखूंगी । हे ! निका मैं आया रखूंगी , वह मैं 'जितिश' परिवार की रखूंगी ।

(29) *गूरह गूरह करयो कनके दूरो कनके दूरो*
दिलि हैन्दि शाहज़ाद आख लोहूरो, आख लोहूरो ।

(शिशु को कान के झुमके के सम्बोधन से पुकारते हैं) हे मेरे कान के झुमके मैं तुमको झुलाऊं। दिल्ली के शाहज़ादे तू लाहौर से आया है ।

(30) *खोर छि चअन्य नोज़ुक बावो, कोंग पोश छी मंज़ करान बावो ।*

(खोर — पैर ।)

तुम्हारे पैर नाज़ुक हैं, केसर को देखकर जो भाव मन में आता है तुम्हारे इन कोमल पैरों को देखकर वही भाव मन में उभरते हैं ।

लोलग्यवुन-प्रेमगीत (1 से 22 तक)

रूप-वर्णन :

(1) *चमकान ओबरह तलह वुज़मल ज़न द्रायि*
आयि ग्रायि छ़ायि गथ करान ज़न आयि
डोठह फोल कनि रूद, नबह नारह मारान
गगरायि करान ज़न ज़ोल वाव ।
अनिगटि नेह गटि सुबहस-शामस आयि ।
ग्रायि छ़ायि गथ करान ज़न आयि ।

(ओबर—बादल फारसी अब्र, संस्कृत अभ्र; वुज़मल—विद्युतमाल; डोठ—ओले ।)

नायिका ऐसी प्रतीत होती है जैसे बादलों के नीचे बिजली चमकी हो । हिलती, डुलती, घूमती, लुक-छुप करती हुई जैसे आई । ओलों के बदले पानी के समान है । आकाश में अग्नि के समान चमकती है । आकाश में गरजना हो रही है, पवन थम गई है । अन्धेरा दूर हो गया है तथा प्रकाश फैला है । सबेरे-शाम हिलती-

डुलती-घूमती हुई सी आई।

(2) *बुम चानि सरंजि, तीर चान्य मछ़गान, सोन्दरमाली बलिये।*
खअली छख करान, तीर नारह कत्याह मारहख बलिये।
यारन सूज़िय गिलास डअली अखा ख्यतय बलिये।
दिलकिस पंजरस रछत हारि, सोन्दरमाली बलिये।

(बुम—भौंहे; सरंजि—कमान (प्रत्यंचा); बलिये—हे बाला सुन्दरी; रछित—पालूंगा —रक्षा करूंगा।)

तुम्हारी भौंहे कमान हैं तथा कटाक्ष तीर हैं। ओ सुन्दरी ! (अपना तर्कस) खाली करती हो ; इन तीरों की अग्नि से कितनों को मारोगी ? यार ने तुमको भेंट में गिलासों (चेरी) की डलिया भेज दीं उसमें से एक तो खा लो। दिल के पिंजरे में ओ, मैना, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा, हे सुन्दरी !

सम्भोग श्रृंगार

(3) *यार सुन्द रोशुन सार छुम थावान, यारस लरिपान सावान छस।*
कामदीव लालअ छुम जामअ मुच़रावान, पोशन माल करनावान छस।
लालअ संज़ि कथि छस वारअ कन थावान, दोन वुठन सअत्य मिलनावान छस।

(लरिपान — बग़ल में ; जामा — कपड़े (फा०) मुच़रावान—खोलना, मुक्त— करना।)

यार का रूठना कोई अर्थ रखता है, मैं अपने यार की बग़ल में सोती हूँ। कामदेव लाला (प्रेमी) की बात को मैं (ध्यान से) कान लगा कर सुनती हूँ, दो होठों से मिलाती हूँ।

विरह गीत (मान) :

(4) *गोम जंगलन मन्ज़ मे त्राविथ, मननअविथ कुस अने।*
राज़अ जनकन्य कूर आसिथ सूर कोरुनम दिलबरन।
ती मे ओसुम कर्मलअनिस, मनअविथ कुस अने।
कूंछ द्रुया ओस में बलवीर, छुम मे तकसीर पाननिय।
त्रेशहचि म्य गोम त्रेशत्राविथ, मनन अविथ कुस अने।
यति ब नीनस साअल्य हीतय, तति ब छनिनस त्राविथ

नेन्दरि हचि गोम नेन्दर पअविथ, मनन अविथ कुस अने।
पूर पश्चिम दखिन वोतरय, वुछ में अनिगाटि सअरि सय।
ज़अम दोपुनम गोछ़ मे हावुन, ओस रावुन कुस मनुष्य।
दिच़ मे तस शक्लाह बनअविथ, मनन अविथ कुस अने।
शकल हविथ छिन्यहअस ब त्राविथ, मनन अविथ कुस अने।

(त्राविथ — छोड़कर; मनन अविथ — मनाकर; कूर-कन्या (कुमारी जैसे पंजाबी में कौर); कर्मलनिस — कर्मलेखा ; बोतरय-उत्तर, उ का व हुआ।)

मुझको जंगलों में छोड़ कर चला गया, अब मना कर कौन लायेगा। मैं राजा जनक की पुत्री थी, मेरे दिलबर ने मुझको राख कर दिया। यही मेरे भाग्य में लिखा था, अब मना कर कौन लायेगा। (टेक) बलवीर (लक्ष्मण) मेरा छोटा देवर था, दोष मेरा ही है। मुझ प्यासी को पानी पिलाकर चला गया, अब मनाकर कौन लायेगा ? यहाँ से मुझ को दावत के बहाने ले गया वहां मुझको छोड़कर चला गया। मुझ उनींदी को नींद में सुलाकर चला गया, अब मनाकर कौन लायेगा। पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर चारों दिशाओं में मैंने अन्धेरे में उसको ढूंढा। मेरी ननद ने मुझसे दिखाने को कहा कि रावण कैसा (कौन सा) मनुष्य था। मैंने उसको रावण की शक्ल बना कर दे दी। जब मैंने रावण की तस्वीर बना दी उन्होंने मुझको छोड़ दिया। अब मना कर कौन लायेगा। (टेक)

(5) *च़ कम्यू सोनि म्यानि ब्रम दिथ न्यून खो*
च़े क्योज़ि गयियो म्यान्य दअय।
च़ख त्राव दअय मलाल, वोन्द छुय नायिवान ?
च़े क्योज़ि गयियो म्यान्य दय।
मदनवारो बदन ज़ोलथम, म्य हा गोछ आदन ़च्य।
बादाम चश्मे खून छस हारान, च़े क्योज़ि गयियो म्यान्य दय।
शरावन शीन ज़न बो गलान आयस बागन फोजिस नो हिय।
चोनुय बाग तो ़च्य वलो छावान,
चे क्योज़ि गायियो म्यान्य दअय।

(श्रावणशीन — सावन की बरफ ; ब्रम — भ्रम ; मलाल [1]— पश्चाताप; मदन—प्रेमी।)

---

1. अरबी शब्द। हिन्दी उर्दू कोश, पृष्ठ 479।

तुमको मेरी किस सौत ने भ्रम में डाल दिया, तुमको मुझसे क्यों घृणा हो गई। तुम चिढ़ना, घृणा, रूठना (वैमनस्य) छोड़ दो, क्या तुम्हारा मन नहीं करता है ? तुमको मुझसे क्यों घृणा हो गई? हे प्रियतम। तुमने मेरा बदन (शरीर) जलाया, मुझे शुरू से ही तुम्हारी चाह है। मैं बादाम जैसी आंखों से खून बहा रही हूँ, तुमको मुझसे क्यों घृणा हो गई। जिस प्रकार सावन के महीने में बर्फ पिघलती है उसी प्रकार मैं गल रही हूँ ; मैं बागों में 'ही' के समान नहीं खिली (मुझको सुख नहीं प्राप्त हुआ) तुम्हारा ही बाग है तुम ही इसका उपभोग करो। तुमको मुझसे क्यों घृणा हो गई ?

(6) *गरिद्रायेस मायि तहंज़ी, रूदुम कथ सना शाये।*
जायि जायि वन्य व दिमसय, कहंज़ि ग्राये गोम।
लोलह मतिस लोल करसय, करसय लोलमत लाय।
कथ ज़ाजिनस आमतावय, वुज़नाविथ गोम।
पान आलवस यलि डेशम, करसय लोलमत लाय।
कति डेंशन नालसिय रटहन, केंहति करहना वाय।
मायि वजिनस, क्रायि तजिनस, छायि होल होल गोम।
शीरखोर ब गीर करनस
चश्मिबद तस दूर गछितन, हरितनस म्योन आय
जायि जायि ब वन्य दिमसय कहंज़ि ग्रायि गोम।
अ'शि मतिसअय अशिवान्ये छलसिय बो पाय
दशि गंजिमस असतानन पश्य नाविथ गोम।

(आमताव — जले का निशान; मायि — माया; क्रायि — कढ़ाई; तजिनस — तलना; होल — टेढ़ा — ओट में)

मैं घर से उसके प्रेमवश निकली, वह किस ओट में बैठ गया। मैं स्थान-स्थान पर उसकी तलाश करूं, वह किसके प्रेम में फंस गया। मैं उस पागल प्रेमी से प्रेम करूंगी , मैं उससे उन्मत्त प्रेम करूंगी। क्यों मुझे जला दिया, जलने का दाग छोड़ गया, मुझे जगाकर (नींद छीन कर) चला गया। जब वह मुझको दिखेगा तो मैं उसको अपना शरीर अर्पण कर दूंगी। वह मुझको मिल जाय तो मैं उसको गले से लगा लूंगी, मैं बिल्कुल देर नहीं करूंगी। मुझको अपनी माया (प्रेम) में लपेट लिया, फिर चला गया मुझको ऐसा कष्ट दे गया मानो मुझको गर्म तेल में, कढ़ाई में तला जा रहा हो। खुद ऐसे चला गया जिससे किसी को दिखे ही नहीं। मुझ दुधमुंही को परेशान कर गया। उसका चश्मेबद दूर हो जाय तथा उसको मेरी आयु लग जाय। स्थान-स्थान

पर मैं तलाशूं, जाने किसके प्रेम में फंस गया। उस ऐश में मस्त (मौज-मस्ती करने वाले) के पैर, मैं अपने अश्रुओं सो धो डालूं। मैंने आसतानों में मन्नतें मांगी हैं। मुझको पछताता हुआ छोड़ गया।

(7) *शाहज़ादो पयिम्रो चअनी आवय, गोशन पोश वथुरावयो।*
वनवुन हूरन अथि वननावय, गोशन पोश वथुरावयो।
होल छुम गोमुत लोल बरनावय, सेतार साज़ वायनावयो।
लोल छुम आमुत लोल वथुरावय, गोशन पोश वथुरावयो।
क्यमख़ाब, ज़रबाफ फरश कनि त्रावय, वत निय मोक्त छकरावयो।

हे शाहज़ादे ! मुझे तुम्हारे आने की भनक पड़ गई है, मैं तुम्हारे बैठने के स्थान पर फूल बिछा दूंगी। मैं परियों से वनवुन गीत गवाऊंगी। तुम्हारे बैठने के स्थान पर फूल बिछा दूंगी। मैं तुमको खूब प्यार करूंगी क्योंकि तुम्हारे प्यार के कारण मेरे हृदय में टीस उठती है। तुम्हारे आने पर सितार तथा अन्य साज़ बजवाऊंगी। मुझको तुम्हारा बहुत प्यार आया है, तुम्हारे आने पर मैं वही प्यार तुम्हारे कदमों में बिछा दूंगी। तुम्हारे बैठने के स्थान पर मैं फूल बिछाऊंगी। फर्श पर मैं ज़रबाफ़ और कीमख़ाब बिछा दूंगी तथा रास्ते में मोती बिखेर दूंगी।

(8) *पछ नो कराज़ि न तहिदन्य कोलन, लोलन मोयस त आस न आर*
पज़ि पछि तहंज़िह गजिस होलन, मोलन मीलिम न बाज़ार
खोय खोय छस गअर तोलान, लोलन मोयस त आसने आर।

(पछ —विश्वास; कोल— कौल —वचन; पोज़—सत्य ; गजिस—गल गई; आर—दया।)

वह जो वचन (आश्वासन) देता है उस पर विश्वास मत करना, मैं उसके प्रेम में मर (गल) गई परन्तु उसको तरस भी नहीं आया। उसके सच्चे आश्वासन से दिल भर जाता है, पर सच्चे आश्वासन बाज़ार में मोल नहीं मिलते हैं। मैं भर-भर सिंघाड़े तोल रही हूँ। उसके प्रेम में मर गई पर उसको तरस भी नहीं आया।

(9) *रातस ओसुम लवअ ज़न लअरिथ, सुबहस कथह त्राविथगोम*
बबरे चमन अशि सगनअविथ, अशिमोत क्वय पशनअविथ गोम
स्वाल करीतोस ही गछ़ि छअविथ, रातस ओसम लव जन लअरिथ।

(अशि—आंसू; ही—पुष्प विशेष; स्वाल—सवाल; पशनअविथ— पछतावा, पश्चाताप।)

रात भर (ओस की) बूंद के समान मुझसे लिपटा था, सबेरे मुझको क्यों

छोड़कर चला गया। बबरे पेड़ों से भरी बाटिका को मैंने अश्रुओं से सींचा, वह मनमौजी मुझको क्यों पछतावे में डालकर चला गया। तुम उससे यह प्रश्न करो। कह दो कि इस 'ही' रूपी प्रेयसी का उपभोग करके चला जाय। रात भर (ओस की) बूंद के समान मुझसे लिपटा था, सबेरे मुझको छोड़कर क्यों चला गया।

(10) *ब छस ब्रामिच़ यारस पतय, सु कस पतय गोम*

गरक दरिया करनस ब तय, म्य दामह दरिया चोम

अश्कुन दरिया मारान गत, सु कस पतय गोम

दन्द तस मोक्त, लाल तस कथय, देवानकरिथ गोम

नम छिन रंगमित आदम रत्य, सु कस पतय गोम।

(अश्क—आंसू (फा०); रत्य—सं० रक्त —खून।)

मैं यार के पीछे निकली, जाने वह किसके पीछे चला गया। मुझको नदी में डुबो दिया, मैं एक सांस में नदी को पी गई। आंसूओं की नदी उमड़ रही है। वह न जाने किसके पीछे चला गया। उसके दांत-मुक्ता जैसे हैं। बातें करता है तो मानो लाल बिखेरता है, परन्तु मुझको दीवाना करके चला गया। उसने अपने नाखून मानों मानव-रक्त से रंग लिए हैं। वह न जाने किसके पीछे चला गया।

(11) *अदह कर यियम तय बरसय मलर्यव मलर्यव*

चेयि नसअ मस चाविनसा मस। कमि सोनि हअवनस तन ?

कअलय हय वोहुवनम प्यठ संगरन, हलि छुस

खंजर त तीर हय लअयनम पोशि पंजरन।

(हलि —कमर; बरसय—भरना—भ का ब बना है।)

हे प्रिय ! तुम कब आओगे मैं तुम्हारे लिए मटके भर-भर के मदिरा रखूंगी। स्वयं भी पीना मुझको भी पिलाना। तुमको मेरी किस सौत ने अपना तन दिखा दिया ? कल मुझको श्रृंगमालाओं पर गालियां दीं। कमर में खंजर था, फूलों के पिंजरे पर तीर चला दिये।

(12) *हा म्यानि मदनो च़ कत्यू ब्यूठुक, रावुरथम स्वख सोन्दरो।*

वीरिहुन्द नारह छोख कवो द्युतुथम, दोख प्योम ज़ालुन म्य बाले

वन्दयो जुव जान हावतम मोख, रावुरथम सोख सोन्दरो।

(वीरि —एक पेड़ जिसकी लकड़ी देर तक जलती है; स्वख—सुख; मोख—मुख।)

हाय ! मेरे मदन तुम कहां रह गए। तुमने मेरे सुख को समाप्त कर दिया है।

सुन्दर ! तुमने वीरि पेड़ों के समान मुझे अधजला क्यों कर दिया । मुझ बाला को दुःख सहन करना पड़ रहा है । मैं तुम पर अपना तन-मन न्योछावर कर दूँ, तुम मुझको अपना मुख दिखा दो । हे, सुन्दर, तुमने मेरा सुख छीन लिया ।

(13) *स्यद अछिन मूह तीर छुम लायान, बुम्ब सरंजि कमान अन्दरह*
रुख च़ोन ज़ेबा सोखन शक्करी, दोदुर वीरि-होन्द कबोज़रै
हा ज़रह क्यहो यि नार अशकुन, पादन वन्दहय सर ।

(कबो—कैसे; ज़रे—सहन करूं; मूह—मोह; मोहित करने वाला; पाद—पैर ।)

अपने भौंहों-रूपी कमान से तू सीधे मेरी आंखों में मोह-तीर मार रहा है । तेरा चेहरा (मुख) मिष्ठ-भाषण के उपयुक्त है । मैं वीरि की लकड़ी में घुन लगने के समान क्षीण होना कब तक सहन करूं (क्योंकि तुम मुझसे मीठी बातें नहीं कहते हो) ? हाय ! तुम्हीं बताओ कि यह इश्क की आग मैं कैसे सहन करूं ? मैं तुम्हारे पैरों पर अपना सिर न्योछावर कर दूँ ।

(14) *दूरेर चोन ना ज़रो, सूर करुथमो दिलबरो ।*
दूरेर चानि हा मरो, सूर करुथमो दिलबरो ।
दअन बागा छु फोलुमुत, बापारय्व छु वलुमुत
दअन छा किन अम्बरो, सूर करुथमो दिलबरो ।
ज़ाफराना छु फलुमुत, ठेकदारव छु वलुमुत
ज़ाफरान छा किनअ अम्बरो, दूरेर चोन ना ज़रो
गिलास बागा छु फ्लुमुत ठेकदारव छु वलुमुत
गिलास छा किन अम्बरो सूर कोरुथम दिलबरो ।

(दअन—संस्कृत दाड़िम से बना है, अनार; सूर—राख; फोलमुत—फुल्लित ।)

मैं तुम्हारी दूरी सहन नहीं कर सकती, हे दिलबर ! तुमने मुझको राख कर दिया । तुम्हारी दूरी के कारण मैं मर जाऊंगी, तुमने मुझको राख कर दिया । अनार के बगीचे खिले हैं, उनको व्यापारियों ने घेरा है । अनारों के ऊंचे ढेर लगे हैं । हे दिलबर ! तुमने मुझको राख कर दिया है । केसर खिला है, ठेकेदारों ने घेर लिया है । इतनी अधिक फसल है कि ढेरों के ढेर लगे हैं, मैं तुम्हारी दूरी सहन नहीं कर सकती । चेरी (गिलासों) के बगीचे खिले हैं, ठेकेदारों ने उनको घेर रखा है, गिलास हैं या गिलासों के ढेर हैं, हे दिलबर ! तुमने मुझको राख कर दिया ।

(15) *यार दय लतिये छांडोन कत्ये, बो मत्ये तहन्दे गरे द्रायसो*
त्राविथ च़ोलमय म्य मन्ज़ वत्ये, वुछ त व्यसी तस यार सुन्द खोय
यार न ड्येशन पान मारअ ब तय । यार दय लतिये छ़ांडोन कत्ये ।

हे सखी ! मैं यार को कहां ढूंढू, मैं घर से उसी के लिए निकली, मुझको बीच रास्ते में छोड़कर चला गया, देखो सखी उसके संगी-साथी कैसे हैं ? अगर मैं यार को नहीं देखूंगी तो मैं अपने आप को मार डालूंगी। हे सखी मैं अपने यार को कहां ढूंढू।

(16) *दिल हय न्यूनम-ड्यूठवन नाये, गिलज़ाला लअगिथ च़ोलुमय हाये*
परज़्यव कमव तान्य ड्युत हस दाये, शेछ म्यानी वनीतोस
योर फेरि नाये, दिल हय न्यूनम ड्यूठवन नाये।

मेरा दिल ले गया फिर दिखा ही नहीं, जाल में मुझको फंसा कर चला गया। किन्हीं परायों ने उसको यह परामर्श दिया। कोई मेरा संदेशा उससे कह दो कि यहां आ जा। मेरा दिल ले गया फिर दिखा नहीं।

(17) *हाव दीदार मति माशोक त बरबुक वांलिज्य गयमो*
गरि बाल ड्रायेस चानि शोकतह, ललवुन थोवथम ज़लवुन नार
लकचार मूरि नार ती कवो हेयकहा, बरवुक गयमो वा' लिज मे।
(वा'लिज—कलेजा ; गरि—घर से ; लकचार—बचपन।)

हाय मेरे बावले माशूक मुझे अपना दीदार दिखा, मेरा दिल (कलेजा) भर आया है। मैं बालिका घर से तेरी चाह में निकली, तुमने प्रेम रूपी ज्वाला को धधकता ही छोड़ा। छोटी कोमल टेहनी में जैसे आग लगाते हैं उसी प्रकार तुमने मेरे बाल्यकाल में ही मुझको आग लगा दी। मैं कैसे सहन कर सकती हूँ। मेरा कलेजा भर गया है, मुझको दीदार दिखा दे।

(18) *कावह रंग कोरुथम, हावू दीदारो, यारो लोल हो आम चोनुय।*
छांडान लूसिस गामह शहरो, डीशिम सअरी कांह ना चेय ह्यू
तनि टोफ लअयिथम गुलि बोम्बुरो, लालो लोल हो आम चानुय।
(टोफ —डंक मारना; बोम्बुरो—हे भौंरे।)

तुमने मेरा रंग (विरह के कारण) कौओं जैसा कर दिया। मुझको तुम दर्शन दो, मेरे यार मुझे तुम पर प्यार आया है। मैं तुमको गांवों-शहरों में ढूंढते-ढूंढते समाप्त हो चुकी हूं, सभी मुझको दिखे परन्तु तुम जैसा कोई नहीं है। मेरा तन जो पुष्प के समान है, उसे तुमने हे भौंरे, डंक मारा है, लाल, मुझको तुम्हारा प्यार आया है।

(19) *नालह दिवान लूसस वनन, तस ति कनन गवना वेसिये*
ग्राय करनाम अमी यावनन, तनो पेवान छस वस्य वसीय
चूरि च़ोलुम वन्य कति अनन, दम दम कल चान्य गनन

अमि गमूह आयेस वसीय, हनि हनि माज़ छुम छनान
लज फुलय गुलि योसमन, द्रायि आशिक कमि हावसय
मुशिक हेवान छि गुलशनन, तस तिं कनन गवना वोसिये
(लुसस—सूख गई; कल—याद।)

मैं पुकार करती हुई वनों में घूमते-घूमते सूख गई (समाप्त हो गई) परन्तु हे सखी ! उसके कानों तक इसकी भनक भी नहीं पड़ी । जबसे यौवन मुझे तड़पाने लगा है मैं गिर-गिर पड़ती हूँ । वह मुझसे छुपकर चला गया, अब मैं उसको कहां से लाऊं ? हर क्षण मुझको तुम्हारी याद सताती है । इस ग़म के मारे अब मैं गिर-गिर पड़ती हूँ । थोड़ा-थोड़ा करके मेरा मांस घटता जा रहा है । जैसमिन (यासमीन) फूल भर भराके खिल उठे (सारे) आशिक बड़े उत्साह से निकले हैं तथा फूलों को सूंघ रहे हैं, परन्तु उसके कानों में क्या भनक भी नहीं पड़ी ?

(20) *अश्कनारन ज़अजनम तन त लो लो, बालयारस खबराह वनत लो लो।*
अशकुन माने कुस ज़ाने ? या मंसूर नतअ पोंपुर ज़ाने।
नाज़ आशक पनुनुय माज़ ख्यवान, त्रेशकनि अशकुन खून च्यवान
ज़िन्दअ पानस छि गिन्दन त लो लो, बालया रस खबराह वनत लो लो
ग्राव म्येअनी हावख ना तस, यस दिलबरस पत गव दिल म्योन बस
ज़ार म्यअनी बोज़खना ज़न त लो लो।
बालयारस खबराह वनत लो लो। नाल वलुनम शाहमारन त लो लो।
बालयारस खबराह वनत लो लो।
(पोंपुर—पतंगा; गिन्दुन—खेलना।)

आंसुओं की आग ने मेरा तन जला दिया, मेरे बालसखा को जरा खबर कर दो। इश्क के अर्थ को कौन जानता है ? मंसूर जानता है या पतंगा जानता है। आशिक अपना ही मांस खाता है, अपनी प्यास अपने ही खून से बुझाता है। और अपने इश्क पर नाज़ करता है। जीवित शरीर से ही खेलता है, मेरे बाल-सखा को जरा खबर कर दो। मेरी शिकायत, मेरे शिकवे मेरे उस दिलबर से कह दो, जिसके पीछे मेरा दिल चला गया है। तुम मेरी विनय सुन लो। मेरे बाल-सखा से मेरी खबर कह दो। मेरे चारों और अजगर (शाहमार) लिपट गया। मेरे बाल-सखा से मेरी खबर कह दो।

विरह :

(21) *मे ज़ालान अशकुन नार तमिस नय आर वेसिये ।*
ब लोलन करस बेमार तमिस नय आर वेसिये ।
मे मतलब ओस दीदार तमिस नय आर वेसिये ।

मैं इश्क की आग में जल रही हूँ, उसको तरस नहीं आता है । इस प्रेम ने मुझको बीमार बना दिया, उसको तरस नहीं आता है । मेरा मतलब केवल दीदार से था, उसको तरस नहीं आता ।

(22) *मति शीन ज़न गलयो, बलयो चानि यिनय*
छ़ाजेम सअरी जंगलयो, यिताह यूरी ग्रवह बलोयो ।
यिख न तय सूर हो मलयो बलयो बलयो चानि यिनय ।
(बलयो—बीमारी के बाद ठीक हो जाना, बल प्राप्त करना ।)

बावले, मैं बर्फ की तरह तुम्हारे विरह में गल जाऊंगी । तुम्हारे आने से ही मेरा रोग ठीक हो सकता है । मैंने सभी जंगल छान मारे, तुम यहां आ जाओ शायद मैं स्वस्थ हो जाऊं । अगर तुम नहीं आए तो मैं राख मलूंगी, तुम्हारे आने पर ही मेरा रोग ठीक हो सकता है ।

विविध गीत : (1 से 27 तक)

ऐतिहासिक-सामाजिक सन्दर्भ के गीत

(1) *वछ़िस ग्यड त दान्दस लोव, इन्साफ रोव त वनव कस*
इनसाफ रोव त वनव कस ?
कहन गरन कुनी तअव, हेम्मत रअव त वनव कस ।
(जब न्याय नहीं रहता है तो सब काम उल्टे किये जाते हैं ।)

बछड़े के लिए घास का बड़ा-सा गट्ठर तथा बैल के लिए छोटी गड्डी, जब न्याय ही नहीं रहा तो किससे कहें । ग्यारह घरों के लिए एक ही तवा है, हिम्मत ही खो गई है , तो कहें किससे ।

(2) *शहनशाह सुलतान मोहमद गज़नवी ओस करान पानअ मुलकन पैरवी*
फकीर लअगिथ ओस फेरान वानअ-वानअ,
म्यानि अहद मा आसि कांह नअतवान ।

जायि अकिस ओस करान दायखअर,
अदल तसनदी सअती आसख चश्म सअर।
जायि अकिस वुछुन हंअज़ा अख अलील।
मुहिमअ सअत्यन ओस गोमुत सु ज़लील।
मुहिमअ सअत्यन ओस सु त्रावान आह त वोश।
मुहिमअ सअत्यन तस न रूदमुत कांह होश।
योरह ज़ालाह ओस लायान गअतिसान,
तोरह ज़ालस ओसुस न केंह खसान।
दोपुस शाहन खार मे सअत्यन, बोज़, थाव।
लाय ज़ालाह याद अल्लाह दिलस रठ।
लोयुन ज़ाल तोरअ खोतुस गाडअ हथ,
पातशाहस ब्रोंठकनि आव सु ह्यथ।
गाडअ हतस बदल ध्युतनस मोहरअ ध्यार।
लाल, नगीन माल मोक्तब, वूटबार।
रात बरिथ पातशाहन ध्युतनस नाद,
च़ छुख म्योनुय शरीख नामुराद।
मुहिमअ कासुन हेकमत परवरिदिगार,
ताफ शेहल्युक सर्द-गर्म नवबहार।

(वूंट—ऊंट ; ध्यार—धन ; बोज़ —सुनो ; थाव—रुको ; नाद—आवाज देना, पुकारना ।)

शाहनशाह सुलतान मुहम्मद गज़नवी स्वयं मुल्कों की पैरवी करता था। फकीर बनकर वह दुकान-दुकान घूमता था कि मेरे राज्य में कोई अपाहिज तो नहीं है। एक स्थान पर वह दुआएं मांग रहा था। उसके न्याय से उसकी चश्में नम थीं। एक स्थान पर उसने एक हांजी को रुग्ण अवस्था में पाया। निर्धनता के कारण वह ज़लील हो रहा था। निर्धनता के कारण उसको होश ही नहीं रहा था। इधर से बहाव के पास जाल फेंकता था परन्तु उधर से उस जाल में कुछ भी नहीं फंसता था। शाह ने उससे कहा सुनो, रुको मेरे सामने खींचो। अल्लाह को दिल में याद करके जाल फेंको। उसने जाल फेंका और उधर से सौ मछलियां जाल में आ गई। बादशाह के सामने वह लेकर आया। सौ मछलियों के बदले में मोहरें, धन, लाल, नगीने, मोती, ऊंट के भार के बराबर दिये। भरी रात्रि में बादशाह ने उसको बुलवाया। तुम मेरे शरीक हो गए,

हे अभागे । परवरदिगार ने उपचार (हिकमत) करके उसकी निर्धनता को समाप्त किया । दुःखों के कारण तपन थी, वह समाप्त होकर, ठंडक पड़ गई और उसके जीवन में नई बहार आ गई ।

(3) *नअल्य हय आयि तल्य पातअलिये*
कोतुय गोम यावुन बअलिये । वुछत महाराजन कम कअरय कार ;
नलि दोब रावेन ज़मीनस तल ।
नलकन पोन्य हय आव जअरिये । (टिक) कोतुय गोम यावुन ।
वुछत महाराजन कम कअरय कार, बट शुरेन गंडिन सिक्ख दसतार ।
नअल्य छिख कोट, तय खोरन छिख बूठ,
वेथिमन्ज त्रोवुन अगनवोट ।
कोदअ कानि द्रायि नलि आबस, ओखुनसअब आयोस बदजवाबस
तीबज़ हरकअन्य गोडंनस नार, जानकी हयूथ करुख पीरम्पार ।

(बट—भट्ट, हिन्दू ; शुर— बच्चा; गंडिन— बांधी; दस्तार — पगड़ी; खोर—पैर; बूठ—बूट; वेथि—वितस्ता, झेलम; अगन बोट—मोटरबोट; पीरम्पार—पीर पंजाल के पार ।)

नल पाताल के नीचे से आ गया । मेरा यौवन कहां चला गया । देखो महाराज ने क्या-क्या काम किये —नलों को ज़मीन के नीचे दबवा दिया । नलों में पानी की खूब तेज़ धार आ गई । देखो महाराजा ने क्या-क्या काम किये, कश्मीरी पंडितों के बच्चों को सिक्खों की पगड़ी पहना दी । पहिने कोट हैं तथा पैरों में बूट हैं । वितस्ता में अगन-बोट चलवा दिये । नल के पानी में मीन-मेख निकाली गई, आखोन साहब बदजवाब के लिए आ गए, जब हर-काने ने यह सुना तो उसके आग लग गई, जानकी (नाथ) के साथ उनको देश-निकाला दे दिया गया ।

कश्मीरी पंडितानियों की प्राचीन वेशभूषा फिरन है, विवाह में भी 'फिरन' ही प्रयोग में लायी जाती थी । कश्मीर के समाज-सुधारक कश्यप-बन्धु जी ने फिरन-बहिष्कार आन्दोलन चलाया । 'फिरन' को त्यागकर महिलाओं ने साड़ी पहनना आरम्भ किया ।

साड़ी के पक्ष में :

(4) *गर नोवुय यज़मनबाये, ज़ाम दान जंगि दूत्य हयूथं आयी*
तमि चाव सूत्य हयोत सखरुनये छुय मुबारक दोतिमहारिन्ये ।

बेनि छस प्रारान दारि प्यठ, बोय वात्यी दूत्य हयूथ ।
दूत्य डीशिथ ओश त्रावुनये, छुय मुबारक दोतिमहारिन्ये ।
(जंगि —शकुन के लिये, सखरुन—तैयारी करना ; दोति—धोती-साड़ी ।)

साड़ी के विरोध में :

(5) *कश्यप जी यलि च़ाव म्योन गरअ*
म्य दोपमस दूत्य ना बो करय, वादअ करथ साद लागय छिटि नअरयवार ।
हतबी त्रअवितव दूत्य शिलवार, दोत्यव तुहुन्ज़व तुलय वअराग ।
दपान छस गछहा शीशरमनाग नोश छम खानअमअज कोरि लोकचार ।
हतबी त्राविव दूत्य शिलवार ।
(नरवार—फिरन की बाहों में ज़री की पट्टी (केवल सधवा) लगातीं हैं ।)

साड़ी के पक्ष वाले गीत का अर्थ :

घर की सफाई-पुताई जजमानबाई ने की । ननद नेग में देने के लिए साड़ी लाई । उसने बड़े चाव से साड़ी पहिनने की तैयारी की । 'धोती-दुल्हिन' बधाई हो । बहिन खिड़की पर प्रतीक्षा कर रही है कि भैया अभी साड़ी लेकर आयेगा । साड़ी देखकर आंसू (खुशी के) बहाने लगी । साड़ी दुल्हिन बधाई हो ।

साड़ी के विरोध वाले गीत का अर्थ :

कश्यप जी जब मेरे घर में घुसे, मैंने उनसे कहा कि मैं साड़ी नहीं पहनूंगी । मैं वादा करती हूँ कि मैं सादा छींट का 'नरीवार' लगाऊंगी । हाय री तुम लोग ये धोती (साड़ी) सलवार छोड़ दो । तुम लोगों की साड़ियों से मेरे मन में विराग-भाव उठा है। मैं कह रही हूँ कि मैं शेषनाग चली जाऊंगी, परन्तु मेरी बहू इकलौती है तथा बेटी की अभी आयु कम है । हां री साड़ी-सलवार छोड़ दो ।

(6) *गटअपछ ओस बेयि चन्द्रवारा, कुनत्रह हारा तअरीख ओस*
असुरव लूठकोर व्यच़ारनागस । टेलिफोन यलि गव जनकसिंगसय,
हैंगन म्यच लदिथ सुय द्राव
रिपोर्ट हयूथ गव सु पेश सरकारी, श्री निराकअरी जय-जयकार ।
(हैंगन म्यच लदिथ — सींगों पर मिट्टी लादकर ।)
कृष्णपक्ष और सोमवार था, तिथि उन्तीस आषाढ़ थी । असुरों ने विच़ारनाग में

लूट की। जब जनकसिंह के पास टेलिफोन गया तो अत्यधिक क्रोधित होकर वे निकले; वे सरकार के पास रिपोर्ट पेश करने गये। श्री निराकारी की जय-जयकार हो।

(7) *बारत बूमीहुन्द अवतार, नेहरुजियस जय जयकार*
बारत बनोवुन कुनुय मन्दर, अमनचमूर्ति तथ अन्दर
स्वयं मूर्ति तस्यसुन्द मूलादार।
नेहरुजियस जय जयकार।

भारत भूमि के अवतार, नेहरू जी की जय-जयकार। भारत को एक ही मन्दिर बना दिया जिसमें शान्ति की प्रतिमा है। वह मूर्ति (शान्ति) उनकी मूल आधार है। नेहरू जी की जय-जयकार।

चिन्तन-मनन सम्बन्धी —

(8) *च्यत ब्रह्म आकाश, नट, फट रूज़िथ*
सूहम बावस मंज़ फोलि प्रकाश।
ज्ञात अज्ञात रोज़ि नअ तस यस,
सूहम हमसू सअत्य यी गाश।
यीकान्त रूज़िथ मन ब्रह्म निश गारुन,
छारुन त मारुन अहंकार, जीवुत प्रावुन मरुन मशरावुन
ह्यस व्यस रावुन, अद बनि हमसू सूहमची ज़ान।

(रूजिथ —रहकर ; यीकान्त —एकान्त ; रावुन —खोना ; बाव —भाव।)

चित-ब्रह्म-आकाश, नट,फट रहकर सोहं भाव में प्रकाश खिलेगा। ज्ञात-अज्ञात उसको नहीं रहेगा, जिसको (जिसे)सोहं, अहमं सो से प्रकाश आयेगा। एकान्त (में) रहकर मन ब्रह्म के निकट करके अहंकार को खोजना तथा मारना, जीव (आत्मा) को प्राप्त करना, मृत्यु को भूलना। होशोहवास खोना, तब अहमंसो —सोहं का ज्ञान हो जायेगा।

(9) *गटि मंज गाश अनुन गव, नटि नटि सारुन पोन्य*
नेराश रूज़िथ, आश पाश नाश छारून,
स्वयं गई सूहम हमसू ची ज़ान
वैराग द्राति सअत्य राग गछि लोनुन, फलि फलि सोंवरुन हेलि अम्बार।

(गटि —अन्धकार; सारुन —ढोना; पोन्य —पानी; द्राति —दरांती; सोंवरुन —इकट्ठा करना, संभालना; हेलि—बालियों में से दाने निकालना।)

अन्धकार में से प्रकाश लाना है, घट-घट जल ढोकर लाना, निराश रहकर, आशा-पाश का नाश खोजना। स्वयं, सोहं —अहमं सो का ज्ञान हो गया। वैराग्य— दरांती से राग की लुनाई (काटना), दाना-दाना करके राशि एकत्रित करना।

ग्रामीण सन्तों के गीत, (उदाहरण)

(10) *गाहे सपदान त्राम, गाहे सपदान लोय*
बेकलन सूत्य ना थविज़ि न खोय।

कभी तांबा बन जाता है, कभी कांसा बन जाता है। जो बेअक्ल होते हैं उनसे तुम अपना सम्पर्क मत रखना। (मूर्खों-मूढ़ों से दूर रहना ही हितकर है, वे न जाने कब क्या कर बैठें, क्या रूप धारण कर लें।)

दहेज़ की कुप्रथा से सम्बंधित गीत

(11) *रअच़मालि आसिय ज़िचमाल व्यस, दोह अकि कथन क्या गई मस*
करनि लजि पानवान्य यिम गुपतार, देखादीखी ख्यव संसार।
ज़चमालि ह्यतुनय रच़मालि ताह, वन नोशि मालिनि ओननय क्याह
गोडअ छुय कोरुमुत गरीब कार। देखा दीखी। (टेक)
रच़मालि दोपनस वार थव कन, नोशि हन्दि मालिनि छुम
वातान, च़ोचि, नून, अतगत बेयि तोमुल खार। देखा दीखी॥
ज़िच़ माल गरकुन गई दोरान, होनि हन्द्य पअठ्य असअ वोरान।
नोशि कुल वोनुनय छख वुछान, मालनिच पख छख च़य रछान।
मालिन्यव चान्येव कोरुहोम सोत, सोज़ान क्या छिम ह्य्योत त दियोत।
कथअ कर्य कर्य हावान ज़अविज़ार। देखा दीखी ख्यव संसार।

(रअच —ऋत; ज़िच —चमक, झिलमिलाहट; मालिनि —पिता का घर-मोल — पिता; कार —कार्य, विवाहादि; दोपुन —कहा; पख —पक्ष।)

रच़माली ज़िचमाली की सखी थी, एक दिन दोनों बातों में मस्त हो गईं। आपस में बातचीत करने लगीं। देखा-देखी (होड़) संसार को खा गई। ज़िचमाली ने रच़मालि से उसके पेट का भेद पूछा, कहो बहू मायके से क्या लाई? पहले तो तुमने निर्धनों से सम्बन्ध जोड़े हैं। (टेक) रच़माली ने कहा —ध्यान से कान लगाकर सुनो, बहू के मायके से रोटियां, नमक, अतगत तथा एक खरवार चावल आता है। (टेक) ज़चमाली घर भागती-भागती गई, कुत्ते की तरह घुरघुरा रही थी। बहू से कहा, देख

रही है, मायके के पक्ष की तुम रक्षा करती हो (उनका पक्ष लेती हो) तुम्हारे मायके वालों ने मेरा सतुआ बना दिया, क्या भेजते हैं दान-दहेज में ? बातों से अपना कांइयांपन दिखाती है । देखा-देखी संसार को खा गई ।

(12) *कल्यकाक प्रिछान गरि त्रियि राय, कारवोत नज़दीक वनतम राय*
कूर गई बअड तय वुन्य छुनअ वार देखा दीखी ख्यव संसार (टिक)
त्रियि दोपनस ज्यव छम कलान, वनअ क्या अन्दरी छस गलान ।
महलस मन्ज़ नाथ सअबन कोर कार, हथ तोलअ स्वन, दुसअ सूट त वअज्य ।
सअन्य पअठ्य असिख कूर खानमअज,
बंकस थविहस सास बध्य ग्रार । देखा दीखी ख्यव संसार ।

(प्रिछान —पूछते —संस्कृत पृच्छ से बना है; त्रियि — स्त्री; कार—कार्य; वोत —आ गया है; ज्यव —जिह्वा —जीभ; कलान —बोल नहीं पाना ।)

कल्यकाक घर में अपनी पत्नी से राय लेते हैं । लड़की के ब्याह का कार्य निकट आ गया है, तुम मुझको राय दो । कन्या तो बड़ी हो गई परन्तु अभी ब्याह करने को तैयार नहीं है । देखा-देखी ने संसार को खा लिया (टिक) । त्रिया ने कहा मेरी जीभ लड़खड़ा रही है, मैं भीतर ही भीतर (चिन्ता के कारण) गल रही हूँ । मोहल्ले में नाथ साहब ने (ब्याह का) कार्य किया । सौ तोले सोना, धुस्सा (पश्मीने एकी दुहेरी चादर) सूट और अंगूठी दी । हमारी तरह उसकी भी इकलौती बेटी थी । बैंक में उसके लिए हज़ारों की संख्या में धन रखा । देखा-देखी इस संसार को खा गई ।

(13) *हशि वोन नोशि कुन ओश मय त्राव, कति छुय अतगत कांगर, खाव ।*
हावान छख मालिन्युक चिकचाव, हशिवोन नोशि कुन ओश मय त्राव ।
ज़ामअ वनुनस सुत कमिउक छुय
हाक म्योचिहन्द्रय पअठय चीरथय, तूरि गछ माल्युन, छख च़ गूर्य बाय,
हशि वोन नोशि कुन ओस मय त्राव ।
दफ़्तर प्यठ यलि बरथा आस, बूट हय्रथ चोकस मन्ज़ तोतुय-च़ास ।
लथ लअयिनस त कडनस रतपाव । (टिक)
ज़ोर कमी कोरुनय यूर आयख, वअरि विस मन्ज़ कमि बुथि च़ायख ।
वापस माल्युन तुम चले जाव । (टिक)

(हश — सास; ओश — अश्रु; खाव — खड़ाऊं ; बरथा— भरतार, भर्तृ; लथ — लात ।)

सास ने बहू से कहा आंसू मत बहा, कहां है अतगत, कांगड़ी तथा खड़ाऊं ? मायके का बड़प्पन दिखाती हो। (टेक) ननद ने कहा कि मुंह फुलाये क्यों बैठी हैं ? मैं तुझको साग के गुच्छे की तरह निचोड़ूंगी। जा अपने मायके चली जा, तू ग्वालिन (गवांर) है। (टेक) जब पति दफ़्तर से लौटा, चोके में बूट पहिन कर ही घुस गया, लात मारी और एक पाव रक्त निकाला। तुझसे किसने ज़ोर-ज़बरदस्ती की थी जो तू यहां चली आई — तू किस मुंह से ससुराल आ गई। तू वापिस मायके चली जा। सास ने बहू से कहा — आंसू मत बहा।

सास-ननद के अत्याचार :

(14) *हशि दोपनम नोशि बिचअर, क्या च़े अनुथम मालिनि तय*
ज़अम दितनम बरनेन तअर्य, कवौ ब रोज़य वारिविते।
(तोअर — खटका।)

सास ने कहा — "हे बेचारी बहू तू क्या मायके से लाई है", ननद ने द्वार का खटका बन्द कर दिया, मैं ससुराल में कैसे रह सकती हूँ ?

(15) *वारिवि द्रायेस चूरि-चूरि, मालिनी दूरि आसान छिम, ज़अम द्योदि दोपनम मोख्त वोटि तारुन छुय*
तारान तारान लूसुम दोह।
(वारिवि-ससुराल से)

ससुराल से मैं चोरी-चोरी निकली, मायका मेरा दूर है। मेरी ननद ने कहा कि मोती नीचे वाले कमरे में पिरोने हैं। पिरोते-पिरोते पूरा दिन बीत गया। (मायके नहीं जा पायी।)

वैधव्य के गीत :

(16) *वुछतह व्यसी कहन्दे ब ज़ायस, बागिन आयस कहन्दे ताम*
दोह अकि मअल्य माजि नगरअ हरशेयस, शहरिच असित वअचिस गाम।
सति दोहीं माल्यन्यव फीरिथ अन्येयस, बागन्य आयेयस कान्हदे ताम।
दोह अकि श्रेहसान माल्युन गयेयेस, डेकबीज काकनि दिच़नम पाम।
डेकअरोस़ ज़ेववुनुय कौन मौयेयस, बागन्य आयस कहन्देताम।

(हरशेयस —विवाह हुआ, हर्ष से बना है यह शब्द ; वागिन —भाग्य से ; श्रेहसान — स्नेह से ; डेकबजि — सधवा, सौभाग्यवती।)

देख सखी मैंने किनके घर में जन्म लिया, किनके भाग्य के हिस्से में मैं आई ? (मेरा विवाह किनके घर में हुआ) एक दिन मेरे मां-बाप ने मेरा विवाह नगर में किया, शहर की हो गई थी और फिर गांव में (विधवा होकर) पहुंच गई । सात दिन के पश्चात् मेरे मायके वाले मुझको फिर (कर) वापिस ले आये । (टेक) एक दिन बड़े स्नेह से मैं मायके गई, सधवा काकनी (काकी) ने (मेरे वैधव्य पर) ताना कसा । मैं आभागिन जन्म लेते ही क्यों नहीं मर गई । किनके घर में मेरा विवाह हुआ ।

(17) *क्या वनयो मति क्या वनयो, यीगोम पानस त ती वनअयो ।*
लान्युन न्याय छुम त ती वनअयो, क्या वनयो मति क्या वनयो ।
बागस म्युनिस बादाम फुलया ? आदन रअवस त ती वनयो
क्या वनयो मति क्या वनयो, बागस म्यनिस चेर फोलया ?
वेरि चानि फ़ोजमा त ती वनअयो,
बागस म्यनिस गिलास फोलया ?
दिलास दितुथमा ती वनअयो,
बागस म्यनिस कोंग फलिया
लंग लंग फोजिसा ? त ती वनअयो
बागस म्यनिस अलिचि फोलया ?
लोलचि करिथम त ती वनअयो
क्या मति वनयो क्या ब वनअयो ।
(लंग-लंग—डाल-डाल पर ।)

हे बावले । मैं तुमसे क्या कहूं, वही तो कहूंगी जो मेरे साथ घटित हुआ । मेरे भाग्य का जो न्याय है, वही कहूंगी, हे बावले ! मैं तुमसे क्या कहूँ ? क्या मेरे बगीचे में बादाम के फूल खिले ? मैं प्रारम्भ में ही खो गई (विवाहोपरान्त ही विधवा हो गई) यही तो कहूंगी । मेरे बगीचे में खुबानी के फूल खिले हैं क्या ? तुम्हारी वाटिका में खिले हैं यही तो कहूंगी । मेरे बगीचे में गिलास (चैरी) के फूल खिले हैं क्या ? तुम मुझे दिलासा देते रहे, वही तो मैं कहूंगी । मेरे उपवन में केसर के फूल खिले क्या ? मैं डाल-डाल पर खिली ? वहीं तो मैं कहूंगी । मेरे बगीचे में 'अलिचि' (एक प्रकार का छोटी चैरी जैसा खट्टा फल) के फूल खिले ? तुमने मेरे प्रेम का जो किया वही तो कहूंगी ?

शाल-बनाना —

(18) *केलि फम्ब कतइ पनन्यव अथव, कोंग कुई रंग करनावयो*
ज़वियुल शाल वोनै पनन्यव अथव, कोंग कुइ रंग करनावयो ।
(फम्ब —रुई; कतइ —कातूंगी; पनन्थव —अपने; अथव —हार्थो से ।)
मैं अपने हार्थो से रुई कातूंगी, उसको केसर के रंग में रंगवाऊंगी । महीन शाल अपने हार्थो से बुनूंगी, उसको केसर के रंग में रंगवाऊंगी ।

गरीबी —

(19) *दिलुक वलवले रावरावान गरीबी, देमागय पनुन छस न थावान गरीबी,*
कमन राज़-राज़न त खोशरो जवानन छोटस प्योठ तिमन ढुलनावान गरीबी ।
दिल की उमंगों को दरिद्रता कुचल के रख देती है, दिमाग ही सही नहीं रखती है दरिद्रता । कैसे-कैसे राजाओं तथा प्रसन्न-चित्त युवकों को कूड़े के ढेरों पर लोट लगवाती है —दरिद्रता ।

आलसी-कामचोर पर —

(20) *गजि सूर कोढ़म, पजि सूर लोदुम त त्रोवुम गयम त्रे कामि ।*
लाल वुज़नोवुम, दोदहन चोवुम त सोवुम गयम शे कामि ।
(गजि —चूल्हे में से; कोडुम —निकाली; लोदुम—भरी ।)
चूल्हे में से राख निकाली, डलिया में भरी और फैंकी, तो हो गये तीन काम । लला को जगाया, दूध पिलाया, फिर उसको सुलाया तो हो गए छः काम ।

आधुनिकीकरण (नई हवा) —

(21) *हवअई जहाज़ आव मुलकि कश्मीर*
यिमव वुछ तिमव कोर तोब तखसीर ।
(तोब तखतीर —विशेष रूप से तोबा की ।)
हवाई जहाज़ कश्मीर-मुल्क में आ गया, जिन्होंने भी देखा उन्होंने तोबाह किया कि यह क्या हो रहा है ।

(22) *बुम्ब चअन्य तीर म्यच़गानय त लो लो,*
दिल म्योन दिल-जापानय तअ लो लो ।
दोह पअंशअ जापान, दोह पअंशअ जर्मन

खाकस सूअत्य यकसानय तअ लो लो । बुम्ब । टेक

बुरकअ कनि पराशूट, फ़्यरन कनि सूट बूट ।

बारसस छि सैनसदानय त लो लो

रेडियो त टेलीफ़ोन कअसिद छि अज़ सअन्य ।

(यकसान्य—एक समान; कनि—के बदले; सेनसदान—साइन्सदान, वैज्ञानिक ।)

तुम्हारी भौंहे तीर-कमान के समान हैं । दिल, मेरा दिल-जापान है । पांच-छः दिनों के लिए जापान था, पांच-छः दिनों के लिए जर्मनी था । दोनों खाक में मिलकर एक से हो गए । बुरके के बदले पैराशूट तथा फिरन के बदले सूट-बूट पहिनने लगे हैं। वैज्ञानिकों का अब बोलबाला है । आज् रेडियो और टेलीफोन हमारे कासिद (सन्देशवाहक) बन गए हैं ।

(23) *बिजली गाश प्यूर कोचअ बाज़ारी, लालद्राव गंज बाज़अरिये*

आगुर मोहरा छुस लरि बूनयारय, असबाब जमाह तति सअरिये ।

'हयटेंशन' लअन गई तति जअरी, रीशिमखान मंज द्राव यकबअरिये ।

गरअ पत गरअ लअग्य नन्द ठेकदअरी, बोडस छि रीशिम तारिये ।

वति-वति जर्मन बति गाश जअरी, लन्दनच बति पायदअरिये । (टेक)

लाल द्राव गंज बाज़ारिये । सड़क त नलकअ आब खोशगवअरी, हवस-बोट पादर शिकअरिये ।

तार टेलीफोन छि खबरदअरी । टेक ।

दानि मशीनअ यन यति गय जअरी, मेहनत निश गई आज़ाद सअरी । टेक ।

बिजली का प्रकाश गलियों तथा बाज़ारों में फैल गया । लाला गंज बाज़ार के लिए निकले । मोहरा बूनयार की बगल में है । वहां पर सभी असबाब जमा है । वहां से 'हाई-टेंशन' तार जारी किया गया । रेशमखाने में से रेशम (बिजली के उपयोग के कारण) एक बार में (एक साथ बहुत सा) निकला । घर-घर में बिजली लगाने का ठेका नन्द ठेकेदार ने ले लिया । बिजली के बोर्ड में रेशम का तार है । जगह-जगह जर्मनी में बने बल्ब जारी कर दिये गए हैं ; लन्दन के बल्ब देर तक टिकने वाले हैं । (टेक्) सड़कें तथा नल, हाऊसबोट तथा शिकारे सब प्रसन्न हैं । तार तथा टेलीफोन खबरदार हो गए हैं । जब से धान कूटने की मशीनें आ गई हैं तब से लोग मेहनत करने से आज़ाद (मुक्त) हो गए ।

(24) *ज़नान आज़अदी आई लोलो, ज़नानि दोप मर्दस फ़ुट्टयो नअर,*

म्य गछ़ी आसिन्य स्वनसिन्ज़
टेमअ वुछिय नेरय बेवाय लो लो (टेक) ज़नान आज़अदी
ज़नानि दोप मर्दस ओयियो ग्यूर, म्य गछ़ी आसुन स्वनसुन्दर दूर।
कनन लअगिथ नेरय बेवाय लोलो। (टेक)

(स्वनसन्द —सोने की; ग'र —घड़ी; ग्यूर —चक्कर; दूर—बुन्दा; टेमअ —टाइम।)

स्त्रियों की स्वतन्त्रता आ गई। औरत ने अपने आदमी से कहा कि तुम्हारी बांह टूट जाय, मुझको सोने की घड़ी चाहिए। मैं समय देखकर बिना रोक-टोक के निकलूंगी। औरत ने आदमी से कहा कि तुमको चक्कर आ जाय, मुझको सोने का बुन्दा चाहिए। कानों में पहिनकर मैं बिना रोक-टोक के निकलूंगी।

(25) *असि गोछ दमट्र्योठ जिनाबो लो, जिनाबो लो।*
चमहव चाय, डबअद्वद छु मअशूर, तमि सूत्य होट गछ़ान खराबो लो। (टेक)
असि गोछ दमट्र्योठ जनाबो लो।
द्रोग छु मोदुरेर, स्वादि रोपयअ छुय सेर, कुनुन छु कन्ट्रोल वानन लो।
ख्यमहव कुलचि गासअ ग्यव छु मअशूर
अमिखोत बेहतर लवासय लो। (टेक)

(ट्र्योठ —कड़ुआ; होट—गला; द्रोग —मेंहगा; मोदुरेर—चीनी, मधुर।)
(यह गीत तुम्बक-नारी पर शादी ब्याह में भी गाते हैं।)

ए जनाब हमको बिना चीनी-दूध की (कड़वी) चाय ही दे दो (क्योंकि दूध वाली चाय हम नहीं पीना चाहते)। डिब्बे के दूध की शोहरत है कि उससे गला खराब हो जाता है (इसलिए हम कड़वी चाय ही पियेंगे) चीनी महंगी है, सवा रुपया सेर मिलती है, कन्ट्रोल की दुकानों पर मिलती है। कुल्चे खाते (मगर वे घासलेट से बनते हैं) घासलेट के विषय में शोहरत है कि उससे गला खराब होता है, इसलिये कुल्चे से बेहतर लवासा ही है।

(26) *ईदगाह वसिथ स्युन क्या रनव, वति करव मसलहत कति करव दान।*
यन्द्रस बीहित गाटअ पनुनुय हावय, थोसि पन खारय अजि दोसि तान्य।
दहारि पंचअ गज़ पोट पावनावय, हावय गर करुन क्यहो गव।
सुलि-वुलि गवअ पांच जा'ह तिनो चावय, वुमिरि थावय गुरुस-तमन्ना
कथि वंअलिजि प्यठ बानह फुटरावय, हावय गर करुन क्या गव
समिथ ख्य पिंगह तोह थावय, हावय गर करुन क्या गव।

लेज्य पश्पावय मअज्य मशरावय, हावय गर करुन क्या गव ।

(गाट —तौनार, कुशलता; बान—भाण्ड, बर्त्तन ।)

ईदगाह जाते समय रास्ते में तय करेंगे कि सब्जी क्या बनायेंगे और हम सलाह करेंगे कि कहां चूल्हा बनायेंगे । चर्खे पर बैठकर मैं तुमको अपना कौशल दिखाऊंगी, खूब मोटा-मोटा कातूंगी और आधी दीवार तक लम्बा बनाती ही जाऊंगी । दस रुपयों में दस गज पट्टू पड़वाऊंगी, (अर्थात, महंगा) दिखाऊंगी कि घर करना किसे कहते हैं ? कभी प्रातःकाल जगकर पांचों गायों को नहीं दुहूंगी, जीवनभर (तेरी) छाछ की तमन्ना ही रखूंगी (कभी पूरी नहीं होने दूंगी) । बात-बात पर गुस्सा करूंगी, तुम्हारी छाती पर बर्तन फोड़ूंगी, दिखाऊंगी कि घर करना किसे कहते हैं । मिलकर पिंग (अनाज) खायेंगे, तुम्हारे लिए भूसी रखेंगे । हंड़िया उलटी करके खाली कर दूंगी, तुमको तुम्हारी मां भी भुलवा दूंगी । दिखाऊंगी घर करना किसे कहते हैं ।

पति के प्रति असन्तोष —

(27) *ध्दी कवह दिच़थस नादानस, तव खोतह दिज़िहेम वाज़ गानस ।*
अनिहेम डगह-डगह ख्यमहअ पानस, डुलगंडि दिमह मंज मअदानस ।

(वाज़ —खाना पकाने का पेशा करने वाला ।)

हे दादी ! तुमने मुझको क्यों नादान से ब्याह दिया, इससे अच्छा तो यह था कि तुम मुझको किसी 'बदमाश' रसोइये से ब्याह देती । खूब भर-भर के लाता और मैं खाया करती । बड़े (खुले) मैदान में लोट लगाती, करवटें बदलती ।

लोकगीतों के संग्रह के स्रोत-व्यक्ति

सोन बटनी कौल (कावडारा-श्रीनगर), स्यद लक्ष्मी कौल (बुधगेर, श्रीनगर), यन्द्रावती बाम्ज़ई (हन्दवारा), सोनबटनी कौल (बारामूला) राजमाली (वेसु, अनन्तनाग), मोगली मुंशी (अलीकदल, श्रीनगर), शूबावती (लार), पद्मावती (अनन्तनाग), लक्षकुजी शायर (हब्बा कदल, श्रीनगर) जयकिशोरी बख्शी (करन नगर), शामा काज़ी (करफली मुहल्ला, श्रीनगर) हीमाली (गुलमर्ग), खजा (मलिक आंगन, श्रीनगर), जूनी (गान्दरबल), अतीका (गुरेस), वेशमाली राज़दान (पहलगाम), तारावती रैना (जम्मू विस्थापित कैम्प), कृष्णा सुल्तान (जयपुर विस्थापित कैम्प), चांदामाली वारीकू (रैनावारी, श्रीनगर) जयकिशोरी तालिब (ऊधमपुर विस्थापित कैम्प), सोखमाली (वेरीनाग), कौशल्या मोज़ा (नगरोटा विस्थापित कैम्प), दिवकी देवी (ऊधमपुर विस्थापित कैम्प,) राजदुलारी बादाम (दिल्ली), कृष्णा मुंशी (जम्मू), सन्तोष काज़ी, (श्रीनगर), सूमावती थालचूर (हब्बाकदल), श्यामा खर (जयपुर-विस्थापित कैम्प), रूपावती मोज़ा (जम्मू विस्थापित कैम्प), जानकी मोज़ा (नगरोटा विस्थापित कैम्प), दिवकी देदी (मागाम), जोपुर देदी (अली कदल, श्रीनगर), दनवती कौल (अनन्तनाग), फूला मुंशी (अलीकदल, श्रीनगर), पिट्टी मिश्री (जम्मू विस्थापित कैम्प), मोहरानी मुंशी (अलीकदल श्रीनगर), पदमावती मुंशी (अलीकदल, श्रीनगर), पोशकुजी कौल (रैनावारी, श्रीनगर), तुलसी माली डुलू (सीर —पहलगाम), शोबरदेदी वली तथा ख़ालिदा कौल (जवाहरनगर, श्रीनगर), कोंगमाली मिश्री (जैऩदार मुहल्ला, श्रीनगर), कुदरदेदी द्राबू (द्राबियार, श्रीनगर) प्रभावती द्राबू (जवाहर नगर, श्रीनगर), ओमरावती रैना (पट्टन), राजरेन्य पण्डित (थजवोर), कुदमाली (बिज बिहारा), प्रभावती मट्टू (जम्मू), राजकरनी (अनन्त-नाग), चांदीमाली कौल (अकिन गांव), तोलसीमाली राज़दान (खोनमू), तोलसीमाली कौल (रैनावारी, श्रीनगर), जूनी (हबक, अनन्तनाग), यासमीन मलिक (अनन्तनाग), कृष्णा भट्ट (सत्थू, श्रीनगर), शबनम भट्ट (बारामूला), खतीजी भट्ट (कुपवारा), बीब कादरी (कावडारा, श्रीनगर), सोन्दरि वानी (मटन), ज़ेबा डार (तुलमुला), मोगली (टंगधार), जूनी मलिक (सोनमर्ग), गुलाम मुहम्मद भट्ट (हन्दवारा), अब्दुल अहद (लाल बाजार, श्रीनगर), अमरनाथ गंजू (नई सड़क, श्रीनगर), हब्ब भट्ट (वेरीनाग), सूमनाथ त्रकरू (हारवन, श्रीनगर), मुहम्मद गनाई (प्रंग), मुहम्मद सुल्तान शेख़ (सोनरवनी), श्यामलाल पण्डित (त्राल), शिवराम (अच्छबल), गुलाम रसूल शेख (पाम्पुर) लस कौल

(अहरबल), दीनानाथ मोगलू (शुपियान), गुलामनबी (सोपुर), दीनानाथ सुम्बली (सुम्बल), इस्माल हांजी (डाचीगाम, श्रीनगर), जवाहरलाल त्रम्बू (हाज़न), शम्भूनाथ आखून (क्रालपुर), द्वारिकानाथ बमचूंट (खादनयार), अफ़जल मीर (शादीपुर), गुलामरसूल कौल (डूरू), गुलामनबी पण्डित (सोपुर), कीशोनाथ कौल (कुलगाम), जलखान (सोगाम), मुहम्मद शफी लोन (कुपवारा), गुलाम हसन रैना (कोकरनाग), मुहम्मद हसन राथर (सत्थू, श्रीनगर), गूपीनाथ खर (खाग) तथा रमज़ान शेख (यूसमर्ग)।

परिशिष्ट

सहायक ग्रन्थ सूची (संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी)

1. अष्टाध्यायी : पाणिनी ; चौखम्भा संस्कृत सीरीज़ वाराणसी ।
2. अर्थशास्त्र, सं . शामा शास्त्री, मैसूर, 1919-1924 ।
3. अथर्व वेदः गीता प्रेस, गोरखपुर ।
4. आश्वलायन गृह्य-सूत्र, पूना, 1949 ।
5. ऋग्वेदकाल में पारिवारिक सम्बन्धः शिवराज शास्त्री, लीलाकमल, प्र० मेरठ ।
6. एकादशोपनिषत् : प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, 1954, प्र० विजयकृष्ण लखनपाल, देहरादून ।
7. कश्मीरी और हिन्दी के लोकगीत : एक तुलनात्मक अध्ययन, डा० जवाहरलाल हण्डू ; 1971 प्र० विशाल पब्लिकेशंस, कुरुक्षेत्र ।
8. कश्मीरी साहित्य का इतिहास ; डा० श० शे० तोषखानी, 1985, ज० क० कल्चरल अकादमी ।
9. कश्मीरी का लोक-साहित्य, मोहनकृष्ण दर ; 1963, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ।
10. का'शुर नसर ; स० अवतार कृष्ण रहबर तथा गुलाम नबी ख्याल ज० क० अकादमी, श्रीनगर ।
11. कल्हण कृत राजतरंगिणी, स्टाइन का अनुवाद ।
12. कश्मीरी ज़बान और शायरी, भाग 1, 2, अ० अ० आज़ाद, ललितकला, संस्कृति अकादमी, श्रीनगर ।
13. कुरुआन-मजीद ; हिन्दी अनुवाद — फारुक खां, अंग्रेज़ी अनुवाद—मारमाड्यूक पिक्थाल, मकतबा अल-हसनात, रामपुर (उ०प्र०) 1970 ।
14. तैत्तरीय ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण ; (गीताप्रेस, गोरखपुर) 1971 ।
15. धरती गाती है ; देवेन्द्र सत्यार्थी, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली, 1951 ।
16. नीलमत पुराण ; डा० वेद कुमारी, भाग 1, प्र० मोतीलाल बनारसीदास ।
17. निरुक्त ; गीताप्रेस, गोरखपुर, 1961 ।

18. पुराण ; वायु, पद्म, मत्स्य, विष्णु, विष्णुधर्मोत्तर, स्कन्द, गीताप्रेस, गोरखपुर।
19. प्राचीन भारतीय संस्कृति ; बी० एन० लूणिया , 1979, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
20. बेला फूली आधी रात, देवेन्द्र सत्यार्थी, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली, 1948।
21. बौद्धमत के 2500 वर्ष ; सं० डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, सूचना विभाग भारत सरकार। प्रथम संस्करण।
22. ब्रज लोकसाहित्य : मधुर उप्रैती, 1985, इन्दु प्रकाशन, अलीगढ़।
23. भारतीय संस्कृति ; डा० देवराज ; प्रथम संस्करण, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग उ० प्र०।
24. भारतीय लोक-साहित्य ; श्याम परमार, 1958, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
25. महाभारत ; गीता प्रेस, पांचवां संस्करण, गोरखपुर (छः भाग)।
26. महानय प्रकाश, सं० मुकुन्दराम शास्त्री, प्रथम संस्करण, ज० क० रिसर्च डिपार्टमेन्ट, श्रीनगर।
27. मनुस्मृति ; गीताप्रेस, गोरखपुर, 1970।
28. लोक-साहित्य की भूमिका ; डा० कृष्णदेव उपाध्याय, 1957, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
29. लोक-साहित्य सिद्धान्त और अध्ययन, डा० श्रीराम शर्मा, 1981, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
30. लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या ; प्रथम संस्करण, श्रीकृष्णदास, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
31. लोक-साहित्य विज्ञान, सत्येन्द्र, 1962, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, आगरा।
32. संस्कृत-भाषा, टी० बरो, अनु० भोलाशंकर व्यास, 1962, चौखम्भा विद्या-भवन, वाराणसी।
33. बृहत् संहिता, चौखम्भा संस्कृत सीरीज़ (प्रथम सं०), वाराणसी।
34. वितस्ता के वातायन, स० डा० रमेशकुमार शर्मा, प्रकाशक: हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर।
35. वाल्मीकीय रामायण, भाग 1, 2, आठवां संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर।

36. हिन्दी संस्कार ; राजबली पाण्डेय, 1960, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
37. हिन्दू सभ्यता, राधामुकुद मुखर्जी, 1975, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
38. हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार ; कुंवर-कन्हैया जू, प्रथम संस्करण, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

ENGLISH

39. A History of Kashmir; Bamzai P. N. K., Metropolitan Book Co. Delhi, 1962.
40. An Outline of Indian Folklore, Durga-Bhagwat, Popular Book Depot, Bombay, 1952.
41. Ancient Monuments of Kashmir ; Kak, R. C., The India Society, London (1933).
42. Birds of Kashmir; Samsar Chand Koul, Third Edition Pub. by U. Koul Rainawari, Srinagar.
43. Beautiful Valleys of Kashmir and Ladakh, Samsar Chand Koul, Third Edition, Pub. U. Koul, Rainawari, Srinagar.
44. Epics, Myths and Legends of India; Thomas P. 1961, Taraporewala, Bombay.
45. Family and Kinship; A study of Pandits of Rural Kashmir, Madan T. N., Asia Publishing House Bombay, 1965.
46. History and Culture of Indian People Vol.I to IV; Ed. R. C. Majumdar, Bhartiya Vidya Bhawan, Bombay.
47. Indian Serpent Lore or Nagas in Hindu Legend and Art; Vogel J. Ph., 1924, London.
48. Kashmir under the Sultans, Mohibbul Hassan, 1959, Calcutta.
49. Kashmir; Francis Young-Husband, Black and Co. London, 1909.
50. Linguistic Survey of India, Sir G. Grierson, 1968 Vol. VIII. Pt. 2.
51. Neelmat Puran; Pt. 2, Dr. Ved Kumari, J & K Acadamy, Srinagar, 1973.
52. Social Life In Ancient India, H.C. Chakladar, Sushil Gupta Ltd., Calcutta, 1954.
53. Srinagar and it's Environs; Samsar Chand Koul, 7th Edition, Pub. U. Koul Rainawari, Srinagar.

54. The Happy Valley; Wakefield, Sampson Low and Co. London, 1879.
55. The Early History and Culture of Kashmir, Ray S.C., Calcutta, 1957.
56. The Valley of Kashmir; Lawrance Walter R, University Press London, 1894.
57. The Kashmiri Pandit; Pandit Anand Koul, Thackers Ltd., Calcutta, 1924.
58. The Introduction to popular Religion and Folklore of North India; Grook W., Clarendon Press London, 1949.
59. The Mythology of Hindus; Charles Coleman P., Allen & Co., London. 1832.

कोश —

(संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी)

60. संस्कृत हिन्दी कोश : वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास, 1966।
61. ज्ञान शब्दकोश ; प्रथम संस्करण, स० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, ज्ञानमण्डल, बनारस।
62. हिन्दी साहित्य कोश ; द्वितीय संस्करण, ज्ञानमण्डल वाराणसी, भाग 1 तथा 2।
63. संक्षिप्त औक्सफोर्ड हिन्दी साहित्य परिचायक, गंगाराम गर्ग, 1963।
64. उर्दू-हिन्दी शब्दकोश, मोहम्मद मुस्तफा खां, उ० प्र० हिन्दी संस्थान, 1977।
65. अंग्रेजी हिन्दी कोष ; फादर कामिल बुल्के ; एस० चन्द नई दिल्ली, 1983।
66. संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी, सर मोनियर विलियम्स, औक्सफोर्ड, (क्लेरेण्डन प्रेस) लण्डन, 1963।
67. स्टेण्डर्ड डिक्शनरी आफ फोकलोर, माइथोलोजी एण्ड लीजेण्ड, भाग 1, 2, सं० मारिया लीच।
68. द रीडर्स डाइजेस्ट ग्रेट ऐनसाइक्लोपीडिक डिक्शनरी, भाग 1, 2, 3, द रीडर्स डाइजेस्ट ऐसोसियेशन, लन्दन, 1962।

पत्र - पत्रिकाएं

(हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा कश्मीरी)

वितस्ता (कश्मीरी भाषा विशेषांक) सं० डा० रमेशकुमार शर्मा, प्र० हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर । हिन्दोस्तान टाइम्स, (नई दिल्ली) । मधुमती (उदयपुर) । विशालभारत (कलकत्ता) । धर्मयुग (बम्बई) । हिन्दी, उर्दू तथा कश्मीरी की 'शीराज़ा' ज० क० अकादमी श्रीनगर । अनहार (कश्मीरी) तथा सोनअदब (कश्मीरी) श्रीनगर ।

लेखिका परिचय

डा० (श्रीमती) विमला कुमारी मुन्शीः प्रसिद्ध क्रान्तिका[री] स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी, पत्रकार, शिकारी एवं शिकार-साहित्य प्रणे[ता] तथा विशाल-भारत के सम्पादक स्वर्गीय पं० श्री राम शर्मा की पुत्र[वधू] हैं। वे बीस वर्षों से शोध-कार्य में संलग्न हैं। प्रथम श्रेणी में एम० ए० (हिन्दी) की परीक्षा उत्तीर्ण करते समय उन्होंने कश्मीर विश्वविद्याल[य] के कला-संकाय में प्रथम स्थान प्राप्त करके "स्वर्ण-पदक" प्राप्त कि[या] था। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से जूनियर तथा सीनियर फैलोशि[प] के अन्तर्गत हिन्दी नाटकों पर शोध कार्य करने के उपरान्त रिस[र्च] एसोसियेट के रूप में गान्धी-दर्शन पर शोध कार्य किया और फिर शो[ध] वैज्ञानिक (रीडर) के पद पर रह कर **"कश्मीरी लोक साहित्यः भारती[य] संस्कृति के सन्दर्भ में विवेचन"** नामक दस वर्षीय परियोजना का का[र्य] आरम्भ किया। प्रस्तुत पुस्तक उसी परियोजना की आंशिक सम्पूर्ति [का] फल है।

डा० मुन्शी ने अनेक लेख, कहानियाँ तथा रिपोर्ताज लिखे [हैं] एवं इनकी एक पुस्तक (हरिकृष्ण प्रेमीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व) भ[ी] प्रकाशित हुई है।

अधुना आगरा विश्वविद्यालय में शोध-वैज्ञानिक के रूप में शिक्ष[ण] तथा शोध-कार्य कर रही हैं।

सम्पर्क सूत्रः- द्वारा डा० रमेश कुमार शर्मा, 28/289 ब्राह्म[ण] गली, गोकुल पुरा, आगरा 282002।

कश्मीर

आर्य बुक डि